॥ श्री ॥

मेवाड़का प्राचीन इतिहास.

जिस तरह सारे हिन्दुस्तानभरका प्राचीन इतिहास अंधेरेमें छुपा हुआ पड़ा है, उसी तरह मेवाड़के पुराने इतिहासको भी समझलेना चाहिये, लेकिन् इसमें सन्देह नहीं कि इस ख़ानदानका बड़प्पन प्राचीनकालसे व[illegible]मान समयतक प्रकाशमें बना रहा है, क्योंकि यह घराना हिन्दुस्तानके सब राजा[illegible] शिरोमणि और बड़ा मानागया है, जिसमें कभी किसी प्रकारका सन्देह नहीं [illegible]न्दुस्तानके लोगोंमें क्या छोटा और क्या बड़ा, जिसको पूछिये यही जवाब दे[illegible]पुरके महाराणा हिन्दुवा सूरज हैं, परन्तु क[illegible] मेरा यह कहना खुशामद मालूम हो, क्योंकि मैं उनका खास [illegible] हूं, इसलिये मैं यहांपर सबसे पहिले उन सफ़रनामों और तवारीख़ोंके लेखोंको दर्ज करता [illegible] गैर मुल्क और गैर मज़्हबके लोगोंने मेवाड़ देशके राजाओंकी बाबत् बे रू रिआयत लिखे हैं, उनमेंसे चीनका मुसाफ़िर ह्युएन्त्सांग जो ईसवी ६२९ [हि० ८ = वि० ६८६] में हिन्दुस्तानकी यात्राको आया था, अपनी किताबकी दूसरी जिल्दके पृष्ठ २६६–६७ में वल्लभीके हालात इस तरहपर लिखता है, जो उदयपुरके राजाओंके पूर्वजोंकी राजधानी गिनी गई है.

" यह मुल्क घेरेमें ६००० (१) ली है; राजधानीका घेरा क़रीब ३० लीके है; ज़मीन, आब हवा और लोगोंका चालचलन मालवेकी तरहपर है; क़रीबन् १०० बाशिन्दे करोड़पति हैं; दूर दूरके मुल्कोंकी क़ीमती चीज़ें यहांपर बहुतायतसे मिलती हैं; यहां कई सौ देवताओंके मन्दिर हैं."

---

(१) क़रीब क़रीब ६ ली का एक अंग्रेज़ी माइल होता है.

"विद्यमान राजा क्षत्री क़ौमका है; वह मालवाके शिलादित्य राजाका भानूजा, कान्यकुब्जके राजा शिलादित्यके बेटेका दामाद है, और उसका नाम ध्रुवपट है; वह बड़ा चंचल और तेज़ मिज़ाज है, उसमें अक़ और हुकूमत करनेकी लियाक़त कम है. थोड़े दिनोंसे उसने त्रिरत्नका मज़्हब (१) सच्चे दिलसे कुबूल किया है. हर साल वह एक बड़ी सभा करता है, और सात दिनतक क़ीमती जवाहिरात और उम्दह खाना तक्सीम करता है, और पुजारियोंको तीन पोशाक और औषधि, या उनके बराबर क़ीमत, और सातों प्रकारके जवाहिरातके बनेहुए ज़ेवर देता है. वह नेकीको उम्दह समझता है, वे लोग जो अक़्मन्दीके वास्ते मशहूर हैं उनकी इज़्ज़त करता है, और बड़े बड़े धर्मगुरु लोग जो दूर दूरके मुल्कोंसे आते हैं उनकी भी बहुत इज़्ज़त करता है."

इस लेखसे उक्त राजाओंका बड़प्पन मालूम होता है, और जान[illegible] है, कि वे हिन्दुस्तानके बड़े राजाओंमेंसे थे.

इसी तरह अरबके दो मुसल्मान मुसाफ़िरोंने, जो हिन्दुस्तानमें आये, इस ख़ानदानका ज़िक्र लिखा है. पहिला मुसाफ़िर सुलैमान् सन् ८५१ ई० में और दूसरा अबूज़ैदुल्हसन ई० ८६७ में हिन्दुस्तानकी सैरको आया था. इन दोनोंकी अरबी किताबोंका तर्जमह रेनॉडॉट साहिबने अंग्रेज़ी ज़बानमें किया है, जिसके १४-१५ पृष्ठकी इबारतका तर्जमा नीचे लिखाजाता है:-

"हिन्दुस्तान और चीनके लो[illegible] हैं, कि दुन्यामें चार बड़े बादशाह हैं, उन में अरबका बादशाह अव्वल, चीनका दूस[illegible], यूनानका तीसरा [illegible] चौथा बलहारा (२) गि[illegible]ता है, जो मुर्मियुल्उज़ुन (३) यानी उन लो[illegible] राजा है, जिनके कान [illegible] हुए हैं."

---

(१) त्रिरत्नके मज़्हबसे अभिप्राय बौद्ध मत है.

(२) बलहारासे मत्लब वल्लभी वाला है. इन मुसाफ़िरोंके हिन्दुस्तानमें आनेके वक्त चि[illegible] पर महारावल खुमाण राज्य करते थे, जिनको लोग बलहारा याने बल्लभीवाला नामसे पुकारते होंगे, क्योंकि वल्लभीका राज्य ग़ारत होनेके बाद मेवाड़का राज्य क़ाइम हुआ. यह एक आम रवाज है, कि एक जगहसे दूसरी जगह जाकर बसनेवाले लोग उनके पहिले निवास स्थानके नामसे पुकारेजाते हैं, जिसतरह हिन्दुस्तानके पठान बादशाह अफ़ग़ान, और तुर्किस्तानके मुग़ल तुर्क कहलाते थे.

(३) इस शब्दको अंग्रेज़ी किताबमें छापने वालेने या किताबका तर्जमा करने वालेने ज़ाल अक्षरको दाल समझकर ग़लतीसे अदन लिख दिया है, क्योंकि दाल और ज़ालमें केवल एक नुक्तेका फ़र्क़ है.

" यह बलहारा हिन्दुस्तानभरमें बहुत ही मश्हूर राजा है, और दूसरे राजा लोग अगर्चि अपने अपने राज्यमें स्वाधीन हैं, तोभी उसको बड़ा मानते हैं. जब वह उनके पास एल्ची भेजता है, तो वे उसको बड़ा और प्रतिष्ठित मानकर बड़ी इज़्ज़तसे उसका आदर सन्मान करते हैं. अरब लोगोंकी तरहपर वह बड़ी बड़ी बख़्शिशें देता है, और उसके बहुतसे घोड़े और हाथी और बहुतसा ख़ज़ानह है. उसके वे सिक्के चलते हैं, जोकि तातारी द्रम कहलाते हैं, उनका वज़न अरबी द्रमसे आधा द्रम ज़ियादह होता है. वे इस राज्यके ठप्पेसे बनते हैं, जिसमें राजाके राज्याभिषेकका संवत् (सन् जुलूस) लिखा है. वे अपना सन् अरब लोगोंकी तरह मुहम्मदके समयसे नहीं गिनते, किन्तु अपने राजाओंके समयसे. इन राजाओंमेंसे बहुतेरे बहुत दिनतक जीये हैं, और किसी किसीने पचास वर्षसे ज़ियादह समय तक राज्य किया है. "

" बलहारा इस ख़ानदानके सब राजाओंका नाम है, किसी ख़ास शख़्सका नहीं. इस राजाका मातहत .इलाक़ह कामकाम (१) के सूबेसे शुरू होता है, और चीनकी सर्हदतक ज़मीनपर फैलाहुआ है. उसका राज्य बहुतसे राजाओंके .इलाक़ेसे घिराहुआ है, जो उसके साथ दुश्मनी रखते हैं, लेकिन् वह उनपर कभी चढ़ाई नहीं करता. "

सर टॉमस रोने [illegible] १९ वें पृष्ठमें सन १६१५ .ई० में [illegible] ख़ानदानके और भी कि[illegible] चित्तौड़का बयान इस तर[illegible]

" यह शहर राणाके मुल्कमें ह, [illegible] इस बादशाहने थोड़े दिन पहिले अपना मातह्त (२) बनाया है, बल्कि कुछ रुपया पैसा देकर अपनी मातह्ती क़बूल करवाई. अक[illegible]शाहने इस शहरको फ़त्ह किया था, जो इस बादशाहका पिता था. राणा उस पोरसके ख़ानदानमेंसे है, जिस बहादुर हिन्दुस्तानी राजाको सिकन्दरने फ़त्ह किया था. "

इसी तरह सर टॉमस रोका पादरी एडवर्ड अपने सफ़रनामहके पृष्ठ ७७-७८ में चित्तौड़का हाल निम्न लिखित तौरपर लिखता है :-

" चित्तौड़ एक पुराने बड़े राज्यका ख़ास शहर एक ऊंचे पहाड़पर उपस्थित है. इसकी शहरपनाहका घेरा कमसे कम १० अंग्रेज़ी मीलके क़रीब होगा. आजतक याहांपर २०० से ज़ियादह मन्दिर और बहुतसे .उम्दह और पत्थरके एक लाख

(१) इसका सहीह लफ़्ज़ कोकण मालूम होता है.

(२) दूसरे राजाओंकी तरह मातह्त नहीं बनाया था.

मकानोंके खण्डहर नज़र आते हैं. अक्वर वादशाहने इसको राणासे फ़त्ह किया था, जो राणा एक क़दीम हिन्दुस्तानी रईस है."

जॉन एल्वर्ट डी मैंडल्स्लो जर्मनकी फ़्रांसीसी ज़वानकी किताबके अंग्रेज़ी तर्जमे से भी यही पायाजाता है, जो हैरिसके सफ़रनामहकी पहिली जिल्दके ७५८ वें पृष्ठमें लिखा है, कि-"अहमदावादके शहरसे थोड़ी दूर वाहिरकी तरफ़ मारवा (१) के वड़े पहाड़ दिखाई देते हैं, जो २१० माइलसे ज़ियादह आगरेकी तरफ़ फैलेहुए हैं, और ३०० माइलसे अधिक औयो (२) की तरफ़, जहां विकट चटानोंके वीच चित्तौड़गढ़ में राजा राणाका वासस्थान था, जिसको मुग़ल और पाटन (३) के वादशाहकी मिली हुई फ़ौजें मुश्किलसे जीत सकीं. मूर्त्ति पूजक हिन्दुस्तानी लोग अभीतक उस राजाकी वड़ी ताज़ीम करते हैं, जो उनके कहनेके मुताविक़ युद्धक्षेत्रमें एक लाख वीस हज़ार सवार लानेके योग्य था."

वर्नियरके सफ़र नामहकी पहिली जिल्दके पृष्ठ २३२-२३३ में इस तरहपर लिखा है:-

" ख़िराज न देने वाले एक सौ से ज़ियादह राजा हैं जो वहुत ताक़तवर हैं, और विल्कुल राज्यमें फैले हुए हैं, जिनमें कोई आगरा और दिल्लीसे नज़्दीक और कोई दूर हैं. इन राजाओंमें १५ या १६ दौलतमन्द (धनाढ्य) और वहुत मज्बूत हैं, ख़ासकर राणा जोकि पहिले राजाओंका श[illegible], और पोरसके ख़ानदान में गिनाजाता था, जयसिंह और ज[illegible] हैं, कि इनमें अगर मिलकर दुश्मनी करना चाहें, तो मुग़लके लिये भयानक वैरी होंगे, क्योंकि हरवक़्त वे लड़ाईमें वीस हज़ार सवार लेजानेके मक़्दूर रखते हैं; उनका सामना करने वाले दूसरे लोग उनकी वरावरी के न[illegible] हुए हैं." ये सवार राजपूत कहलाते हैं, इनका [illegible] वापदादोंसे चला-[illegible] शर्तपर जागीर दी जाती है, कि वह घोड़ेपर [illegible] रहे. ये लोग बहुत [illegible] ता है; और हरएक [illegible]माका [illegible] [illegible] मैं आनेके रकार है."

(१) त्रिरत्न[illegible]ज्हवसे अभिप्राय वौद्ध मत है.

सवार होकर जहां राजाका हुक्म हो, जानेके लिये तय्यार [illegible] थकावट वर्दाश्त करते हैं, और अच्छे सिपाही होनेके लिये सिर्फ़ क़वाइद हा[illegible]

मेजर जेनरल कनिंघमने अपनी रिपोर्टकी चौथी जिल्दके पृष्ठ ९५-९६ में लिखा है, कि "पिछले अथवा वीचके हिन्दू ज़मानेकी वावत मेरा अनुमान है, कि गुहिल या

(१) मारवाड़ या मेवाड़ होगा.

(२) शायद उज्जैन होगा.

(३) पाटनसे मुराद गुजराती वादशाह होंगे, क्योंकि पहिले गुजरातकी राजधानी पट्टन [illegible] नाममें थी.

गुहिलोत नामी मेवाड़का ख़ानदान किसी ज़मानहमें आगरेपर राज्य करता था. सन् १८६९ .ई० में दो हज़ारसे ज़ियादह छोटे छोटे चांदीके सिक्के आगरेमें खोदनेसे निकले थे, जिन सबोंपर प्राचीन संस्कृत अक्षरोंमें लेख था, जो साफ़ साफ़ "श्री गुहिल" या "गुहिल श्री" पढ़नेमें आया. ये सिक्के शायद श्री गोहादित्य या गुहिलके होंगे, जो मेवाड़के गुहिलोत ख़ानदानकी बुन्याद डालने वाला था. लेकिन् गुहिलका ज़मानह सन् ७५० .ई० में था (१), और वह लिपि उस ज़मानेसे अगली मालूम होती है, तो कदाचित् ये सिक्के अगले गोहा वा ग्रहादित्यके हों, जो उसी ख़ानदानके राजा शिलादित्यका बेटा और गुहिलोत या सीसोदिया खानदानका पहिला राजा था, जो ख़ानदान कि बलहारा, वल्लभी, या सौराष्ट्रके ख़ानदानसे निकला था और जो उस देशके ग़ारत होजानेपर निकलगये, परन्तु उस राजाका ठीक ज़मानह मालूम नहीं, शायद अनुमानसे छठी सदी .ईसवीके लगभग रहा होगा. सौराष्ट्रके राजाओंका राज्य किसी ज़मानहमें इतना बड़ा था, कि उसका आगरेतक पहुंच जाना अलबत्तह मुम्किन है, लेकिन् यह संभव नहीं, कि ये दो हज़ार सिक्के गुहिल श्री के कोई मुसाफ़िर आगरेमें लाया हो, जोकि उस राजाके समयमें मेवाड़ या सौराष्ट्रसे आया था, यह केवल अनुमान मात्र है; और यह ज़ियादह संभव मालूम होता है, कि ये सिक्के गुहिलके राज्य समयमें आगरेमें चलते थे, क्योंकि यह भी मुम्किन है, कि ऐसे ही सिक्के इसी राजा या ख़ानदानके और भी किसी समयमें आगरेमें पाये गये हों, जिनको मैंने नहीं देखा."

लुई रोसेलेट साहिबने अपने मध्य हिन्दुस्तानके सफ़रनामहके पृष्ठ २०० में लिखा है कि- " चित्तौड़की मश्हूर मोर्चाबन्द बस्ती, जो एक अकेले पहाड़की चोटीपर बसी हुई है, मेवाड़की पुरानी राजधानी थी, और कई सदियोंतक मुसल्मानोंके हमलोंके बर्ख़िलाफ़ बचावकी अख़ीर मज्बूत जगह थी."

एचिसन् साहिबकी अह्दनामोंकी किताब, जिल्द तीसरीके पृष्ठ ३ में लिखा है कि- "उदयपुरका ख़ानदान हिन्दुस्तानके राजपूत रईसोंमें सबसे बड़े दरजे और रुत्बेका है. यहांके राजाको हिन्दू लोग अयोध्याके प्राचीन राजा रामका प्रतिनिधि समझते हैं, जिनके वंशमेंसे राजा कनकसेनने इस ख़ानदानकी बुन्याद सन् १४४ .ई० के

---

(१) गुहिल नामका एक ही राजा हुआ था, जो सन् .ई० की पांचवीं सदीके अख़ीर या छठी सदीके शुरूमें हुआ होगा, क्योंकि हमको एक प्रशस्ति विक्रमी ७१८ [हि० ४१ = .ई० ६६१] की मिली है, जो गुहिलसे छठे राजा अपराजितके राज्य समयकी है.

क़रीब डाली थी. डूंगरपुर, सिरोही (१) और प्रतापगढ़के ठिकाने भी यहींसे निकले हैं. मरहटा लोगोंकी ताक़तकी बुन्याद डालनेवाला सेवाजी, और घोंसला ख़ानदान उदयपुरके घरानेसे निकले थे. हिन्दुस्तानमें किसी रियासतने यहांसे बढ़कर ज़ियादह दिलेरीके साथ मुसल्मानोंका सामना नहीं किया. इस घरानेका यह अभिमान है, कि उन्होंने कभी किसी मुसल्मान बादशाहको लड़की नहीं दी, और कई वर्षतक उन राजपूतोंके साथ शादी व्यवहार छोड़दिया, जिन्होंने बादशाहोंको लड़की दी थी."

डॉक्टर हंटर साहिब भी अपने गज़ेटिअरमें एचिसन् साहिबके अनुसार ही लिखते हैं.

हैरिस साहिबके सफ़रनामहकी पहिली जिल्दके पृष्ठ ६३२ के नोटमें लिखा है कि- "राजा राणा, जिसको तीमूरलंग (२) ने शिकस्त दी, वह सब इतिहास वेत्ताओंके अनुसार महाराजा पोरसके ख़ानदानमें था."

"यद्यपि आगरेका नया शहर बसानेमें अक्बरका ध्यान लगरहा था, तोभी राज्यकी वह तृषा, जोकि उसकी तख़्तनशीनीके शुरू सालोंमें नज़र आई थी, न बुझी. हिन्दुस्तानके एक राजाका हाल सुनकर, जोकि अक़्मन्दी और दिलेरीके वास्ते मश्हूर था, और पोरसके ख़ानदानमें पैदा होनेके सबब नामवर था, और जिसका इलाक़ह बादशाहकी राजधानीसे सिर्फ़ बारह मंज़िलके फ़ासिलेपर था, उसको बादशाहने फ़ौरन् फ़त्ह करनेका इरादह किया, ख़ासकर इस सबबसे, कि वह इलाक़ह उसके मौरूसी राज्य और नये फ़त्ह किये हुए मुल्कके बीचमें था. इस राजाका नाम राणा था, जो ख़िताब कि उसके ख़ानदानके सब राजाओंको हिन्दुस्तानके पुराने दस्तूरके मुवाफ़िक़ दियाजाता था. वह राजा पोरसके ख़ानदानके लाइक़ था, और अगर उसकी मदद अच्छी तरह करने वाला कोई दूसरा राजा होता, तो वह अपने मुल्ककी आज़ादी फिर हासिल करलेता, तोभी उसने बड़े दरजेकी कोशिश की, जोकि इस मुल्ककी तवारीख़में हमेशह याद रहेगी." और पृष्ठ ६४० में भी राणाका बयान एक ताक़तवर हिन्दुस्तानी रईस करके लिखा है.

मिल साहिबकी तवारीख़ हिन्दुस्तानकी सातवीं जिल्दके पृष्ठ ५७ में इस तरह लिखा है:- "उदयपुरके राणा अपनी पैदाइश रामके पुत्र लवसे बतलाते हैं, इसलिये वे

---

(१) सिरोहीके रईस चहुवान ख़ानदानसे हैं, मेवाड़के राज्यवंशमेंसे नहीं हैं, एचिसन् साहिबने ग़ल्तीसे लिखदिया है.

(२) तीमूरकी किसी लड़ाईका ज़िक्र फ़ार्सी तवारीख़ोंमें नहीं मिलता, शायद बाबरके एवज़ तीमूरलंग लिखदिया होगा, जिसकी लड़ाई महाराणा सांगासे हुई थी.

सूर्यवंशी समझे जाते हैं, और राजपूतोंमें गुहिलोत ख़ानदानकी सीसोदिया शाख़में हैं. सब राजपूत राजाओंमें वे बड़े माने जाते हैं, और दूसरे राजा लोग गद्दीपर बैठनेके समय उनके हाथसे तिलक क़बूल करते हैं, जिसका मत्लब यह है, कि उनकी गद्दी नशीनी राणाको मंजूर हुई."

इलियट साहिबकी तवारीख़की पहिली जिल्दके पृष्ठ ३५४-३६० में बल्हारा तथा सौराष्ट्र और बल्लभीके नामसे इस ख़ानदानका हाल कई इतिहास कर्त्ता लोगोंका हवाला देकर लिखा है.

थॉर्न्टन साहिबके गज़ेटिअरके पृष्ठ ७२३ में लिखा है, कि- "उदयपुरका राज्यवंश राजपूतोंमें अत्यन्त ही प्रसिद्ध है. दिल्लीके शाही ख़ानदानके साथ वहांके राजाओंने कभी रिश्तेदारी नहीं की."

रेनाल्ड साहिब बयान करते हैं, कि- "उदयपुरके राणा हमेशह राजपूतोंके ठिकानोंके सर्दार समझेगये हैं. जो लोग कि और किसी तरहसे उनको बड़ा नहीं मानते, वे भी पुराने दस्तूरके मुवाफ़िक़ उनकी .इज़्ज़त करते हैं, जिससे साबित होता है, कि राणाके बुज़ुर्गोंके हाथमें पहिले पूरा इख़्तियार था, और ग़ालिबन् उनकी मातह्तीमें सारा राजपूतानह एक ही राज्य था."

विलिअम रॉबर्टसन् साहिबकी तवारीख़ हिन्दुस्तानके पृष्ठ ३०२ में लिखा है कि- "चित्तौड़के राजा, जो हिन्दू राजाओंमें सबसे प्राचीन समझेजाते हैं, और राजपूत क़ौमोंमें सबसे बड़े हैं, अपनी पैदाइश पोरसके ख़ानदानसे बतलाते हैं."

अर्म साहिब भी रॉबर्टसन्के मुवाफ़िक़ ही लिखते हैं.

मार्शमैनकी तवारीख़ जिल्द पहिली, पृष्ठ २३ में लिखा है कि- "उदयपुरका ख़ानदान रामके बड़े बेटे लवसे पैदा हुआ है, और इसलिये हिन्दुस्तानके हिन्दू राजाओंमें बड़ा गिनाजाता है, यह ख़ानदान पहिले सूरतके मुल्कमें गया और उसने खंभातकी खाड़ीमें वल्लभीपुरको अपनी राजधानी बनाया."

माल्कम साहिबकी तवारीख़ सेन्ट्रल इण्डियाकी पहिली जिल्द के पृष्ठ २७-२८ में मालवाके बादशाह महमूद ख़ल्जीके बयानमें लिखा है, कि- "उसको चित्तौड़के कुम्भा राणाने क़ैद करलिया, और फिर मिहर्बानीकी नज़रसे छोड़दिया, और उसका .इलाक़ह वापस देदिया. उस वक़्के बयानमें सब तवारीख़ें लिखती हैं, कि बाज़ बाज़ राजपूत राजाओंने जिनमें ख़ासकर चित्तौड़के राणाओंने अपने आसपासके मुसल्मानोंसे सख़्त लड़ाई करके उनपर बड़ी बड़ी फ़त्ह हासिल की." फिर इसी तवारीख़के छत्तीसवें पृष्ठके नोटमें लिखा है कि- "उदयपुरके राणा, जो राजपूतोंमें सबसे

बड़े ख़ानदानके हैं, हमेशहसे यह अभिमान रखते हैं, कि उन्होंने मुग़ल बादशाहोंके साथ कभी शादीका सम्बन्ध नहीं किया."

मुसल्मान मुवर्रिख़ोंने लिखा है कि– "मालवाके बादशाहोंकी मुसीबतें दग़ाबाज़ी और ख़ानदानी नाइत्तिफ़ाक़ीके सबबसे हुईं, जिनकी ख़ास बुन्याद चित्तौड़के राणा सांगाकी दिलेरी और लियाक़त थी, जोकि अपने ज़मानेमें राजपूतोंका सरगिरोह मानाजाता था." और बादशाह बाबरने तुज़क बाबरीमें लिखा है कि– "इस नामवर हिन्दू राजा ने शाह महमूदके ऊपर कई बार फ़त्ह पाई, और उससे बहुतसे सूबे छीन लिये, जैसे रामगढ़, सारंगपुर, भेल्सा, और चंदेरी."

ग्रैंटडफ़की मरहटोंकी तवारीख़ जिल्द पहिलीके पृष्ठ १९-२० में लिखा है कि– "शालिवाहनने आसेरके राजाका .इलाक़ह लेलिया. यह राजा सूरजवंशके राजपूत-राजा सीसोदियाके ख़ानदानमें था, उसका पुरुषा कोसल देशसे, जिसको आजकल अवध कहते हैं, निकलकर नर्मदाके दक्षिण तरफ़ आया, और अपना राज्य जमाया, जो शालिवाहनकी फ़त्हके वक़ सोलहसौ अस्सी वर्षतक क़ाइम रहा था. शालिवाहनने उसके ख़ानदानके सब लोगोंको सिवा एक .औरतके क़त्ल करडाला, जो अपने कम .उम्र बेटेके साथ सतपुराके पहाड़ोंमें जा रही; वह लड़का चित्तौड़के राणाओंके ख़ानदानकी बुन्याद डालनेवाला हुआ."

"चित्तौड़के राणाओंसे उदयपुरके राणा निकले, जिनका ख़ानदान हिन्दुस्तानमें सबसे पुराना मानाजाता है, और ऐसा भी बयान है, कि मरहटा क़ौमकी बुन्याद डालनेवाला शख़्स उदयपुरके .ख़ानदानसे पैदा हुआ था."

एल्फ़िन्स्टनकी तवारीख़ हिन्दुस्तानके पृष्ठ ४३१ में इस तरहपर लिखा है:– "राजपूत राजा हमीरसिंह, जिसने अलाउद्दीन ख़ल्जीके वक़्में चित्तौड़को वापस लेलिया था, उसने सारी मेवाड़पर दोबारह अपना क़बज़ह किया, जिसके शामिल उसके बेटेने अजमेरको मिलालिया. जबकि मालवा दिल्लीसे अलग होगया उसवक़ मालवाके बादशाहों और मेवाड़के राजाओंसे कई बार लड़ाइयां हुईं, और बाबरके ज़मानहसे थोड़े ही पहिले मालवेका बादशाह शिकस्त पाकर राजपूत राजा सांगाका क़ैदी बना था. हमीरसे छठी पीढ़ीमें सांगा राणा हुआ, जिसने मेवाड़का इख़्तियार पानेके .अलावह भेल्सा और चंदेरीतक मालवाके पूर्वी .इलाक़ोंपर क़बज़ह करलिया. उसको मारवाड़ और जयपुरके राजा तथा दूसरे सब राजपूत राजा भी अपना सरगिरोह मानते थे."

इसी किताबके पृष्ठ ४८० में फिर लिखा है कि– "उदयपुरके राणाका ख़ानदान और क़ौम, जो पहिले गुहिलोत और पीछे सीसोदिया कहलाये, रामसे

निकले हैं, और इसलिये उनकी अस्लियत अवधसे है. पीछेसे वे गुजरातमें क़ाइम हुए, जहांसे ईडरको गये, और अख़ीरमें कर्नेल् टॉडकी रायके मुताबिक़ आठवीं सदी ईसवीके शुरूमें चित्तौड़पर क़ाइम हुए. सन् १३०३ ई० तक, जिस वक़ कि चित्तौड़ को अलाउद्दीनने लेलिया और थोड़े ही दिन पीछे राणा(हमीर) ने फिर उसको अपने तहतमें करलिया, उनका (राणाओंका) नाम तवारीख़में मश्हूर नहीं हुआ. हमीरके बाद, जिसने कि यह काम किया, कई लाइक़ राजा हुए, और उनके ज़रीएसे मेवाड़ देश राजपूतोंमें उस बड़प्पनको पहुंचा, कि जिससे सांगा (संग्रामसिंह) बाबरके बर्ख़िलाफ़ लड़ाईमें उन सबोंको (राजपूतोंको) लेजानेके लाइक़ हुआ."

टॉड नामह राजस्थानकी पहिली जिल्दके पृष्ठ २११ में इसतरहपर लिखा है:-

"मेवाड़के बादशाह (महाराजा) राणा कहलाते हैं, और सूर्यवंशी अथवा सूर्यकी औलादकी बड़ी शाखा हैं. इनका एक दूसरा ख़ानदानी ख़िताब "रघुवंशी" है. यह ख़िताब रामके बाप दादाओंमेंसे किसीके नामपर निकला है. सूर्यवंशी ख़ानदानकी हरएक शाखा रामसे निकली है. सूर्यवंशी ख़ानदानकी शाखाओंका कुर्सीनामह लिखनेवाले इसको लंका फ़त्ह करनेवालेसे निकालते हैं. अक्सर इन मुद्दइयोंके दावोंकी बाबत् तक्रार है, लेकिन् हिन्दुओंकी सब कौमें इस बातमें एकमत हैं, कि मेवाड़के महाराणा अस्लमें रामकी राज्यगद्दीके वारिस हैं, और वे उनको हिन्दुवा सूरज कहते हैं. राजसी ३६ कौमोंमेंसे सब उनको अव्वल समझते हैं, और उनके कुलीन होनेमें कभी सन्देह उत्पन्न नहीं हुआ है."

ज्यॉर्ज टॉमसने अपनी किताबके पृष्ठ १९६ में लिखा है कि- "उदयपुरका राजा वैसी ही हालतमें है, जैसा कि दिल्लीका बादशाह." इसके सिवा उक्त साहिबने अपनी इसी किताबमें महाराणाके ख़ानदानका बड़प्पन और भी कई जगह ज़ाहिर किया है.

इस घरानेके बड़प्पनकी बाबत् यूरोपिअन मुवर्रिख़ोंकी किताबोंसे ऊपर बयान किये हुए सुबूत दर्ज करनेके बाद अब कुछ लेख फ़ार्सी तवारीख़ोंसे भी चुनकर लिखेजाते हैं, जिनके बनाने वाले हमेशह उदयपुरके मुख़ालिफ़, बल्कि कुल हिन्दुओंके विरोधी रहे हैं, और जिन्होंने मज़्हबी व ख़ानदानी तअस्सुब (वैमनस्य) से ग़ैर मज़्हबी लोगों के लिये हमेशह हिक़ारतके लफ़्ज़ लिखे हैं:-

बाबर बादशाह अपनी किताब "तुज़क बाबरी" (क़लमी) के पृष्ठ २४३ में लिखता है कि- "राणा सांगाकी ताक़त इस मुल्क हिन्दुस्तानमें इस दरजेकी थी, कि अक्सर राजा और रईस उसकी बुज़ुर्गीको मानते थे, और उसके क़बज़ेका मुल्क दस करोड़की आमदनीका था, जिसमें कि हिन्दुस्तानके क़ाइदेके मुवाफ़िक़ एक लाख सवारकी गुंजाइश होसक्ती है."

इसी तरह छपी हुई किताब अक्बरनामहकी दूसरी जिल्दके पृष्ठ ३८० में लिखा है कि- "बादशाही जुलूसके बाद अक्सर ऐसे राजाओंने भी, जो कभी दूसरे बादशाहोंके फ़र्मांबर्दार (आधीन) न बने थे, इताअत (आधीनता) कुबूल करली; लेकिन् राणा उदयसिंहने, जो इस मुल्कमें अपनी बुज़ुर्गीका ख़याल रखने वाला था, और बहादुरी से अपने बुज़ुर्गोंके मुवाफ़िक़ विकट पहाड़ों और मज्बूत क़िलोंके सबब मग़्रूर था, बादशाही फ़र्मांबर्दारी कुबूल न की, इस लिये बादशाहको क़िला चित्तौड़ लेना पड़ा."

अक्बरनामहकी तीसरी जिल्दके १५१ पृष्ठमें लिखा है कि- "जब कुंवर मानसिंह मेवाड़पर बादशाही फ़ौज लेकर मांडलगढ़में पहुंचा, तो राणाने उस वक़्त ग़ुरूरके साथ बादशाही लश्करका ख़याल न करके मानसिंहको अपना मातह्त, ज़मींदार समझकर यह इरादह किया, कि उससे वहीं जाकर लड़े, लेकिन् उसके ख़ैरख़्वाहोंने उसको इस इरादेसे रोका."

इसी तरह तबक़ाति अक्बरीके २८२ पृष्ठ में लिखा है कि- "हिन्दुस्तानके अक्सर राजाओं वग़ैरहने बादशाही मातह्ती कुबूल करली थी, लेकिन् राणा उदयसिंह मेवाड़का राजा मज्बूत क़िलों और ज़ियादह फ़ौजसे मग़्रूर होकर सर्कशी करता था."

इसी किताबके ३३३ वें पृष्ठ में फिर लिखा है, कि- "राणा कीका (१) जो हिन्दुस्तानके राजाओंका सरदफ़्तर (बुज़ुर्ग) है, चित्तौड़ फ़त्ह होनेके बाद पहाड़ोंमें गोगूंदा नामी एक शहर बसाकर, जिसमें कि उसने .उम्दह .इमारतें और बाग़ तय्यार कराये थे, अपनी ज़िन्दगी सर्कशीके साथ बसर करता था."

मुन्तख़बुत्तवारीख़के पृष्ठ २१३-१४ में मौलवी अब्दुलक़ादिर बदायूनी लिखता है कि- "हलदी घाटीकी लड़ाईमें राणाका रामप्रसाद हाथी बादशाही फ़ौज वालोंके हाथ लगा, उसको मैं आंबेरके रास्तेसे आगरेको लेजाने लगा, लेकिन् रास्तेके लोग राणाकी लड़ाई और मानसिंहकी फ़त्हका हाल सुनकर उसपर यक़ीन नहीं करते थे."

छपी हुई किताब तुज़्क जहांगीरीके पृष्ठ १२२ में बादशाह जहांगीर लिखता है कि - "मैं आगरेसे अजमेरकी तरफ़ दो ग़रज़से रवानह हुआ, एक ख़्वाजिह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारत, जिसने कि हमारे ख़ानदानको बहुत फ़ैज़ पहुंचाया है, और तख़्तनशीनी के बाद में वहां नहीं गया था; दूसरे राणा अमरसिंहका रफ़ा दफ़ा करना, जोकि हिन्दुस्तानके मोतबर राजाओंमेंसे है, और उसकी व उसके बाप दादोंकी बुज़ुर्गी और सर्दारीको इस मुल्कके राजा और रईस मानते हैं. बहुत मुद्दत गुज़री, कि हुकूमत और

---

(१) अक्बर नामह और तबक़ाति अक्बरी वग़ैरह किताबोंमें महाराणा प्रतापसिंहको कीका लिखा है, जो उनका कुंवरपदे और बचपनका नाम था.

रियासत इस घरानेमें है. एक अरसेतक पूर्वी .इलाक़ोंमें इनकी हुकूमत थी, और उस वक़्त ये लोग राजाके ख़िताबसे मश्हूर थे. इसके बाद दकन (दक्षिण) में जारहे, और वहांका अक्सर .इलाक़ह अपने क़बज़ेमें किया, राजाके .एवज़ रावलका लक़ब अपने नामपर दाख़िल किया, इसके बाद मेवाड़के पहाड़ोंमें आये, और धीरे धीरे क़िले चित्तोड़को क़बज़ेमें करलिया. उसवक्तसे अबतक, कि यह मेरे जुलूसका आठवां वर्ष है, चौदह सौ इकत्तर वर्ष हुए, २६ ऐसे आदमी हुए हैं, जो रावल ख़िताब रखते थे, और जिनकी हुकूमतका ज़मानह एक हज़ार और दस साल होता है; और सबसे पहिले रावल (१) से लेकर राणा अमरसिंहतक २६ पीढ़ियां होती हैं, जिन्होंने चार सौ इकसठ वर्ष राज्य किया है. इस अरसेमें उन्होंने हिन्दुस्तानके किसी बादशाहकी आधीनता नहीं की है. बाबर बादशाहसे राणा सांगाकी लड़ाई मश्हूर है, और अक्बर बादशाहका मज्बूत क़िले चित्तोड़को लेना भी सब जानते हैं. राणासे .इताअत कराना बाक़ी रहगया था, और यह मुहिम (महत्कार्य) मेरे पिताने मेरे सुपुर्द की थी, इसलिये मैंने अपनी सल्तनतके वक़्में इसे पूरा करना चाहा."

तवारीख़ फ़िरिश्तहके ५४ एष्ठमें मुहम्मद क़ासिम लिखता है कि - "राजा वीर विक्रमादित्यके ज़मानेके अगले राजाओंमेंसे बादशाह जहांगीरके इस ज़मानहतक ऐसा कोई न रहा, जिसका नाम लियाजावे, अल्बत्तह एक राजा राणा राजपूत है, जिसके घरानेमें मुसल्मानी ज़मानहके पहिलेसे राज्य चला आता है."

मुन्तख़बुल्लुबाबकी पहिली जिल्दके एष्ठ १७२-७३ में ख़फ़ीख़ां लिखता है कि - "जबसे अक्बर बादशाहने क़िले चित्तोड़को फ़तह करके वीरान करदिया है, राणा और उसके आदमियोंने पहाड़ोंके भीतर उदयपुर नामकी एक आबादी बसाई है. यह किताब लिखनेवाला (ख़फ़ीख़ां) जिन दिनोंमें कि ईरानके एक शाहज़ादह ख़लीफ़ा सुल्तानके साथ मुसाफ़िर और मिह्मानके तौर उस मुल्कमें गया, तो राणाकी ख़्वाहिशसे उसकी दावत क़बूल करनेके लिये उसे कई रोज़तक ठहरनेका इत्तिफ़ाक़ हुआ. राणाकी साइर, राहदारी, और फ़ौजदारी वग़ैरह सीग़ोंकी आमदनीके सिवा मालकी

---

(१) "तुज़क जहांगीरी" में पहिला रावल लिखा है, परन्तु अस्लमें यह पहिला राणा मालूम होता है, जिसको बादशाहने अथवा किताब छापने वालेने भूलसे रावल लिखदिया होगा, क्योंकि महाराणा अव्वल अमरसिंहसे पहिले छब्बीसवीं पीढ़ीमें राणा राहप हुआ है, जिसने पहिले पहिल राणाका पद धारण किया. इसी तरह २६ रावल और २६ राणाओंके राज्य समयके वर्षोंकी संख्या (१४७१ वर्ष) में भी बहुत कुछ फ़र्क़ है, जो बादशाह जहांगीरने मेवाड़के तवारीख़ी हालातसे कम वाक़िफ़ होनेके कारण जैसा सुना वैसा ही लिखदिया होगा.

आमदनी एक करोड़से ज़ियादह है." और आगे लिखता है कि - "हिन्दुस्तान भरमें उस से बढ़कर कोई रईस नहीं है, और वह बादशाहको अपनी लड़की नहीं ब्याहता है."

तारीख़ सैरुल्मुतअख़िरीनके पृष्ठ ३८-३९ में सय्यद गुलामहुसैन राजपूतानह की बाबत् लिखता है कि - "इसका दक्षिणी पहाड़ी .इलाक़ह अक्सर राणाके क़बज़ेमें है, जिसके .इलाक़ेमें चित्तौड़गढ़, मांडलगढ, कुम्भलगढ़, मश्हूर क़िले हैं. इन लोगोंकी बड़ी लड़ाइयां बादशाह अलाउद्दीनसे लेकर अक्बर और उसकी औलादके ज़मानहमें अक्सर मश्हूर हैं."

इसी तरह प्राचीन और नवीन अरबी, फ़ार्सी, उर्दू व हिन्दी पुस्तकोंमेंसे बहुत थोड़ी ऐसी निकलेंगी, कि जिनमें हिन्दुस्तानका इतिहास हो और उदयपुरके महाराणाओंका बड़प्पनके साथ वर्णन न हो. यदि उन सब किताबोंका आशय यहां लिखा जावे, तो एक छोटीसी पुस्तक बनसक्ती है. इस घरानेकी बड़ाईके कई कारण हैं. अव्वल तो यह, कि हिन्दुस्तानमें सूर्य और चंद्रवंशके राजा बड़े समझेगये हैं, और उनमें भी ककुत्स्थके कुलमें महाराजा रामचंद्रका वंश मुख्य मानागया है, जिसकी शाखाओंमेंसे अव्वल उदयपुरका खानदान है. दूसरे, यह खानदान बड़े अरसेसे आज दिनतक प्रतिष्ठित राजाओंमें बनारहा है. तीसरे इस ख़ानदानके राजाओंने हिन्दुस्तानके मुसल्मान बादशाहोंसे बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़कर अपने बड़प्पनको बचाया है; अल्बत्तह जहांगीर बादशाहके वक्तसे दबाव पड़नेपर महाराणा अमरसिंह अव्वलने अपने बड़े पुत्र कर्णसिंहको बादशाही ख़िद्मतमें भेजदिया और उसी समयसे अपने वलीअह्द (पाटवी पुत्र) का दरजह उमरावोंसे नीचा माना. अगर्चि मुग़ल बादशाहोंने युवराजके आनेसे अपनी मुराद हासिल होना मानलिया, और महाराणाने इसको एक नौकरका भेजना ख़याल करके अपने दिलको तसल्ली दी. इसतरह दोनों तरफ़ साम, दान, दंड, भेद चारों उपाय चलते रहे; लेकिन् हिन्दुस्तानके हरएक बादशाहने उदयपुरके ख़ानदानको हिन्दुस्तानियोंमें सबसे बड़ा माना. इसके सिवा मुसल्मानोंके मुवाफ़िक़ किसी मज़्हबके लोगोंसे इस खानदानने द्वेष भाव नहीं रक्खा, जिसका पहिला सुबूत तो यह है, कि जैन मत वालोंने मेवाड़को पनाहकी जगह मानकर अपने मतके सैकड़ों बड़े बड़े मन्दिर बनवाये, और यहांके राजाओंने उनके बननेमें पूरी मदद दी. सिवा इसके अगर्चि यहांके राजा प्राचीन कालसे शैव हैं, परन्तु उन्होंने नाथद्वारा व कांकडौलीके मतावलंबियोंको बादशाह आलमगीरके भयसे बचाया, और शाक्त मतवालोंको भी कभी न सताया, जिनके इस राज्यमें बड़े बड़े प्रतिष्ठित मन्दिर हैं. इस राज्यमें सब मज़्हबके पेश्वाओंका आदर

सन्मान होता है. उपरोक्त कारणों तथा इसी प्रकारकी अन्य अन्य बातोंसे मेवाड़के महाराणाओंका बड़प्पन आजतक बहाल है.

अब हम मेवाड़के राजाओंकी प्राचीन वंशावली लिखना शुरू करते हैं, जिसमें पहिले तो वह वंशावली लिखेंगे, जो संस्कृत ग्रन्थोंसे मिलती है, और जिसको सब हिन्दुस्तानके लोग मंजूर करते हैं. अगर्चि महाभारतके हरिवंश तथा कालीदासके रघुवंश और श्री मद्भागवतके नवम स्कंधकी पीढ़ियोंमें कुछ कुछ अंतर है, परन्तु हमको भागवतके अनुसार पीढ़ियां लिखनी चाहियें, जो ग्रन्थ कि हिन्दुस्तानके अधिक हिस्सोंमें प्रचलित है, और वे निम्न लिखित हैं:-

आदि नारायण	कृशाश्व	अंशुमान	रामचन्द्र
ब्रह्मा	सेनजित	दिलीप	कुश
मरीचि	युवनाश्व - २	भगीरथ	अतिथि
कश्यप	मांधाता	श्रुत	निषध
विवस्वान (सूर्य)	पुरुकुत्स	नाभ	नभ
मनु (वैवस्वत)	त्रसदस्यु	सिंधु द्वीप	पुण्डरीक
इक्ष्वाकु	अनरण्य	अयुताय	क्षेमधन्वा
विकुक्षि	हर्यश्व - २	ऋतुपर्ण	देवानीक
पुरंजय (ककुत्स्थ)	अरुण	सर्वकाम	अनीह
अनेना (वेन)	त्रिबन्धन	सुदास	पारियात्र
पृथु	सत्यव्रत (त्रिशंकु)	मित्रसह (कल्माषपाद)	बल
विश्वरंधि	हरिश्चंद्र		स्थल
चन्द्र	रोहित	अश्मक	वज्रनाभ
युवनाश्व - १	हरित	मूलक (नारीकवच)	खगण
शावस्त	चंप	दशरथ - १	विधृति
वृहदश्व	सुदेव	ऐडविड	हिरण्यनाभ
कुवलयाश्व (धुंधुमार)	विजय	विश्वसह	पुष्य
	भरुक	खट्वाङ्ग	ध्रुवसन्धि
दृढाश्व	वृक	दीर्घवाहु (दिलीप)	सुदर्शन
हर्यश्व - १	वाहुक	रघु	अग्निवर्ण
निकुम्भ	सगर	अज	शीघ्र
वर्हणाश्व	असमंजस	दशरथ - २	मरु

प्रसुश्रुत	वत्सवृद्ध	सुनक्षत्र	शाक्य
संधि	प्रतिव्योम	पुष्कर	शुद्धोद
अमर्षण	भानु	अंतरीक्ष	लांगल
महस्वान	दीवाक	सुतपा	प्रसेनजित् – २
विश्वसाह्व	सहदेव	अमित्रजित्	क्षुद्रक
प्रसेनजित् – १	वृहदश्व	वृहद्राज	रणक
तक्षक	भानुमान	वर्हि	सुरथ
वृहद्बल	प्रतीकाश्व	कृतंजय	सुमित्र
वृहद्रण	सुप्रतीक	रणंजय	
उरुक्रिय	मरुदेव	संजय	

यहांतक तो भागवतके नवम स्कंधसे वंशावली लिखी गई है, जिसमें किसीको कुछ शंका नहीं है; परन्तु इस बातमें अल्बत्तह शंका है, कि भागवतमें तो सुमित्रसे आगे वंश चलना ही नहीं लिखा है, और हिन्दुस्तानके जितने सूर्यवंशी राजपूत हैं, वे सब अपना मूल पुरुष सुमित्रको मानते हैं. इसकी बाबत् मेरा (कविराजा श्यामलदासका) ख़याल यह है, कि अयोध्यामें सूर्य वंशियोंका राज्य सुमित्रतक रहा होगा, अथवा राजा सुमित्रके पुत्रोंने वेदमत छोड़कर बौद्धधर्म इख़्तियार करलिया होगा, इसलिये ब्राह्मणोंने उनके नाम सूर्यवंशकी वंशावलीसे निकालदिये होंगे, यह नहीं कि वंश ही नष्ट होगया हो, क्योंकि सूर्य वंशके बड़े राजा रामचन्द्रकी औलादमें उदयपुरके ख़ानदानका होना बहुत सहीह मालूम होता है, हां यह बात ज़ुरूर है, कि सुमित्रसे पीछे वल्लभीके राजा भट्टारकतक अथवा गुहिलतक वंशावलीमें सन्देह है, सो मालूम होता है, कि अस्ली नाम तो उन राजाओंके लुप्त होगये, और बड़वा भाटोंने अपनी पोथियोंको मोतबर साबित करनेके लिये मन माने नाम घड़कर लिखदिये हैं, और क़रीब क़रीब उन्हींके मुताबिक़ उदयपुर राज्यकी वंशावलीके जोतदानोंमें भी लिखे हैं जो ये हैं:–

वीर्यनाभ	अजासेन	हरादित्य	देवादित्य
महारथि	अभंगसेन	सुयशादित्य	आशादित्य
अतिरथि	महामदनसेन	सोमादित्य	भोजादित्य
अचलसेन	सिद्धरथ	शिलादित्य	ग्रहादित्य
कनकसेन	विजयभूप	केशवादित्य	
महासेन	पद्मादित्य	नागादित्य	
दिग्विजयसेन	शिवादित्य	भोगादित्य	

ऊपर लिखेहुए नामोंमें शायद कुछ सहीह भी हों, लेकिन् कल्पित नामोंके साथ मिलजानेसे उनका जुदा करना कठिन होगया. हमने ये नाम उदयपुर राज्यकी वंशावली के जोतदानोंसे लिखे हैं, क्योंकि ख्यातिकी पोथियोंमें देखिये, तो एकके नाम दूसरीके नामोंसे आपसमें नहीं मिलते, किसीमें बीस नाम ज़ियादह हैं और किसीमें कम; और ऐसी हालतमें ग्रन्थकार किसी एकपर पूरा पूरा भरोसा नहीं करसक्ता. अब हम बापा रावलसे महाराणा हमीरसिंहके बीचकी वंशावली भी उन्हीं जोतदानोंसे लिखते हैं:-

बापा रावल	कीर्तिब्रह्म	वेरड	पूर्णपाल
खुमाण	नरब्रह्म	वैरसिंह	पृथ्वीमल्ल
गोविंद	नरवे	तेजसिंह	भूणंगसिंह
महेंद्र	उत्तम	समरसिंह	भीमसिंह
अल्लु	भैरव	करण	जयसिंह
सिंह	कर्णादित्य	राहप राणा	गढमंडलीक लक्ष्मण-सिंह
शक्तिकुमार	भावसिंह	नरपति	अरिसिंह
शालिवाहन	गात्रसिंह	दिनकर	अजयसिंह
नरवाहन	हंसराज	जसकर	
अंबापसाव	जोगराज	नागपाल	

इन ऊपर लिखे हुए नामोंमें भी बहुतसे नाम सहीह हैं, परन्तु उनके नम्बर वगैरहमें कहीं कहीं फ़र्क़ पड़गया है, याने कहींपर पहिला नाम पीछे और कहीं पिछला पहिले करदिया गया है, और कई असल नाम दर्ज ही नहीं कियेगये, और बहुतसे बनावटी नाम भी लिखदिये गये हैं.

अब यहांपर महाराणा हमीरसिंहसे वर्तमान समय तककी वंशावली दर्ज कीजाती है, जिसमें किसी तरहका शक व शुब्ह नहीं है:-

हमीरसिंह - १	विक्रमादित्य	अमरसिंह - २	जवानसिंह
क्षेत्रसिंह (खेता)	उदयसिंह	संग्रामसिंह - २	सर्दारसिंह
लक्षसिंह (लाखा)	प्रतापसिंह - १	जगत्सिंह - २	स्वरूपसिंह
मोकलसिंह (मोकल)	अमरसिंह - १	प्रतापसिंह - २	शम्भुसिंह
कुंभकर्ण (कुंभा)	कर्णसिंह	राजसिंह - २	सज्जनसिंह
रायमल्ल	जगतसिंह - १	अरिसिंह	फ़तहसिंह
संग्रामसिंह (सांगा) १	राजसिंह - १	हमीरसिंह - २	
रत्नसिंह	जयसिंह	भीमसिंह	

हमने इस वंशावलीके उपरोक्त चार हिस्से किये हैं, जिनमेंसे पहिला और चौथा हिस्सह तो सन्देह करनेके लाइक़ नहीं, लेकिन् दूसरा बिल्कुल अंधकारमें छिपा हुआ है, और तीसरा ऐसा है, कि जिसको न हम पूरा पूरा सहीह मान सक्ते और न ग़लत ही कह सक्ते हैं. जैसी ग़लती कि पहिले बयान होचुकी है उसीके मुवाफ़िक़ बड़वा भाटोंने बापा रावलका संवत् १९१ मानकर क्रमसे आज पर्यंत बहुतसे राजाओंके राज्याभिषेक तथा राज्यावधिके संवत् और कई राजाओंके नाम भी बनावटी लिखदिये हैं, जो नीचे लिखे जाते हैं:-

नम्बर.	नाम महाराणा.	राज्याभिषेकका संवत् विक्रमी.	राज्याधिकारका समय.			कैफ़ियत.
			वर्ष.	महीना.	दिन.	
१	रावल बापा	१९१	१०१	१	३	
२	रावल खुमाण	२९२	६०	१	५	
३	रावल गोविन्द	३५२	२९	३	९	
४	रावल महेन्द्र	३८१	७०	०	९	
५	रावल अल्लु	४५१	७०	२	११	
६	रावल सिंहा	५२१	४१	९	१	
७	रावल शक्तिकुमार	५६२	२५	१	३	
८	रावल शालिवाहन	५८७	३१	१	५	
९	रावल नरवाहन	६१८	२८	३	२	
१०	रावल अंबापसाव	६४६	४५	०	४	
११	रावल कीर्तिवर्म	६९१	४१	१	१	

नम्बर.	नाम महाराणा.	राज्याभिषेक का संवत् विक्रमी.	राज्याधिकारका समय.			कैफ़ियत.
			वर्ष.	महीना.	दिन.	
१२	रावल नरवर्म	७३२	२१	३	७	
१३	रावल नरवै	७५३	२६	३	८	
१४	रावल उत्तम	७७९	१७	२	५	
१५	रावल भैरव	७९६	११	३	३	
१६	रावल कर्णादित्य	८०७	३२	३	७	
१७	रावल भावसिंह	८३९	४१	५	१	
१८	रावल गात्रसिंह	८८०	४६	१	९	
१९	रावल हंसराज	९२६	३५	३	१८	
२०	रावल योगराज	९६१	३५	३	२	
२१	रावल वैरड़	९९६	४०	५	९	
२२	रावल वैरिसिंह	१०३६	३०	९	१४	
२३	रावल तेजसिंह	१०६६	४०	५	१३	
२४	रावल समरसिंह	११०६	५२	११	५	
२५	रावल रत्नसिंह	११५८	१	३	५	
२६	रावल करणसिंह	११५९	४२	१	२५	

नम्बर.	नाम महाराणा.	राज्याभिषेक का संवत् विक्रमी.	राज्याधिकारका समय.			कैफ़ियत.
			वर्ष.	महीना.	दिन.	
२७	राणा राहप	१२०१	६१	३	५	
२८	राणा नरपति	१२६२	३३	५	१५	
२९	राणा दिनकरण	१२९५	६	६	३	
३०	राणा जसकरण	१३०१	५	२	१	
३१	राणा नागपाल	१३०६	५	६	९	
३२	राणा पूर्णपाल	१३११	४	२	२८	
३३	राणा पृथ्वीपाल	१३१५	४	३	९	
३४	राणा भूणसिंह	१३१९	३	५	९	
३५	राणा भीमसिंह	१३२२	४	५	९	
३६	राणा जयसिंह	१३२६	५	३	५	
३७	राणा गढ़लक्ष्मणसिंह	१३३१	१५	३	४	
३८	राणा अरिसिंह	१३४६	०	१	०	
३९	राणा अजयसिंह	१३४६	११	४	३	
४०	राणा हमीरसिंह	१३५७	६४	७	४	
४१	राणा क्षेत्रसिंह	१४२१	१८	४	१०	

नम्बर.	नाम महाराणा.	राज्याभिषेक का संवत विक्रमी.	राज्याधिकारका समय.			कैफ़ियत.
			वर्ष.	महीना.	दिन.	
४२	राणा लक्षसिंह (लाखा)	१४३९	१५	४	१	
४३	राणा मोकल	१४५४	२१	१	३	
४४	राणा कुम्भा	१४७५	५०	३	४	
४५	राणा ऊदा	१५२५	५	५	५	
४६	राणा रायमल्ल	१५३०	३५	१	२	
४७	राणा संग्रामसिंह (सांगा)	१५६५	२१	५	९	1586 56 1530
४८	राणा रत्नसिंह	१५८६	४	४	५	
४९	राणा विक्रमादित्य	१५९०	२	७	३	
५०	राणा उदयसिंह	१५९२	३६	२	१	1592 57 1535
५१	राणा प्रतापसिंह	१६२८	२४	१०	२६	1573-97 1597
५२	राणा अमरसिंह	१६५२	२४	०	०	
५३	राणा करणसिंह	१६७६	८	०	१०	
५४	राणा जगत्सिंह	१६८४	२५	१	१६	
५५	राणा राजसिंह	१७०९	२८	२	६	
५६	राणा जयसिंह	१७३७	१८	६	२८	

नम्बर.	नाम महाराणा.	राज्याभिषेक का संवत् विक्रमी.	राज्याधिकारका समय.			कैफ़ियत.
			वर्ष.	महीना.	दिन.	
५७	राणा अमरसिंह	१७५५	१२	३	५	
५८	राणा संग्रामसिंह	१७६७	२३	८	९	
५९	राणा जगत्सिंह	१७९०	१७	१०	११	
६०	राणा प्रतापसिंह	१८०७	२	७	१०	
६१	राणा राजसिंह (१)	१८१०	७	२	१२	
६२	राणा अरिसिंह	१८१७	१२	११	१८	
६३	राणा हमीरसिंह	१८२९	५	८	९	
६४	राणा भीमसिंह	१८३४	५०	३	७	
६५	राणा जवानसिंह	१८८४	१०	४	२०	
६६	राणा सर्दारसिंह	१८९५	३	९	२३	
६७	राणा स्वरूपसिंह	१८९८	१९	४	६	
६८	राणा शम्भुसिंह	१९१८	१२	१०	१२	ये दोनों नाम हमने वंशावली के क्रमानुसार अपने तौरपर लिखे हैं.
६९	राणा सज्जनसिंह	१९३१	१०	३	९	

(१) इस वंशावलीमें कहीं कहीं तो एक राजाके गद्दी विराजनेके संवत्से उसके राज्य समयके वर्ष और महीने सब जोड़कर दूसरे राजाके गद्दी विराजनेका संवत् हिसाबसे दर्ज किया है, और कहीं केवल वर्षोंका ही हिसाब रक्खा है, महीने नहीं जोड़े; परन्तु यह वंशावली बड़वा भाटोंकी पोथियोंसे लीगई है, इसलिये भरोसेके लाइक़ नहीं है.

संस्कृत ग्रन्थों और ख्यातिकी पोथियों अथवा बड़वा भाटोंके लेखोंसे लिखीहुई उपरोक्त वंशावली पाठकोंको इसलिये दिखलाई गई है, कि वे उसकी बाबत अपनी राय देनेमें मज़्बूतीके साथ क़लम उठावें.

अब हम अपनी तह्क़ीक़ात और रायके मुवाफ़िक़ मेवाड़का इतिहास प्रारम्भ करते हैं.

मेवाड़के राजाओंका ख़ानदान पहिले सूर्यवंशी, फिर गुहिलपुत्र, और गुहिलोत, और उसके बाद सीसोदियाके नामसे मश्हूर है. हम ऊपर लिख आये हैं, कि अयोध्याके राजा सुमित्रसे पहिलेकी वंशावलीमें सन्देह करनेकी गुंजाइश नहीं है; केवल अर्थ करनेके समय यदि कोई विद्वान एक दो नामका फ़र्क़ कहीं बतलावे, तो उसका यह कारण जानना चाहिये, कि शायद वह किसी विशेषणको नाम और नामको विशेषण बतलावेगा; और महाराजा सुमित्रके बाद वीर्यनाभसे ग्रहादित्यतक वंशावलीको सहीह बतलानेके लिये किसी तरहका सुबूत नहीं मिलता, अल्बत्तह कुछ नाम सहीह होंगे, जैसे विजयभूप और कनकसेन वग़ैरह, जिनको कर्नेल् टॉडने भी वल्लभीके पूर्वजोंमें होना ख़याल किया है. ख्यातिकी पोथियोंमें अयोध्याका राज्य छूटनेके बाद इनका राज्य दक्षिणके विजयपुर (विराटगढ़) स्थान में क़ाइम होना लिखा है, परन्तु कर्नेल् टॉडने सौराष्ट्र देशमें वल्लभीके राजाओंको मेवाड़का पूर्वज बतलाया है.

एशियाटिक सोसाइटी बंगालकी सौ वर्षकी रिपोर्टके एष्ठ ११४-११८में लिखा है, कि " ईसवी १८२९ [वि० १८८६ = हि० १२४४] में कर्नेल् टॉडके ज़रीएसे यह मालूम हुआ, कि वल्लभीके राजाओंका एक ख़ानदान है. उन्होंने अपने राजस्थानके इतिहासमें कईएक जैन लेखोंसे दर्याफ़्त करके यह बयान किया था, कि गुहिलोत राजपूतोंने दूसरी शताब्दीके मध्यके कुछ दिनों पीछे या तो वल्लभीपुरकी बुन्याद डाली, या उसपर क़ब्ज़ा पाया; परन्तु वहांके राजाओंके नाम जिनके बारेमें विशेष वर्णन किया, ये थे:-

कनकसेन, जिसने इस ख़ानदानकी बुन्याद डाली; विजय, जिसने कई पीढ़ियों पीछे अनेक नगर बसाये; शिलादित्य, जो इस ख़ानदानका आख़री राजा था, और जिसके समयमें जंगली लोगोंने (जो कदाचित् किसी क़ौमके मुसल्मान थे, जैसा कि पिछली तह्क़ीक़ातसे मालूम हुआ है) वल्लभीपुरको घेरकर लेलिया.

ईसवी १८३५ [वि० १८९२ = हि० १२५१] में डब्ल्यु० एच्० वाथन साहिबने दो ताम्रपत्र छपवाये, जो कुछ वर्ष पहिले गुजरातकी ज़मीनके भीतर मिले थे; उनसे वह उक्त ख़ानदानके सोलह राजाओंका नाम क्रम पूर्वक मालूम करनेके योग्य हुआ.

तीन वर्ष बाद ईसवी १८३८ [वि० १८९५ = हि० १२५४] में मिस्टर जे० प्रिन्सेप्ने एक और नाम तीसरे ताम्रपत्रसे वढ़ाया, जो कि डॉक्टर ए० वर्सने मक़ाम खेड़ा में दर्याफ़्त किया था. ईसवी १८७७ और १८७८ [वि० १९३४–३५ = हि० १२९४–९५] में दो और नाम डॉक्टर जी० बुलरने दर्याफ़्त किये, जोकि अब वल्लभीके राजाओंकी फ़िहरिस्तको पूरा करते हैं, और उनको गिनतीमें १९ तक लाते हैं. उक्त फ़िहरिस्त नीचे लिखे मुवाफ़िक़ है. जो राजा कि राजगद्दीपर बैठे हैं उनके नामोंके शुरूमें क्रमसे अंक लगादियेगये हैं, और जिनके नामोंपर गिनतीका निशान नहीं है, उन्होंने राज्य नहीं किया है. जिन नामोंपर * और † निशान है उनको मिस्टर प्रिन्सेप् और डॉक्टर बुलरने बढ़ाया है.
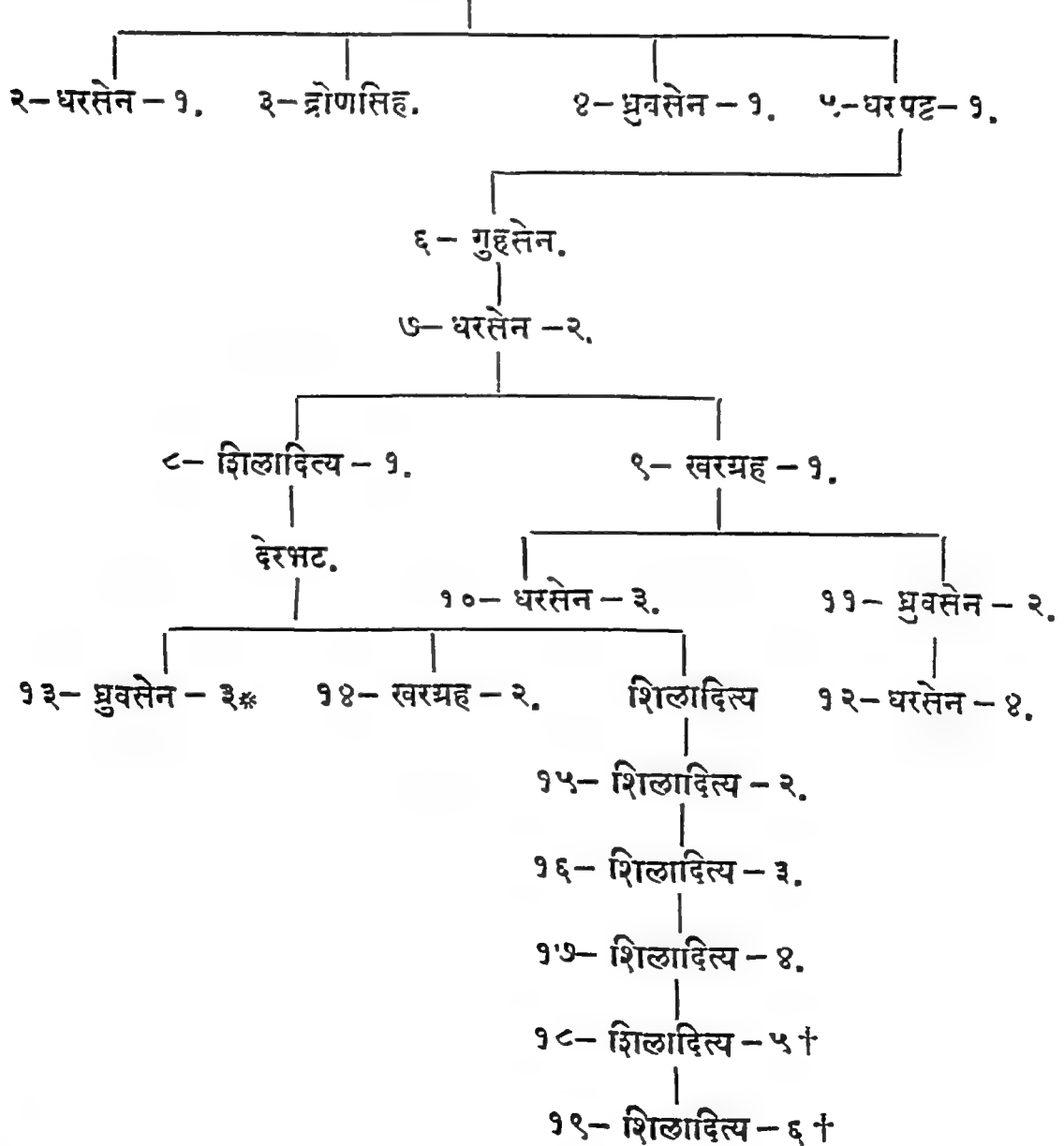
मिस्टर वाथनने बयान किया है, कि दो वल्लभी राजाओंके भूमिदानकी शर्तोंसे मालूम हुआ, कि इस ख़ानदानके सबसे पहिले दो शख़्स एक मुखिया राजाके यहां, जिसने गुजरातका मुल्क उनके सुपुर्द किया था, सेनापति याने फ़ौजी हाकिमके तौरपर उस समयमें नौकर थे, जबकि ऊपर लिखीहुई वंशावलीमेंसे तीसरे नम्बरवाले शख़्स (द्रोणसिंह) को उसके राजाने, जोकि एक बड़ा शहन्शाह, अर्थात् हिन्दुस्तान का चक्रवर्ती था, राजा बनाया. पिछली तह्क़ीक़ातोंसे ज़ाहिर होता है, कि यह बड़ा राजा हर हालतमें गुप्तके नामी ख़ानदानका दूसरा चन्द्रगुप्त था; और यह भी, कि यदि स्वाधीनताका बादशाही रुत्बा वल्लभीके सब राजाओंका नहीं, तथापि बहुतसे राजाओंका केवल नामके लिये था.

वल्लभीके ताम्रपत्रोंसे एक दूसरा बहुत मुफ़ीद हाल यह मिला है, कि क़रीब क़रीब उन सबोंमें उनके ज़मानेकी तारीख़ है. वाथन और प्रिन्सेप् इन दोनों साहिबोंने उन दानपत्रोंको पढ़कर उनका मत्लब निकालनेके लिये कोशिश की थी, परन्तु पूरा पूरा मत्लब हासिल न हुआ, और पीछेसे फिर वे सब अच्छी तरह पढ़े गये; लेकिन् उन सब ताम्रपत्रोंके संवतोंकी बाबत् निश्चय करना बहुत कठिन हुआ, कि उनमे कौनसा संवत् लिखा है. कर्नेल् टॉडने राजस्थानके इतिहासमें लिखा है, कि वल्लभीके राजाओंने अपने ही नामका एक संवत् चलाया था, जो वल्लभी संवत् कहलाता था, और जिसका पहिला संवत् ईसवी ३१९ [वि० ३७६] के मुताबिक़ था. इसी लेखके अनुसार वाथन साहिबने विचार किया, कि इन ताम्रपत्रोंके संवत् उस ख़याल किये हुए वल्लभी संवत्के मुताबिक़ मानने चाहियें; और ऐसा करनेसे वल्लभीका ख़ानदान चौथीसे आठवीं सदी ईसवी तक अर्थात् ईसवी ३१९ से ईसवी ७६६ [वि० ३७६ से ८२३ = हि० १४९] तक होता है, क्योंकि सबसे पिछले ताम्रपत्रमें संवत् ४४७ लिखा है. ईसवी १८३८ [वि० १८९५ = हि० १२५४] में प्रिन्सेप् साहिबने इस बातपर फिर विचार करके यह निश्चय किया, कि वल्लभी दानपत्रोंके संवत् विक्रमी संवत्के अनुसार होने चाहियें, जिसका कि पहिला संवत् सन् ईसवीसे ५६ वर्ष पहिले था. उनकी दलील यह थी, कि ताम्रपत्रमें वल्लभी संवत् नहीं लिखा है, इसलिये केवल संवत् मात्र शब्दसे विक्रमादित्यका संवत् समझना चाहिये. फिर उन ताम्रपत्रोंको दोबारह पढ़नेसे यह मालूम हुआ, कि वे तीसरी और चौथी सदीके थे. इससे मालूम होता है, कि प्रिन्सेप् साहिबने ख़याल किया, कि यदि उन दानपत्रोंके संवत् वल्लभी संवत्के अनुसार गिने जावें, तो वल्लभीके राजाओंका ज़मानह दूसरे प्रमाणोंकी अपेक्षा बहुत पीछे होगा. दस वर्ष उपरान्त इस विषयपर फिर विचार हुआ, तो ईसवी १८४८ [वि० १९०५ = हि० १२६४] में टॉमस साहिबने इरादह किया, कि वल्लभीके ताम्रपत्रोंके संवतोंको शक संवत् मानना चाहिये, और यही राय ईसवी १८६८ [वि० १९२५

=हि० १२८५] में डॉक्टर भाउदाजीने, और ईसवी १८७२ [वि० १९२९ = हि० १२८९] में प्रोफ़ेसर रामकृष्ण गोपाळ भंडारकरने ज़ाहिर की. इसके मुख्य कारण ये थे, कि वल्लभीके ताम्रपत्रोंके समयमें दूसरे लेखोंमें शक संवत् प्रचलित था, और वही संवत् सौराष्ट्रके क्षत्रप वंशवाले चलाते थे; इससे ज़ियादहतर यही अनुमान हुआ, कि वल्लभी ख़ानदानने, जो क्षत्रपोंके ख़ानदानको निकालकर आप मालिक बना, उसी संवत्को जारी रक्खा, जो उनके पहिलेवाले राजाओं (क्षत्रपों) के समयमें जारी था. तीन वर्षके बाद, याने ईसवी १८७५ [वि० १९३२ = हि० १२९२] में डॉक्टर जी० बुलर साहिबने एक नये दानपत्रसे यह साबित करदिया, कि वल्लभीके दानपत्रोंका संवत्, जो शक संवत् अनुमान कियाजाता था, वह अनुमान मंज़ूर होनेके लाइक़ न था. ईसवी १८७८ [वि० १९३५ = हि० १२९५] में फिर कोशिश कीगई, और उस समय डॉक्टर जी० बुलरने एक और नये दानपत्रसे मालूम किया, कि छठा शिलादित्य जो हालकी फ़िह्रिस्तमें आख़री है, ध्रुवभट कहलाता था, जैसा कि एम० युजेनी जैकेटने ४० वर्षसे ज़ियादह अरसह हुआ, ईसवी १८३६ [वि० १८९३ = हि० १२५२] में यह बयान किया था, कि चीनी यात्री ह्युएन्त्सांग भी उस राजाको उसी नामसे जानता था, जबकि उसने ईसवी ६३९ [वि० ६९६ = हि० १८] के थोड़े ही समय पीछे उक्त राजासे मुलाक़ात की थी; और यह बात ठीक थी, क्योंकि छठे शिलादित्यका दानपत्र संवत् ४४७ का लिखा हुआ था, इसलिये पहिला साल उन पत्रोंके संवत्का या तो सन् २०० ईसवी के कुछ दिनों पहिले होना चाहिये, या कुछ दिनों पीछे. इसी अरसेमें गुप्त ख़ानदानकी बाबत् इल्म तारीख़में तलाश करनेसे मालूम हुआ, कि गुप्त संवत्का शुरू साल या तो १६६ ईसवीमें होना चाहिये, या उस तारीख़ और सन् २०० ईसवी के कुछ वर्ष बीचमें. आख़ीरमें यह राय क़ाबिल यक़ीन है, कि जो संवत् वल्लभीके दानपत्रोंमें लिखा है, वह गुप्त संवत् है, जिसका बर्ताव वल्लभी ख़ानदानमें गुप्त ख़ानदानके नष्ट होजानेके बाद बराबर जारी रहा, जिस ख़ानदानके तह्तमें कि वे कुछ दिनोंतक मातह्त राजाओंके तौरपर रहे थे. यह बात ठीक है, कि वल्लभीके खानदानका राज्य कमसे कम २४० वर्षतक ग्यारह पीढ़ियोंमें रहा, क्योंकि ध्रुवसेनका सबसे पुराना दानपत्र संवत् २०७ का और छठे शिलादित्यका सबसे पिछला दानपत्र संवत् ४४७ का लिखा हुआ है, और इससे यह पायागया, कि यह ख़ानदान सन् ईसवी की दूसरी (१) सदीके अंतसे लेकर सातवीं सदीके मध्यतक रहा."

(१) अस्ल किताबके पृष्ठ ११८ में दूसरी सदी लिखा है, परन्तु उसकी जगह चौथी सदी होना चाहिये.

गुप्त संवत्के विषयमें जे० एफ़० फ्लीट साहिबने इण्डियन ऐंटिक्वेरीकी जिल्द १५ के एष्ठ १८९ में इस तौरपर लिखा है कि- "मंदसोरके कुमारगुप्त और बंधुवर्मन्की प्रशस्ति मालूम होनेके समयतक गुप्त संवत्के बारेमें केवल अल्बेरूनीका बयान काममें आता था, जिसने ग्यारहवीं सदी ईसवीके पूर्वार्द्धमें नीचे लिखीहुई बातें दर्ज की हैं." उनका तर्जमह (अल्बेरूनीकी बनाई हुई उसी नामकी अरबी किताबके एष्ठ २०५-६ से) यहांपर दर्ज करते हैं:-

"लोग आम तौरसे श्रीहर्ष, विक्रमादित्य, शक, वल्लभ और गुप्तका संवत् काममें लाते हैं. "वल्लभ" जिसके नामका भी एक संवत है, वल्लभ याने वल्लभी शहरका राजा था, जो दक्षिण तरफ़ अनहलवाड़ासे करीब ३० योजनके फ़ासिलेपर वाके है. वल्लभका संवत् शक संवत्के २४१ वर्ष पीछे शुरू हुआ है. उसको काममें लानेके लिये शक संवत्मेंसे ६ का घन (२१६) और ५ का वर्ग (२५) कम करदेते हैं, तो बाक़ी वल्लभी संवत् बचता है. गुप्त संवतकी निस्बत हम गुप्त शब्दसे उन थोड़से लोगोंको समझते हैं, जिनकी निस्बत कहाजाता है, कि वे शरीर (दुष्ट) और ताक़तवर थे, और उनके नामका संवत् उनके नाश होनेका संवत् है. ज़ाहिरमें वल्लभी संवत् गुप्त संवत्के पीछे बहुत ही जल्द शुरू हुआ, क्योंकि गुप्त संवत् भी शक संवत्के २४१ वर्ष पीछे शुरू होता है. श्री हर्षके संवत्का १४८८ वां साल, विक्रमादित्यके संवत् का १०८८ वां वर्ष, शक संवत् का ९५३ वां साल, और वल्लभी और गुप्त संवत् का ७१२ वां साल, ये सब एक ही समयमें आते हैं. ऊपर लिखेहुए खुलासेके मुवाफ़िक़ अल्बेरूनीका यह मत्लब मालूम होता है, कि गुप्त वल्लभी संवत् उस वक्त शुरू हुआ, जबकि शक संवत् के २१६ + २५ = २४१ (३१९, २० सन ईसवी) गुज़र चुके थे; और उसने जो इस संवत् के ७१२ वें सालको शक संवत के ९५३ वें वर्षमें मिलाया, इससे भी मालूम होता है, कि इन दोनों में ठीक २४१ वर्षका फ़र्क़ है. वह अपने अगले बयानमें इस संवत्का शक संवत्के २४१ वें वर्षसे शुरू होना साफ़ साफ़ लिखता है, याने वह उस समय शुरू हुआ, जबकि उसके २४० वर्ष गुज़र चुके थे. वह एक तीसरे बयानमें अपनी किताबके अन्दर आगे बढ़कर यह बयान करते वक्त, कि महमूद गज़नवीके पट्टन सोमनाथ लेनेकी तारीख़ (जैन्युअरी १०२६ ई०) को हिन्दू लोगोंने कैसे मालूम किया ? लिखता है, कि शक संवत् ९४७ (ई० १०२५, २६) को इसतरह निकाला, कि अव्वल उन्होंने २४२ लिखा, फिर ६०६ लिखा, और फिर ९९ लिखा. यहांपर अगर्चि वह साफ़ तौरसे गुप्त वल्लभी संवत्का बयान नहीं करता, लेकिन इसमें कुछ सन्देह नहीं होसक्ता, कि पहिले अंकोंसे वल्लभी संवत् ही मुराद है, और उनसे यह मतलब मालूम होता है, कि

इस गणनाके अनुसार गुप्त वल्लभी संवत्‌का पहिला साल उस समय आता है, जबकि शक संवत्‌के २४२ वर्ष गुज़र चुके थे.

अनहलवाड़ाके अर्जुनदेवकी वेरावलकी प्रशस्तिसे, जिसमें विक्रमी संवत् १३२० और वल्लभी संवत् ९४५ लिखा है, यह साबित होता है, कि यह संवत् वल्लभीके नामके साथ लिखा जाता था- (देखो इण्डियन ऐंटिकेरीकी ग्यारहवीं जिल्दका २४१ वां पृष्ठ).

कितनेएक लोगोंकी राय यह हुई, कि यह बात नामुम्किन है, कि गुप्त लोगोंका संवत् उनकी बर्बादीके ज़मानेसे शुरू हो; और इस तरहपर दो रायें होगईं. फ़र्गुसन साहिबकी राय थी, की अल्वेरूनीने जो इस संवत्‌के ज़मानेका हाल लिखा है वह ठीक है, लेकिन् उनकी यह राय नहीं थी, कि वह गुप्त लोगोंकी बर्बादीसे शुरू हुआ, बल्कि उन्होंने .ईसवी ३१८, १९ को उस ख़ानदानके (दोबारह) बढ़ने और संवत्‌के शुरू होनेका सन् माना है.

दूसरे लोगोंकी राय यह थी, कि .ईसवी सन् ३१८-१९ गुप्त लोगोंके ग़ारत होनेका समय है, और उन्होंने वल्लभी संवत्‌को जो ठीक उसी सन्‌में शुरू हुआ, गुप्त संवत्‌से बिल्कुल अलग ख़याल किया. इसके सिवा यह कहा, कि गुप्त संवत् गुप्त लोगोंकी बर्बादीकी यादगारमें क़ाइम किया गया; और गुप्त ख़ानदानकी बुन्याद पड़नेका ज़मानह उन्होंने पहिले मानलिया; और उनकी राय यह भी हुई, कि उन लोगोंका संवत् उनकी प्रशस्तियोंमें लिखाजाता है. टॉमस साहिबकी राय थी, की गुप्त संवत् शक संवत्‌के मुताबिक़ था, और वह .ईसवी ७८ में शुरू हुआ. जेनरल कनिंघमने उसको .ईसवी १६७ में, और सर एडवर्ड क्लाइव बेलीने १९० .ईसवीमें शुरू होना माना. सब लोगोंकी राय थी, कि गुप्त लोगोंके थोड़े ही पीछे वल्लभी राजा हुए, और उन्होंने यह भी माना, कि उन लोगोंने ३१८-१९ .ईसवी में वल्लभी शहरकी बुन्याद डाली, और उसी समयसे वल्लभी संवत् क़ाइम हुआ; कुछ तो उस बातकी (वल्लभीकी स्थापना की) यादगारके लिये, और कुछ इस बातकी यादगारके लिये, कि गुप्त राज्यकी समाप्ति होनेपर वह राज्य उनके हाथमें आया तोभी उन्होंने अपना संवत् चलाकर गुप्त संवत्‌को मेटना नहीं चाहा. इससे यह बात सिद्ध होती है, कि भट्टार्क उनके ख़ानदानकी बुन्याद डालने वाला संवत् (गुप्त वल्लभी) २०६ से केवल एक पीढ़ी पहिले आया, जो संवत् कि उनके ही दानपत्रोंमें पहिला है लेकिन् छठे शिलादित्यके अलीनाके पत्रोंसे, जिनमें संवत् (गुप्त) ४४७ है, मा[illegible]लूम होता है. कि उन लोगोंने अपना संवत् क़ाइम होनेके पीछे भी गुप्त संवत्‌को जारी र[illegible]खा, जिसका प्रारम्भ कमसे कम २०६, २८४ और ३१८ .ई० में अनुम[illegible]न किया गया है,

(अलीनाके पत्र इंडियन ऐंटिक्वेरीकी सातवीं जिल्दके पृष्ठ ७९ में छपे हैं) लेकिन् यह बात बहुतही असंभव है. अब इससे अधिक मैं यही कहूंगा, कि पहिली ६ पीढ़ियोंतक, जिनमें भट्टार्क शामिल है, जबकि वे लोग मातहत सेनापति और महाराज थे, उस समय उनको (वल्लभी राजाओंको) अपना ही संवत् चलानेके लिये न तो इख्तियार था, न ताक़त थी, और न मौका था; और अगर उस घरानेके पहिले बड़े राजा धरसेन चौथेने कोई संवत् क़ाइम किया होता, तो वह कन्नौजके हर्षवर्द्धनके समान अपने राज्याभिषेकसे संवत् शुरू करता, न यहकि अपने ख़ानदानकी बुन्याद पड़नेके समयसे."

ई० १८८७ की इण्डियन ऐंटिक्वेरीके पृष्ठ १४१ में जो फ्लीट साहिबका लेख दर्ज है उसमें गुप्त वल्लभी संवत्पर उन्होंने यह नोट दिया है, कि– "गुप्त वल्लभी संवत्का नाम प्राचीन समयमें गुप्त संवत् कभी नहीं था, लेकिन् प्रायः ५० वर्षसे बराबर लोग इसको गुप्त संवत् कहते चले आये हैं, और इसलिये जबतक यह निश्चय नहीं होजावे, कि इसकी बुन्याद किसने डाली, तबतक उसका यही नाम रखना ठीक है. पिछले समयमें काठियावाड़ देशमें इसका नाम वल्लभी पड़ा; और अल्बेरूनीने भी लिखा है, कि गुप्त और वल्लभी संवत् दोनों एक ही हैं, और उनका ज़मानह भी एक ही है. सिर्फ़ सन्देह इस बातमें है, कि बाज़े लोगोंकी रायके मुताबिक़ अगले गुप्त लोगोंमें एक गुप्त संवत् प्रचलित था, जो यह गुप्त संवत् नहीं था."

फिर उसी जिल्दके १४२ वें पृष्ठमें लिखा है, कि अगर गुप्त वल्लभी संवत् किसी मौक़ेपर दक्षिणी विक्रम संवत् (१) के मुताबिक़ चलता रहा हो, तो इसका विचार करना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि इस संवत्की तारीख़ें पिछले वल्लभी संवत्के नामसे काठियावाड़में मिलती हैं, जहांकि गुजरातके समीपवर्ती ज़िलों और उत्तरी कोकणकी

---

(१) हिन्दुस्तानमें मुख्य संवत् दो चलते हैं, एक शक संवत्, और दूसरा विक्रम संवत्. शक संवतका प्रारम्भ हिन्दुस्तान भरमें चैत्र शुक्ल १ को मानाजाता है. विक्रम संवत्के प्रारम्भ और महीनोंके पक्षोंमें उत्तरी और दक्षिणी हिन्दुस्तानमें मत भेद है, याने उत्तरी हिन्दुस्तानमें विक्रम संवत्का प्रारम्भ शक संवत्के अनुसार चैत्र शुक्ल १ को, और अन्त चैत्र कृष्ण ऽऽ को मानाजाता है; और महीनेका प्रारम्भ कृष्ण १ को, और अन्त शुक्ल पूर्णिमाको होता है; इसलिये उत्तरी विक्रम संवत्के महीने पूर्णिमान्त कहेजाते हैं. दक्षिणी हिन्दुस्तानमें विक्रम संवत्का प्रारम्भ कार्तिक शुक्ल १ को, और अन्त आश्विन (अमान्त) कृष्ण अमावास्याको होता है; और इसीलिये दक्षिणी विक्रम संवत्के महीने अमान्त कहेजाते हैं. उत्तरी विक्रम संवत् दक्षिणी विक्रम संवत्से ७ महीने पहिले बैठजाता है.

तरह दक्षिणी विक्रम संवत् प्रचलित है, उन हिस्सोंमें आगे या पीछे गुप्त वल्लभी संवत्का अस्ली हिसाब अल्बत्तह लोगोंने अपने स्थानिक क़ौमी संवत्के हिसाबके मुवाफ़िक़ करना चाहा होगा, और गुजरातमें यह बात होनेका सुबूत वल्लभी राजा चौथे धरसेनके खेड़ाके दानपत्रसे साबित होता है, जो डॉक्टर बुलरने इण्डियन एंटिक्केरीकी १५ वीं जिल्दके पृष्ठ ३३५ में छापा है, उसमें संवत् ३३० द्वितीय मार्गशीर्ष शुक्ला द्वितीया लिखा है. अब आगे मैं यह साबित करूंगा, कि गुप्त वल्लभी संवत्का हिसाब वैसा ही है, जैसा कि उत्तरी शक संवत्, और इन दोनोंका अंतर २४१ वर्षका है. इस दानपत्रमें जो मार्गशीर्ष महीना लिखा है, वह शक संवत् ५७१ अर्थात् .ईसवी ६४९ में होगा, परन्तु कनिंघम साहिबने उस संवत्में अधिक मास नहीं लिखा है, लेकिन् एक वर्ष पहिले अर्थात् शक संवत् ५७० याने .ईसवी ६४८ में कार्तिक अधिक है, और सूर्यकी ठीक स्थितिके ऊपर विचार कियाजावे, तो यह बहुत ठीक मालूम होता है. ज़ियादह विचार करनेसे मालूम हुआ है, कि डॉक्टर श्रामने हिसाब किया, तो .ईसवी ६४८ में निश्चय अधिक मास पायाजाता है, जोकि प्रचलित रीतिके अनुसार कार्तिक होता है, परन्तु औसत गिनतीके हिसाबसे मार्गशीर्ष होगा. उदाहरणके तौरपर मानलो, कि गुप्त वल्लभी संवत् ३०३ के क़रीब गुजरातियोंने उसको अपने यहांके कार्तिकादि हिसाबसे मिलादिया. यदि गुप्त वल्लभी संवत् ३०४ को उन्होंने दक्षिणी विक्रम संवत् ६७९ के साथ कार्तिक शुक्ल १ (१२ ऑक्टोबर ६२२ .ई०) को प्रारम्भ किया हो, तो गुप्त वल्लभी संवत् ३०३ केवल ७ महीने (चैत्र शुक्ल १ से आश्विन कृष्ण ऽऽ) तक रहा होगा; और यदि गुप्त संवत् ३०४ को उनके यहांके संवत् ६८० के साथ उन्होंने प्रारम्भ किया हो, तो गुप्त संवत् ३०३ को १९ महीनोंतक चलाया होगा; और इस तरह वहांवाले गुप्त वल्लभी संवत्का प्रारम्भ भी गुजरातमें कार्तिक शुक्ल १ से मानते रहे होंगे. लेकिन् वेरावलके लेखमें पायाजाता है, कि यह फेरफार काठियावाड़में गुप्त वल्लभी संवत् ९४५ तक नहीं हुआ; और खेड़ाके दानपत्रसे पायाजाता है, कि गुजरातियोंने दूसरे तरीक़ेसे, याने ६८० के मुताबिक़ ३०४ को प्रारम्भ किया; और इस हिसाबसे मार्गशीर्ष महीना गुप्त वल्लभी संवत् ३३० में आसक्ता है, परन्तु इस संवत्के महीने पूर्णिमान्त हैं. महाराज संक्षोभके दानपत्रमें गुप्त वल्लभी संवत् २०९ चैत्र शुक्ल १३ पहिले लिखा है, और अन्तमें दोबारह तिथि दी है, वहां "चैत्र दि० (दिन) २७" लिखा है, जिससे पायाजाता है, कि यह महीना पूर्णिमान्त है, और इससे यह सिद्ध होता है, कि गुप्त वल्लभी संवत्का हिसाब उत्तरी पूर्णिमान्तसे है, और यही होना ठीक था, क्योंकि अगले गुप्त लोग उत्तरी हिन्दुस्तानके खानदानसे थे.

वेरावलकी प्रशस्तिमें हिज्री सन् ६६२ = विक्रमी १३२० = वल्लभी संवत् ९४५, तिथि आपाढ़ कृष्ण १३ रविवार लिखा है; और अल्बेरूनीके लिखनेके मुवाफ़िक़ गुप्त वल्लभी संवत् ० = ३१८-१९, या ३१९-२०, अथवा ३२०-२१ .ई०, अर्थात् शक संवत् २४०,२४१ और २४२ मेंसे कोई एक होगा. अब विचार करना चाहिये, कि इन तीनोंमेंसे कौनसा सन् या संवत् शून्यके मुताबिक़ होता है ? इसलिये हमको गुप्त वल्लभी संवत् ९४५ के मुताबिक़ .ईसवी सन् निकालनेके वास्ते शक संवत् ११८५, ११८६ = (गुप्त वल्लभी संवत् ९४५+.ईसवी ३१९-२० = .ईसवी १२६४-६५), और ११८७ पर विचार करना चाहिये.

जोकि वेरावलकी प्रशस्ति काठियावाड़की है, इसलिये यही ख़याल होता है, कि जो विक्रम संवत् इसमें लिखा है वह दक्षिणी विक्रम संवत् है, जो कार्तिक शुक्ल प्रतिपदाको शुरू होता है. इस बातसे और भी निश्चय होता है, कि इसमें हिज्री ६६२ भी लिखा है, और वह रविवार ४ नोवेम्बर सन् १२६३ .ईसवीको शुरू, और शनिवार २३ ऑक्टो-बर सन् १२६४ .ईसवीको खत्म हुआ; लेकिन् आषाढ़का महीना अंग्रेज़ी जून या जुलाई के मुताबिक़ होता है, इसलिये अंग्रेज़ी तारीख जून या जुलाई १२६४ .ईसवीके नज़्दीक होगी, और इससे उत्तरी विक्रम सवत्का कुछ सरोकार नहीं रहा, क्योंकि उत्तरी विक्रम संवत् १३२० का आपाढ़ १२६३ .ईसवीका जून या जुलाई होता है; और १२६४ का जून या जुलाई शक संवत् ११८६ में पड़ा (अर्थात् वल्लभी संवत् ९४५ ठीक शक संवत् ११८६ के मुताबिक़ होता है), इसलिये शक संवत् ११८५ और ११८७ के लिये हिसाब करना कुछ ज़रूर नहीं. जेनरल कनिंघम् साहिबने निश्चय करके लिखा है, कि तारीख़ २५ वीं मई सन् १२६४ .ईसवीको रविवार (जो वेरावलके लेखमें दर्ज है) होता है.

ऊपर लिखेहुए बयानसे साफ़ ज़ाहिर है, कि शक संवत् और गुप्त वल्लभी संवत्का अन्तर २४१ वर्षका है, और उत्तरी विक्रम संवत् तथा शक संवत्का अन्तर १३५ वर्षका. अतः उपरोक्त कुल तहक़ीक़ातसे उत्तरी विक्रम संवत् और वल्लभी संवत्का अन्तर ३७६ वर्षका, और दक्षिणी विक्रम संवत् और वल्लभी संवत्का ३७५-७६ समझना चाहिये, याने दक्षिणी संवत्में चैत्र शुक्ल १ से आश्विन् कृष्ण अमावास्यातक ३७५ वर्षका और कार्तिक शुक्ल १ से फाल्गुन् कृष्ण अमावास्यातक ३७६ वर्षका अन्तर रहता है.

अब हम अपनी तह्क़ीक़ातके मुवाफ़िक़ कुछ पुराना इतिहास लिखना शुरू करते हैं:-

यह तो साबित होही चुका है, कि वल्लभीकी शाखाके मुख्य अधिकारी उदयपुर (मेवाड़) के महाराणा हैं; तो अब यह कहना ज़रूर है, कि वल्लभीसे मेवाड़में कौन आया ? जिसका जवाब ऐतपुरकी प्रशस्तिसे आसानीके साथ मिलसक्ता है, उसमें लिखा है, कि गुहिल आनन्दपुरसे (मेवाड़के पहाड़ोंमें) आया. परन्तु अब यह एक दूसरा सवाल पैदा हुआ, कि वह (गुहिल) किस तरह और किस वक़्त आया ? इस विषयमें हम अपनी राय इस तौरपर ज़ाहिर करते हैं, कि विक्रमी ७१८ [हि० ४१ = .ई० ६६१] की एक प्रशस्ति अपराजितके शुरू समयकी कूंडां ग्राममें हमको मिली उससे साबित हुआ, कि उक्त संवत्‌में अपराजित राजा राज्य करता था, जो गुहिलसे छठे नम्बरपर है, तो गुहिलका ज़मानह क़रीब क़रीब मालूम होगया, कि छठी सदी विक्रमी के उत्तरार्द्ध (छठी सदी .ईसवीके पूर्वार्द्ध) में गुहिल आनन्दपुरसे मेवाड़में आया, और इससे जेनरल कनिंघमका लिखना भी क़रीब क़रीब सहीह होगया - (देखो पृष्ठ २२२-२२३). हमारा ऊपर बयान कियाहुआ ख़याल इस तरहपर सहीह होसक्ता है, कि ऐतपुरकी प्रशस्ति (शक्तिकुमारके समय की) (१) विक्रमी १०३४ [हि० ३६७ = .ई० ९७७] की, और उदयपुरमें दिल्ली दर्वाज़हके बाहिर शारणेश्वर महादेवके मन्दिरकी प्रशस्ति (अल्लटके समयकी) विक्रमी १०१० [हि० ३४२ = .ई० ९५३] की, और कूंडांकी प्रशस्ति विक्रमी ७१८ [हि० ४१ = .ई० ६६१] की है. यदि कूंडांकी प्रशस्तिके संवत् ७१८ और शारणेश्वरकी प्रशस्तिके संवत् १०१० के बीचका समय निकालें, तो २९२ वर्ष आता है, जिसमें अपराजितसे अल्लटतक ७ राजाओंके समयका औसत निकालनेसे प्रत्येक राजाके राज्यसमयका औसत ४१ वर्षसे कुछ अधिक हुआ, और यह औसत अधिक है, क्योंकि इस हिसाबसे इन राजाओंकी आयुष्य अधिक ठहरती है. इसके बाद ऐतपुरकी प्रशस्ति के संवत् १०३४ तक अल्लटके पीछे २४ वर्षमें तीन राजा हुए, तो इन राजाओंके राज्यका औसत आठ वर्ष आया; इसलिये अब हम संवत् ७१८ से संवत् १०३४ तक, याने ३१६ वर्षमें अपराजितसे शक्तिकुमारतक १० राजाओंके राज्यसमयका औसत निकालते हैं, जिसमें प्रत्येक राजाके लिये ३१ वर्षसे कुछ अधिक समय आता है, और इस हिसाबके मुवाफ़िक़ अपराजितसे पहिले गुहिलतक पांच राजाओंका औसत गिनाजावे, तो विक्रमी ७१८ से १५५ वर्ष पहिले, याने छठी सदी विक्रमी के उत्तरार्द्धमें गुहिलका होना साबित होता

---

(१) यह प्रशस्ति कर्नेल् टॉडने अपनी किताब टॉडनामह राजस्थानकी जिल्द अव्वलके शेष-संग्रह नम्बर ५ में दर्ज की है.

है; और यदि यह औसत अधिक मानाजावे, तो आम तवारीख़ वाले १०० वर्ष में ४ पुश्तका औसत मानलेते हैं, इससे भी विक्रमी ७१८ से १२५ वर्ष पहिले गुहिलका होना सिद्ध होता है, जैसा कि हम ऊपर लिखआये हैं. इसके सिवा कर्नेल् टॉडने जो अपने प्रमाणोंसे विक्रमी ५८० (.ई० ५२३) में वल्लभीका ग़ारत होना और गुहिलके मेवाड़में आने वग़ैरहका हाल लिखा है, उससे भी गुहिलका क़रीब क़रीब वही समय साबित होता है, जो हमने बयान किया. लेकिन् उक्त कर्नेल्ने जो वल्लभी ग़ारत होनेके हमलेमें गुहिलके पिता शिलादित्यका माराजाना लिखा है वह ग़लत है, क्योंकि अगर हम उस ज़मानहमें छठे शिलादित्यको गुहिलका पिता मानें, तो उसका एक दानपत्र वल्लभी संवत् ४४७ का मिला, उसके मुताबिक़ विक्रम संवत् निकालने, याने ४४७ में ३७६ जोड़नेसे, जो विक्रम संवत् और वल्लभी संवत्का अन्तर है, विक्रमी ८२३ [हि० १४९ = .ई० ७६६] के पीछे वल्लभी ग़ारत होकर गुहिलका मेवाड़में आना पायागया: परन्तु यह बात ग़ैरमुम्किन है, क्योंकि विक्रमी ७१८ [हि० ४१ = .ई० ६६१] की कूडांकी प्रशस्तिसे उक्त संवत्में अपराजितका मौजूद होना ऊपर बयान होचुका है, और अपराजित गुहिलसे छठी पीढ़ीमें है, तो विक्रमी ७१८ से एक मुद्दत पीछे विक्रमी ८२३ में छठा शिलादित्य गुहिलका पिता किसीतरह साबित नहीं होसक्ता; और अगर पहिले शिलादित्यको गुहिलका पिता समझें, तो यह भी असम्भव है, क्योंकि उसका ज़मानह उसीके एक दानपत्रसे वल्लभी संवत् २९० (विक्रमी ६६६) होता है, जो विक्रमी ५८० से बहुत पीछे है. हमारे अनुमानसे उस समय वल्लभीमें कोई दूसरा राजा होगा, कि जिसके मरजाने बाद उक्त ख़ानदानकी बड़ी शाखा (जिसमें गुहिल और बापा हुए) मेवाड़के पहाड़ों याने अर्वली पहाड़में आकर छुपी, और कुछ समय पीछे इसी ख़ानदानकी छोटी शाखाने फिर वल्लभीपर क़बज़ह करलिया, अथवा हमला करनेवाले लोगोंने वल्लभीके बड़े राजाओंको अपना मातहत दिखलानेके लिये इस शाखाके किसी शख़्सको वल्लभीपर बिठादिया हो, (जैसे कि अक्बर और जहांगीर बादशाहने महाराणा प्रतापसिंहके छोटे भाई सगरको महाराणाका ख़िताब देकर चित्तौड़पर बिठादिया था, और बड़ी शाखा वालोंने शत्रुकी आधीनतासे नफ़त करके पहाड़ोंमें तक्लीफ़ें उठाना सहन किया), और उसीके वंशमें ध्रुवसेन (१) और आख़री राजा छठा शिलादित्य हुआ, जिसके समयमें इस ख़ानदानके हाथसे वल्लभीका राज्य बिल्कुल जाता रहा. अब इससे यह साफ़ तौरपर साबित होगया,

(१) इस राजाको चीनी मुसाफ़िर ह्यूएन्त्सांगने ध्रुवपट लिखा है, जबकि वह .ई० ६३९ में वल्लभीको आया और उससे मुलाक़ात की- (देखो पृष्ठ २२०).

कि विक्रमी ८२३ में या ६६६ में वल्लभी ग़ारत होकर उस ख़ानदानकी शाखा मेवाड़में नहीं आई, और न उस समय वल्लभीमें पहिला या छठा शिलादित्य था, जो वल्लभीसे मेवाड़का ख़ानदान फटनेके समय वहां मारागया हो, किन्तु वह कोई दूसरा राजा था. हां यह पायाजाता है, कि वल्लभीपर दो हमले हुए, जिसमें पहिला बहुत बड़ा हमला तो गुहिलके मेवाड़में आनेके पहिले हुआ, जिसका हाल कर्नेल् टॉड वग़ैरहने जैन ग्रन्थोंसे दिया है, और प्रशस्तियोंमें भी लिखागया है; और दूसरा हमला छठे शिलादित्यके समयमें अथवा उसके पीछे इस ख़ानदानकी नाताक़तीके ज़मानहमें हुआ, परन्तु इसका ठीक ठीक समय और व्यवरेवार हाल नहीं मिलता.

अब हम बापाका हाल लिखते हैं, जिसमें इन बातोंका निर्णय करना ज़ुरूरी है, कि बापा किसी राजाका नाम था या ख़िताब, और ख़िताब था तो किस राजाका था, और उसने किस तरह और कब चित्तौड़ लिया? यह निश्चय हुआ है, कि बापा किसी राजाका नाम नहीं, किन्तु ख़िताब है, जिसको कर्नेल् टॉडने भी ख़िताब लिखकर अपराजितके पिता शीलको बापा ठहराया है; लेकिन् कूंडांकी (विक्रमी ७१८ की) प्रशस्तिके मिलनेसे कर्नेल् टॉडका शीलको बापा मानना ग़लत साबित हुआ, क्योंकि उक्त संवत् में शीलका पुत्र अपराजित राज्य करता था, और विक्रमी ७७० [हि० ९४ = ई० ७१३] में मोरी कुलका मानसिंह चित्तौड़का राजा था (१), कि जिसके पीछे विक्रमी ७९१ [हि० ११६ = ई० ७३४] में बापाने चित्तौड़का क़िला मोरियों से लिया, जो हम आगे लिखते हैं, तो हमारी रायसे अपराजितके पुत्र अर्थात् शील के पोते महेन्द्रका ख़िताब बापा था, और वही रावलके पदसे प्रसिद्ध हुआ. सिवा इसके एकलिंग महात्म्यमें बापाका पुत्र भोज और भोजका खुमाण लिखा है, उससे भी महेन्द्रका ही ख़िताब बापा सिद्ध होता है.

ऊपर बयान कीहुई कूंडांकी प्रशस्तिसे पायाजाता है, कि उक्त प्रशस्ति खोदी-जानेके समय अपराजित कम उम्र होगा, और उसने बड़ी उम्र पाई; और उसी प्रशस्तिमें उसके फ़ौजी अफ़्सरको सेनापति महाराज वराहसिंह लिखनेसे यह भी पायाजाता है, कि अपराजित एक बड़ा राजा था, क्योंकि किसी छोटीसी सेनाके अफ़्सरका महाराज और सेनापतिके पदसे प्रसिद्ध होना सम्भव नहीं. यक़ीन होता है,

---

(१) मानसरोवरकी प्रशस्ति, जो कर्नेल् टॉडको मिली, और जिसके हरएक श्लोकका तर्जमह उसने लिखा है, वह प्रशस्ति विक्रमी ७७० [हि० ९४ = ई० ७१३] में खोदीगई थी, जिस से उक्त संवत्में मोरी ख़ानदानके राजाका चित्तौड़पर राज्य करना साबित है.

कि विक्रमी ७७० [हि० ९४ = .ई० ७१३] के क़रीब शत्रुओंने एकदम हमला करके अपराजितको उसके पहाड़ी राज्यमें आदबाया, जिसमें वह अपने साथियों सहित लड़कर मारागया और उसका राज्य भी उसके हाथसे जातारहा. इस आपत्तिकालमें उक्त राजाकी राणी अपने बालक पुत्र महेन्द्र (बापा) सहित बचाई जाकर नागदामें पुरोहित वशिष्ठ रावलके यहां लाई गई, और वहीं रहने लगी; तो अब बापाके चित्तौड़का राज्य हासिल करनेका समय और उसकी हुकूमतका ज़मानह बताना ज़रूर है.

जब महेन्द्र (बापा) अपने पुरोहितके यहां रहते रहते कुछ होश्यार हुआ, तो उसकी गायें चरानेके लिये जंगलमें जाने लगा, और इसी ज़मानहमें उसको भोडेला तालाबके पीछे हारीत नामी एक तपस्वी मिला. बापा हमेशह उसके पास जाता और उसकी टहल बन्दगी किया करता था; उसके ज़रीएसे उसको एकलिङ्ग महादेवके दर्शन हुए, जो बांसके वृक्षोंमें एक शिवलिङ्ग था. एकलिङ्ग माहात्म्यमें इस कथाको करामाती बातोंके साथ बढ़ाकर लिखा है, लेकिन् मश्हूर है, कि उसी महात्माके आशीर्वादसे बापाको बरकत हासिल हुई, और बहुतसी दौलत ज़मीनसे मिली, और उसने विक्रमी ७९१ [हि० ११६ = .ई० ७३४] में राजा मान मोरीसे चित्तौड़का क़िला लिया. कर्नेल् टॉडने अपनी किताबमें जिन प्रमाणोंसे विक्रमी ७८४ [हि० १०८ = .ई० ७२७] में बापाका चित्तौड़ लेना लिखा है, वे प्रमाण अनुमान मात्र हैं. अगर्चि हम भी इस विषयमें अपने अनुमानसे ही काम लेते हैं, परन्तु यह आम क़ाइदह है, कि हरएक बातकी तह्क़ीक़ातमें पहिले अनुमान की बनिस्बत दूसरा अनुमान प्रबल होता है. मेवाड़की ख्यातिकी पोथियों और बड़वा भाटोंकी किताबोंमें बापा रावलका चित्तौड़ लेना विक्रमी १९१ में लिखा है, लेकिन् हमारे ख़यालसे विक्रमी ७९१ के एवज़ १९१ का ग़लतीसे मश्हूर होना पायागया, क्योंकि हिन्दी भाषामें एक और सातके अंककी गांठ एकसी होती है, केवल नीचेकी रेखा एककी सीधी और सातके अंककी पुरानी लिपिमें बहुत ही कम टेढ़ी होती थी, किसी प्रशस्ति अथवा पुस्तकमें सातके अंकका झुकाव नष्ट होजानेसे देखने वालोंने सातको एक समझकर १९१ मश्हूर करदिया, और उसीके अनुसार लिखाजाने लगा. कर्नेल् टॉडने अपने अनुमानसे लिखा है, कि मेवाड़के बड़वा भाटोंने यह तो नहीं समझा, कि वल्लभी ग़ारत होनेके १९० वर्ष पीछे बापा पैदा हुआ, और ग़लतीसे १९१ विक्रमीमें उसका होना ख़याल करके वैसा ही अपनी किताबोंमें लिखदिया. अब यह जानना चाहिये, कि यह ग़लती कब हुई ? तो इसके लिये हम यह साबित करसक्ते हैं, कि महाराणा रायमल्लके पीछे यह भूल प्रचलित हुई; क्योंकि एकलिङ्ग माहात्म्यमें, जिसको लोग वायुपुराणका हिस्सह कहते हैं, और जो मेवाड़

देशमें एक पवित्र ग्रन्थ मानाजाता है, उसके २० से २६ अध्यायतक वायु देवताने मेवाड़के भविष्यत राजाओंका वर्णन किया है और उस वंशावलीमें आख़री नाम महाराणा रायमल्लका है, इससे पायाजाता है, कि उक्त राजाके समयमें यह ग्रन्थ बनायागया.

कर्नेल् टॉडने अपने अनुमानसे बापाका २६ वर्षतक राज्य करना लिखा है, परन्तु हमारे अन्दाज़से १९ वर्ष राज्य करना साबित होता है, क्योंकि एकलिङ्ग माहात्म्यके बीसवें अध्यायका इक्कीसवां श्लोक यह है:-

श्लोक.

राज्यन्दत्वा स्वपुत्राय आथर्वणमुपागतः॥
खचन्द्रदिग्गजाख्ये च वर्षे नागह्रदे मुने॥

अर्थ- अपने पुत्रको राज्य देकर (बापा) संवत् ८१० आठ सौ दशमें आथर्वण ऋषिके पास (सन्यास लेनेको) नागदामें आया.

जबकि विक्रमी ७९१ [हि० ११६ = ई० ७३४] में महेन्द्र (बापा) ने चित्तौड़का राज्य लिया, और विक्रमी ८१० [हि० १३५ = ई० ७५३] में सन्यास लिया, तो साफ़ तौरपर साबित होगया, कि उसने १९ वर्षतक राज्य किया. इसके सिवा कर्नेल् टॉडने अपने अनुमानसे बापाका १५ वर्षकी अवस्थामें चित्तौड़ लेकर ३९ वर्षकी उम्रतक राज्य करना लिखा है, लेकिन् हमारे अनुमानसे २० वर्षकी अवस्थामें चित्तौड़ लेकर ३९ वर्षकी अवस्था उसके सन्यास लेनेका समय मानना चाहिये, क्योंकि उक्त कर्नेल्के अनुमानसे भी वल्लभी ग़ारत होनेके १९० वर्ष पीछे बापाका पैदा होना साबित होता है.

बाज़ लोग बापाका देहान्त ख़ुरासानकी तरफ़ होना लिखते हैं, लेकिन् यह बात ग़लत मशहूर होगई है, क्योंकि बापाका समाधिस्थान एकलिङ्गपुरीसे उत्तरको एक मीलसे कुछ अधिक फ़ासिलेपर अबतक मौजूद है, जहां एक छोटासा मन्दिर है, जो जीर्णोद्धार होकर पीछेसे दुरुस्त किया गया है, और उसपर बारहसौसे कुछ ऊपर संवत् लिखा है, जो उसके जीर्णोद्धारका संवत् है. यह रमणीय स्थान 'बापा रावल' के नामसे प्रसिद्ध है. इससे यह साबित होगया, कि बापाने एकलिङ्गपुरीमें परलोक वास किया, ख़ुरासानकी तरफ़ नहीं. अल्बत्तह यह बात सहीह है, कि बापा रावलने थोड़े ही समयमें बहुत बड़ा नाम हासिल किया, और अपना राज्य भी बहुत कुछ बढ़ाया, अगर ख़ुरासान भी उसने फ़त्ह करलिया हो, तो आश्चर्य नहीं.

बापाने जो अपना लक़ब रावल रक्खा इसका कोई पक्का प्रमाण नहीं मिलता, अल्बत्तह जिन पुजारी ब्राह्मणोंके यहां उसने पर्वरिश पाई वे रावल कहलाते थे, शायद यह लक़ब बापाने उनकी ख़ैरख़्वाहीकी यादगारमें इख़्तियार करलिया हो. लोग इस विषयमें कई क़िस्से बयान करते हैं, जिनमेंसे एक यह है, कि अम्बिका भवानीने स्वप्नमें बापाकी माताको कहा, कि तुम्हारे एक बड़ा प्रतापी और पराक्रमी पुत्र उत्पन्न होगा, उसको चाहिये कि राजाका ख़िताब छोड़कर रावल कहलावे; और उसी क़ौलके मुवाफ़िक़ बापाने अपनी माताके कहनेसे यह पद धारण किया. चाहे कुछही हो, परन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि रावल पदका अर्थ बहादुर राजपूतोंको शोभा देनेवाला है, याने राव शब्द उसके लिये आता है, जो लड़ाईके समय गर्जनाको स्वीकार करे.

बापाका चित्तौड़ लेना लोग कई तरहपर प्रसिद्ध करते हैं. बाज़ लोगोंका क़ौल है, कि उसने मानमोरी राजाको फ़त्ह करके चित्तौड़ लेलिया; और बाज़ कहते हैं, कि उसने उक्त राजाके यहां नौकर रहकर राज्य हासिल किया. इसी तरह बापाको हारीतराशिके द्वारा महादेवका दर्शन होना भी बहुतसी करामाती बातोंके साथ प्रसिद्ध है. बाज़ लोग कहते हैं, कि बापाका शरीर याने क़द हारीतराशिके वरदानसे १४ हाथ ऊंचा होगया, उनके हाथकी तलवार बत्तीस मन वज़नकी थी, और वह एक वक़्तमें कई बकरे खासक्ते थे वग़ैरह वग़ैरह, और हिन्दी कवितामें भी इन बातोंका बयान है; लेकिन् ऐसी बातोंका कोई पक्का सुबूत नहीं मिलता, जैसा जिसके जीमें आया उसी तरहका क़िस्सह कहसुनाया. हां इसमें सन्देह नहीं, कि उसने राजा मानमोरीसे विक्रमी ७९१ [हि० ११६ = ई० ७३४] में चित्तौड़का क़िला लिया. आबूके अचलगढ़ वग़ैरहकी प्रशस्तियोंमें इन करामाती बातोंका ज़िक्र नहीं है, केवल हारीतराशिकी दुआसे राज्यका मिलना और एक पैरका सोनेका कड़ा बापाको हारीतका देना लिखा है, लेकिन् ये प्रशस्तियां भी उस समयसे बहुत वर्ष पीछे लिखी गई हैं.

अगर्चि राजाओंकी निस्बत करामाती बातों, और प्रसिद्ध क़िस्से कहानियोंको उनके हालमें दर्ज न करना राजपूतानहमें एक बड़ा भारी जुर्म समझा जाता है, परन्तु मुझ अकिञ्चनको अपने स्वामी महाराणा साहिब श्री शम्भुसिंह, श्री सज्जनसिंह और श्री फ़त्हसिंह साहिबकी गुणग्राहकताने इस बातका हौसिलह और हिम्मत दिलाई, कि सहीह और अस्ली हालात ज़ाहिर करनेके सिवा क़िस्से कहानियोंकी बातें बहुत ही कमीके साथ लिखकर पाठकोंके अमूल्य समयको बचावे. यदि क़िस्से कहानियोंका कुछ भी हिस्सह सहीह नहो, तोभी इसमें सन्देह नहीं, कि महेन्द्र (बापा)

हिन्दुस्तानका बड़ा प्रतापी, पराक्रमी और तेजस्वी महाराजाधिराज हुआ, और उसने अपने पूर्वजोंके प्रताप, बड़प्पन और पराक्रमको दोबारह प्रकाशित किया, जो थोड़े समयतक नष्ट होगया था. अगर यह महाराजा सारे हिन्दुस्तानका एक ही छत्रधारी न हुआ हो, तोभी हिन्दुस्तानके दूसरे राजाओंमें अग्रगण्य और बड़ा समझा गया था. इस राजाका बड़ा राज्य होनेकी बहुतसी गवाहियां मिलसक्ती हैं, जैसा कि अरब देशके मुसल्मान मुसाफ़िरों याने सुलैमान और अबूज़ैदुल्हसनने बल्हाराका राज्य चीन देशकी सीमातक लिखा है, जो बापा रावलके प्रपौत्रका समय होगा, जिसका तर्जमह ऊपर लिखागया है; और मश्हूर क़िस्से कहानियोंको सुनिये, तो बापा और उसके पोते आदिको हिन्दुस्तानका चक्रवर्ती कहसक्ते हैं.

महेन्द्र (बापा) और रावल समरसिंहके बीचकी पीढ़ियोंका तवारीख़ी हाल सिवा क़िस्से कहानियोंके शृंखलाबद्ध पूरा पूरा न मिलनेके कारण अब हम यहांपर रावल समरसिंहका हाल लिखना शुरू करते हैं, क्योंकि उक्त रावलकी तवारीख़ पृथ्वीराजरासा नामकी पुस्तकसे बहुत कुछ ग़लत मश्हूर होगई है, और हरएक आदमी उसको पूरे यक़ीनके साथ मानता है. वास्तवमें यह ग्रन्थ किसी भाटने पृथ्वीराजके बहुत समय पीछे भाषा कवितामें बनाकर प्रसिद्ध करदिया है; मैं नहीं जानता कि उसने किस मत्लबसे यह ग्रन्थ रचकर राजपूतानहकी तवारीख़को बर्बाद किया.

उक्त ग्रन्थकी नवीनता सिद्ध करनेके लिये यहांपर चन्द सुबूत लिखेजाते हैं:-

यह बहुत प्रसिद्ध हिन्दी काव्य जिसे बहुधा विद्वान लोग पृथ्वीराज़ चहुवानके कवि चन्द बरदाईका बनाया हुआ मानते हैं, और जो पृथ्वीराजका इतिहास जन्मसे मरण पर्य्यंत वर्णन करता है, अस्ल नहीं है; मेरी बुद्धिके अनुसार यह ग्रन्थ चन्दके कई सौ वर्ष पीछे जाली बनाया गया है. इसका बनाने वाला राजपूतानहका कोई भाट था, जिसने इस काव्यसे अपनी जातिका बड़प्पन दिखलाना चाहा. पृथ्वीराजरासा पृथ्वीराज या चन्दके समयमें नहीं, किन्तु पीछे बना, इस बातको मैं कई प्रमाणोंसे सिद्ध करसक्ता हूं. पहिले तो यह कि बहुतसे उदाहरण लिखकर, और उनको अशुद्ध ठहराकर इस काव्यमें लिखेहुए साल संवतोंकी ग़लती ज़ाहिर करूंगा, जैसे कि पृथ्वीराजका जन्म संवत् उक्त नामकी हस्ताक्षरी पुस्तकके पत्र १८ पृष्ठ १ में लिखा है:-

दोहा.

एकादससै पंचदह विक्रम साक अनन्द ॥
तिहि रिपुपुर जय हरनको भे पृथिराज नरिन्द ॥

अर्थात् शुभ संवत् विक्रमी ११९५ में राजा पृथ्वीराज अपने शत्रुका नगर अथवा देश लेनेको उत्पन्न हुआ.

फिर उसी पत्रके दूसरे पृष्ठपर निम्न लिखित पद्धरी छन्द लिखा है:-

दर्वार बैठि सोमेसराय ॥
लीने हजूर जोतिग वुलाय ॥
कहो जन्मकर्म वालक विनोद ॥
सुभ लग्न मुहूरत सुनत मोद ॥ १ ॥
संवत्त इक दश पञ्च अग्ग ॥
वैसाप तृतिय पख कृष्ण लग्ग ॥
गुरु सिद्ध जोग चित्रा नखत्त ॥
गर नाम करन सिसु परम हित्त ॥ २ ॥
ऊपा प्रकास इक घरिय राति ॥
पल तीस अंश त्रय वाल जाति ॥
गुरु वुद्ध सुक्र परि दसैं थान ॥
अष्टमे वार शनिफल विधान ॥ ३ ॥
पंचमे थान परि सोम भोम ॥
ग्यारमे राहु खल करन होम ॥
वारमे सूर सो करन रंग ॥
अनमी नमाय तिन करे भंग ॥ ४ ॥

इस छन्दमें पृथ्वीराजके जन्म समयपर ज्योतिषियोंकी कहीहुई जन्मपत्रीकी वातें लिखी हैं. छन्दका अर्थ यह है, कि राजा सोमेश्वरदेव (पृथ्वीराजका पिता) एक दर्बार करके विराजमान हुआ, और उसने ज्योतिषियोंको अपने सामने वुलाकर कहा, कि वालकके जन्मकर्म और चरित्र वतलाओ. उसका अच्छा लग्न और अच्छा मुहूर्त सुनतेही सब लोग हर्षित हुए.

विक्रमी ११९५ वैशाख कृष्ण तृतीयाके दिन जन्म हुआ; गुरुवार, सिद्ध योग, और चित्रा नक्षत्र था; और गर नामका करण वालकके लिये परम हितकारी था; जन्म होनेके समय एक घड़ी ३० पल ३ अंश ऊपाकालके व्यतीत हुएथे; वृहस्पति, बुध, और शुक्र १० वें भवनमें थे; आठवें शनिश्चरका फल वालकके लिये वतलाया गया; चन्द्र और मंगल पांचवें स्थानमें थे, और राहु ११ वें स्थानपर था, जो दुष्ट वैरियोंको जलाने-

वाला है; सूर्य बारहवें भवनमें था, जो बड़ा प्रताप या बड़ी कान्ति देने वाला, और नहीं नमने (झुकने) वाले वैरियोंको झुकाकर नष्ट करने वाला है.

इसी छन्दमें आगे ज्योतिषियोंने पृथ्वीराजकी अवस्थाके विषयमें राजा सोमेश्वर-देवसे भविष्यद्वाणी कही हैः-

चालीस तीन तिन वर्ष साज। कलि पुहमि इंद्र उद्धार काज॥

इसका अर्थ यह है, कि तेतालीस वर्षकी उसकी अवस्था होगी, और कलियुगमें वह पृथ्वीका उद्धार करने वाला इंद्र होगा.

फिर एक छप्पय छन्द दिल्लीदानप्रस्तावके पत्र ९० के १ पृष्ठमें लिखा है, जिसमें यह वर्णन है, कि पृथ्वीराजको उसके नाना दिल्लीके राजा अनंगपाल तंवरने गोद लिया, जिसके कोई पुत्र न थाः-

एकादश संबत्तह अठ अग्ग हति तीस भनि॥
प्रथम सु ऋतु तहं हेम सुद्ध मगसिर सुमास गनि॥
सेत पक्ख पचमिय सकल वासर गुरु पूरन॥
सुदि मगसिर सम इन्द जोग सिद्ध हि सिध चूरन॥
पहु अनंगपाल अप्पिय पुहमि पुत्तिय पुत्त पवित्त मन॥
छंड्यो सु मोह सुख तन तरुनि पति बद्री सज्जे सरन॥१॥

इसका अर्थ यह है, कि संवत् ११३८ के हेमंत ऋतुके आरम्भमें, शुभ मार्गशीर्ष महीनेके शुक्लपक्षकी पंचमी तिथि, और सकल कला करके पूर्ण बृहस्पतिवारको, मंगलदायक मृगशिर नक्षत्र (१) के अखंडित चन्द्रमा, और सिद्ध योग में, जो मंगलकी चूर्ण है, राजा अनंगपालने अपना राज्य अपनी पुत्रीके पुत्र, अर्थात् दौहित्रको प्रसन्नता पूर्वक शुद्ध मनसे दिया; और आप अपने शरीरका तथा स्त्रियोंका सब सुख त्यागकर बद्रिकाश्रमको गया, अर्थात् उसने श्री बद्रीनाथके चरण कमलोंका आश्रय लिया.

फिर माधव भाटकी कथाके पर्व (पत्र ८४ पृष्ठ १) में यह दोहा लिखा हैः-

दोहा.

१- ग्यारहसै अठतीस भनि भो दिल्ली प्रथिराज॥
सुन्यो साह सुरतानवर बज्जे बज्ज सुबाज॥१॥

अरिल.

२- ग्यारहसै अठतीसा मानं भे दिल्ली नृपराज चुहानं॥
विक्रम बिन सक बंधी सूरं तपै राज प्रथिराज करूरं॥१॥

(१) शुक्ल पंचमीमें मृगशिर नक्षत्र नहीं होसक्ता.

अर्थ.

१– पृथ्वीराज संवत् ११३८ में दिल्लीका राजा हुआ; इस बातको सुनकर सुल्तान शहाबुद्दीन गोरीने लड़ाईके अच्छे बाजे बजवाये.

२– संवत् ११३८ में (पृथ्वीराज) चहुवान दिल्लीका राजा हुआ; विक्रमादित्यके बिना भी यह राजा संवत् चलानेके योग्य है, अर्थात् इसका पराक्रम विक्रमके समान है. इसका बड़ा क्रूर राज तपता है, अर्थात् इसकी आज्ञाको कोई नहीं मेट सक्ता.

पृथ्वीराजके नौकरोंमेंसे 'कैमास' नामी एक बुद्धिमान राजपूतने, जिसका नाम अभीतक प्रसिद्ध है, शहाबुद्दीनसे जो लड़ाई की उसका वर्णन १८० पत्रके पहिले पृष्ठमें इस प्रकार लिखा है:–

हनूफाल छन्द.

१– संवत हरचालीस, वदि चैत एकम दीस ॥
रविवार पुष्य प्रमान, साहाब दिय मैलान ॥ १ ॥

छप्पय.

२– ग्यारहसै चालीस चैत वदि सस्सिय दूजो ॥
चढ्यो साह साहाब आनि पजावह पूज्यो ॥
लक्ख तीन असवार तीन सैंहस मद मत्तह ॥
चल्यो साह दरकूच कढिय जुग्गिनि धुर वत्तह ॥
सामंत सूर विकसे उअर कायर कंपे कलह सुनि ॥
कैमास मंत्रि मंत्रह दियो ढिग बैठे चामंड पुनि ॥ १ ॥

अर्थ.

१– संवत् ११४० ('हर' ज्योतिषमें ११ को कहते हैं) चैत्र कृष्ण प्रतिपदा रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र (१) के समय शहाबुद्दीन गोरीने अपनी सैन्यके डेरे दिये.

२– संवत् ११४० चैत्र कृष्ण २ के चन्द्रमाके दिन शहाबुद्दीन गोरीने चढ़ाई की, और पंजाबमें पहुंचा, अथवा वहांके लोगोंने उसको पूजा, अर्थात् मानलिया; उसके साथ तीन लाख सवार और तीन सहस्र मतवाले हाथी थे. वहांसे निकलकर मन्ज़िल दर मन्ज़िल जुग्गिनी (दिल्ली) की ओर घुर्राता हुआ चला, योद्धा और बहादुरोंका मन प्रसन्न हुआ, कायर लोग लड़ाईका नाम सुनकर कांपने लगे, मंत्री कैमास जिसने पृथ्वीराजको सलाह दी थी, और चामंडराय जो उसका वीर योद्धा था, दोनों उसके पास बैठे थे.

---

(१) इस दिन पुष्य नक्षत्र नहीं होसक्ता.

इसके बाद पत्र १९१ के पृष्ठ १ में निम्नोक्त छप्पय छन्द लिखा है:-

छप्पय.

ग्यारहसै चालीस सोम ग्यारस वदि चैतह ॥
भये साह चहुवान लरन ठाढ़े बनि खेतह ॥
पंच फौज सुरतान पंच चौहान बनाइय ॥
दानव देव समान ज्वान लरने रिन धाइय ॥
कहि चंद दंद दुनिया सुनो वीर कहर चच्चर जहर ॥
जोधान जोध जंगह जुरत उभय मध्य वीत्यो पहर ॥ १ ॥

अर्थ.

संवत् ११४० चैत्र कृष्ण ११ सोमवारके दिन पृथ्वीराज चहुवान दिल्लीका शाह याने राजा, बन सजकर रणरंगमें लड़नेको खड़ा हुआ; सुल्तानकी फ़ौजके ५ व्यूह देखकर चहुवानने भी अपनी फ़ौजके पृथक् पृथक् ५ समूह बनाये; दानवोंके समान मुसल्मान, और देवताओंके समान राजपूत जवान लड़नेके लिये रणको धाये. चन्द कवि कहता है, हे दुनयाके लोगो सुनो! कि लड़ाई किस प्रकारकी हुई - वीरोंके ललाटसे क्रोधका ज़हर (विष) चमकने लगा, लड़ाईमें बहादुरोंसे बहादुर जुटने लगे, और दोनों दलके बीच एक पहरतक लड़ाई हुई.

फिर ६ ऋतुके वर्णनके अध्याय (पत्र २४२) के दूसरे पृष्ठमें यह दोहा लिखा है:-

दोहा.

ग्यारहसै एक्यावने, चैत तीज रविवार ॥
कनवज देखन कारणे, चल्यो सु संभरिवार ॥ १ ॥

अर्थ.

संवत् ११५१ चैत्र कृष्ण ३ रविवारके दिन संभरी, अर्थात् चहुवान राजा क़न्नौज देखनेको चला.

पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन ग़ोरीकी आख़री लड़ाईका वृत्तान्त ३६० पत्रके पहिले पृष्ठमें इस प्रकार लिखा है:-

दोहा.

१- शाकसु विक्रम सत्त शिव ।
अठ अग्र पंचास ॥
शनिश्चर संक्रान्ति क्रक ।
श्रावण अद्वो मास ॥

२– श्रावण मावस सुभ दिवस ।
उभै घटी उदियत्त ॥
प्रथम रोस दुव दीन दल ।
मिलन सुभर रन रत्त ॥

अर्थ.

१–संवत् ११५८ ('शिव' ज्योतिषमें ११ को बोलते हैं) शनिवारके दिन, जबकि कर्क संक्रान्ति थी, और श्रावणका आधा महीना व्यतीत हुआ था, लड़ाई हुई.

२–श्रावणकी अमावास्याके रोज़, जोकि एक शुभ दिन है, सूर्य निकलनेके दो घड़ी पीछे दोनों दीन (धर्म) के दलोंमें, अर्थात् हिन्दू और मुसल्मानोंमें पहिला क्रोध इसलिये किया गया, कि वीरोंको लाल रंग मिले; सक्षेपमें दोनों दलोंके अंगका रंग क्रोधसे रक्तवर्ण होगया.

पत्र ३८० पृष्ठ १, बड़ी लड़ाईके अध्यायमें यह छप्पय लिखा हैः–

छप्पय.

एकादससे सत्त, अट्ठ पंचास अधिकतर ॥
सावन सुकल सुपक्ख, बुद्ध एका तिथि वासर ॥
वज्र योग रोहिनी, करन बालवधिक तैतल ॥
प्रहर सेष रस घटिय, आदि तिथि एक पंचपल ॥
विथ्थुरिय वत्त जुद्दह सरल, जोगिनिपुर वासर विषम ॥
सपत्तिथान सुरसतिय जुरि, रहसि रवी कीनो विरम ॥ १ ॥

अर्थ.

संवत् ११५८ श्रावण शुक्ल पक्ष प्रतिपदा बुधवारके दिन, वज्र योग, रोहिणी नक्षत्र (१), करण बालव, और उससे अधिक तैतल, जिस समय पिछली रातमें ६ घड़ी बाक़ी थी, और प्रतिपदाकी एक घडी और ५ पल बीते थे, लड़ाईकी बात बड़ी सरलतासे (पूरे तौरपर) फैल गई; वह दिन दिल्लीके लिये बड़ा खोटा था. लड़ाई इस तरहपर हुई, कि मानो लक्ष्मीके स्थानपर सरस्वतीने उससे युद्ध किया; लड़ाई देखनेके लिये सूर्यने भी ठहरकर विश्राम किया.

ऊपर लिखे हुए उदाहरण राजपुस्तकालयकी पृथ्वीराजरासा नामकी पुस्तकोंको मिलाकर लिखे गये हैं, जो पुस्तकें बेदलेकी पुस्तकके अनुसार हैं. यहांपर उदाहरणके लिये सिर्फ़ एकही जगहका संवत लिखना काफ़ी होता, परन्तु अनेक संवत् इस तात्पर्यसे लिखे गये हैं, कि किसीको यह सन्देह नहो, कि कदाचित् लिखने वालेने

---

(१) श्रावण शुक्ल १ को रोहिणी नक्षत्र नहीं होसक्ता.

था, परन्तु वह संवतोंमें भूल नहीं करसक्ता, शायद नामोंमें गलती भलेही की हो.

तारीख़ अबुल्फ़िदा किताबकी दूसरी जिल्दमें शहाबुद्दीनके हिन्दुस्तानमें आनेका हाल लिखा है, और उसमें हिज्री ५८६, ५८७ व ५८९ में जो जो बातें हुई, उन सबका संक्षिप्त वर्णन है, परन्तु पृथ्वीराजकी लड़ाईका हाल नहीं लिखा, तोभी शहाबुद्दीन गोरीका उस समयमें होना, अच्छीतरह सिद्ध है; और पीछेके इतिहासोंमें भी वही विक्रमी १२४९ पृथ्वीराज और शहाबुद्दीनकी लड़ाईका संवत् लिखा है. जबकि राजा जयचन्द और शहाबुद्दीन गोरीका समय निश्चिय होगया, तो पृथ्वीराजके समयमें भी कुछ सन्देह नहीं रहा; क्योंकि वह उन्हींके समयमें हुआ था.

किताबोंका प्रमाण देनेके पश्चात् अब मैं पाषाण लेख अर्थात् प्रशस्तियोंका प्रमाण देता हूं, जो मेदपाट (मेवाड़) देशमें पाई गई हैं, और थोड़ेसे उन ताम्रपत्रोंका भी जो बंगालेकी एशियाटिक सोसाइटीके पत्रोंमें छपे हैं.

१ -एक प्रशस्ति मेवाड़के इलाकेमें बीजोलिया ग्रामके समीप राजधानीसे प्रायः ५० कोसपर महुवेके वृक्षके नीचे एक चटानपर, श्रीपार्श्वनाथजीके कुंडसे उत्तर कोटके निकट है. इस चटानकी अधिकसे अधिक लम्बाई १२ फ़ीट ९ इंच, और कमसे कम ८ फ़ीट ६ इंच; और चौड़ाई ३ फ़ीट ८ इंच है. इस प्रशस्तिमें लिखा है. कि पृथ्वी-राजके पिता राजा सोमेश्वरदेवने रेवणा ग्राम स्वयंभू पार्श्वनाथजीको भेट किया. यह प्रशस्ति एक महाजनने विक्रमी १२२६ फाल्गुन कृष्ण ३ को खुदवाई. इससे स्पष्ट है, कि पृथ्वीराज विक्रमी ११५८ में कदापि नहीं होसक्ता, और पृथ्वीराजरासामें लिखा है, कि वह उस संवतमें मारागया, जो बिल्कुल अशुद्ध है. इस प्रशस्तिमें चहुवानोंकी वंशावली सोमेश्वरदेवके नामपर पूरी होगई है. इससे मालूम होता है, कि उसका कुंवर पृथ्वीराज इस प्रशस्तिकी तिथि तक राजगद्दीपर नहीं बैठा था.

२ - दूसरी प्रशस्ति मेनालगढ़ इलाक़ह मेवाड़में एक महलके उत्तरी फाटकके ऊपर वाले एक स्तम्भपर मिली है, जिसमें यह वर्णन है, कि भावब्रह्म मुनिने विक्रमी १२२६ में, जबकि पृथ्वीराज चहुवान राज करता था, एक मठ बनवाया.

पहिली और दूसरी प्रशस्तियोंके मिलानेसे अनुमान होता है, कि पृथ्वीराजने विक्रमी १२२६ के फाल्गुन कृष्ण ३ और चैत्र कृष्ण ३० के बीचमें राज्यगद्दी पाई होगी; परन्तु यदि संवत्का आरम्भ चैत्र शुक्ल पक्षको छोड़कर किसी दूसरे महीनेसे माननेका प्रचार रहा हो, जैसा कि अभीतक कहीं कहीं प्रचलित है, तो विक्रमी १२२६ फाल्गुन कृष्ण ३ और उसके सिंहासनारूढ होनेके बीचमें अधिक समय व्यतीत हुआ होगा; क्योंकि दूसरे संवत्का आरम्भ कई महीने पीछे हुआ होगा.

यह एक साधारण नियम है, कि इतिहास समयानुसार बनते हैं, जिनमें बढ़ावा या झूठ भी होता है, परन्तु विशेषकर सच्चा हाल लिखाजाता है, और संवत् मितीमें कदापि अन्तर नहीं होता, अगर होता भी है, तो पृथ्वीराजरासा सरीके ग्रन्थोंमें, कि जो अगले ग्रन्थकर्त्ताओंके नामसे कर्त्तवी (जाली) बनालियेजाते हैं, जैसाकि इस समयमें भी धर्माधिकारी लोग प्राचीन समयका हवाला देनेके लिये नई किताबें रचकर पुरानी पुस्तकोंके नामसे प्रसिद्ध कर उन्हें पुराण बनादेते हैं. यदि पृथ्वीराजके कवि चन्द बरदईने पृथ्वीराजरासाको बनाया होता, तो वह इतनी बड़ी भूल ९० वर्षकी नहीं करता, और जान बूझकर अशुद्ध संवत् लिखनेसे उसको कुछ लाभ नहीं होता.

बंगाल एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल सन् १८७३ .ई० के पृष्ठ ३१७ में कन्नौजके राजा जयचन्दके ताम्रपत्रोंका वर्णन है, जिनका संवत् १२३३-१२४३ (.ई० ११७६ - ११८६) है. वहांपर यह लिखा है, कि इस राजाको मुसल्मानोंने संवत् १२४९ (.ई० ११९३) की लड़ाईमें हराया.

जयचन्दकी बेटी संयोगिताके साथ पृथ्वीराजने विवाह किया था; और इसी जयचन्दको शहाबुद्दीन गोरीने कन्नोजमें दिल्ली लेनेके पीछे शिकस्त दी थी, जैसाकि 'तबकाति नासिरी' मे लिखा है.

कर्नेल् टॉडने अपनी टॉडनामह राजस्थान नामकी पुस्तकमें विक्रमी १२४९ में शहाबुद्दीन और पृथ्वीराजसे लड़ाई होना लिखा है, परन्तु उन्होंने पृथ्वीराजरासामें लिखेहुए संवत् ११५८ के अशुद्ध होनेका कारण कुछ नहीं लिखा, अर्थात् उसको अशुद्ध ठहरानेके लिये कोई प्रमाण या दलील नहीं दी. फिर उन्होंने रावल समरसीके प्रपौत्र राणा राहप्पका विक्रमके १३ वें शतकमें होना लिखा है, जो वास्तवमें १४ वें शतकके चौथे भागमें हुए थे. हम कर्नेल् टॉडको कुछ दोष नहीं लगासक्ते, क्योंकि पृथ्वीराजरासासे राजपूतानहके इतिहासोंमें संवतोंकी बहुतसी भूलें होगई हैं, और उनके लिये उस समय दूसरा वृत्तान्त लिखना बहुतही कठिन, बल्कि असम्भव था, जबकि इतिहासकी सामग्री बड़ी कठिनतासे प्राप्त होती थी. अगर उनका दोष इस विषयमें है, तो केवल इतना ही है, कि उन्होंने अपनी पुस्तकके पूर्वापरकी ओर दृष्टि नहीं दी. उनके वर्णनसे बहुतेरे ग्रन्थकर्त्ताओंने गलती की, जैसे फ़ार्बस साहिबने अपनी 'रासमाला' में, प्रिन्सेप साहिबने अपनी 'एंटिक्विटीज़' किताबकी दूसरी जिल्दमें, और डॉक्टर हंटर साहिबने अपने 'इम्पीरियल गज़ेटिअर' की नवीं जिल्दके पृष्ठ १६६ में (लण्डन नगरमें छपी हुई सन् १८८१ .ई० की) लिखा है, कि .ईसवी १२०१ (= वि० १२५७-५८) में राहप्प राणा चित्तौड़के राजा थे, लेकिन् यह गलत है, क्योंकि

विक्रमी १३२४ (= ई० १२६७) के पहिले तो रावल समरसीका भी कोई चिन्ह नहीं मिलता, जैसाकि इस लेखकी अगली प्रशस्तिसे प्रकाशित होगा.

पृथ्वीराजरासासे जो जो अशुद्धताएं इतिहासोंमें हुई, उनका थोड़ासा वृत्तान्त यहांपर लिखाजाता है :-

पहिले ज़मानहमें इतिहास लिखनेका रवाज मुसलमान लोगोंमें था, हिन्दुओं में नहीं था, और अगर कुछ था भी तो केवल इतना ही कि कवि लोग बढ़ावेके साथ काव्य लिखते थे, और बड़वा लोग वंशावलीके साथ थोड़ा थोड़ा तवारीख़ी हाल अपनी पोथियोंमें लिखलिया करते थे. लेकिन् यह ख़याल रखना चाहिये, कि इन लोगोंकी पोथियोंमें विक्रमी १४०० से पहिलेकी जो वंशावलियां पाईजाती हैं वे सब अशुद्ध और क़ियासी, अर्थात् अनुमानसे बनाई हुई हैं; और विक्रमी १४०० और विक्रमी १६०० के बीचके कुर्सीनामों (वंशावली) में कई ग़लतियां मिलती हैं, अल्बत्तह विक्रमी १६०० के पीछेकी वंशावली कुछ कुछ शुद्ध मालूम होती है.

जब पृथ्वीराजरासा तय्यार होकर पृथ्वीराजके कवि चन्दका बनाया हुआ प्रसिद्ध कियागया, तब भाट और बड़वोंने पृथ्वीराजके स्वर्गवासका संवत् विक्रमके १२ वें शतकमें मानकर अपनी राजपूतानहकी सब पुस्तकोंमें वही लिखदिया, जैसाकि रासामें चित्तौड़के रावल समरसीका विवाह पृथ्वीराजकी बहिन पृथांके साथ होना लिखनेके कारण रावल समरसीके गादी विराजनेका संवत् ११०६ और पृथ्वीराजके साथ लड़ाईमें १३००० सवारोंके साथ उनके मारेजानेका संवत् ११५८ श्रावण शुक्ल ३ लिखदिया. विचार करना चाहिये, कि उन बड़वा भाटोंने रावल समरसिंहका मारा जाना विक्रमी ११५८ में लिखकर उसीको पुष्ट करनेके लिये रावल समरसिंहसे लेकर राणा मोकलके देहान्त तक नीचे लिखेहुए सब राजाओंके संवत् अपनी किताबोंमें अनुमानसे लिखदियेः-

१ - रावल समरसिंह.
२ - रावल रत्नसिंह.
३ - रावल कर्णसिंह.
४ - राणा राहप्प.
५ - राणा नरपति.
६ - दिनकरण.
७ - यशकरण.
८ - नागपाल.
९ - पूर्णपाल.
१० - पृथ्वीपाल.
११ - भुवनसिंह.
१२ - भीमसिंह.
१३ - जयसिंह.
१४ - लक्ष्मणसिंह.
१५ - अरिसिंह.
१६ - अजयसिंह.
१७ - हमीरसिंह.
१८ - क्षेत्रसिंह.
१९ - लक्षसिंह.
२० - मोकल.

राजपूतानहके लोगोंने इन नामोंके संवतोंपर जैसाकि बड़वोंने लिखा था, विश्वास करलिया, और वैसाही अपनी किताबोंमें भी लिखदिया. अब देखिये कैसे आश्चर्यकी

बात है, कि रावल समरसीका पृथ्वीराजकी बहिनके साथ विवाह करना पृथ्वीराज-रासामें लिखा है, जो कदापि नहीं होसक्ता, क्योंकि राजा पृथ्वीराज रावल समरसीसे १०० वर्ष पहिले हुआ था.

३ – गंभीरी नदी, जोकि चित्तोड़के प्रसिद्ध क़िलेके पास बहती है, उसपर एक पत्थरका पुल बना हुआ है, वह महाराणा लक्ष्मणसिंहके कुंवर अरिसिंहका बनवाया हुआ कहा जाता है; और यद्यपि मैंने किसी फ़ार्सी इतिहासमें लिखा हुआ नहीं देखा, परन्तु कोई कोई मुसलमान लोग उसको अलाउद्दीन खल्जीके बेटे ख़िज़रखांका बनवाया हुआ कहते हैं. चाहे उस पुलको किसीने बनवाया हो, हमको इससे कुछ बहस नहीं; परन्तु यह तो निश्चय है, कि वह विक्रमके चौदहवें शतकके समाप्त होते होते बनाया गया, और उसकी बनावटसे जान पड़ता है, कि वह किसी मुसलमानने बनवाया होगा. उस पुलमें पानीके नौ निकास हैं, और पूर्वसे पश्चिमकी ओर आठवें दर्वाज़ेमें एक पाषाण है, जिसपर एक प्रशस्ति है.

यह तीसरी प्रशस्ति विक्रमी १३२४ [हि० ६६५ = ई० १२६७] की है. इसमें रावल समरसीके पिता रावल तेजसिंहका नाम लिखा है. मालूम होता है, कि यह प्रशस्ति पहिले किसी मन्दिरमें लगी हुई थी, परन्तु पुल बननेके समय प्रशस्तिका पत्थर वहांसे निकालकर पुलमें लगादिया गया, अर्थात् पुल बनानेके लिये कुछ सामग्री उस मन्दिरसे लाईगई होगी. इस प्रशस्तिके अक्षर इतने गहरे खुदे हैं, कि कई सौ वर्षतक पानीकी टक्कर लगनेसे भी नहीं बिगड़े. इसमें दो पंक्तियां मौजूद हैं, जिनकी नक़्ल शेष संग्रहमें लिखी गई है.

४–चौथी प्रशस्ति उसी पुलके नोकोठेमें और भी है, जिसका संवत् १३–२ ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी है. उसमें यह मत्लब है, कि रावल समरसिंहने लाखोटा बारीके नीचे नदीके तीरपर पृथ्वीका एक टुकड़ा अपनी माता जयतल्लदेवीके मंगलके हेतु किसीको भेट किया.

बड़े खेदका विषय है, कि इस प्रशस्तिका प्रारम्भका भाग ही खंडित है, और बीच बीचमें भी कई जगह अक्षर टूटगये हैं; संवत्के ४ अंकोंमें भी दहाईका अंक खंडित होगया है; परन्तु इसमें सन्देह नहीं, कि यह प्रशस्ति रावल समरसीके समय की है, और संवत्के शतकका अंक १३ साबित और एकाईके स्थानपर २ का अंक है. इससे ऐसा अनुमान होता है, कि यह प्रशस्ति विक्रमी १३३२ की होगी, क्योंकि रावल समरसीके पिता रावल तेजसिंहकी विक्रमी १३२४ की प्रशस्तिसे यह बहुत कुछ मिलती है, और यह संभव है, कि एकही मनुष्यने दोनों प्रशस्तियोंको लिखा हो. इस बातसे १३४२ का संवत् होना असम्भव है.

५-पांचवीं प्रशस्ति चित्तौड़गढ़के महलके चौकमें मिट्टीमें गड़ीहुई मिली, जिसका संवत् विक्रमी १३३५ वैशाख शुक्ल ५ गुरुवार [हि० ६७६ ता० ४ ज़िल्हिज = .ई० १२७८ ता० २९ एप्रिल] है. यह रावल समरसीके समयमें लिखीगई है, जिन्होंने अपनी माता जयतल्लदेवी, रावल तेजसिंहकी राणीके बनवायेहुए श्री श्याम पार्श्वनाथके मन्दिरको कुछ भूमि भेट की थी.

६ – छठी प्रशस्ति आबूपर अचलेश्वर महादेवके मन्दिरके पास मठमें एक पत्थर पर पाईगई, जिसकी लम्बाई ३ फुट २ इंच, और चौड़ाई २ फुट है. इसका संवत् विक्रमी १३४२ [हि० ६८४ = .ई० १२८५] है. इसका मत्लब यह है, कि रावल समरसिंहने मठका जीर्णोद्धार, अर्थात् मरम्मत कराई, और उसके लिये सुवर्णका ध्वजस्तम्भ बनवाया.

७-सातवीं प्रशस्ति, चित्रकोटपर चित्रंग मोरीके बनवाये हुए जलाशयमें एक मन्दिर के भीतर विक्रमी १३४४ वैशाख शुक्ल ३ [हि० ६८६ ता० २ रबीउल्अव्वल = .ई० १२८७ ता० १७ एप्रिल] की है. इसमें यह मत्लब है, कि जब रावल समरसिंह चित्तौड़में राज करते थे; तब वैद्यनाथ महादेवके मन्दिरके लिये भूमि भेट कीगई. यह प्रशस्ति मुझको एक श्वेत पाषाणके स्तम्भपर, जो सुरहका स्तम्भ है, और जिसमें महादेवकी एक मूर्ति बनी है, चित्तौड़के पूर्वी फाटक सूर्य पौलके रास्तेमें तीसरे दर्वाज़ेमें मिली, जिसको मैंने राजधानी उदयपुरमें मंगवालिया, जो अब विक्टोरिया हॉलमें मौजूद है.

इन प्रशस्तियोंसे सिद्ध होता है, कि रावल समरसिंहके पिता रावल तेजसिंह विक्रमी १३२४ [हि० ६६५ = .ई० १२६७] में, और रावल समरसिंह विक्रमी १३३० से लेकर १३४४ [हि० ६७१-६८६ = .ई० १२७३-१२८७] तक चित्तौड़ और मेवाड़का राज्य करते थे. इस तरह हम देखते हैं, कि रावल समरसिंहका राज्यसमय विक्रमी १३२४ [हि० ६६५ = .ई० १२६७] के पहिले किसीतरह नहीं होसक्ता, परन्तु विक्रमी १३४४ [हि० ६८६ = .ई० १२८७] के पीछे २ या ४ वर्ष राज्य किया हो, तो आश्चर्य नहीं. इसलिये विक्रमी ११५८ [हि० ४९४ = .ई० ११०१] में पृथ्वीराजके साथ रावल समरसिंहका माराजाना, जो पृथ्वीराजरासामें लिखा है, किसीतरह ठीक नहीं होसक्ता.

फिर रावल समरसिंहका होना विक्रमी १२४९ [हि० ५८८ = .ई० ११९२] में भी निश्चित नहीं है, जिस वर्षमें कि पृथ्वीराज और शहाबुद्दीन गोरीकी लड़ाई हुई. इससे पाया जाता है, कि पृथ्वीराजकी बहिनका विवाह यदि चित्तौड़के किसी राजाके साथ हुआ हो, तो वह कोई दूसरा राजा होगा, समरसिंह नहीं; क्योंकि पृथ्वीराज

विक्रमी १२४९ [हि० ५८८ = ई० ११९२] में मारागया, और रावल समरसिंहकी प्रशस्तियां विक्रमी १३३० [हि० ६७१ = ई० १२७३] से लेकर विक्रमी १३४४ [हि० ६८६ = ई० १२८७] तक की मिलती हैं, अर्थात् समरसिंहका राज्य पृथ्वीराजके मारेजानेसे अनुमान ८० वर्ष पीछे पायाजाता है, जिससे समरसिंहका विवाह पृथ्वीराजकी बहिनके साथ होना, जैसाकि रासामें लिखा है, असम्भव है. यदि यह विचार कियाजावे, कि चित्तौड़पर समरसिंह नामका कोई दूसरा राजा हुआ हो, तो यह सन्देह मेवाड़के राजाओंकी नीचे लिखीहुई वंशावलीके देखनेसे मिटजायेगाः-

नम्बर.	महाराणाओंके नाम.	जन्म संवत्.	राज्याभिषेक का संवत्.	मृत्युका संवत्.	कैफ़ियत.
१	गुहिल	०	०	०	इनका हाल ऊपर लिखदिया गया है
२	भोज	०	०	०	
३	महेन्द्र	०	०	०	
४	नाग	०	०	०	
५	शील	०	०	०	
६	अपराजित	०	०	०	कुंडा ग्रामकी प्रशस्तिसे मालूम होता है, कि यह राजा विक्रमी ७१८ में राज्य करते थे
७	महेन्द्र (बापा)	०	०	०	इनका हाल ऊपर लिखदिया गया है
८	कालभोज	०	०	०	
९	खुम्माण	०	०	०	
१०	भर्तृभट्ट	०	०	०	

नम्बर.	महाराणाओंके नाम.	जन्म संवत्.	राज्याभिषेक का संवत्.	मृत्युका संवत्.	कैफ़ियत.
११	सिंह	०	०	०	
१२	अल्लट	०	०	०	राजधानी उदयपुरके दिल्ली दर्वाज़ा बाहिर सारणेश्वर महादेवके मन्दिरकी प्रशस्तिसे विक्रमी १०१० में इनका राज्य करना पाया जाता है.
१३	नरवाहन	०	०	०	
१४	शालिवाहन	०	०	०	यह नाम आबू व राणपुरकी प्रशस्तियोंमें नहीं है, परन्तु [illegible] ऐतपुरकी प्रशस्तिके अनुसार लिखागया है.
१५	शक्तिकुमार.	०	०	०	ऐतपुरकी प्रशस्तिसे विक्रमी १०३४ में इनका राज्य करना पायागया.
१६	शुचिवर्म्मा	०	०	०	रसियाकी छत्रीकी प्रशस्तिमें शक्तिकुमारका पुत्र आम्रप्रसाद लिखा है. लेकिन उदयपुरमें मोती मगरीपर सूरजपोलके बाहिर हस्तिमिदिके मन्दिरकी सीढ़ियोंवाली प्रशस्तिमें, जोकि उसी ज़मानेकी है शक्तिकुमारके बाद शुचिवर्म्मा लिखा है. इसलिये यह नाम यहां नहीं लिखा गया.
१७	नरवर्म्मा	०	०	०	
१८	कीर्तिवर्म्मा	०	०	०	
१९	वैरट	०	०	०	राणपुरकी प्रशस्तिमें कीर्तिवर्म्माके पीछे योगराज लिखा है. परन्तु [illegible] आबूकी प्रशस्तिमें नहीं है. इससे यहां नहीं लिखा गया.
२०	वैरीसिंह	०	०	०	राणपुरकी प्रशस्तिमें वैरटके बाद वंशपाल लिखा है, जो आबूकी प्रशस्तिमें न होनेसे यहांपर दर्ज नहीं कियागया
२१	विजयसिंह	०	०	०	राणपुरकी प्रशस्तिमें वैरीसिंहके पीछे वीरसिंह लिखा है. और रसियाकी छत्रीमें विजयसिंह लिखा है.
२२	अरिसिंह	०	०	०	
२३	चौंडसिंह	०	०	०	
२४	विक्रमसिंह	०	०	०	
२५	क्षेमसिंह	०	०	०	

नम्बर.	महाराणाओंके नाम.	जन्म संवत.	राज्याभिषेक का संवत.	मृत्युका संवत.	कैफ़ियत.
४१	पृथ्वीपाल	०	०	०	
४२	भुवनसिंह.	०	०	०	यह नाम समरसिंहके पीछे राणपुरकी प्रशस्तिमें लिखा है
४३	भीमसिंह	०	०	०	यह नाम राणपुरकी प्रशस्तिमें नहीं लिखा
४४	जयसिंह	०	०	०	इस नामसे लेकर कुम्भकर्णतक सब पीढ़ियां राणपुरकी प्रशस्तिमें क्रमसे लिखी हैं
४५	लक्ष्मणसिंह	०	०	०	
४६	अजयसिंह	०	०	०	
४७	अरिसिंह	०	०	०	
४८	हमीरसिंह	०	०	१४२१	
४९	क्षेत्रसिंह	०	१४२१	१४३९	
५०	लक्षसिंह	०	१४३९	१४५४	
५१	मोकल	०	१४५४	१४९०	
५२	कुम्भकर्ण	०	१४९०	१५२५	
५३	उदयकर्ण	०	१५२५	०	इसने अपने बापको मारा, जिससे पांच वर्ष के बाद इसके भाई रायमल्लने इसको गद्दीसे ख़ारिज करके निकालदिया
५४	रायमल्ल	०	१५३०	१५६५	
५५	संग्रामसिंह	१५३८	१५६५	१५८४	

नम्बर.	महाराणाओंके नाम.	जन्म संवत्.	राज्याभिषेक का संवत्.	मृत्युका संवत्.	कैफ़ियत.
५६	रत्नसिंह	०	१५८४	१५८८	
५७	विक्रमादित्य	१५७४	१५८८	१५९२	
५८	उदयसिंह	१५७९	१५९४	१६२८	विक्रमादित्यका देहान्त होनेके बाद बनवीरका फ़ितूर खड़ा होजानेके कारण यह महाराणा दो वर्ष बाद गद्दी नशीन हुए.
५९	प्रतापसिंह	१५९६	१६२८	१६५३	
६०	अमरसिंह	१६१६	१६५३	१६७६	
६१	कर्णसिंह	१६४०	१६७६	१६८४	
६२	जगत्सिंह	१६६४	१६८४	१७०९	
६३	राजसिंह	१६८६	१७०९	१७३७	
६४	जयसिंह	१७१०	१७३७	१७५५	
६५	अमरसिंह	१७२९	१७५५	१७६७	
६६	संग्रामसिंह	१७४७	१७६७	१७९०	
६७	जगत्सिंह	१७६६	१७९०	१८०८	
६८	प्रतापसिंह	१७८१	१८०८	१८१०	
६९	राजसिंह	१८००	१८१०	१८१७	
७०	अरिसिंह	०	१८१७	१८२९	

नम्बर.	महाराणाओंके नाम.	जन्म संवत्.	राज्याभिषेक का संवत्.	मृत्युका संवत्.	कैफ़ियत.
७१	हमीरसिंह	१८१८	१८२९	१८३४	
७२	भीमसिंह	१८२४	१८३४	१८८५	
७३	जवानसिंह	१८५७	१८८५	१८९५	
७४	सर्दारसिंह	१८५५	१८९५	१८९९	
७५	स्वरूपसिंह	१८७१	१८९९	१९१८	
७६	शम्भुसिंह	१९०४	१९१८	१९३१	
७७	सज्जनसिंह	१९१६	१९३१	१९४१	
७८	फ़त्हसिंह	१९०६	१९४१		

इस ऊपर लिखीहुई वंशावलीको पुष्ट करनेवाली अनेक प्रशस्तियां हैं:-

१- एकलिङ्गेश्वरसे पश्चिम कूंडां ग्राममें, विक्रमी ७१८ की खुदीहुई अपराजितके राज्यसमयकी.

२- उदयपुरके दिल्ली दर्वाज़ह बाहिर शारणेश्वर महादेवके मन्दिरमें, विक्रमी १०१० की खुदीहुई, अल्लटके राज्यसमयकी.

३- उदयपुरसे १ मील पूर्व हरिसिद्धि देवीके मन्दिरकी सीढ़ियोंपर (१).

४- ऐतपुरकी प्रशस्ति विक्रमी १०३४ की, जो कर्नेल् टॉडको मिली.

५- एकलिंगेश्वरमें विक्रमी १२७० की, रावल जैत्रसिंहके समयकी.

६- चित्तौड़में गम्भीरी नदीके पुलमें, विक्रमी १३२४ की, रावल तेजसिंहके समयकी.

७- चित्तौड़गढ़में महासतीके उत्तरी दर्वाज़हके निकट प्रसिद्ध रसियाकी छत्रीमें, विक्रमी १३३१ की, रावल समरसिंहके समयकी.

(१) यह प्रशस्ति अपूर्ण मिली है, इसलिये इसका संवत् नहीं लिखागया.

८- आबूपर अचलगढ़के मठमें, विक्रमी १३४२ की, रावल समरसिंहके समयकी.

९- गोड़वाड़में राणपुरके जैन मन्दिरमें, विक्रमी १४९६ की, महाराणा कुम्भकर्णके समयकी.

१०- कुम्भलगढ़में मामादेवके ऊपर, वि० १५१७ की महाराणा कुम्भकर्णके समयकी.

११- एकलिंगेश्वरके दक्षिण द्वारवाली, विक्रमी १५४५ की.

अनेक प्रशस्तियों और कईएक ग्रन्थोंकी सहायतासे हमने महाराणा हमीरसिंहसे पहिलेकी वंशावलीको सहीह किया है, और महाराणा हमीरसिंहसे लेकर वर्तमान समयतककी वंशावलीके नामोंमें बिल्कुल सन्देह नहीं है. हमने ऊपर लिखीहुई प्रशस्तियोंमें भी समकालीन वा समीपकालीन प्रशस्तियोंको मुख्य और अन्यको गौण माना है. पहिले हमको ऐतपुरकी प्रशस्तिसे वंशावली लिखनी चाहिये; क्योंकि वह गुहिलसे पन्द्रह पीढ़ी पीछे लिखी गई है, और उसको कूडां, शारणेश्वर, और हरिसिद्धिकी प्रशस्तियां पुष्ट करती हैं; उसके पीछे रसियाकी छत्री तथा आबू अचलगढकी प्रशस्तियोंको मानना चाहिये; और इनके पीछे राणपुरके जैन मन्दिरकी प्रशस्ति माननेके योग्य है.

ऊपर लिखीहुई वंशावलीमें चित्तौड़पर राज्य करनेवाले केवल एकही महाराणा समरसिंह हुए हैं, और रासामें भी यही लिखा है, कि समरसिंह रावल तेजसिंहके पुत्र थे, और उनके ज्येष्ठ पुत्र रत्नसिंह और कनिष्ठ पुत्र कुम्भकर्ण थे, तो तेजसिंहके पुत्र और रत्नसिंहके पिता यही रावल समरसिंह हुए, जिनका नाम पृथ्वीराजरासामें भूलसे बारहवें शतकमें लिखागया.

दिल्लीके बादशाह अलाउद्दीन खल्जीने चित्तौडका क़िला बड़े रक्तप्रवाहके साथ विक्रमी १३५९ [हि० ७०१ = ई० १३०२] में लिया, जबकि समरसिंहके पुत्र रावल रत्नसिंह वहांके राजा थे. इस बातसे पृथ्वीराजरासाका यह लिखना कभी सच या संभव नहीं होसक्ता, कि रावल समरसिंहने पृथ्वीराजकी बहिनके साथ विवाह किया, और वह पृथ्वीराजके साथ विक्रमी ११५८ [हि० ४९४ = ई० ११०१] में मारेगये, क्योंकि यदि ऐसा हुआ होता, तो रावल समरसिंहके पुत्र रत्नसिंह विक्रमी १३५९ [हि० ४९५ = ई० ११०२] में, अर्थात् अपने पिताके देहान्तके २०१ वर्ष पीछे अलाउद्दीनसे किसतरह लड़ाई करते.

१ -- पृथ्वीराजरासाके लेखसे मेवाड़के इतिहासमें साल संवत्की बड़ी ग़लती हुई, क्योंकि रासामें लिखा है, कि रावल समरसिंह विक्रमी ११०६ [हि० ४४० = ई० १०४९] में मेवाड़की गद्दीपर बैठे, और विक्रमी ११५८ [हि० ४९४ = ई० ११०१] में

शहाबुद्दीन ग़ोरीसे लड़कर पृथ्वीराजके साथ मारेगये. इस बातसे रावल समरसिंहका मौजूद होना उनके ठीक समयसे प्रायः १८६ वर्ष पहिले पायाजाता है, और राजपूतानहके बड़वा भाटोंने पृथ्वीराजरासाको सच्चा मानकर ऐसा ही लिखदिया, तो अगली वंशावली (कुर्सीनामों) में भी ग़लती हुई, अर्थात् रावल समरसिंह और राणा मोकलके बीचका समय दोसौ वर्ष अधिक होगया, और भाटोंने ग़लतीके इन वर्षों को समरसिंह और मोकलके बीचके राजाओंके समयमें बांटकर कुर्सीनामहमें अनुमान से साल संवत् लिखदिये.

२- इसी तरह जोधपुरके लोगोंने भी राजा जयचन्द राठौड़ क़न्नौज वालेके गद्दी बैठनेका संवत् विक्रमी ११३२ [हि० ४६७ = ई० १०७५] लिखदिया, क्योंकि पृथ्वीराजने जयचन्दकी बेटी संयोगिताके साथ विवाह किया था; और ग़लतीके एकसौ वर्षोंको राजा जयचन्दसे लेकर मंडोवरके राव चूंडाके अन्तकाल पर्य्यन्त, जो राजा हुए उनके समयमें बांटदिया. राजा जयचन्दका गद्दीपर बैठना विक्रमी ११३२ में किसी तरह नहीं होसक्ता, क्योंकि बंगालेकी एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल (जिल्द ३३, नम्बर ३, पृष्ठ २३२, सन् १८६४ ई०) में क़न्नौजके राठौड़ोंका एक नक़्शह मेजर जेनरल कनिङ्घम साहिबने इस तरहपर लिखा है :-

नाम.	ईसवी सन्.	वि० संवत्.
चन्द्रदेव	१०५०	(११०७)
मदनपाल	१०८०	(११३७)
गोविन्दचन्द्र	१११५	(११७२)
विजयचन्द्र	११६५	(१२२२)
जयचन्द्र	११७५	(१२३२)

इस नक़्शहसे मालूम होता है, कि जयचन्द उस संवत्से १०० वर्ष पीछे हुआ, जोकि जोधपुरके लोगोंने उसके सिंहासनपर बैठनेके लिये पृथ्वीराजरासाके आधारसे लिखदिया. फिर उक्त सोसाइटीके जर्नल नम्बर ३ के पृष्ठ २१७-२२०, सन् १८५८ ई० में फ़िट्ज़ एडवर्ड हॉल साहिबने नीचे लिखेहुए ताम्रपत्रोंकी नक़्ल छापी है:-

नम्बर १०, मदनपाल देवका ताम्रपत्र, विक्रमी ११५४ (= ई० १०९८) का, पृष्ठ २२१.

नम्बर २०, गोविन्दचन्द्रका दानपत्र विक्रमी ११८२ (= ई० ११२६) का, पृष्ठ २४३.

इन ताम्रपत्रोंके संवतोंके देखनेसे स्पष्ट ज्ञात होता है, कि इन राजाओंका राज्यसमय

भी विक्रमी ११३२ से पीछे हुआ, जो संवत् कि जयचन्दके गादी विराजनेके लिये मानलियागया; और राजा जयचन्द, मदनपाल और गोविन्दचन्द्रके बहुत पीछे हुआ है.

३- वैसेही आंबेर (जयपुर) के बड़वा भाटोंने भी प्रजून कछवाहाके (जिसका नाम पृथ्वीराजरासामें पृथ्वीराजके शूर वीरोंमें लिखा है) सिंहासनपर बैठनेका संवत् विक्रमी ११२७ [हि० ४६२ = ई० १०७०], और उसके देहान्तका संवत् विक्रमी ११५१ [हि० ४८७ = ई० १०९४] लिखदिया. ये संवत् भी किसी प्रकार शुद्ध नहीं होसक्ते. यद्यपि मुझको प्रजूनके गद्दी विराजनेका संवत् ठीक ठीक प्रमाणके साथ नहीं मिला है, लेकिन् चूंकि वह पृथ्वीराजके सर्दारोंमेंसे था, इसलिये उसका समय भी विक्रमी १२४९ [हि० ५८८ = ई० ११९२] के लगभग होना चाहिये, जो पृथ्वीराजके मारेजानेका सहीह संवत् है.

४- इसी प्रकार बूंदी, सिरोही, और जयसलमेर इत्यादि रियासतोंके इतिहासोंमें भी अशुद्ध संवत् लिखेगये हैं, जैसाकि पृथ्वीराजरासाके लेखसे मालूम हुआ. इस बातसे इतिहास लिखने वालोंके प्रयोजनमें बड़ा भंग हुआ. यदि कोई यह कहे, कि पृथ्वीराजरासाके लेखकने १२०० की जगह भूलसे ११०० लिखदिया, तो उसका उत्तर यह है:-

प्रथम तो कवितामें ऐसा होनेसे छन्द टूटता है.

दूसरे, 'शिव' और 'हर' ये ज्योतिषके शब्द जो रासामें ११ के लिये लिखेगये हैं, इनका मत्लब १२ कभी नहीं होसक्ता.

तीसरे, वही वर्ष अर्थात् ११००, जो हालकी लिखी हुई पृथ्वीराजरासाकी पुस्तकोंमें मिलते हैं, डेढ़ अथवा दोसौ वर्ष पहिलेकी लिखी हुई पुरानी पुस्तकोंमें भी पायेजाते हैं.

चौथे, संवत् केवल एक या दो स्थानोंमें ही नहीं लिखे हैं, कि लेखक दोष मानलियाजावे, किन्तु कई स्थानोंमें लिखे हैं; और पृथ्वीराजकी जन्मपत्री, जो रासामें लिखी है उसका संवत्, मिती, महीना, ग्रह, घटी, और मुहूर्त, ये सब दोहे और छन्दोंमें लिखे हैं. उस जन्मपत्रीको काशीके विद्वान ज्योतिषी पंडित नारायणदेव शास्त्रीने, जो महाराणा साहिबके यहां नौकर हैं, गणितसे देखा, तो मालूम हुआ, कि वह उस समयकी बनी हुई नहीं है. जन्मपत्रीका गणित प्रश्नोत्तरके तौरपर नीचे लिखे मुवाफ़िक़ है:-

प्रश्न.

संवत् १११५ वैशाख कृष्ण ३ गुरुवार, चित्रा नक्षत्र, सिद्धि योग, सूर्योदयमें डेढ़ घडी बाक़ी रहते जन्म हुआ. पृथ्वीराज नाम होनेसे चित्राका पूर्वार्द्ध कन्या राशि है, पंचम स्थानमें चन्द्रमा और मंगल हैं; एवञ्च कन्या राशि पंचम स्थानमें है, अर्थात् वृष

लग्नमें जन्म है; अष्टमें शनि, दशमें गुरु, शुक्र और बुध; एकादशमें राहु; और द्वादशमें सूर्य; यह ग्रहव्यवस्था सब सहीह है वा गलत इसका उत्तर गणित समेत कहो?

उत्तर.

श्री सूर्य सिद्धान्तके अनुसार संवत् १११५ वैशाख कृष्ण ३ रविवारको होती है (१). कलियुगादि अहर्गण १५१९१००, स्पष्ट सूर्य ११।२१।२४।२९॥, स्पष्ट चन्द्र ६।१६।२७।१७, नक्षत्र स्वाति और योग वज्र होता है; और सूर्योदयके पहिले यदि जन्म है, तो लग्नसे द्वादश सूर्य किसी तरह नहीं होसक्ता; और वृष लग्नमें द्वादश सूर्य उस हालतमें होगा जबकि वह मेषका होगा, यहां तो मीनका है; और अब भौमादिक ग्रह स्थितिपर विचार करना कुछ आवश्यक नहीं, इतनेसे ही निश्चित होता है, कि प्रश्न लिखित वार आदि, तथा लग्न, चन्द्र, और सूर्यस्थिति असंगत हैं.

ऐसे ही पृथ्वीराजरासामें शहाबुद्दीन और पृथ्वीराजकी अन्तिम लड़ाईका संवत्, जिसमें पृथ्वीराज मारागया, ११५८ लिखा है, और तिथि श्रावण वदि ३०, कर्क संक्रान्ति, रोहिणी नक्षत्र, और चन्द्रमा वृष राशिका लिखा है. यदि चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्रपर हो, तो सूर्यकी वृष राशि होती है, और नियमसे अमावास्याके सूर्य और चन्द्रमा एक ही राशिपर होते हैं. कर्क राशिपर सूर्यका होना तो शुद्ध मालूम होता है, परन्तु वृषका चन्द्रमा जो पृथ्वीराजरासामें लिखा है वह नहीं होसक्ता, कर्कका चन्द्रमा होना चाहिये. इससे जाना जाता है, कि ग्रन्थकर्ता ज्योतिष नहीं पढ़ा था, इसलिये उक्त भूलपर ध्यान नहीं दिया; और यह भी स्पष्ट है, कि वह राजा सोमेश्वरदेव अथवा पृथ्वीराज चहुवानका कवि नहीं था; क्योंकि यदि ऐसा होता, तो वह पृथ्वीराजकी जन्मतिथि, मुहूर्त, और लग्न अवश्य ठीक ठीक जानता; और चन्द बरदाई नामके कविका होना भी पृथ्वीराजरासाहीसे जाना जाता है.

हमारा मन्शा वादानुवाद बढ़ानेके विचारसे इन दलीलोंके लिखनेका नहीं है, बरन केवल इस गरज़से कि उक्त ग्रन्थके लेखसे जो खामी इतिहासमें आगई है वह दूर कीजाये. यदि कोई कहे, कि पृथ्वीराजरासामें कुछ हिस्सह पृथ्वीराजके समयका चन्दका बनायाहुआ होगा, जिसको क्षेपक मिलाकर लोगोंने बढ़ादिया है; तो यह भी नहीं होसक्ता, क्योंकि ग्रन्थकर्ता कवि लोग अपने ग्रन्थोंमें नीचे लिखी हुई

(१) संवत् १११५, शके ९८० वैशाख कृष्ण ३, कलि गताब्दाः ४१५९, अधिमासाः १५९३, ऊनाहाः २४१२६, अहर्गणः १५१९१००, ततस्तष्टेवारः २ शुक्रवारात् गणिते ज. ने रविवारः एवंच वैशाख कृष्ण ३ रविवासरेऽस्तीति सिद्धं.

बातें दर्ज करना मुख्य मानते हैं:- पहिले, वंशवर्णन; दूसरे, विवाहादि सम्बन्ध; तीसरे, लड़ाइयां; और चौथे, जन्म व मृत्युका हाल.

प्रथम तो इस ग्रन्थमें पृथ्वीराजके पूर्वजोंका वंश वृक्ष ही अशुद्ध है, जो ख़ास महाराजा पृथ्वीराजके पिता सोमेश्वरदेवके समयकी लिखी हुई बीजोलियाकी प्रशस्तिके मिलानेसे पाठक लोगोंको अच्छी तरह मालूम होसक्ता है.

दूसरे, विवाहादि सम्बन्धका यह हाल है, कि चित्तौड़के रावल समरसिंहका ज़मानह पृथ्वीराजरासाके लेखसे दोसौ वर्ष पीछे पत्थरकी प्रशस्तियोंसे साबित हुआ है, तो इस हालतमें उनका विवाह भी राजा पृथ्वीराजकी बहिनके साथ होना बिल्कुल ग़लत है. इसके अलावह आबूके राजा सलख पुंवारकी बेटी और जैत पुंवारकी बहिन इंछनीके साथ पृथ्वीराजका विवाह होना रासामें लिखा है, वह भी ग़लत है; क्योंकि आबूके पाषाण लेख और ताम्रपत्रोंसे पुंवार राजाओंकी वंशावलीमें सलख और जैत नामका कोई राजा नहीं लिखा. फिर उज्जैनके राजा भीमदेव प्रमारकी बेटी इन्द्रावतीके साथ भी पृथ्वीराजका विवाह होना रासामें ग़लत लिखा है, क्योंकि उज्जैनके प्रमार राजाओंकी वंशावलीसे भीमदेव नामके किसी राजाका होना नहीं पायाजाता, बल्कि उस समयसे बहुत पहिले प्रमार राजाओंने उज्जैन छोड़कर धारा नगरीमें अपनी राजधानी क़ाइम करली थी.

तीसरे, राजा पृथ्वीराजकी लड़ाइयोंका हाल सुनिये, कि गुजरातके सोलंखी राजा भीमदेवके साथ पृथ्वीराजकी जो कई लड़ाइयां रासामें लिखी हैं, वहांपर लिखा है, कि जब अख़ीरमें पृथ्वीराजका पिता सोमेश्वरदेव भीमदेवसे लड़कर मारागया, तो पृथ्वीराजने लड़ाईमें भीमदेवको मारकर अपने पिताका बदला लिया. अगर्चि ये लड़ाइयां पृथ्वीराज-रासामें बड़ी तवालतके साथ लिखी गई हैं, लेकिन् भीमदेवका ताम्रपत्र, जो उसने संवत् १२५६ में भूमिदान देनेके समय लिखा था, और जिसमें उसका वंश वृक्ष भी दर्ज है, वह पृथ्वीराजरासाके भीमवध पर्वके लेखसे ११४ वर्ष बाद, और पृथ्वीराजके मारेजानेके अस्ली संवत् विक्रमी १२४९ [हि० ५८८ = ई० ११९२] से ७ वर्ष पीछेका है. इससे साबित हुआ, कि पृथ्वीराजके मरे पीछे सात वर्षतक भीमदेव ज़िन्दह रहा, तो क्या वह मरनेके बाद दोबारह जीवित होकर गुजरातका राज्य करता था ? इसी तरह रावल समरसिंहके साथ करेड़ा ग्राममें भीमदेवकी लड़ाई होना, और उस मौक़ेपर मददके लिये वहां पृथ्वीराजका आपहुंचना लिखा है, वह भी बिल्कुल ग़लत है; क्योंकि रावल समरसिंह भीमदेवके समयसे बहुत पीछे अलाउद्दीन ख़ल्जीके ज़मानेमें चित्तौड़पर राज्य करते थे, जबकि सोलंखियोंका राज्य गुजरातसे नष्ट होचुका था. ऐसेही

शहाबुद्दीन ग़ोरीको कई बार पृथ्वीराजने गिरिफ़्तार किया लिखा है, वह भी तवारीखोंके देखनेसे गलत मालूम होता है.

चौथे, पृथ्वीराजके जन्म और मृत्युका हाल भी माननेके लाइक़ नहीं है, जिनमेंसे उसके जन्मकी तफ़्सील तो ऊपर बयान होही चुकी; अब मौतका हाल सुनिये. पृथ्वीराजरासामें लिखा है, कि शहाबुद्दीन ग़ोरी उस (पृथ्वीराज) को गिरिफ़्तार करके ग़ज़नी लेगया, और छः महीने बाद चन्द भाट भी वहां पहुंचा. चन्दने बादशाहसे कहा, कि राजा तीरसे पीतलके घड़ियालको फोड़ डालता है. बादशाहने परीक्षाके तौरपर राजाको ऐसा करनेकी इजाज़त दी. अगर्चि बादशाहने राजाको अंधा करदिया था, तथापि उस (पृथ्वीराज) ने इम्तिहानके समय आवाज़के सहारेसे शहाबुद्दीनको मारडाला, और आप भी चन्द भाट सहित आत्मघात करके वहीं मरगया. इसके बाद दिल्लीमें पृथ्वीराजका बेटा रेणसी गद्दीपर बैठा, जिसने पंजाबका मुल्क मुसल्मानोंसे वापस लेना चाहा; उस समय शहाबुद्दीनका बेटा विनयशाह चढ़कर आया, रेणसी उससे लड़कर मारागया, और दिल्लीमें मुसल्मानी बादशाहत होगई. उक्त ग्रन्थकी ये सब बातें बिल्कुल बनावटी मालूम होती हैं, क्योंकि अव्वल तो शहाबुद्दीन ग़ोरी पृथ्वीराजके मारेजाने बाद चौदह वर्षतक ज़िन्दह रहा, और उक्त राजाको मारकर देशको बर्बाद करता हुआ अजमेरतक आया, और उसके गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबकने दिल्लीपर क़बज़ह करलिया. फिर दूसरे साल शहाबुद्दीनने आकर क़न्नौजको फ़त्ह करलिया. इसीतरह उसने कई बार हिन्दुस्तान और तुर्किस्तान वग़ैरह मुल्कोंपर हमले किये, जिनकी तफ़्सील फ़ार्सी किताबोंमें लिखीगई है. आख़रकार वह हिज्री ६०२ [वि० १२६३ = ई० १२०६] में ग़ज़नीके पास दमयक गांवमें कक्खड़ोंके हाथसे मारागया. उसके एक बेटीके सिवा कोई औलाद नथी, जिससे हिन्दुस्तानका बादशाह तो उसका गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक बनगया, और ग़ज़नी वग़ैरह इलाक़ोंपर उसके भाई ग़यासुद्दीन मुहम्मदका बेटा ग़यासुद्दीन महमूद क़ाबिज़ हुआ, लेकिन् थोड़े ही दिनों पीछे शहाबुद्दीनके दूसरे गुलाम ताजुद्दीन यल्दुज़ने किर्मानसे आकर ग़ज़नी वग़ैरहपर क़बज़ह करलिया, और वह लाहौरपर चढ़ा, तब कुतुबुद्दीनसे शिकस्त पाकर किर्मानको चलागया. कुतुबुद्दीन ४० रोज़तक ग़ज़नीपर क़ाबिज़ रहा, फिर उसको निकालकर ताजुद्दीन मुस्तार होगया.

अब देखना चाहिये, कि पृथ्वीराजरासाके लेख और फ़ार्सी तवारीखोंके — कितना फ़र्क़ है. जब ऊपर लिखी हुई मुख्य मुख्य बातें गलत होचुकीं, — जिक्र है, जिसको पृथ्वीराजरासामें हम पुराना मानकर उसे चन्द — खयाल करें. हमारे ख़यालसे जिसतरह मलिक मुहम्मद जायसीने

हुई

गाथा: १५२२.

रविवार: एवंच

क़िस्सह बनालिया, उसी तरह पृथ्वीराजरासा भी किसीने ख़याली बनालिया है, क्योंकि इसमें थोड़ेसे सहीह नामोंके साथ खयाली नाम और ख़याली क़िस्से घड़लिये गये हैं; जिस तरह हंसावतीके विवाह पर्वमें लिखा है, कि राजा पृथ्वीराजका तोता उड़कर समन्दशिखरके राजाकी बेटी हंसावतीके पास चलागया, और उस पक्षीने पृथ्वीराजकी तारीफ़ की, जिसको सुनकर हंसावती पृथ्वीराजपर आशिक़ होगई, और वही तोता उस राजकुमारीका भेजाहुआ पृथ्वीराजके पास आया, और उस राजकन्याकी तारीफ़ करके राजाको मोहित किया; और उसी तोतेके साथ फ़ौज सहित चढ़ाई करके पृथ्वीराज हंसावतीको व्याहलाया. इसीतरह एक हंसके कहने सुननेसे देवगिरीके राजाकी बेटी पद्मावतीके साथ पृथ्वीराजका विवाह हुआ; और ऐसेही एक तोतेके परस्पर संदेसा पहुंचानेसे क़न्नौजके राजा जयचन्दकी बेटी संयोगिता और पृथ्वीराजके आपसमें प्रीति उत्पन्न हुई थी. भला ऐसे ख़याली क़िस्सोंकी किताब ऐतिहासिक काव्योंमें किसतरह दाख़िल होसक्ती है ? पृथ्वीराजरासामें शहाबुद्दीन ग़ोरीको सिकन्दर जलालका बेटा लिखा है, और उसका हाल फ़ार्सी तवारीख़ोंमें इसतरहपर है:-- " महमूद ग़ज़नवी और उसके बेटे मसऊदके .इलाक़ेदार सर्दारोंमें ग़ोरके ज़िलेका रहनेवाला हुसैन ग़ोरी फ़ीरोज़कोहका मालिक था, जिसके बेटे अलाउद्दीन ग़ोरी, साम ग़ोरी व सैफ़ुद्दीन ग़ोरी वग़ैरह थे. महमूदकी औलादमेंसे बहरामशाह ग़ज़नवीको निकालकर अलाउद्दीन ग़ोरी मालिक होगया, और उसने अपने भाई साम ग़ोरीके बेटे ग़यासुद्दीन और शहाबुद्दीनको ग़ज़नीका .इलाक़ह देदिया. अलाउद्दीनके मरनेके बाद ग़यासुद्दीन तो फ़ीरोज़कोहका मालिक रहा, और उसने अपने छोटे भाई शहाबुद्दीनको ग़ज़नीपर मुख़्तार किया ". लेकिन् पृथ्वीराजरासेका बनानेवाला तवारीख़ नहीं जानता था, इसलिये उसने शहाबुद्दीन ग़ोरीको एलेग्ज़ैंडर, याने सिकन्दरका बेटा खयाल करलिया होगा. अलावह इसके शहाबुद्दीन ग़ोरीके सर्दारोंके जो नाम पृथ्वीराजरासामें लिखे हैं, वह ख़याली नाम हैं, जिनमेंसे थोड़ेसे नाम चुनकर उदाहरणके तौरपर नीचे लिखे जाते हैं:-

खुरासानखां	हासनखां	तोसनखां	ततारखां	बिराहमखां
मूसनखां	पीरोजखां	गजनीखां	सोसनखां	नवरोजखां
दादूखां	अलीखां	आलमखां	मुस्तफाखां	सुरेमखां
[illegible]	ऊमरखां	ममरेजखां	पीरनखां	कोजकखां
[illegible]	रेसनखां	जलालखां	जलूखां	मोहबतखां
[illegible]	क़ाइमखां	राजनखां	मीरनखां	मिरजाखां
[illegible]	देगनखां	जोसनखां	हाजीखां	दोसनखां

जलेबखां　गाज़ीखां　लालनखां　महदीखां　सेरनखां
गालिबखां　सहदीखां　नगनीखां　समोसनखां　एरनखां
मीरखां　एलचीखां,

और शहाबुद्दीनके क़ाज़ीका नाम मदन लिखा है.

अब हम 'तबक़ाति नासिरी' से शहाबुद्दीनके रिश्तहदार और सर्दारोंके नाम लिखते हैं, जो ऊपर बयान कियेहुए ख़याली नामोंसे कुछ भी नहीं मिलते - (देखो तबक़ाति नासिरी, पृष्ठ १२५):-

बादशाहके क़ाज़ी.

१ - क़ाज़ी ममालिक सद्र शहीद निज़ामुद्दीन अबूबक्र.

२ - क़ाज़ी लश्कर व वकील ममालिक शम्सुद्दीन बल्ख़ी.

बादशाहके कुटुम्बी और सर्दार.

मलिक ज़ियाउद्दीन.
सुल्तान बहाउद्दीन साम.
सुल्तान ग़यासुद्दीन महमूद.
मलिक बद्रुद्दीन कैदानी.
मलिक कुतुबुद्दीन तमरान.
मलिक ताजुद्दीन हरब.
मलिक ताजुद्दीन मकरान.
मलिक अलाउद्दीन.
मलिक शाह बख़्श.
मलिक नासिरुद्दीन ग़ाज़ी.
मलिक ताजुद्दीन ज़ंगी बामियान.
मलिक नासिरुद्दीन मादीन.
मलिक मसऊद.
मुय्यदुद्दीन मसऊद.
मलिक यूसुफ़ुद्दीन मसऊद.
मलिक नासिरुद्दीन तमरान.
मलिक हिसामुद्दीन अली किर्मांज.
मलिक मुय्यदुल्मुल्क किर्मांज.
मलिक शहाबुद्दीन मादीनी.

सुल्तान ताजुद्दीन यल्दुज़.
सुल्तान ग़यासुद्दीन.
सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक.
मलिक रुकनुद्दीन सूर कैदान.
अमीर हाजिब हुसैन मुहम्मद अली ग़ाज़ी.
अमीर हाजिब हुसैन मुहम्मद हबशी.
अमीर सुलैमान शीश.
अमीर दाद.
अमीर हाजिबहुसैन सर्जी.
अमीर हाजिबख़ां.
मलिक हसनुद्दीन अली किर्मांना.
मलिक ज़हीरुद्दीन किर्मांज.
मलिक ज़हीरुद्दीन फ़तूह किर्मांज.
मलिक हुसैनुद्दीन.
मलिक .इज़्ज़ुद्दीन ख़र्मील.
मलिक मुबारिज़ुद्दीन बिन् मुहम्मद
अत्सर.
मलिक नासीरुद्दीन हुसैन, अ
मलिक शम्सुद्दीन सूर कैदा

६३
...सा: १५३३,
...ने रविवार : एवंच

सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमिश. मलिक इख़्तियारुद्दीन हर्वली.
सुल्तान अलियुद्दीन महमूद. मलिक असदुद्दीन शेर.
सुल्तान नासिरुद्दीन क़बाचा. मलिक अह्मरी.

इनमेंसे नीचे लिखे हुए चार सर्दार गुलामोंने बादशाहीका दरजह हासिल कियाः-

सुल्तान ताजुद्दीन यल्दुज़. सुल्तान नासिरुद्दीन क़बाचा.
सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमिश. सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक.

शहाबुद्दीन गौरीके वज़ीर.

ज़ियाउल्मुल्क दुरमुन्शी. मुय्यदुल्मुल्क मुहम्मद अब्दुल्लाह संजरी.
शम्सुल्मुल्क अब्दुल् जब्बार केदानी.

पृथ्वीराजरासाके ख़याली नामोंसे तबक़ाति नासिरीमें लिखे हुए अस्ली नाम बिल्कुल नहीं मिलते, और ख़याली नाम भी बिल्कुल नावाक़िफ़ आदमीने घड़लिये हैं, जिनको सुनतेही यक़ीन होजाता है, कि ये बनावटी नाम हैं.

अलावह इन बातोंके पृथ्वीराजरासाकी बड़ी लड़ाईके पत्र ३३३ में लिखा है, कि रावल समरसिंह पृथ्वीराजकी मददको दिल्ली जानेलगे, उसवक्त उन्होंने अपने बड़े पुत्र रत्नसिंहको चित्तोड़का राज्य देकर बहुत कुछ नसीहत की, और छोटे पुत्र कुम्भकर्णको कुछ न कहा, जिससे वह नाराज़ होकर बहशी बादशाहके पास चलागया, और बादशाहने उसको बिदरनगर जागीरमें दिया. ग्रन्थकर्ताका प्रयोजन बहशी बादशाहसे बह्मनी बादशाह था, क्योंकि बिदर शहर दक्षिणमें है. इससे भी मालूम होता है, कि ग्रन्थकर्ता तवारीख़से बिल्कुल वाक़िफ़ नथा, और इसी सबबसे उसने ऐसी गलत घड़ंत करली; क्योंकि हिज्री ७४८ [वि० १४०४ = ई० १३४७] में अलाउद्दीन गांगू बह्मनीने दिल्लीके बादशाह मुहम्मद तुगलक़के समय दक्षिणमें अपनी राजधानीकी बुन्याद डाली थी, और पृथ्वीराजरासेका बनाने वाला बह्मनी सल्तनतको शहाबुद्दीन गौरीसे भी पुरानी जानता था.

जब रावल समरसिंह पृथ्वीराजकी मददके लिये दिल्ली पहुंचे, उससमय चन्द भाटने समरसिंहकी तारीफ़में नीचे लिखे हुए पद कहे हैंः-

" दख्खनि साहि भंजन अलग्ग, चन्देरि लिद्ध किय नाम जग्ग ".

इन शब्दोंसे ग्रन्थकर्ताका प्रयोजन मांडूके बादशाहसे है, क्योंकि चंदेरी उन्हींके क़बज़ेमें थी, और मांडू राजपूतानहसे दक्षिण तरफ़ है, और चंदेरीको मांडूके बादशाह दूसरे महमूदसे महाराणा संग्रामसिंह (सांगा) ने लिया था. ग्रन्थकर्ता यह भी नहीं जानता था, कि मांडूकी बादशाहतकी बुन्याद दिलावर गौरीने हिज्री ८०९ [वि० १४६३

= .ई० १४०६] में फ़ीरोज़शाह तुग़लक़के बेटे मुहम्मदशाहके समयमें क़ाइम की थी, और दूसरे महमूदकी लड़ाई महाराणा संग्रामसिंहसे विक्रमी १५७५ [हि० ९२४ = .ई० १५१८] में हुई थी. इन बातोंसे सिद्ध होगया, कि यह ग्रन्थ महाराणा सांगाके समयसे बहुत अरसे बाद घड़ंत कियागया है. ग्रन्थकर्त्ता लिखता है, कि चन्द भाटने रावल समरसिंहको यह आशिस दी- " कलंकियां राय केदार, पापियां राय प्रयाग, हत्यारां राय वाराणसी, मदवीनराय राजानरी गंग, सुल्तान ग्रहण मोषण, सुल्तान माण मलण, " इत्यादि.

इन शब्दोंसे, याने सुल्तानको पकड़कर छोड़नेवाले, और सुल्तानका मान भंग करने वालेसे साफ़ तौरपर साबित होता है, कि मांडूके बादशाह दूसरे महमूदको महाराणा सांगाने पकड़कर छोड़ा था, और गुजराती बादशाहके देशको लूटकर उन्होंने उसका मान भंग किया था. बहमनी बादशाहके पास जो कुम्भकर्णका जाना लिखा उससे यह साबित होगया, कि उस बादशाहतके क़ाइम होनेके बहुत अरसे बाद यह ग्रन्थ बनायागया. फिर मांडूके बादशाह महमूद ख़ल्जीसे चंदेरीका लेना, और उक्त बादशाहको गिरिफ़्तार करके पीछा छोड़ना तथा मुज़फ़्फ़रशाह गुजरातीका मान भंग करना, इत्यादि मज़्मूनोंसे साफ़ ज़ाहिर है, कि महाराणा संग्रामसिंह अव्वलके समयमें विक्रमी १५७५ [हि० ९२४ = .ई० १५१८] के बाद यह ग्रन्थ बनायागया; लेकिन् मेरा ख़याल है, कि उक्त ज़मानहसे भी बहुत अरसे बाद यह ग्रन्थ बना है; क्योंकि यह बात तो इस ग्रन्थकी चाल ढाल और शब्दोंसे अच्छीतरह साबित है, कि यह ग्रन्थ राजपूतानहके कविने बनाया; और राजपूतानहकी कवितामें फ़ार्सी शब्दोंका प्रचार अक्बर बादशाहके समयसे होने लगा है, क्योंकि उक्त बादशाहके समयमें मेवाड़से महाराज शक्तिसिंह, सगरसिंह, जगमाल, और रामपुराका राव दुर्गभाण वग़ैरह; और मारवाड़से राव मालदेवके बेटे रामसिंह, व उदयसिंह वग़ैरह; और बीकानेरके महाराजा रायसिंह, व आंबेरके महाराजा मानसिंह इत्यादि क्षत्रिय सर्दारोंके साथ मारवाड़ी कवियोंकी भी बादशाही दर्बारमें आमद रफ़्त हुई, तबसे ये लोग फ़ार्सी शब्दों को अपनी कवितामें शामिल करने लगे. इस ज़मानहसे पहिलेकी जो मारवाड़ी कविता मिलती है उसमें फ़ार्सी शब्द बहुतही कम देखनेमें आते हैं. उक्त बादशाहकी तख़्तनशीनीके बाद, और विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = .ई० १६१४] के पहिले यह ग्रन्थ बनायागया, क्योंकि पृथ्वीराजरासाके दिल्ली प्रस्ताव पर्वमें इसतरह लिखा है:-

दोहा.

सोरेसे सत्तोतरे विक्रम साक विदीत ॥
दिल्ली धर चित्तौड़पत ले खागां वलजीत ॥ १ ॥

ग्रन्थकर्त्ताने भविष्यद्वाणी लिखी है, कि विक्रमी १६७७ [हि० १०२९ = .ई० १६२०] में चित्तौड़के राजा दिल्लीकी धरती फ़तह करलेंगे; लेकिन् विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = .ई० १६१४] में जहांगीर बादशाह और महाराणा अव्वल अमरसिंहसे सुलह हुई, और महाराणाने नामके लिये राजकुमार कर्णसिंहको बादशाहके पास भेजकर इताअ़त कुबूल की, उस समयसे पहिले वैसा लिखना संभव था. उसके बाद राजपूतानहके लोगोंके ख़यालमें फ़र्क़ आगया था, जिससे हम यक़ीन करते हैं, कि अक्बरकी तख़्तनशीनीके कुछ अ़रसे बाद, और जहांगीरके शुरू अ़ह्दसे पहिले यह ग्रन्थ बनाया गया था. इस विषयको हम बंगालेकी एशियाटिक सोसाइटीके सामयिक पत्र (.ईसवी १८८६ के जर्नल नम्बर १, भाग १) में मुद्रित कराचुके हैं, जिसमें सब हाल सविस्तर प्रश्नोत्तर सहित लिखागया है.

रावल समरसिंहका इतिहास पृथ्वीराजरासाके अ़लावह कहीं नहीं मिलता, बड़वा भाटोंकी और ख्यातिकी पोथियोंमें भी इसी ख़याली ग्रन्थसे चुनकर दर्ज कियागया है.

अब हम रावल समरसिंहसे लेकर अजयसिंहतककी पीढ़ियोंका ज़िक्र लिखते हैं.

१ - रावल समरसिंह.	६ - राणा दिनकरण.	१२ - राणा भीमसिंह.
२ - रावल रत्नसिंह.	७ - राणा जसकरण.	१३ - राणा जयसिंह.
३ - रावल कर्णसिंह.	८ - राणा नागपाल.	१४ - राणा गढ़लक्ष्मणसिंह.
४ - रावल माहप और उनके भाई महाराणा राहप.	९ - राणा पूर्णपाल.	१५ - राणा अरिसिंह.
	१० - राणा पृथ्वीपाल.	१६ - राणा अजयसिंह.
५ - राणा नरपत.	११ - राणा भुवनसिंह.	

इन पीढ़ियोंके हालमें बड़वा भाटों और ख्यातिकी पोथियां लिखनेवालोंने पृथ्वीराजरासाके ग़लत संवत्का अन्तर फैलाकर बहुतसी घड़न्तें घड़ली हैं, जैसे अ़लाउद्दीन खल्जीकी लड़ाई, जो विक्रमी १३५९ [हि० ७०२ = .ई० १३०२] में रावल समरसिंहके पुत्र रत्नसिंहके साथ हुई थी, उसको उन्होंने लक्ष्मणसिंह और अरिसिंहके साथ होना लिखा है; और उसी लड़ाईमें १३ पीढ़ियोंका माराजाना और लक्ष्मणसिंहके भाई रत्नसिंहकी राणी पद्मिनीका अनेक स्त्रियोंके साथ तहखानोंमें बन्द करदेनेसे प्राण देना लिखा है; लेकिन् हमारे ख़यालमें यह बात नहीं आसक्ती. मालूम होता है, कि बड़वा

भाटोंनें पृथ्वीराजरासाके लेखको सच्चा मानकर शहाबुद्दीनके ११५ वर्ष बाद और पृथ्वीराजरासाके लेखसे २०१ वर्ष पीछे अलाउद्दीन ख़ल्जीका चित्तौड़को घेरना समझकर रत्नसिंहकी जगह लक्ष्मणसिंहके साथ अलाउद्दीनकी लड़ाई होना ख़याल करके वैसाही लिखदिया. विक्रमी १३४४ की प्रशस्तिसे यह तो साबित होही चुका, कि उस समय रावल समरसिंह चित्तौड़पर राज्य करते थे, और तअज्जुब नहीं, कि उसके बाद वह पांच सात वर्ष फिर भी जीते रहे हों; और उनके बेटे रावल रत्नसिंहके साथ अलाउद्दीन ख़ल्जीकी लड़ाई होना कुल तवारीख़ोंमें लिखा है, उनमें यह भी लिखा है, कि पद्मिनीके भाई गोरा व बादलने बादशाहसे बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़ीं; रावल रत्नसिंहकी राणी पद्मिनी हज़ारों स्त्रियों सहित आगमें जलमरी; अलाउद्दीनने इस क़िले (चित्तौड़) को फ़त्ह करके अपने बेटे ख़िज़रखांको सौंपदिया, और क़िलेका नाम ख़िज़राबाद रक्खा; और अपने बेटेको वलीअह्द बनानेका जल्सह भी इसी क़िलेमें किया. अलाउद्दीन ख़ल्जी हिज्री ६९५ [वि० १३५३ = ई० १२९६] में अपने चचा जलालुद्दीन ख़ल्जीको मारकर दिल्लीके तख़्तपर बैठा; और छः महीनेतक घेरा डालनेके बाद हिज्री ७०३ मुहर्रम [वि० १३६० भाद्रपद = ई० १३०३ ऑगस्ट] में उसने क़िला चित्तौड़ फ़त्ह किया; और हिज्री ७१६ ता० ६ शव्वाल [विक्रमी = १३७३ पौष शुक्ल ७ = ई० १३१६ ता० २२ डिसेम्बर] को वह मरगया. इससे यह बात अच्छी तरह साबित होगई, कि अलाउद्दीन ख़ल्जीसे रावल समरसिंहके पुत्र रत्नसिंहकी लड़ाई हुई थी; और तारीख़ फ़िरिश्तहमें जो यह बात लिखी है, कि चित्तौड़ वालोंने बादशाही मुलाज़िमको हाथ और गर्दन बांधकर क़िलेसे गिरादिया, जबकि अलाउद्दीनके मरनेका ज़मानह क़रीब था. यह ज़िक्र महाराणा भुवनसिंहका है, क्योंकि राणपुरके जैन मन्दिरकी प्रशस्तिमें उक्त महाराणाको अलाउद्दीनका फ़त्ह करनेवाला लिखा है. भुवनसिंहसे पहिले नव पीढ़ियां, याने रत्नसिंहसे पृथ्वीपालतक नव राजा चित्तौड़ लेनेके इरादोंसे मारेगये थे. जब राहपका बड़ा भाई माहप नाउम्मेद होकर डूंगरपुरमें जारहा, तो उसका छोटा भाई राहप चित्तौड़ लेनेके लिये हमला करता रहा, यहांतक कि, वह अपने दुश्मन मंडोवरके मोकल पडियारको गिरिफ़्तार करलाया, और उसका ख़िताब छीनकर आप महाराणा कहलाया, और ऐसी तक्लीफ़की हालतोंमें भी बड़े बड़े बहादुरीके काम करनेपर अपने बाप दादोंकी बुज़ुर्गीका हक़दार बनगया.

कहते हैं, कि कुम्भलमेरके पहाड़ोंमें सीसोदा ग्राम राहपने ही आबाद किया था. पहिले इन महाराणाओंके पुरोहित चौईसा जातिके ब्राह्मण थे, जो तो माहपके साथ रहे, जिनकी औलाद वाले डूंगरपुरमें अबतक पुरोहित कहलाते हैं; और राहपका

सलाहकार एक सरसल पल्लीवाल ब्राह्मण था, उसको राहपने अपना पुरोहित बनालिया, और उसीकी औलादमें अबतक उदयपुरकी पुरोहिताई है. राहप अर्वली पहाड़में रहकर चित्तौड़ लेनेके लिये धावा करता रहा, और आखरकार वह उन्हीं लड़ाइयोंमें मारागया. उसके पीछे भुवनसिंहने क़िला चित्तौड़ लेलिया, और उसी अरसेमें अलाउद्दीन ख़ल्जीके मरजानेके सबब दिल्लीकी तरफ़से बाज़पुर्स नहुई, परन्तु जब कुछ अरसे बाद हिज्री ७२५ रबीउल्अव्वल [वि० १३८१ फाल्गुन् = .ई० १३२५ फ़ेब्रुअरी] में मुहम्मद तुग़लक़ दिल्लीका बादशाह बना, तो उसने मेवाड़के राजाओंकी सरकशीका खयाल किया, और अपनी फ़ौज चित्तौड़पर भेजी. मेरे ख़यालसे यह ज़मानह महाराणा लक्ष्मणसिंहका मालूम होता है, जो बादशाही फ़ौजके मुक़ाबलेमें बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर मारेगये, और जिनके बेटे अरिसिंह भी इसीतरह लड़कर काम आये, और उनके भाई अजयसिंह ज़ख़्मी होकर अर्वलीके पहाड़ोंमें जारहे, जिनका कुछ अरसे बाद वहीं देहान्त होगया.

मुहम्मद तुग़लक़ने एक मस्जिद क़िले चित्तौड़पर बनवाई, और उसमें बड़े बड़े अक्षरोंमें एक प्रशस्ति भी खुदवाई थी – (देखो शेष संग्रह). मुहम्मद तुग़लक़ने मालदेव सोनगराको यह क़िला इसलिये दिया था, कि यह क़िला राजपूतके बिना किसी दूसरेके क़बज़ेमें नहीं रहसक्ता था. बड़वा भाटों और ख्यातिकी पोथियोंका बयान है, कि लक्ष्मण-सिंहने अलाउद्दीन ख़ल्जीसे लड़ाइयां लड़ीं, उस समय तेरह पीढ़ियां काम आईं; परन्तु अलाउद्दीन ख़ल्जीके साथ लक्ष्मणसिंहकी लड़ाई होना, तो ऊपर लिखी हुई दलीलोंसे किसी हालतमें सहीह नहीं मानाजासक्ता, अल्बत्तह मुहम्मद तुग़लक़के साथ होना संभव है. अब रहा हाल तेरह पीढ़ियोंका, जिसकी बाबत् यह कहा जासक्ता है, कि रावल रत्नसिंहसे लेकर अजयसिंहतक पन्द्रह पीढ़ियां होती हैं, उनमेंसे शायद दो राजा-ओंके सिवा तेरह राजा मुसल्मानोंसे चित्तौड़के लिये लड़कर मारेगये होंगे, जिनका बड़वा भाटोंने एकट्ठा माराजाना ख़याल करलिया है; और राणपुरके जैन मन्दिरकी प्रशस्तिमें रावल समरसिंहके बाद भुवनसिंहका नाम लिखाजाकर, जयसिंह, लक्ष्मणसिंह, अरिसिंह तथा अजयसिंह दर्ज कियेगये हैं. इससे यह मालूम होता है, कि जिनके नाम नहीं लिखेगये, वे रावल समरसिंहके बेटे अथवा पोते होंगे, जो महाराणाके पिताके गद्दीपर बैठकर चित्तौड़ लेनेके उद्योगमें मारेगये; और भुवनसिंह रत्नसिंहका छोटा भाई होगा, जिसने दूसरे राजाओंके नाम छोड़कर अपनेको अपने बाप समरसिंहकी [illegible] दिलाई होगी. इसी तरह भीमसिंह और जयसिंह भी भाई थे. जिन्होंने [illegible] अपने बड़े भाई भीमसिंहका नम्बर छोड़कर अपने पिता [illegible]

जोकि यह रवाज ज़मानह क़दीमसे चलाआता है, इसलिये मेरा ख़याल है, कि राणपुरकी प्रशस्तिमें भी कई राजाओंके नाम इसीतरह छोड़दियेगये हैं; लेकिन् उनके होनेमें किसी तरहका सन्देह नहीं. कुम्भलमेरकी प्रशस्तियोंमें लक्ष्मणसिंह और अरिसिंहका वर्णन लिखा है, और ये प्रशस्तियां उक्त राजाओंसे १२५ वर्ष बाद लिखीगई हैं, लेकिन् उनमें अलाउद्दीन ख़ल्जीकी लड़ाइयोंका कुछ भी ज़िक्र नहीं है, इसलिये हमने उन ख़याली क़िस्सोंको छोड़दिया, जो बड़वा भाटोंने मनमाने घड़ लिये हैं, अल्बत्तह रावल रत्नसिंह और अलाउद्दीन ख़ल्जीकी लड़ाई वग़ैरहका हाल लिखनेके योग्य है, लेकिन् उसको फ़ार्सी तवारीख़ोंमें मुख़्तसर तौरपर लिखा है. पद्मावतीकी बाबत् कई तरहके क़िस्से मश्हूर हैं. बाज़े लोगोंका क़ौल है, कि रावल रत्नसिंहकी राणी पद्मिनी (पद्मावती) सिंहलद्वीपके राजाकी बेटी थी, सो ख़ैर इसका तो कुछ आश्चर्य नहीं, क्योंकि बहुत समयसे उक्त टापूके राजा सूर्यवंशी थे, और उनके साथ चित्तौड़के राजाका सम्बन्ध होना सम्भव था; लेकिन् मलिक मुहम्मद जायसी वग़ैरह लोगोंने इस बारेमें कई बड़े बड़े ख़याली क़िस्से घड़लिये हैं, जिनसे हमको कुछ प्रयोजन नहीं, चाहे वे कैसे ही हों; परन्तु अस्ल हाल इस तरहपर है, कि उक्त महाराणीके पीहरका रघुनाथ नामी एक मुलाज़िम (१) जो बड़ा जादूगर था, और रावल रत्नसिंहके पास रहकर अनेक चेटक दिखलानेसे उसको ख़ुश करता था, एक बार रावल रत्नसिंहकी नाराज़गीके सबब मुल्कसे निकालदियागया. उसने दिल्ली पहुंचकर अपनी जादूगरीके ज़रीएसे बादशाह अलाउद्दीन ख़ल्जीके दर्बारमें रहनेका दरजह हासिल किया, और वह ख़िल्वतमें बादशाहके सामने राणी पद्मावतीके रूपकी तारीफ़ करने लगा. बादशाह भी चित्तौड़पर चढ़ाई करनेका बहाना ढूंढही रहा था, रावल रत्नसिंहको लिख भेजा, कि राणी पद्मिनीको यहां भेजदो. यह पढ़कर रत्नसिंह मारे क्रोधके आगका पुतला बनगया, और बादशाहको उस पत्रका बहुत ही सख़्त जवाब लिखभेजा, कि जिसको सुनकर अलाउद्दीन बड़ा ग़ुस्सेमें आया. एक तो मज़्हबी तअस्सुब, दूसरे रणथम्भोर व शिवाणा वग़ैरह क़िलोंकी फ़त्हका ग़ुरूर, तीसरे घरके भेदू रघुनाथ जादूगरका जामिलना, और चौथे क़िला चित्तौड़ दक्षिण हिन्दुस्तानपर बादशाही क़ब्ज़ेके लिये रोक होना, वग़ैरह कारणोंसे विक्रमी १३५९ [हि० ७०२ = ई० १३०२] में बादशाहने बड़ी भारी फ़ौजके साथ दिल्लीसे रवानह होकर क़िले चित्तौड़को आघेरा. रावल रत्नसिंहने भी लड़ाईकी ख़ूब तय्यारियां करली थीं, और मज़्हबी जोशके सबबसे इलाक़ेदारोंके

---

(१) इसको मलिक मुहम्मद जायसीने भाट लिखा है.

सिवा दूसरे राजपूत भी हज़ारों एकट्ठे होगये थे. रावलके आदमी क़िलेसे बाहिर निकल निकलकर बादशाही सेनापर हमले करने लगे, जिसमें दोनों ओरके हज़ारों बहादुर मारेगये. आख़रकार बादशाहने रावलके पास यह पैग़ाम भेजा, कि हमको थोड़ेसे आदमियोंके साथ क़िलेमें आनेदो, कि जिससे हमारी बात रहजावे, फिर हम चले जायेंगे. रावल रत्नसिंहने इस बातको कुबूल करके सौ दोसौ आदमियों सहित बादशाहको क़िलेमें आने दिया, लेकिन् बादशाह दग़ाबाज़ीका दाव खेलनेके-लिये अपनी नाराज़गीको छिपाकर रत्नसिंहकी तारीफ़ करने लगा, और विदा होते समय जब रत्नसिंह उसे पहुंचानेको निकला, तो उसका हाथ पकड़कर मुहब्बतकी बातें करता हुआ आगेको ले चला. रावल उसके धोखेमें आकर दुश्मनीको भूलगया, और क़िलेके दर्वाज़ेसे कुछ क़दम आगे निकल गया, जहां कि बादशाहकी फ़ौज खड़ी थी. बादशाह तुरन्त ही रावलको गिरिफ्तार करके डेरोंमें लेआया. क़िलेवालोंने बहुतेरी कोशिश की, कि रावलको छुड़ालेवें, लेकिन् बादशाहने उनको यही जवाब दिया, कि बग़ैर पद्मावती देनेके रत्नसिंहका छुटकारा न होगा. तब तमाम राजपूतोंने एकत्र होकर अपनी अपनी बुद्धिके मुवाफ़िक़ सलाह ज़ाहिर की, लेकिन् पद्मावतीके भाई गोरा व बादलने कहा, कि बादशाहने हमारे साथ दग़ाबाज़ी की है, इसलिये हमको भी चाहिये, कि उसी तरह अपने मालिकको निकाल लावें; और इस बातको सबोंने कुबूल किया. तब इन दोनों बहादुरोंने बादशाहसे कहलाया, कि पद्मिनी इस शर्तपर आपके पास आती है, कि पहिले वह रत्नसिंहसे आख़री मुलाक़ात करलेवे. बादशाहने क़स्म खाकर इस बातको कुबूल किया. इसपर गोरा व बादलने एक महाजान और ८०० डोलियोंमें शस्त्र रखकर हरएक डोलीके उठानेके लिये सोलह सोलह बहादुर राजपूतोंको कहारोंके भेसमें मुक़र्रर करदिया, और थोड़ीसी जमइयत लेकर आप भी उन डोलियोंके साथ होलिये. बादशाहकी इजाज़तसे ये सब लोग पहिले रावल रत्नसिंहके पास पहुंचे; ज़नानह बन्दोबस्त देखकर शाही मुलाज़िम हटगये, किसीको दग़ाबाज़ीका ख़याल न हुआ, और इस हलचलमें राजपूत लोगोंने रत्नसिंहको घोड़ेपर सवार करके बादशाही लश्करसे बाहिर निकाला. जब वह बहादुर लश्करसे निकलगया, तो वे बनावटी कहार याने बहादुर राजपूत डोलियोंमेंसे अपने अपने शस्त्र निकालकर लड़ाईके लिये तय्यार होगये. बादशाहने भी अपनी दग़ाबाज़ीसे राजपूतोंकी दग़ाबाज़ीको बढ़ी हुई देखकर अफ़सोसके साथ फ़ौजको लड़ाईका हुक्म दिया. गोरा व बादल, दोनों भाई अपने साथी बहादुर राजपूतों समेत मरते मारते क़िलेमें पहुंचगये. कईएक लोग कहते हैं, कि गोरा रास्तेमें मारागया, और बादल क़िलेमें पहुंचा; और बाज़ोंका

क़ौल है, कि दोनों इस लड़ाईमें मारेगये. परन्तु तात्पर्य यह कि इन ख़ैरख़्वाह राजपूतोंने अपने मालिकको बादशाहकी क़ैदसे छुड़ाकर क़िलेमें पहुंचादिया, और फिर लड़ाई शुरू होगई. आख़रकार हिज्री ७०३ मुहर्रम [विक्रमी १३६० भाद्रपद = ई० १३०३ ऑगस्ट] में अलाउद्दीनने चारों तरफ़से क़िलेपर सख़्त हमलह किया. इसवक़ रावल रत्नसिंहने सामानकी कमीके सबब लकड़ियोंका एक बड़ा ढेर चुनकर राणी पद्मिनी और अपने ज़नानख़ानहकी कुल स्त्रियों तथा राजपूतोंकी औरतोंको लकड़ियोंपर बिठाकर आग लगादी. हज़ारों औरत व बच्चोंके आगमें जलमरनेसे राजपूतोंने जोशमें आकर क़िलेके दर्वाज़े खोलदिये, और रावल रत्नसिंह मए कई हज़ार राजपूतोंके बड़ी बहादुरीके साथ लड़कर मारागया. बादशाहने भी नाराज़ होकर क़त्ल आमका हुक्म देदिया; और ६ महीना ७ दिनतक लड़ाई रहकर हिज्री ७०३ ता० ३ मुहर्रम [वि० १३६० भाद्रपद शुक्ल ४ = ई० १३०३ ता० १८ ऑगस्ट] को बादशाहने क़िला फ़त्ह करलिया (१). इसके बाद बादशाह अपने बेटे खिज़रख़ांको क़िला सौंपकर वापस लौटगया.

रावल रत्नसिंहने अपने कई भाई बेटोंको यह हिदायत करके क़िलेसे बाहिर निकालदिया था, कि यदि हम मारेजावें, तो तुम मुसल्मानोंसे लड़कर क़िला वापस लेना. बाज़ लोगोंका क़ौल है, कि रावल रत्नसिंहके दूसरे भाई, और बाज़ लोग कहते हैं, कि रत्नसिंहके बेटे कर्णसिंह पश्चिमी पहाड़ोंमें रावल कहलाये. उस ज़मानहमें मंडोवरका रईस मोकल पडियार पहिली अदावतोंके कारण रावल कर्णसिंहके कुटुम्बियोंपर हमलह करता था, इस सबबसे उक्त रावलका बड़ा पुत्र माहप तो आहड़में और छोटा राहप अपने आबाद कियेहुए सीसोदा ग्राममें रहता था. माहपकी टाला-टूली देखकर राहप अपने बापकी इजाज़तसे मोकल पडियारको पकड़लाया, तब कर्ण-सिंहने मोकल पडियारका 'राणा' ख़िताब छीनकर राहपको दिया, और मोकलको रावकी पदवी देकर छोड़दिया. इसके बाद कर्णसिंह तो चित्तौड़पर हमलह करनेकी हालतमें मारागया, और माहप चित्तौड़ लेनेसे ना उम्मेद होकर डूंगरपुरको चलागया. बाज़े लोग इस विषयमें यह कहते हैं, कि माहपने अपने भाई राणा राहपकी मददसे डूंगरया भीलको मारकर डूंगरपुर लिया था, जिसका ज़िक्र डूंगरपुरके हालमें लिखा-जायेगा. राणा राहप चित्तौड़ लेनेके इरादेपर मज्बूत था, वह कभी सीसोदे, कभी केलवाड़े और कभी केलवेमें रहता था. एक दिन शिकार खेलते समय राहपने एक

(१) यह हाल 'अक्बर नामह' की दूसरी जिल्दके पृष्ठ २०७ में लिखा है.

सूअरपर तीर चलाया. दैवयोगसे वह तीर कपिलदेव नामी एक ब्राह्मणको जालगा, जो उसी जंगलमें तपस्या करता था, और उस तीरके लगनेसे वह वहीं मरगया. राणा राहपको उस ब्राह्मणके मरनेका बड़ा पश्चात्ताप हुआ, और उन्होंने उसकी यादगारके लिये कुंड वगैरह कई स्थान बनवाये, जो कैलवाड़ा गांवके समीप कपिल मुनिके नामसे अबतक मौजूद हैं. पहिले पहिल राहपने ही राणाका ख़िताब पाया, और सरसल पल्लीवालको अपना पुरोहित बनाया. फिर राहप भी चित्तौड़ लेनेकी कोशिशमें मुसल्मानोंसे लड़कर मारागया, और उसके बाद भुवनसिंहने चित्तौड़का क़िला लिया, जिसका ज़िक्र ऊपर होचुका है.

भुवनसिंहके पीछे महाराणा लक्ष्मणसिंहके समयमें दिल्लीके बादशाह मुहम्मद-तुग़लककी फ़ौजने चित्तौड़को आघेरा. मालूम होता है, कि यह लड़ाई भी बड़ी भारी हुई, जिसमें महाराणा लक्ष्मणसिंह और उनके पुत्र अरिसिंह वगैरह बड़ी वीरताके साथ लड़कर मारेगये; लेकिन् हमको इस लड़ाईका मुफ़स्सल हाल सिवा इसके नहीं मिला, कि अरिसिंहका छोटा भाई अजयसिंह ज़स्मी होकर कैलवाड़ेकी तरफ़ पहाड़ोंमें चलागया, जहां वह महाराणाके नामसे प्रसिद्ध हुआ, और सांडे-रावके जती (जैन गुरु) ने उसके ज़ख़्मोंका इलाज किया; जिसपर अजयसिंहने उस जतीको कहा, कि हमारी औलाद तुम्हारी औलादको पूज्य मानती रहेगी; और इसी कारणसे अबतक सांडेरावके महात्माओंका आदर सन्मान मेवाड़के महाराणा करते हैं. बाक़ी हाल अजयसिंहका महाराणा हमीरसिंहके वृत्तान्तमें लिखाजायेगा.

महाराणा हमीरसिंह, अव्वल.

यह महाराणा ऊनवा ग्राम निवासी चन्दाणा (१) राजपूतोंके भानजे थे; जिसका ज़िक्र इस तरहपर मश्हूर है, कि चित्तोड़के महाराणा लक्ष्मणसिंहके वलीअ़हद (पाटवीपुत्र) अरिसिंह एक दिन पश्चिमी पहाड़ोंकी तरफ़ केलवाड़ाके ज़िलेमें शिकारको गये थे. इत्तिफ़ाक़से वहांपर क्या देखते हैं, कि एक नौजवान कुमारी लड़की अपने बापके यहां जवारके खेतकी रखवाली कररही थी, कि एक सूअर वलीअ़हद्के हाथसे घायल होकर उसके खेतमें जा घुसा. वलीअ़हद भी घोड़े समेत उसके पीछे खेतमें घुसने लगे. लड़कीने अ़र्ज़ किया, कि आप खेतमें घोड़ा डालकर जवारको न बिगाड़ें, मैं सूअरको निकाल देती हूं; और उसने लाठीसे सूअरको सहजमें निकाल दिया. लड़कीका यह हियाव और बल देखकर वलीअ़हद्को बड़ा आश्चर्य हुआ, और वह कुछ दूर आगे चलकर किसी आंबके वृक्षकी छायामें जा बैठे, कि इतनेमें उसी लड़कीने किसी जानवरपर गोफन चलाया. इत्तिफ़ाक़से गोफनका पत्थर आंबके नीचे एक घोड़ेको जालगा, और घोड़ेका पैर टूटगया. बाद इसके जब वह लड़की अपने घरको जाने लगी, तो देखा कि सिरपर दूधकी गागर रक्खे और दो भैंसके बच्चोंको अपने साथ क़ाबूमें किये हुए लिये जाती थी, और उनकी ताक़तको इस तरह रोकेहुए थी, कि दूधकी गागरको कुछ भी हानि नहीं पहुंचती थी. इस बातसे वलीअ़हद्को और भी ज़ियादह तअ़ज्जुब हुआ; और लड़कीसे दर्याफ़्त किया, कि तू किसकी बेटी है ? उसने जवाब दिया, कि चन्दाणा राजपूतकी हूं. राजकुमारने दिलमें सोचा, कि यदि इस लड़कीसे कोई औलाद पैदा हो, तो निस्सन्देह बड़ी बलवान होगी. फिर उन्होंने उस लड़कीके बापको बुलाया, और कहा, कि तेरी लड़कीकी शादी हमारे साथ करदे. राजपूतने इस बातको गनीमत जानकर बड़ी खुशीके साथ राजकुमारकी आज्ञाको क़ुबूल किया; और वलीअ़हद्ने शादी करके उस लड़कीको उसी गांवमें रक्खा, क्योंकि उनको अपने पिताकी तरफ़से

(१) चन्दाणा राजपूत चहुवानोंकी शाखामेंसे हैं.

इस बातका भय था, कि ग्रामीण राजपूतके यहां शादी क्यों की ? लेकिन् शिकारके बहानेसे वहां कभी कभी आजाया करते थे. वहांपर ईश्वरकी कृपासे उस चन्दाणीके एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम हमीरसिंह रक्खा गया.

जब मुहम्मद तुग़लक़की लड़ाईमें लक्ष्मणसिंह और अरिसिंह वगैरह मारे गये, तो उक्त चन्दाणी राणी अपने पुत्र हमीरसिंह सहित ऊनवा गांवमें मुसल्मानोंके भयसे हमीरसिंहको छिपायेहुए ग्रामीण लोगोंकी तरह दिन काटने लगी. इसी अरसेमें अजयसिंह चित्तौड़की लड़ाईमें ज़ख़्मी होकर कैलवाड़ेमें आया, और महाराणाके ख़िताबसे मश्हूर हुआ. बड़वा भाटोंने लिखा है, कि महाराणा अजयसिंहके दो बेटे थे, बड़ा सज्जनसिंह, और छोटा क्षेमसिंह. अजयसिंह उस समय चित्तौड़ लेनेके इरादेमें लग रहे थे, परन्तु बीमारीके कारण दिन ब दिन उनका शरीर निर्बल होता जाता था; और उन्हीं दिनोंमें गोड़वाड़ ज़िलेका रहने वाला मशहूर लुटेरा मूंजा नामी बालेचा (१) राजपूत उनको लूटमार वगैरहसे सताने लगा. महाराणाने अपने दोनों बेटोंको हुक्म दिया, कि उसको सज़ा देवें, लेकिन् उनसे कुछ बन्दोबस्त न होसका. इसपर महाराणा अपने बेटोंपर नाराज़ हुए, और इसी अरसहमें महाराणा अरिसिंहके पास रहने वाले किसी पुरुषने ऊनवा गांवमें छिपेहुए हमीरसिंहको ज़ाहिर किया; तब महाराणाने ऊनवासे हमीरसिंहको बुलाया. अगर्चि हमीरसिंह इसवक़ १३–१४ वर्षकी उम्रका लड़का था, लेकिन् महाराणाने उसको बड़ा दिलेर, ताक़तवर, और बहादुर देखकर मूंजाकी सज़ादिहीके लिये हुक्म दिया. कहावत है, कि "होनहार बिरवानके (चिकने) चिकने पात"; हमीरसिंहको ख़बर लगी, कि गोड़वाड़ ज़िलेके सेमारी गांवमें किसी क़ौमी जल्सेपर मूंजा बालेचा मौजूद है, उसी वक्त हमीरसिंह कैलवाड़ासे निकले, और मूंजाको मारकर उसका सिर काटलाये. महाराणा अजयसिंह उस वक़ ज़ियादह बीमार थे, इस बहादुरानह हिम्मतको देखकर हमीरसिंहपर बहुत खुश हुए, और अपनी तलवार उसे देकर मूंजाके खूनका तिलक (२)

---

(१) उदयपुरके क़रीब भुवाणा गांवकी सीममें एक छोटेसे दमदमेको लोग मूंजा बालेचाका महल बतलाते हैं.

(२) कर्नेल् टॉडने अपनी किताब टॉडनामह राजस्थानमें लिखा है, कि मेवाड़के महाराणाओंमें गद्दीनशीनीके समय खूनका टीका लगानेकी रस्म बापा (महेन्द्र) रावलके समयसे जारी हुई है; जिसका खुलासह यह है, कि जब बापा नागदासे चित्तौड़की तरफ़ रवानह हुआ, उसवक़ दो भील भी उसके साथ होलिये, जो बचपनसे उसके साथ रहते थे, और हर जगह और हर हालतमें बापाके शरीक हाल और मददगार रहे. इनमेंसे एकका नाम बीलू और दूसरेका नाम देवा था.

उसके मस्तकपर किया; और कहा, कि हमारे वलीअहद बनने और चित्तौड़ लेनेके योग्य तुम ही हो, और हमारे बड़े भाई अरिसिंहकी औलाद होनेसे हक़ भी तुम्हारा ही है. अजयसिंहके पुत्र सज्जनसिंह और क्षेमसिंह इस बातसे नाराज़ होकर दक्षिणकी तरफ़ चलेगये. कहते हैं, कि उनकी औलादमें सितारा, कोलापुर, सावतवाड़ी, तंजावर और नागपुरके राजा हैं.

महाराणा हमीरसिंहकी गद्दीनशीनीका संवत् निश्चय करना कठिन है, क्योंकि बड़वा भाटोंने तो इनकी गद्दीनशीनी विक्रमी १३५७ [हि० ६९९ = ई० १३००] में लिखी है, लेकिन् यह नहीं होसक्ता; क्योंकि उक्त संवत्के दो वर्ष बाद विक्रमी १३६० [हि० ७०३ = ई० १३०३] में तो बादशाह अलाउद्दीन ख़ल्जी और रावल रत्नसिंहकी लड़ाई हुई थी, और उसके बाद बादशाह मुहम्मद तुग़्लक़ने महाराणा लक्ष्मणसिंह व अरिसिंह वग़ैरहसे लड़कर क़िला चित्तौड़ फ़त्ह किया था. फिर कुछ अरसेतक महाराणा अजयसिंह भी ज़िन्दह रहे; और मुहम्मद तुग़्लक़ हिज्री ७२५ रबीउल्अव्वल [वि० १३८१ फाल्गुन = ई० १३२५ फ़ेब्रुअरी] में दिल्लीके तख़्तपर बैठा, और हिज्री ७५२ ता० २१ मुहर्रम [वि० १४०८ प्रथम वैशाख कृष्ण ७ = ई० १३५१ ता० २० मार्च] को वह मरगया; तो इस अन्तरमें लक्ष्मणसिंहकी लड़ाई और हमीरसिंहकी गद्दीनशीनी समझना चाहिये. इस शूर वीर महाराणाने अपनी तलवारके ज़ोरसे सीसोदियोंके वंशको दुश्मनोंके हमलोंसे बचाया, जो उस समय क़रीब क़रीब बिल्कुल नष्ट होचुका था, और आज दिन पूरी उन्नतिपर है.

जबकि मुहम्मद तुग़लक़ने हमलह करके चित्तौड़को ग़ारत किया, उस ज़मानहमें महाराणा लक्ष्मणसिंहका एक पुत्र अजयसिंह वंश क़ाइम रखनेके लिये चित्तौड़से बाहिर निकालदिया गया था, और वह कैलवाड़ाके पहाड़ोंमें आकर रहने लगगया था, जो पेचीदा घाटियों और बिकट रास्तों व झाड़ियोंके कारण बड़े बचावकी जगह थी.

अजयसिंहने अपने ख़ास पुत्र सजनसिंह और क्षेमसिंहको कमअक़्ल जानकर अरिसिंहके पुत्र हमीरसिंहको ऊनवा गांवसे बुलाया और उसे राज्यतिलक दिया,

---

इन दोनों शख़्सोंका नाम ज़बानी क़िस्से कहानियोंमें बापाके नामके साथ अक्सर मश्हूर है. बीलूकी औलादमें ऊंदरी गांवके भील हैं. जब बापा मोरी ख़ानदानके राजासे चित्तौड़ छीनकर आप तख़्तनशीन हुआ, उसवक़ बीलूने अपने हाथके अंगूठेसे ख़ून निकालकर बापाकी पेशानीपर राज्यतिलक किया था, और उसी सबबसे ऊंदरीके भील मेवाड़के महाराणाकी गद्दीनशीनीके समय उनके ललाटपर अपने हाथसे राज्यतिलक करनेका दावा करते हैं. देवाकी औलादका हाल भी उक्त साहिबने वहांपर सविस्तर लिखा है.

जिसका वृत्तान्त विस्तार सहित ऊपर लिखागया है. गद्दी बैठनेके समय महाराणा हमीरसिंहकी उम्र १३ या १४ वर्षकी थी, परन्तु यह गद्दीनशीनीकी रस्म नहीं थी, सिर्फ़ एक ख़ानदानी रस्म अदा कीगई थी.

इस बुद्धिमान राजाने गद्दी बैठते ही अपने मुल्कके कुल रास्ते, घाटे, व नाके वग़ैरह बन्द करके मेवाड़की प्रजाको बस्ती छोड़कर पहाड़ोंमें रहनेकी आज्ञा दी. यद्यपि ऐसा करनेसे उन्हींके मुल्ककी बर्बादी और नुक्सान था, परन्तु हम ऐसी कार्रवाईपर ज़ियादह दोष नहीं लगाते, क्योंकि जब हमारे सामने हमारी मौरूसी जायदादसे फ़ायदह उठाकर दुश्मन ताक़तवर बने, और हमारी ही दौलतसे हमारा सामना करनेमें कामयाब हो, तो इसमें कौनसी नुक्सानकी बात है, कि हम अपनी प्रजाको अपने निकट बुलाकर रक्षामें रक्खें.

इस ऊपर लिखी हुई आज्ञाका प्रजाके चित्तपर ऐसा अस्र हुआ, कि कुल मेवाड़ देश वीरान होकर अपने मालिककी रक्षामें जाबसा. बादशाहने राव कानड़देवकी औलादमें राव मालदेव सोनगराको चित्तोड़का क़िला मेवाड़ सहित जागीरमें लिखदिया था, लेकिन् इस समय कुल मेवाड़ ऊजड़ होकर दुश्मनोंके क़बज़ेमें केवल एक क़िला ही आबाद रहगया था. जबकि मुल्ककी आमदनी नाश होजानेके कारण राव मालदेव ख़र्चसे तंग आकर अपने मौरूसी ठिकाने जालोरमें चलागया, और क़िलेकी रक्षाके लिये कुछ फ़ौज छोड़गया, तो महाराणा हमीरसिंहने क़िला लेनेके लिये बहुतसे बहादुरानह हमले और कोशिशें कीं, लेकिन् चित्तोड़का क़िला, जो ईश्वरको थोड़े दिनोंके लिये फिर दूसरेके क़बज़ेमें रखना मन्ज़ूर था, हाथ न आया. इस अरसेमें महाराणाको बहुतसी तक्लीफ़ें उठानी पड़ीं, यहांतक कि आमदनीके विना फ़ौजको खाना पीनातक भी न मिलने लगा, और इस तक्लीफ़से सब लोग तितर बितर होगये, केवल थोड़ेसे शुभचिन्तक लोग, जोकि मुसीबतके वक्तमें अपने मालिकके शरीक हाल रहा करते हैं, महाराणाके पास रहगये. महाराणा अपनी कामयाबीकी नाउम्मेदीसे उन्हीं अपने ख़ैरख़्वाह आदमियों समेत द्वारिकापुरीकी तरफ़ रवानह हुए. जब गुजरात इलाक़हके खोड़ गांवमें जाकर मक़ाम किया (जो ग्राम कि चारणोंकी जागीरमें था), तो वहांपर चखड़ा चारणकी बेटीको, जिसका नाम बरबड़ी था, बड़ी करामाती सुना. उसको वहांके कुल लोग देवीका अवतार कहते थे. लेकिन् हमको इससे कुछ प्रयोजन नहीं चाहे कुछ ही हो. जब उसके करामाती हालात महाराणाके कानतक पहुंचे, तो वह खुद उसके दर्शनोंको गये. कई पुस्तकोंमें मज़्हबी तौरकी बड़ी बड़ी बातें लिखी हैं, लेकिन् हमको तवारीख़ी हाल लिखना है, इसलिये करामाती हालात छोड़दिये गये. जब बरवड़ीने महाराणाको इस

तक्लीफ़की हालतमें बहुत फ़िक्रमन्द देखा, तो कहा, कि ऐ वीर तुम पीछे केलवाड़े को लौटजाओ, तुमको चित्तौड़ मिलेगा; और यदि तुम्हारी कोई सगाई आवे, तो इन्कार न करना, वही सम्बन्ध तुमको तुम्हारा मुल्क वापस मिलनेका पूरा वसीला होगा. महाराणाने कहा, कि बाई हम चित्तौड़को किस सामानसे लेसकेंगे, क्योंकि हमारे पास न तो चढ़नेके लिये घोड़ा, न लड़नेको सिपाही, और न खानेको ख़र्च है. बरवड़ीने कहा, कि वीर मेरा लड़का बारू घोड़ोंका कारवान लेकर तुम्हारे पास केलवाड़ेमें आवेगा, तुम उससे घोड़े लेकर अपना काम करना, घोड़ोंकी क़ीमत का कुछ फ़िक्र नहीं, तुम्हारे पास हो तब देदेना. बरवड़ीके इन करामाती वचनोंने महाराणाके दिलपर ऐसा असर किया, कि वह उसी वक्त पीछे लौटकर केलवाड़ेमें आये. पीछेसे बरवड़ीने, जो बड़ी मालदार थी, अपने बेटे बारूको कहा, कि पांच सौ घोड़ोंका एक कारवान लेकर हमीरसिंहके पास केलवाड़े जाओ. चूंकि ये लोग घोड़ोंका व्यापार किया करते थे, इसलिये कुछ घोड़े तो इनके पास मौजूद थे, और कुछ फिर ख़रीदकर अपनी माताके हुक्मके मुवाफ़िक़ पांचसौ घोड़ों समेत केलवाड़े आये. यहांपर महाराणा भी इनका इन्तिज़ार देखरहे थे, आतेही तमाम घोड़ोंको बंधालिया; और बरवड़ीके बेटे बारूको अपने विश्वासपात्रोंमें दाख़िल करके अपनी पोलका नेग उसको दिया, और अपना बारहट बनाकर केलवाड़ाके पास कई गांवों सहित आंतरी गांवका तांबापत्र लिखदिया, जो अबतक उसकी औलादके क़बजेमें है. ईश्वरको बरवड़ीकी भविष्यद्वाणी सत्य करना मन्जूर था; इसलिये उसी अरसेमें राव मालदेव सोनगराके मुसाहिबोंने रावसे कहा, कि आपकी लड़की बड़ी होगई है, यदि आज्ञा हो, तो हम एक राज्यक्रिया (हिकमत अमली) काममें लानेकी अर्ज़ करें. इसपर रावने इजाज़त दी. उन लोगोंने कहा, कि आपको बादशाहने जो मेवाड़का मुल्क दिया है, वह केवल नामके लिये है, क्योंकि जबतक महाराणा हमीरसिंह और उनकी औलाद क़ाइम रहेगी, तबतक आपको उस मुल्कसे एक कौड़ीका भी फ़ायदह न होगा; और ऐसी हालतमें नाहक़ ख़र्चसे ज़ेरबार होकर सिर्फ़ क़िलेको रखवालना और अपनी बहादुरीको बट्टा लगाना है. अगर हमारी सलाह क़बूल हो, तो आप की लड़कीकी शादी महाराणा हमीरसिंहके साथ करके पश्चिमी मेवाड़का ज़िला, जो बिल्कुल वीरान, कम उपजाऊ और विकट पहाड़ी हिस्सह है, गुज़ारेके लिये उनको देदिया जावे, कि जिससे वह भी सन्तोष करें और बाक़ी आबाद मुल्क अपने क़बजेमें रहकर फ़ायदहकी सूरत पैदा हो. मालदेवको यह बात पसन्द आई, और महता जूहड़ व पुरोहित जयपालको टीकेका बहुतसा सामान देकर केलवाड़े भेजा.

इन लोगोंने अर्वली पहाड़ोंमें पहुंचकर महाराणासे मालदेवका संदेसा कहा, और बहुत कुछ आधीनता और समझाइशके साथ अर्ज़ किया, कि आपके बाप दादोंको मुसल्मानोंने मारा है, राव मालदेवने नहीं मारा; अल्बत्तह आपका मुल्क रावके क़बज़ेमें रहा है, सो अब वह अपनी लड़की और कुछ ज़मीन आपको देते हैं, चाहिये कि आप उसको मन्ज़ूर करें. इसपर महाराणाने पहिले तो ऊपरी दिलसे इन्कार किया, लेकिन् फिर बरवड़ीके वचनोंको याद करके मन्ज़ूर करलिया; और रवाजके मुवाफ़िक़ नारियल झेले गये.

महता जूहड और पुरोहित जयपालने महाराणासे कहा, कि आप हमारे साथ ही जालौर चलकर शादी करें. महाराणाने बारू बारहटके लाये हुए घोड़ोंपर सवार होकर जालौरकी तरफ़ कूच किया. वहां पहुंचनेके बाद रवाजके मुवाफ़िक़ शादी हुई, और राव मालदेवने इक़ारके मुवाफ़िक़ नीचे लिखे हुए आठ पहाड़ी ज़िले महाराणाको जिहेज़में दिये :- १- मगरा, २- सेरानला, ३- गिरवा, ४- गोड़वाड़, ५- बाराठ, ६- इयालपट्टी, ७- मेरवाड़ा, और ८- घाटेका चौखला. जब दुलहिनको लेकर जानवासेमें आये, तो महाराणी सोनगरी, जो बड़ी बुद्धिमान थी, महाराणासे कहने लगी, कि अब मेरा नफ़ा नुक्सान आपके साथ है, मेरे पिताके साथ नहीं, इसलिये अर्ज़ है, कि यदि आपका इरादह चित्तौड़ लेनेका हो, तो मेरे बापसे कामदार महता मौजीरामको मांगलेवें; वह बड़ा ईमान्दार और बुद्धिमान शख़्स है. महाराणाने इस सलाहको ग़नीमत समझकर अपने ससुरेसे कहा, कि आपने मुझको इतना मुल्क जिहेज़में दिया है, कि जितनेकी मुझे उम्मेद न थी, परन्तु इस आपत्तिकालमें मेरे पास कोई ऐसा होश्यार आदमी नहीं रहा, जो मुल्कका इन्तिज़ाम बख़ूबी करसके, और मुझको मेरे तहतके मुल्कका इन्तिज़ाम करना ज़रूर होगा; इसलिये आपके कामदार महता मौजीरामको मुझे देदेवें, तो मैं आपका बड़ा एह्सानमन्द रहूंगा. रावने महाराणाके मुखसे ये स्नेहके वचन सुनकर उनको सीधा व साफ़ जाना, और सोचा, कि यदि मेरा आदमी इनके पास रहेगा, तो फिर आगेको हमारे इनके किसी तरहकी नाइत्तिफ़ाक़ी न होगी. इसी विचारपर महता मौजीरामको महाराणाके सुपुर्द करदिया, और महतासे कहा, कि अबतक तो तू मेरा नौकर था, आजसे महाराणाका नौकर है, इनके नफ़ेमें अपना नफ़ा और इनके नुक्सानमें अपना नुक्सान समझना; और उसका हाथ महाराणाके हाथमें देकर कहा, कि आजसे यह आपका सेवक है. मौजीरामको साथ लेकर महाराणा अपने डेरोंमें आये; और उसीवक़्त मौजीरामने कहा, कि जिस कामके लिये आपने रावसे मुझे मांगा है वह काम करना मन्ज़ूर हो, तो यही वक़्त है. महाराणाने

फ़र्माया, कि अब हमारा सब भरोसा तुम्हारे ऊपर है, जैसा कहोगे वैसा करेंगे. यह सुनकर मौजीरामने ज़ाहिरा तौरपर महाराणासे कहा, कि अमुक जगह शेरकी भाल (ख़बर) है. महाराणा अपने राजपूतों सहित घोड़ोंपर सवार होकर शिकारके बहानेसे रवानह हुए, और दूसरे रोज़ आधी रातके वक्त क़िले चित्तौड़के दर्वाज़ेपर पहुंचे. महता मौजीरामने आगे बढ़कर क़िले वालोंको आवाज़ दी, कि किंवाड़ खोलो, मैं मौजीराम हूं. जोकि यह महता फ़ौजकी तनूख़्वाह बांटनेको हमेशह क़िलेमें आया करता था, इसलिये इसकी आवाज़ पहिचानकर क़िले वालोंने दर्वाज़ह खोलदिया. दर्वाज़ह खुलते ही महाराणा अपने राजपूतों सहित क़िलेमें दाखिल हुए, और रावके कुल आदमी मुक़ाबलह करने वाले मारेगये, बाक़ी रहे उनको निकालकर महाराणाने क़िलेपर अपना झंडा जाखड़ा किया. अब पिछला हाल सुनिये, कि राव मालदेवने शेरकी शिकारके लिये महाराणाका जाना सुनकर एक दिन और एक रात तो वापस लौटनेकी राह देखी; लेकिन् जब ख़बर मिली, कि वह चित्तौड़की तरफ़ रवानह हुए हैं, तो आप भी अपनी फ़ौज व पांचों बेटों याने जैसा, कीर्तिपाल, वणवीर, रणधीर, और केलण सहित रवानह हुआ. चित्तौड़में महाराणा हमीरसिंहने भी अपने ख़ानदानके राजपूतोंको एकट्ठा करलिया था, मुक़ाबलेके साथ मालदेवकी पेशवाई की. राव मालदेव शिकस्त पाकर पीछा जालोरको लौटगया, और वहांसे उसने मेवाड़पर एक दो हमले और भी किये, लेकिन् आख़रको शिकस्त पाई.

अब इस जगहपर थोड़ासा ज़िक्र अलाउद्दीन ख़ल्जीसे लेकर मुहम्मद तुग़लक़ तकका लिखाजाता है, जो इस तरहपर है:-

अलाउद्दीन ख़ल्जी हिज्री ७१६ ता० ६ शव्वाल [वि० १३७३ पौष शुक्ल ५ = .ई० १३१६ ता० २० डिसेम्बर] को मरा, और उसके दूसरे दिन उसका छोटा बेटा शहाबुद्दीन ख़ल्जी ७ वर्षकी उम्रमें तख़्तनशीन कियागया. फिर हिज्री ७१७ ता० ८ मुहर्रम [वि० १३७४ चैत्र शुक्ल ९ = .ई० १३१७ ता० २२ मार्च] को अलाउद्दीनका दूसरा बेटा कुतुबुद्दीन मुबारकशाह ख़ल्जी तख़्तपर बैठा, और उसने अपने छोटे भाई शहाबुद्दीन उमर ख़ल्जीको अंधा करके ग्वालियरके क़िलेमें भेजदिया. इसके बाद हिज्री ७२१ ता० ५ रबीउल्अव्वल [वि० १३७८ वैशाख शुक्ल ६ = .ई० १३२१ ता० ३ एप्रिल] को मलिक ख़ुस्रोख़ां कुतुबुद्दीन मुबारकशाहको मारकर बादशाही तख़्तपर बैठा, और उसने अपना नाम "सुल्तान नासिरुद्दीन" रक्खा. उसको मारकर हिज्री ७२१ ता० १ शअ्बान [वि० १३७८ भाद्रपद शुक्ल २ = .ई० १३२१ ता० २५ ऑगस्ट] को मलिक ग़ाज़ी तख़्तपर बैठा, और उसका लक़ब "सुल्तान

गयासुद्दीन तुग़्लक़ शाह " रक्खा गया. हिज्री ७२५ रबीउल्अव्वल [वि० १३८१ फाल्गुन = ई० १३२५ मार्च] में सुल्तान गयासुद्दीन तुग़्लक़ एक मकान तुग़्लक़-आबादकी छत्त गिरनेसे, जोकि दिल्लीके पास है, दबकर मारागया. उसके तीन दिन बाद उसका बेटा उलगख़ां, याने " मुहम्मदशाह तुग़्लक़ " तख़्तपर बैठा.

जब राव मालदेव महाराणासे शिकस्त पाकर लाचार हुआ, तो बादशाह मुहम्मद तुग़्लक़के पास पुकारू गया. ख्यातिकी पोथियोंमें लिखा है, कि मालदेवके पुकारू जाने पर मुहम्मद तुग़्लक़ने ख़ुद मए लश्करके मेवाड़पर चढ़ाई की, और उसने मेवाड़के पूर्वी पहाड़ोंमें होकर, जहां कि तंग रास्तोंने उसकी फ़ौजको बड़ी तक्लीफ़ पहुंचाई, सींगोलीमें पहुंचकर डेरा किया. महाराणा हमीरसिंहका दिल क़िला वापस लेलेनेके सबब पहिलेसे ही बढ़ाहुआ था, और सब राजपूत और प्रजा भी उनके पास हाज़िर होगई थी, उन्होंने एकाएक फ़ौज (१) तय्यार करके ऐसा बहादुरानह हमलह किया, कि बादशाहको शिकस्त देकर कैद करलिया. इसी लड़ाईमें मालदेवका पोता हरिदास (२) महाराणा हमीरसिंहके हाथसे मारागया; और मुहम्मद तुग़्लक़ (३) तीन महीनेतक कैद रहनेके बाद अजमेर, रणथम्भोर और शिवपुरके ज़िले तथा पचास लाख रुपया नक़द व १०० हाथी देकर कैदसे छूटा. इस जगहपर महाराणाकी बहादुरी देखनेके क़ाबिल है, कि उन्होंने कैदसे छोड़नेके वक्त मुहम्मद तुग़्लक़से यह इक़ार नहीं कराया, कि फिर हमलह न करेगा; क्योंकि वह पहिले निश्चय कराचुके थे, कि जो सन्मुख चढ़ाई करेगा, तो मैं चौड़ेमें आकर लड़ूंगा (४).

मालदेवका बेटा वणवीर इक़ार करचुका था, कि मैं महाराणाके ताबेदारोंमें रहकर सेवा करूंगा, इसलिये महाराणाने उसको अपनी राणीका भ्राता समझकर नीमच, रत्नपुर, और खैराड़ उसकी पर्वरिशके लिये जागीरमें दिये: और कहा कि पहिले तुम मुसल्मानोंके नौकर थे, अब हिन्दूके ताबे हो, जो तुम्हारे मज़्हबका शरीक है. चित्तौड़के पहाड़ मेरे बापदादोंके ख़ूनसे तर हुए हैं, और जिस देवीकी मैं पूजा करता हूं, उसके दिये हुए मैंने पीछे लिये हैं. थोड़े ही दिनों पीछे मालदेवके पुत्र वणवीरने भैंसरोड़पर

(१) मेवाड़की प्रजा आधीसे ज़ियादह भील, मीना और मेर वगैरह लड़ने वाली कौमोंमेंसे है.

(२) टॉड साहिबने इसको मालदेवका बेटा लिखा है, लेकिन यह मालदेवका पोता था.

(३) मुहम्मद तुग़्लक़की जगह टॉड साहिबने महमूद ख़ल्जी लिखा है, वह ग़लत है, क्योंकि ख़ल्जी बादशाहोंमें महमूद कोई नहीं हुआ.

(४) यह हाल फ़ार्सी तवारीख़ोंमें नहीं लिखा, कर्नेल् टॉडकी पुस्तक और ख्यातिकी पोथियोंसे लिया है, फ़ार्सी तवारीख़ोंमें मुसल्मानोंकी शिकस्त बहुत कम लिखी है,

हमलह करके उसको मेवाड़में मिलालिया. फिर सब राजपूत लोग अपने वंशके राजाको देखकर खुश हुए, और सबने महाराणा हमीरसिंहको अपना मालिक व सर्दार समझा; क्योंकि उस समयमें केवल महाराणा हमीरसिंह ही इस कुलके रक्षक रहगये थे, पुराने वंशके हाथसे सब राज जाचुके थे. इसी अ़रसेमें राव मालदेव तो मारागया, और मालदेवकी राणी व महाराणी सोनगरीकी अ़र्ज़ी आनेपर महाराणाने सोनगरीको बुलालिया. राव मालदेवके पास तीन चीज़ें, याने बहरी जोगिनीका दिया हुआ एक खांडा (१), एक खप्पर, और ठूमरेकी माला थी, और इन चीज़ोंको वे लोग करामाती समझते थे. राव मालदेवकी राणीने ये तीनों चीज़ें अपनी लड़कीके साथ महाराणाके पास भेजदीं. उस समय मेवाड़की राजगद्दीकी सेवाके लिये मारवाड़, ढूंढाड़, बूंदी, ग्वालियर, चन्देरी, रायसेन, सीकरी, कालपी और आबू वगै़रहके राजा तनमनसे मौजूद थे. अगर्चि मुसल्मानोंके हमलोंके पहिले भी मेवाड़का राज्य उन्नतिपर था, परन्तु जबसे महाराणा हमीरसिंहने मेवाड़पर दोबारह अधिकार जमाया, उसवक़्से दोसौ सालतक इस देशका प्रताप ऐसा प्रकाशित हुआ, कि जैसा कभी न हुआ होगा; क्योंकि उस समयमें इन महाराणाको अपने मुल्ककी हिफ़ाज़तके सिवा दूसरे मुल्कोंपर भी हमलह करनेकी ताक़त हासिल थी. उनके प्रतापकी साक्षी पुरानी .इमारतें देती हैं, जिनके तय्यार करानेमें लाखों रुपये लगे होंगे. यह बात क़ियासमें नहीं आती, कि उनके पास .इमारतें बनवानेको इसक़द्र दौलत, और फ़ौज रखनेको ख़र्च कहांसे मिलता था. उस समयमें मेवाड़के केवल राजा ही धनवान नहीं थे, बल्कि उनकी प्रजा भी ऐसी आसूदह थी, कि जिनकी बनाई हुई बड़ी बड़ी .इमारतें जो अभीतक टूटी फूटी दशामें मौजूद हैं, उनके आसूदह होनेकी गवाही देती हैं. मेवाड़ देशके महाराजाओंकी बहादुरीके निशानात बहुत दूर दूरतक मौजूद हैं.

महाराणा हमीरसिंहने चित्तौड़पर पीछा अधिकार जमानेके बाद खोड़ गांवसे बरवड़ीको बुलाकर, जो देवीका अवतार कहलाती थी, बड़े आदरके साथ चित्तौड़पर रक्खा, और वहां उसके मरजानेके बाद उसकी यादगारमें एक बहुत बड़ा मन्दिर बनवाया, जो अन्नपूर्णाके नामसे अबतक क़िले चित्तौड़पर मौजूद है.

इन महाराणाका देहान्त विक्रमी १४२१ [हि० ७६५ = ई० १३६४] में होना लिखा है.

---

(१) यह खड्ग अभीतक श्री महाराणाके सिलहख़ानहमें मौजूद है, जिसका पूजन प्रतिवर्ष बड़ी धूमधामसे आश्विनकी नवरात्रियोंमें होता है.

अब हम पाठकोंका सन्देह दूर करनेके लिये उन बातोंको लिखते हैं, जिनमें कर्नेल् टॉडकी दर्याफ़्त और हमारे लिखनेमें फ़र्क़ है. जो बातें टॉड साहिबने नहीं लिखीं और हमने यहांपर लिखी हैं, उनका बयान करना तो कुछ ज़रूर नहीं, क्योंकि उसवक़ ऋग्नो आमानका शुरू ज़मानह होनेके सबब वे हालात टॉड साहिबको न मिले होंगे; परन्तु जिन बातोंमें कर्नेल् टॉडके और हमारे लिखनेमें फ़र्क़ है उनको हम यहांपर बयान करते हैं:-

पहिले यह, कि कर्नेल् टॉडने महाराणा हमीरसिंहकी गद्दीनशीनीका संवत् १३५७ लिखा है, और हमारी तह्क़ीक़ातसे उनकी गद्दीनशीनीका ज़मानह बहुत अरसे पीछे आता है, जिसका ज़िक्र ऊपर लिखागया है. दूसरे, टॉड साहिबने राव मालदेवकी विधवा बेटीके साथ महाराणा हमीरसिंहकी शादी चित्तौड़गढ़पर होना तह्रीर किया है; परन्तु जो सामग्री कि टॉड साहिबको मेवाड़की तवारीख़ लिखनेके वास्ते मिली और जिसका वह हवाला देते हैं, वह सामग्री और उसके सिवा जो हालात हमको मिले, वे सब इसवक़ हमारी आंखोंके सामने मौजूद हैं, परन्तु उनमें महाराणाकी शादी विधवा लड़कीसे होना कहीं भी नहीं पायाजाता. न मालूम टॉड साहिबने किस ज़रीएसे यह बात लिखी. मालूम होता है, कि उन्होंने किसीके ज़बानी कहनेपर भरोसा करलिया; क्योंकि अव्वल तो जिस ज़मानहका यह ज़िक्र है उस ज़मानहसे आज दिनतक राजपूतोंके किसी ख़ानदानमें कहीं नहीं सुना गया, कि विधवाकी शादी हुई हो, बल्कि यहांतक रवाज है, कि यदि किसी लड़कीकी एक जगह सगाई होगई और वह दूसरी जगह ब्याहदीगई, तो उसपर भी मरने मारनेके मौक़े पेश आये हैं; फिर भला ऐसे ख़ानदानमें, जिसकी मिसाल और राजपूतोंको दीजाती है, ऐसा क्योंकर होसक्ता है. जब सगाइयोंपर ही यह हाल होता है, तो भाटी लोग, जो चन्द्रवंशकी एक बड़ी शाखा हैं, कब चुपचाप रहसक्ते थे! दूसरे, शादीका चित्तौड़में होना और मालदेवका अपने कुल कुटुम्ब सहित क़िलेमें वास करना भी बुद्धिमें नहीं आसक्ता; क्योंकि अव्वल तो मालदेवको अपने मौरूसी ठिकाने जालौरको ख़ाली छोड़कर चित्तौड़में आबाद होनेसे हमीरसिंह जैसे बहादुर दुश्मनके हाथमें जालौरके चलेजानेका भय था; दूसरे मेवाड़को हमीरसिंहने वीरान करदिया था, इसलिये ख़ुराक वग़ैरह सामान भी मालदेव और उसके कुल आदमियोंके लिये जालौरसे ही आता था, तो भला ऐसी जायदादको उसने ख़ाली किसतरह छोड़ा, और हमीरसिंहने उसपर हमलह क्यों न किया; और तीसरे, जब मालदेव अपने कुटुम्ब व लश्कर समेत चित्तौड़में मौजूद था, तो फिर हमीरसिंहका फ़िरेबसे क़िला लेना

किसतरह क़ियासमें आसक्ता है, क्यौंकि वह तो उस वक्त तक्लीफ़की हालतमें थे, और मालदेव आसूदह, और बादशाह उसका सहायक था.

अब बूंदीके इतिहास वंशप्रकाशसे जो हाल ज़ाहिर हुआ वह लिखा जाता है:-

बंबावदेके राजा हालूने जीरण व भाणपुर ज़िलेके कई गांव दबालिये थे. जब हालू अपनी शादीके लिये शिवपुर गया, और उसने विवाहका कंकण भी नहीं खोला था, कि जीरणके अधिकारी जैतसिंह पुंवार व भाणपुरके राजा भरत खीचीने उसपर चढ़ाई करदी. महाराणाने उनकी मददके लिये जैतसिंहके बेटे सुन्दरदासके साथ कुछ फ़ौज हालूपर भेजी, और हालूकी मददके वास्ते बूंदीसे हामा भी आया. इस लड़ाईमें महाराणाका काका विजयराज मारागया, और महाराजकुमार क्षेत्रसिंह घायल हुए. तब खुद महाराणा हमीरसिंहने नाराज़ होकर हालूपर चढ़ाई करदी. यह खबर सुनकर हामा बूंदीसे महाराणाके पास आ हाज़िर हुआ, और अर्ज़ किया, कि हुज़ूरको यह नहीं चाहिये था, कि खीची और पुंवारोंकी हिमायत करके हालूपर फ़ौज भेजदी. महाराणाने कहा, कि हमारे काका मारेगये, और महाराजकुमार ज़ख्मी हुए हैं, इसकी सज़ा हालूको देना उचित है. हामाने अर्ज़ किया, कि विजयराज मेरे हाथसे मारेगये हैं, इसलिये इस कुसूरकी सज़ा तो मुझको देवें; और लड़ना मरना राजपूतोंका ही काम है, इस कुसूरमें मैं अपने बेटे लालसिंहकी बेटीकी शादी (१) महाराजकुमारसे करदूंगा. इसके बाद हामाने अपने बेटे लालसिंहकी बेटीकी सगाई महाराजकुमार क्षेत्रसिंहसे करदी.

महाराणा हमीरसिंहके चार पुत्र खेता, लूणा, खंगार, और वैरीशाल हुए.

---

(१) राजपूतोंमें खूनके एवज़ ज़मीन या बेटी देनेसे सफ़ाई होजाती है.

महाराणा क्षेत्रसिंह.

महाराणा हमीरसिंहका देहान्त होनेके बाद विक्रमी १४२१ [हि० ७६५ = ई० १३६४] में महाराणा क्षेत्रसिंह, जिनका मश्हूर नाम खेता है, गादी विराजे. इनके गद्दी विराजनेके संवत् में सन्देह कम मालूम होता है, क्योंकि गोगूंदा ग्राममें एक मन्दिरके छाबणेपर एक प्रशस्ति खुदी है, उसमें इन महाराणाका नाम लिखा है.

इन महाराणाके पोते महाराणा मोकल, और परपोते महाराणा कुम्भा, और कुम्भाके पुत्र रायमल्लके समयकी प्रशस्तियोंमें लिखा है, कि महाराणा खेताने लड़ाईमें गुजरातके राजा रणमल्लको १०० राजाओं समेत क़ैदख़ानहमें क़ैद किया. हमारी दानिस्तमें वह ईडरका पहिला राव रणमल्ल होगा, जिसने इनसे लड़ाई की थी; और उन्हीं प्रशस्तियोंमें इनका अमीशाहको फ़त्ह करके गिरिफ़्तार करना लिखा है. हमने बहुतसी फ़ार्सी तवारीख़ोंमें ढूंढा, लेकिन् इस नामका कोई बादशाह उस ज़मानहमें नहीं पाया गया; और प्रशस्तियोंका लेख भी झूठा नहीं होसक्ता, क्योंकि वे उसी ज़मानहके क़रीबकी लिखी हुई हैं. यदि यह ख़याल कियाजावे, कि लिखने वालेने अहमदशाह गुजरातीको बिगाड़कर अमीशाह बना लिया, तो यह असम्भव है, क्योंकि अव्वल तो गुजरात और मालवेकी बादशाहतकी बुन्याद ही उस वक्त़तक नहीं पड़ी थी, और अहमदशाह क्षेत्रसिंहके पोते मोकलके समयमें गुजरातका बादशाह बना था; शायद फ़ीरोज़शाह तुग़लक़के ख़िताबमें अहमदका लफ़्ज़ हो, और उसको बिगाड़कर पंडितोंने अमीशाह बनादिया हो, तो आश्चर्य नहीं; अथवा अफ़ग़ानिस्तान, तुर्किस्तान, व ईरानकी तरफ़ कोई अहमदशाह हुआ हो, और वह गुजरातियोंकी मददके लिये आया हो, क्योंकि उन लोगोंकी आमद रफ़्त सिन्ध देश और गुजरातकी तरफ़ होती रही है; अथवा दिल्लीके बादशाहके शाहज़ादे या भाईका नाम अहमदशाह हो, जिसको बादशाहने सेनापति बनाकर राजपूतानहकी

तरफ़ भेजा होगा; वर्नह मेवाड़से दक्षिणी हिन्दुस्तानकी तरफ़ तो उस समयमें मुसल्मानोंकी कोई मज़्बूत बादशाहत क़ाइम नहीं हुई थी, सिर्फ़ एक बीजापुरकी बादशाहतका बानी अ़लाउद्दीन गांगू हसन बह्मनी इन महाराणाके राज्यके बाद दक्षिणका हाकिम बना था. इससे मालूम होता है, कि अमीशाह या अहमदशाह नामका कोई बादशाह उस ज़मानहमें नहीं था, शायद कोई दूसरा नाम बिगड़कर अमीशाह हुआ हो, तो तअ़ज्जुब नहीं; लेकिन् महाराणा क्षेत्रसिंहने अमीशाहको फ़त्ह करके गिरिफ़्तार किया, इस बातमें सन्देह नहीं है.

ऊपर बयान कीहुई प्रशस्तियोंमें यह भी लिखा है, कि महाराणा क्षेत्रसिंहने मालवेके राजाको फ़त्ह किया, और हाड़ौतीको भी विजय किया; लेकिन् हमारी समझमें नहीं आता, कि दिल्लीके बादशाह हुमायूंको बाकरोलके मक़ामपर महाराणा क्षेत्रसिंहका शिकस्त देना टॉड साहिबने कहांसे लिखदिया, क्योंकि सन् हिज्री और संवत् विक्रमीको मुताबिक़ करनेसे साबित होता है, कि हुमायूंशाह महाराणा रत्नसिंहके वक़्तमें तख़्त-नशीन था, जो ज़मानह महाराणा खेतासे क़रीब १५० वर्ष पीछेका है. इससे मालूम होता है, कि टॉड साहिबने किसी शख़्ससे ज़बानी क़िस्सह सुनकर लिखदिया.

अ़लावह इसके टॉड साहिबने लिखा है, कि इन महाराणाने अजमेर और जहाज़-पुरको लल्ला पठानसे लिया, इसमें भी उन्होंने धोखा खाया है, क्योंकि लल्ला पठानको महाराणा क्षेत्रसिंहसे पांचवीं पुश्तमें महाराणा रायमल्लके कुंवर पृथ्वीराजने मारा था, और इसी सबबसे उनको बड़ाईके तौरपर उड़ना पृथ्वीराज कहते हैं, जिसका हाल बीका-नेरके प्रधान महता नेणसीने २०० वर्ष पहिले बड़ी तह्क़ीक़ातके साथ लिखा है, और दूसरी पोथियोंमें भी दर्ज है. सिवा इसके यह बात कहावतके तौरपर हर छोटे बड़ेकी ज़बानपर मश्हूर है-"भाग लला पृथीराज आयो, सिंहके साथ श्याल व्यायो".

इन महाराणा (क्षेत्रसिंह) के देहान्तका हाल इस तरहपर है, कि जब हामा हाड़ाके बेटे लालसिंहकी बेटीका विवाह इनके साथ क़रार पाया, तो यह बड़ी धूमधामसे शादी करनेको बूंदीकी ओर सिधारे. यह शादी बूंदीमें हुई थी. रीति पूर्वक विवाह होचुकनेके बाद एक दिन दर्बार होरहा था, उस समय महाराणा खेताने बातें करते समय बारहट बारूकी निस्बत फ़र्माया, कि हमारे पिता महाराणा हमीरसिंहने इनको अपना बारहट बनाया है, और इन्हींकी माता बरबड़ीकी बरकतसे, जोकि देवीका अवतार थी, महाराणाके क़ब्ज़ेमें पीछा चित्तौड़ आया; परन्तु यह बारू हमारा किया हुआ अजाची है. इसपर बारूने कहा, कि मैं राजपूतको मांगनेवाला हूं, और महाराणाके सिवा मुझको कोई राजपूत पृथ्वीपर दिखाई नहीं देता, इसलिये इनके

सिवा दूसरेसे नहीं लेता. यह बात हाड़ा लालसिंहको बहुत नागुवार गुज़री, परन्तु उसवक्त तो मौक़ा न देखकर कुछ न बोला, और जब अपने महलोंमें गया, उससमय बारूको कोई सलाह पूछनेके बहानेसे अपने पास बुलाया, और एक मकानमें बन्द करके कहा, कि हम राजपूत हैं, तुमको हमारे पाससे कुछ लेना चाहिये; यदि नहीं लोगे, तो हम तुमसे समझेंगे. बारू बारहटने देखा, कि इसवक्त मैं इनके क़बज़ेमें हूं, ऐसा न हो कि महाराणा साहिब मेरी मदद करें उससे पहिले ही यह कुछ बेइज़्ज़ती कर-बैठें. यह सोचकर उसने दिलमें मरना ठान लिया, और जवाब दिया, कि आप जो देवें वह मुझे इस शर्तपर लेना मंजूर है, कि जो कुछ मैं देऊं उसको पहिले आप लेवें. यह बात लालसिंहने मंजूर की. तब बारूने एक भाटके लड़केको, जोकि उसकी ख़िद्मतमें रहता था, कहा कि मैं अपना सिर काटकर तुझे देता हूं, वह हाड़ाको जाकर देदेना; इस सेवाका एवज़ तुझको महाराणा देवेंगे (१). उस लड़केने पहिले तो इन्कार किया, परन्तु आख़िरको बारूके समझानेसे मंजूर किया; और बारूने तलवारसे अपना सिर काटडाला. उस लड़के (२) ने बारूके हुक्मके मुवाफ़िक़ उसका मस्तक कपड़ेमें लपेटकर लालसिंहको जादिया. मस्तक देखकर लालसिंहको बड़ी चिन्ता हुई. यह सारा वृत्तान्त उस लड़केने महाराणासे जा कहा. इसपर महाराणाने निहायत नाराज़ होकर बूंदीको घेरलिया, और कई दिनोंतक लड़ाई होती रही. निदान जब बूंदीका क़िला फ़त्ह न हुआ, तो महाराणा ख़ुद क़िलेकी दीवारपर चढ़े, जहांपर वह भीतरी लोगोंके हथ्यारोंसे मारेगये. लालसिंहको भी महाराणाकी सेनाके शूर वीरोंने मारलिया, और हाड़ा बरसिंह अपना प्राण बचाकर भागा. इसवक्त महाराणी हाड़ी महाराणाके साथ सती हुई.

महाराणा खेताके पुत्र १- लाखा; २- भाखर; (जिनकी औलादके भाखरोत सीसोदिया कहलाते हैं); ३- माहप; ४- भुवणसिंह; ५- भूचण (जिनकी औलादके भूचरोत कहलाते हैं); ६- सलखा (जिनकी औलादके सलखावत कहलाते हैं); और ७- सखर (जिनकी औलादके सखरावत हैं); और खातण पासबानके पेटसे ८-चाचा, व ९- मेरा थे.

पनवाड़ गांव, जो हालमें जयपुरके क़बज़ेमें है, इन महाराणाने श्री एकलिङ्गेश्वरके

---

(१) मश्हूर है, कि उस भाटके लड़केको महाराणा लाखाने बारू बारहटके कहनेके मुताबिक़ चीकलवास गांव दिया.

(२) इस लड़केकी औलादके भाट उदयपुरके नज़्दीक चीकलवास गांवमें मौजूद हैं.

भेट किया था. इन महाराणाने ईडरके राजा रणमल्लको क़ैद करके उसके बेटेको गद्दीनशीन किया, उसका हाल श्री एकलिङ्गजीके मन्दिरके दक्षिणद्वारकी प्रशस्तिके तीसवें श्लोकमें लिखा है. महाराणा खेताने बागड़ तक अपना क़बज़ह करलिया था.
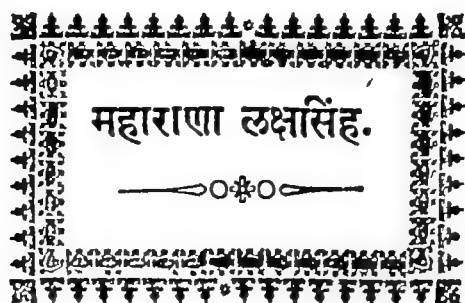
महाराणा लक्षसिंह, जिनका नाम लाखा मश्हूर है, विक्रमी १४३९ [हि० ७८४ = .ई० १३८२] में गद्दीनशीन हुए. जब महाराणा क्षेत्रसिंह बूंदीमें मारेगये उसवक्त बूंदीके कुल हाड़ा लोग तितर बितर होगये थे; परन्तु हाड़ोंका उसमें कोई ख़ास क़ुसूर नहीं था, क्योंकि बारू बारहटने एक छोटीसी बातपर अपना सिर काटडाला, और इसीपर महाराणा खेताने लड़ाई शुरू करदी. यह एक साधारण बात है, कि जहां लड़ाई होती है वहां दोनों तरफ़के आदमी मारे जाते हैं. इस संग्राममें महाराणा क्षेत्रसिंह काम आये, और हाड़ा लालसिंह भी मारागया. तब हामा हाड़ाका पुत्र बरसिंह और लालसिंहका पुत्र जैतसिंह और नौब्रह्म, ये तीनों शख़्स महाराणा लाखाके पास हाज़िर हुए, और अ़र्ज़ किया, कि इसमें हमारा कुछ क़ुसूर तो है नहीं, आगे आप मालिक हैं, आपके लिये हमारे सिर हाज़िर हैं, आपकी मर्ज़ी हो दुश्मनोंसे लड़ाकर लेवें, अथवा मर्ज़ी हो खुद लेवें. इस अ़र्ज़पर महाराणा लाखाने बूंदीका पर्गनह पीछा उनको देदिया; और इस बैरको मिटानेके लिये बरसिंह, जैतसिंह और नौब्रह्मने अपनी व अपने भाइयोंकी बारह लड़कियां महाराणाके भाइयों और सर्दारोंको ब्याहदीं, और जलन्धरी, धनवाड़ा, तथा बाजणा वग़ैरह चौबीस गांव जिहेज़में दिये. फिर इन महाराणाने मारवाड़की तरफ़के पहाड़ी ज़िलोंको, जोकि इनसे फिरे हुए थे, पीछा अपनी हुकूमतमें शामिल किया, और बैराटके क़िलेको गिराकर बदनौर आबाद किया. इन महाराणाके समयमें आबादी और इमारतोंकी बड़ी तरक़्क़ी हुई, और मुल्ककी आमदनीके सिवा एक बड़ी आमद यह हुई, कि जावरमें चांदी और सीसेकी खान (१) निकली.

जबकि इन महाराणापर दिल्लीका बादशाह गयासुद्दीन तुग़लक़ चढ़कर आया,

---

(१) अब यह खान बहुत दिनोंसे बन्द है.

और बदनोरपर लड़ाई हुई, तो उस लड़ाईमें बादशाह शिकस्त पाकर भागा, और यह शूर वीर महाराणा उसका पीछा करते हुए गयातक चलेगये, और गयासुद्दीनसे गयाका कर छुड़ाया. इसी अरसेमें उन्होंने नागरचालके मालिक किसी सांखला राजपूतको भी मक़ाम आंबेरमें पराजय किया. इस हालका संवत् न तो कर्नेल् टॉडने लिखा, और न हमको कहीं मिला, लेकिन् इस मारिकेका ज़िक्र उनके पीछेकी प्रशस्तियोंमें और पोथियोंमें लिखा है. यह मारिका कर्नेल् टॉडने मुहम्मदशाह लोदी और उक्त महाराणासे होना लिखा है, लेकिन जहांतक हम दर्याफ़्त करसके, हमको मुहम्मदशाह नामके किसी लोदीका दिल्लीके तख़्तपर बैठना मालूम नहीं हुआ.

जब महाराणा लाखाकी माता सोलंखिनी द्वारिकानाथके दर्शनोंको पधारीं, उससमय काठियावाड़में पहुंचते ही काबोंने, जो एक लुटेरी क़ौम है, मेवाड़की फ़ौजको घेरलिया, और लड़ाई होनेलगी; परन्तु काबोंके घेरेको मेवाड़ी सर्दार न हटासके, उस मौक़ेपर शार्दूल-गढ़के राव सिंह डोडियाने ग़नीमतका वक़ समझकर अपनी फ़ौज समेत आकर मेवाड़ी लश्करकी मदद की, और काबोंके साथ बड़ी भारी लड़ाई हुई. इस लड़ाईमें राव सिंहके साथ उसके दोनों बेटे कालू व धवल भी मौजूद थे. लड़ाईमें राव सिंह तो मारागया, और उसके पुत्र कालू व धवलने मेवाड़ी फ़ौज समेत काबोंपर फ़त्ह पाई, और माजी सोलंखिनीको अपने ठिकाने शार्दूलगढ़में मिहमान करके घायलोंका इलाज करवाया; फिर दोनों भाई बाईजीराज (१) सोलंखिनीको मेवाड़की सीमातक पहुंचाकर अपने ठिकानेको लौटगये. बाईजीराजने यह सब हालात अपने पुत्र महाराणा लाखासे कहे. इसपर महाराणाने उनकी बहुत बड़ी सेवा समझ धवलको पत्र भेजकर बुलाया, और रत्नगढ़, नंदराय और मसौदा वग़ैरह पांच लाखकी जागीर उनको दी, और विक्रमी १४४४ [हि० ७८९ = ई० १३८७] में उन्होंने डोडियोंको अपना उमराव बनाया. जब दूसरी बार यह बाईजीराज सोलंखिनी गयाजीको सिधारीं तब भी महाराणाने धवल डोडियाको बहुतसी फ़ौज समेत उनके साथ भेजा. इसवक़ छप्पर घाटाके हाकिम शेरख़ांसे लड़ाई हुई, जिसमें धवलने शेरख़ांपर फ़त्ह पाई, और बाईजीराजको गयाका तीर्थ कराकर शेरख़ांका लवाज़िमह छीन लाये, जो महाराणाके नज़ किया.

सर्दारगढ़की तवारीख़में लिखा है, कि डोडिया धवल अपने बेटे हरू सहित महाराणाके साथ बदनोरकी लड़ाईमें गयासुद्दीन तुग़लक़से लड़कर मारागया. यदि ऐसा हुआ हो, तो गयासुद्दीनकी लड़ाईका जो ज़िक्र पहिले किया गया, वह धवलकी ऊपर लिखी हुई कार्रवाइयोंके बाद हुआ होगा.

---

(१) राज्य करनेवालेकी माताको बाईजीराज कहते हैं.

अब हम महाराणा लाखाके छोटे बेटे मोकलको राज्य मिलनेका कारण लिखते हैं:-

मारवाड़में मंडोवरके राव चूंडाने अपने बड़े पुत्र रणमल्लको किसी सबबसे नाराज़ होकर निकालदिया था. उसवक्त रणमल्ल मए पांच सौ सवारोंके चित्तौड़में महाराणा लाखाके पास आकर नौकर रहा. यह एक अच्छा शूर वीर राजपूत था. एक दिनका ज़िक्र है, कि किसी शख्सकी बरात आती हुई देखकर महाराणाने रणमल्लसे कहा, कि जवान आदमियोंकी शादी होती है, हम बूढ़ोंकी शादी कौन करे (१). इस बातको रणमल्लने तो हंसी समझकर कुछ भी न कहा, परन्तु महाराणाके बड़े कुंवर चूंडा, जोकि पूरे पिताभक्त थे, इस बातको सुनकर सहन न करसके, और उन्होंने महाराणासे अर्ज़ किया, कि रणमल्लकी बहिन बड़ी है उसके साथ हुजूर विवाह करें. इसपर महाराणाने फ़र्माया, कि हमने तो हंसीके तौरपर यह बात कही थी, हमारी अवस्था और हमारी इच्छा बिल्कुल विवाह करनेकी नहीं है; परन्तु चूंडाने हठ करके महाराणाको शादी करना मन्जूर कराया. इसके बाद उन्हों (चूंडा) ने रणमल्लसे कहा, कि आपने अपने डेरेपर हमको कभी गोठ नहीं जिमाई. रणमल्लने चूंडाके मिहर्बानी और मुहब्बत भरे हुए वचनोंको सुनकर गोठ तय्यार करवाई, और उक्त राजकुमार अपने भाइयों व सर्दारों समेत रणमल्लके यहां जीमनेको गये. भोजन करते समय चूंडाने रणमल्लसे कहा, कि तुम्हारी बहिनकी शादी महाराणाके साथ करदो. तब रणमल्लने कहा, कि महाराणाके साथ शादी करनेमें हमारा सब तरहसे बड़प्पन है, परन्तु वे उम्रमें ज़ियादह हैं, इस सबबसे शादी नहीं करसक्ता, अल्बत्तह आपके साथ शादी करना मंजूर है. इसपर चूंडाने रणमल्लको बहुत कुछ समझाया, परन्तु उसने इन्कार किया; तब चूंडाने कहा, कि रणमल्लके पास यदि कोई चारण हो तो इनको समझावे. रणमल्लके पास चांदण नामी एक खड़िया गोत्र चारण रहता था, वह बोल उठा, कि मैं हाज़िर हूं. चूंडाने उससे कहा, कि तुम्हारे ठाकुरको समझाओ. इसपर चांदणने कहा, कि महाराणाके उम्रमें ज़ियादह होनेकी तो कुछ चिन्ता नहीं, परन्तु राजा लोगोंमें क़दीमसे यह दस्तूर है, कि बड़ा बेटा राज्यका मालिक हो, और छोटेको नौकरी करनेपर खानेको मिले, सो ऐसी हालतमें कदाचित् हमारी बाईके लड़का पैदा हो, तो इसका क्या प्रबन्ध कियाजावे.

चूंडाने कहा, कि यदि तुम्हारी बाईके लड़का उत्पन्न हो, तो वह चित्तौड़का मालिक होगा, और मैं उसका नौकर रहूंगा. इसपर चांदणने कहा, कि आपसे चित्तौड़का राज्य

---

(१) बाज़ पोथियोंमें लिखा है, कि रणमल्लने अपनी बहिनकी शादी कुंवर चूंडाके साथ करनेकी दरख्वास्त की थी, जिसपर चूंडाने इज्जतके साथ उस राजकुमारीसे अपने पिताकी शादी करवाई.

नहीं छोड़ा जायेगा. तब चूंडाने शपथ खाकर चांदणकी तसल्ली करदी. चांदणने जाकर रणमल्लको समझाया और कहा, कि पुराना चन्दन नये चन्दनसे हमेशह उत्तम होता है. चांदणके इस प्रकार समझाने और चूंडाके इक़ारसे गद्दीका वारिस अपने भानजेका होना सुनकर रणमल्लने अपनी बहिनकी शादी महाराणाके साथ करना मन्जूर करलिया, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ सगाईके नारियल महाराणाको झेलादिये; और साथही इसके चूंडासे महाराणाके सामने इस बातका इक़ारनामह भी लिखालिया, कि यदि रणमल्लके भानजा पैदा हो, तो मैं (चूंडा) राज्य छोड़दूंगा. महाराणाकी शादी राव चूंडाकी बेटी और रणमल्लकी बहिन हंसबाई (१) से होनेके १३ महीने बाद उसके पेटसे मोकल पैदा हुए, जो अपने पिताके बाद राज्य गद्दीपर बैठे.

महाराणा लाखा राज्यको तरक़ी देनेवाले और अपनी प्रजाको आराम पहुंचाने वाले हुए. इनके हाथसे बहुतसी बड़ी बड़ी इमारतें फिर तय्यार हुईं जो अल्लाउद्दीन ख़ल्जीने गिरादी थीं और बहुतसे तालाब, बन्ध, और मज्बूत क़िले तय्यार हुए. ब्रह्माका एक मन्दिर जो बड़ा आलीशान और लाखों रुपयोंकी लागतसे तय्यार हुआ है, चित्तौड़पर अबतक मौजूद है; न मालूम यह मन्दिर (२) अलाउद्दीनके हमलेसे क्योंकर बचा. पीछोला तालाब भी जोकि इस तरफ़ राजधानी उदयपुरकी रौनक़का एक ख़ास मक़ाम है, इन्हीं महाराणाके समयमें किसी बणजारेने बनवाया था. इन महाराणाके बहुतसे सन्तान हुए. इनके बड़े बेटे चूंडा थे, जिनके चूंडावत् राजपूत हैं; २-राघवदेव, जो पितृ (पूर्वज) के नामसे सीसोदियोंमें पूजे जाते हैं, और जिनकी छत्री अन्नपूर्णाके मन्दिरके पास चित्तौड़में मौजूद है; ३-अज्जा, जिनके सारंगदेवोत हैं; ४-दूल्हा, जिनके दूल्हावत्; ५-डूंगरसिंह, जिनके मांडावत; ६-गजसिंह; जिनके गजसिंहोत; ७-लूणा, जिनके लूणावत; ८-मोकल; और ९-बाघसिंह हुए.

इन महाराणाकी ऊपर लिखी हुई औलादका हाल सर्दारोंके हालातमें लिखा-जावेगा.

---

(१) टॉड साहिबने अपनी तवारीख़में हंसबाईको रणमल्लकी बेटी होना लिखा है, परन्तु मारवाड़की एक तवारीख़से, जो नेणसी महताने दो सौ वर्ष पहिले लिखी है, रणमल्लकी बहिन होना साबित है, और दूसरी तवारीख़ोंमें भी ऐसा ही लिखा देखनेसे हमने हंसबाईको रणमल्लकी बहिन लिखा है.

(२) यह मन्दिर कुम्भश्यामजीके मन्दिरकी पूर्व तरफ़ समिद्धेश्वर महादेवका है, जिसको टॉड-साहिबने ब्रह्माका लिखा है.

विक्रमी १४५४ [हि० ७९९ = .ई० १३९७] में इन महाराणाका देहान्त हुआ. इन्होंने सूर्य ग्रहणमें पीपली ग्राम झोटिंग ब्राह्मणको दिया था, जिसकी औलादके क़बज़ेमें अब चित्तौड़के पास ग्राम घाघसा और सामता हैं, पीपली दूसरी क़ौमके ब्राह्मणोंके क़बज़ेमें है. इन्हीं महाराणाने धनेश्वर भट्टको चित्तौड़के पास ग्राम पंचदेवलां दिया था, परन्तु अब वह ग्राम उसकी संतानके पास नहीं है, किन्तु उसी जातिके दूसरे गोत्र वाले दसोरा ब्राह्मणोंके क़बज़ेमें है.

महाराणा मोकल.

पहिले बयान होचुका है, कि महाराणा लाखाके युवराज पुत्र चूंडाने उक्त महाराणाकी शादी रणमल्लकी बहिनके साथ होनेके समय अपने छोटे भाईको राज्य देनेका इक्रार महाराणाके सामने रणमल्लसे करलिया था; उसको चूंडाने इस मौक़ेपर पूरा करदिया. सूर्यवंशी राजपूतोंमें यह दूसरा ही मौक़ा है, कि युवराजने पिताकी भक्तिके कारण बापके हुक्मसे राज्यको छोड़दिया; क्योंकि या तो पहिली बार राजा दशरथके पुत्र महाराजा रामचन्द्रने ही ऐसा किया था, या दूसरी बार उसी कुलमें चूंडाने किया.

जब महाराणा लाखाका वैकुण्ठवास हुआ, उस समय रणमल्लकी बहिन हंसबाईने चूंडासे कहा, कि मैं तो अब सती होती हूं, तुमने मेरे बेटे मोकलके वास्ते कौनसा पर्गनह तज्वीज़ किया है ? इसपर चूंडाने कहा, कि हे माता आपका पुत्र तो मेवाड़का मालिक है, और मैं उसका नौकर हूं; और यह भी कहा, कि आपको सती नहीं होना चाहिये, आप तो बाईजीराज (१) बनकर रहें वग़ैरह. निदान इस तरह बहुत कुछ समझाने पर महाराणी राठौड़ने सती होना मौक़ूफ़ रक्खा, और चूंडाकी बहुतसी तारीफ़ करके कहा, कि जैसा हक़ पिताके भक्त और सच्चे राजपूतोंका होता है वैसा ही तुमने निभाया, आजसे सनदों तथा पर्वानोंपर जो भाला महाराणा करते थे वह तुम्हारे हाथसे होगा (२). इसके बाद चूंडाने महाराणा मोकलका हाथ पकड़कर विक्रमी १४५४ (३)

(१) राज्य करे उसकी माताको बाईजीराज कहते हैं.

(२) उसी समयसे तांबापत्र और पर्वानोंपर चूंडा अपने हाथसे भालेका चिन्ह करनेलगा, और महाराणा भालेके नीचे अपने हाथसे अपना नाम लिखकर पर्वाने आदिको मन्जूर करते रहे. इसके बाद महाराणा अव्वल संग्रामसिंह (सांगा) ने मुसल्मान बादशाहोंके रवाजके मुवाफ़िक़ सही लिखनेका रवाज जारी किया.

(३) यह संवत् ख्यातिकी पोथियों तथा कर्नेल् टॉड साहिबकी किताबमें लिखा है, लेकिन् हमारे विचारसे विक्रमी १४६० के बाद इनकी गद्दी नशीनी होना चाहिये, क्योंकि विक्रमी १४५१ में तो

[हि० ७९९ = ई० १३९७] में गादीपर बिठाया, और राज्यतिलक देकर सबसे पहिले आपने नज़ की, जिसके पीछे सब छोटे भाइयोंने दस्तूरके मुवाफ़िक़ नज़ें पेश कीं. फिर महाराणा मोकल व बाईजीराजने चूंडाको अपने राज्यके कुल मुसाहिबोंमें मुख्य मुसाहिब होनेकी सनद देकर रियासतका सब काम उनके सुपुर्द करदिया.

चूंडा बहुत लाइक़ और बहादुर सर्दार था, वह इन्साफ़के साथ अपनी रऋय्यतको हर तरहसे आराममें रखता था, और उसने इन्तिज़ाम ऐसा अच्छा किया, कि जिससे राज्य और प्रजा दोनोंको फ़ायदह पहुंचा. कुल राज्यका काम चूंडाके इस्तियारमें होनेके सबब कितने ही लोग उससे नाराज़ रहते थे, क्योंकि यह एक आम क़ाइदहकी बात है, कि राज्यमें जो नालाइक़ आदमी होते हैं वे उत्तम प्रबन्ध करनेवाले शस्ससे नाराज़ रहा ही करते हैं. ऐसे आदमियोंने महाराणा मोकल और बाईजीराजके कान भरना शुरू किया, कि चूंडाने अपनी सौगन्ध और वचन तो पूरा करदिया, परन्तु अब खुद राज्य करना चाहता है. जोकि औरतोंमें मर्दोंकी अपेक्षा बुद्धि कम होती है, बाईजीराजने लोगोंकी बहकावटपर अमल करके चूंडाको कहलाया, कि अगर तुम मोकलके नोकर हो, तो मेवाड़से बाहिर, जहां जी चाहे, चले जाओ, और यदि राज्य चाहते हो, तो मैं अपने बेटेको लेकर तुम कहो जहां चली जाऊं. चूंडा तो सच्चा, साफ़, और धर्मवाला था, उसने कहा कि मैं तो अभी जाता हूं, परन्तु मेरे भाई और मालिक मोकलकी हिफ़ाज़त और मुल्ककी निगहबानी अच्छी तरहसे रखना, ऐसा न हो कि राज्यकी बर्बादी होजावे. यह कहकर आप अपने तमाम छोटे भाइयों समेत मेवाड़से चलदिया, सिर्फ़ राघवदेवको महाराणाकी हिफ़ाज़तके लिये यहां छोड़ा. चूंडा यहांसे रवानह होकर मांडूके बादशाह दिलावरख़ां (१) के पास पहुंचा. वहांपर बादशाहने उसकी बहुत ख़ातिरदारी की, और कई पर्गने उसको ख़र्चके लिये दिये.

चूंडाके चलेजाने बाद मेवाड़का कुल काम रणमल्लके सुपुर्द हुआ. रणमल्लने रियासतकी कुल फ़ौजका अधिकारी राठोड़ोंको बनाया, और कुछ पर्गने भी मारवाड़के राठोड़ोंको जागीरमें देदिये, यानी महाराणाको नाबालिग़ देखकर राज्यपर सब तरहसे

राव चूंडाको ईदा राजपूतोंसे मंडोवर मिला, और उन दिनों उसका बेटा रणमल्ल भी कमउम्र था, और मंडोवरमें राज जमानेको भी कई वर्षोंका अरसा चाहिये; उसके बाद रणमल्लका चित्तौड़में नौकर होना, जिसके बाद उसकी बहिन हंसबाईकी शादी महाराणा लाखाके साथ होना, जिसके गर्भसे महाराणा मोकल पैदा हुए. इन बातोंके लिये कमसे कम नौ दस वर्षका अरसह चाहिये.

(१) उसका अस्ली नाम हुसैन था.

अपना क़ब्ज़ा जमालिया, और महाराणा मोकलने जवान होनेपर भी उसको अपना विश्वासपात्र मामूं जानकर बदस्तूर मुसाहिब बना रक्खा.

जब मंडोवरका राव चूंडा विक्रमी १४६७ [हि० ८१२ = ई० १४१०] में मारागया और उसके बेटोंमें राज्यतिलकके समय झगड़ा पैदा हुआ, उस समय चूंडाके छोटे बेटे रणधीरने अपनेसे बड़े और रणमल्लसे छोटे भाई सत्ताको कहा, कि यदि आपको राज्य-तिलक करदियाजावे, तो आप हमको क्या देंगे ? इसपर सत्ताने कहा कि, हक़ तो रण-मल्लका है, परन्तु यदि तुम मदद करके ऐसा करो, तो आधा मुल्क तुमको देदूंगा. रणधीरने, जो कि बड़ा बहादुर था, सत्ताको राज्यतिलक देदिया. इसपर रणमल्ल (जो गादीका वारिस था) नाराज़ होकर निकला और महाराणाके पास चित्तौड़ चलाआया, और सत्ता मंडोवरका राज्य करने लगा. सत्ताके लड़का नरवद, और रणधीरके नापा हुआ. कुंवर नरवदने यह सोचकर कि रणधीर आधा हिस्सह किस बातका लेता है, एक दिन किसी आमदनीके सीगेसे आई हुई रुपयोंकी थैली अकेलेने ही रखली. इसपर आपसमें तक्रार बढ़ी. नरवद पालीवाले सोनगरोंका भानजा, और नापा उनका जमाई था. नरवदने किसी छोकरीको सिखाकर नापाको ज़हर दिलादिया, जिससे वह तो मरगया, और अब रणधीरके मारनेकी फ़िक्रमें लगा. रणधीरको इस बातकी खबर नहीं थी, परन्तु दयाल नामी एक मोदीने उसको इस बातकी इत्तिला करदी. यह सुनकर रणधीर अपने राजपूतों समेत वहांसे निकलकर चित्तौड़को चला आया; और रणमल्लसे मिलकर कहा कि चलो तुमको मंडोवरका राज्य दिलाऊं. इसपर रणमल्लने महाराणा मोकलसे अर्ज़ किया, और उन्होंने अपनी फ़ौज साथ लेकर रणमल्लकी मददके वास्ते मंडोवरकी तरफ़ कूच किया. यों तो चूंडाके तमाम बेटे महाराणाके मामूं लगते थे, परन्तु रणमल्लपर उनकी ज़ियादह मुहब्बत थी, कारण यह कि वह उनका नौकर था और कई खैरख्वाहियां भी उसने की थीं, और दूसरे मंडोवरका हक़दार भी वही था; इसलिये महाराणाने रणमल्लकी ही मदद की. मंडोवरमें महाराणाकी फ़ौजके आनेका हाल सुनकर नरवदने अपने पिता सत्तासे कहा, कि यह दुश्मनी मैंने खड़ी की है, इसलिये इसका जवाब मैं ही दूंगा. यह कहकर उसने अपने राजपूतों समेत महाराणाकी फ़ौजका सामना किया, जिसमें चौहथ ईंदा और जीवा ईंदा वग़ैरह बहुतसे राजपूत मारेगये, और नरवद घायल हुआ; उसकी एक आंख तलवारके घावसे फूट गई. फिर महाराणा मोकल रणमल्लको राज्यतिलक (१) देकर सत्ता व नरवदको अपने साथ चित्तौड़ लेआये.

---

(१) मुन्शी देवीप्रसादकी रायसे मालूम हुआ, कि विक्रमी १४७५ [हि० ८२१ = ई० १४१८] में रणमल्ल मंडोवरका मालिक बना था.

सत्ता तो कुछ अरसे बाद चित्तौड़ ही में मरगया, और नरवदको महाराणा मोकलने बड़ी मुहब्बतके साथ अपने पास रखकर कायलाणाका पट्टा एक लाख रुपयोंकी आमदका जागीरमें दिया.

जब नरवद मंडोवरपर क़ाबिज़ था उन दिनों रूण गांवके मालिक सींहड़ा सांखलाने अपनी बेटी सुपियारदेकी शादी नरवदके साथ करना कुबूल किया था, परन्तु उसके मंडोवरसे ख़ारिज होजाने बाद रूणके सांखलाने सुपियारदेका विवाह सींधलोंमेंसे जैतारणके नरसिंह बीदावतके साथ करदिया. एक दिनका ज़िक्र है, कि नरवदने महाराणा मोकलके सामने लम्बा सांस भरा. उसपर महाराणाने फ़र्माया कि यह श्वास आपने मंडोवरके वास्ते लिया, या किसी दूसरी तक्लीफ़के सबबसे. उसने कहा, कि मंडोवर तो मेरे ही घरमें है, परन्तु मेरी मांग सांखलोंने नरसिंह बीदावत जैतारण वालेको व्याहदी उसका मुझको बड़ा रंज है. यह सुनकर महाराणाने सांखलोंको कहलाया, कि नरवदकी मांग देनी चाहिये. तब सांखलोंने डरकर अर्ज़ कराई, कि सुपियारदेकी तो शादी होचुकी, अब उसकी छोटी बहिनको हम नरवदसे व्याह देंगे. महाराणाने यह बात नरवदसे कही. तब नरवदने अर्ज़ की, कि यदि सुपियारदे आरती करे, तो उसकी छोटी बहिनसे शादी करूं. महाराणाके फ़र्मानेसे इस शर्तको भी सांखलोंने मंजूर करलिया, और यहांसे नरवदकी बरात व्याहनेको चढ़ी; परन्तु यह शर्त क़रार पानेके वक्त सुपियारदेका खाविन्द नरसिंह सींधल महाराणाके दर्बारमें मौजूद था, वह आपसकी तानादिहीसे तुरन्त ही सवार होकर जैतारण पहुंचा, और उधर सांखले भी सुपियारदेको लेनेके लिये आये. नरसिंहने उसके भेजनेसे इन्कार किया, जिसपर सुपियारदेने बहुत कुछ आजिज़ी की, और अख़ीरमें नतीजह यह हुआ, कि नरसिंहने सुपियारदेसे आरती न-करनेका पूरा इक़ार लेकर रुख़्सत दी. सुपियारदे अपने पीहर रूणमें पहुंची, और नरवदकी बरात भी वहां आई. सांखलोंने सुपियारदेको नरवदकी आरती करनेके लिये कहा, परन्तु उसने इन्कार किया. तब सांखलोंने कहा, कि बाई तेरे पतिको जाकर कौन कहता है, इस वक्त अगर तू आरती न करेगी, तो नरवद हमको मारेगा. पीहर वालोंके कहनेसे सुपियारदेने नरवदकी आरती की. उस मौक़ेपर नरसिंह सींधलका [illegible] वहां मौजूद था, उसने जाकर यह हाल नरसिंहसे कहदिया. यहांपर सुपि[illegible] नरवदसे कहलाया, कि मेरे आरती करनेकी ख़बर मेरे पतिको मिलेगी, तो [illegible] तक्लीफ़ होगी. नरवदने कहा, कि अगर तेरा पति तुझको तक्लीफ़ दे [illegible] लिखना, मैं उसकी ख़बर लूंगा. दैवयोगसे वैसा ही हुआ. कि जब सुपि[illegible] गई, तो उसके पतिने पलंगका पाया उसकी छातीपर रखकर दूसरी [illegible]

सुलाया. सुपियारदेने बहुतसी आजिज़ी की, लेकिन् उसने एक भी न सुनी. निदान यह ख़बर सुपियारदेकी सासने सुनी, और वह उसको छुड़ा लेगई. सुपियारदेने यह सारा हाल नरवदको लिख भेजा. नरवदने काग़ज़ बांचकर, एक रथमें अच्छे तेज़ बैल जुतवाये, और काग़ज़ लाने वाले आदमी समेत आप उसमें बैठकर जैतारणकी तरफ़ रवानह हुआ. जब गांवके नज़्दीक पहुंचा, तो उसने उसी आदमीके हाथ मर्दानी पोशाक भेज-कर सुपियारदेको अपने आनेकी ख़बर दी. उस वक्त तमाम सींधल लोग रावलोंका तमाशा देखनेको गये थे. सुपियारदे मर्दाने वस्त्र पहिनकर नरवदके पास चली आई. जब पीछेसे सींधलोंको इस बातकी ख़बर हुई, तो ये सब लोग नरवदके पीछे चढ़ दौड़े. आगे चलकर रास्तेमें एक नदी ढावों पूर बह रही थी, उसको देखकर सुपियारदेने नरवदसे कहा, कि सींधलोंके हाथ आनेसे तो नदीमें डूब मरना बिह्तर है. यह सुनकर नरवदने बैलोंको नदीमें डालदिया, बैल बड़े तेज़ और ज़ोरावर थे, तुरन्त ही पार निकल गये. सींधलोंने भी उसके पीछे अपने घोड़े नदीमें डाले, परन्तु नरवद तो सूर्य उदय होते होते कायलाणे पहुंच गया, और उसका भतीजा आसकरण, जो ख़बरके लिये आया था, सींधलोंसे मुक़ाबलह होनेपर काम आया. यह बात महाराणा मोकलको मालूम हुई, तब उन्होंने नरवदको कायलाणेसे चित्तौड़ बुला लिया, और सींधलोंको धमकाया, कि यह तुम्हारी औरतको लेगया, और तुमने इसके भतीजेको मारडाला. अब फ़साद नहीं करना चाहिये.

यहांपर इस हालके लिखनेसे हमारा मत्लब यह था, कि गद्दीसे ख़ारिज होजानेके सबब नरवदकी मांग सांखलोंने दूसरेको व्याहदी, उसपर महाराणा मोकलने नरवदको मदद देकर उसकी शर्मिन्दगी दूर करनेके लिये सींहड़की दूसरी लड़कीके साथ शादी करवाई, जिसपर भी इतना फ़साद हुआ, तो भला कर्नेल् टॉडका यह बयान कब ख़्यालमें आसक्ता है, कि महाराणा हमीरसिंहके साथ मालदेवकी विधवा लड़की व्याहीगई.

अब हम यहांसे महाराणाके बाक़ी तवारीख़ी हालात लिखते हैं:-

जब कि नागौरका हाकिम फ़ीरोज़ख़ां, जिसको ख़ुदमुख़्तार रईस कहना चाहिये, एक बड़ी फ़ौज तय्यार करके फ़सादके इरादे[illegible]ह हुआ, तो यह ख़बर सुनकर महाराणा मोकल भी अपनी सेना समेत मुक़ाबलेके लिये चढ़े, और गांव जोताईके चौगानमें मक़ाम किया, जहां रातके वक्त फ़ीरोज़ख़ां अपनी फ़ौजके साथ बड़ी दूरसे धावा करके मेवाड़की फ़ौजपर आगिरा. दोनों तरफ़के बहादुरोंने बड़ी वीरताके साथ लड़ाई की. इस लड़ाईमें महाराणा मोकलकी सवारीका घोड़ा मारागया. यह देखकर डोडिया धवलके पोते सबलसिंहने अपना घोड़ा महाराणाके नज़ करदिया,

और आप बड़ी बहादुरीके साथ मारागया. महाराणा मोकल भागकर चित्तौड़ आये, और फ़तह फ़ीरोज़ख़ांको नसीब हुई. इस लड़ाईमें महाराणाके ३००० आदमी मारेगये. जब फ़ीरोज़ख़ां फ़त्ह पाकर निशान उड़ाता हुआ, और कुल मेवाड़को लूटता हुआ मालवेकी तरफ़ चला, तो महाराणाको इस बातकी बड़ी शर्मिन्दगी पैदा हुई, और उन्होंने फिर अपने बहादुर राजपूतोंको एकट्ठा करके फ़ीरोज़ख़ांकी तरफ़ कूच किया. फ़ीरोज़ख़ां भी यह बात सुनकर सादड़ी और प्रतापगढ़के पहाड़ोंकी तरफ़ झुका, और जावर मक़ामपर, जो उदयपुरसे दक्षिण तरफ़ क़रीब दस कोसके फ़ासिलेपर है, दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ. यहांपर फ़ीरोज़ख़ांकी फ़ौजका वैसा ही हाल हुआ जैसाकि जोताई मक़ामपर मेवाड़की फ़ौजका हुआ था. अगर्चि तारीख़ फ़िरिश्तह वग़ैरह मुसल्मानोंकी तवारीख़ोंमें इसका ज़िक्रतक नहीं लिखा है, परन्तु इसकी साक्षी चित्तौड़पर महाराणा मोकलके बनाये हुए समिद्धेश्वर महादेवके मन्दिरकी प्रशस्ति देती है.

विक्रमी १४८९ [हि० ८३५ = .ई० १४३२] में गुजरातका बादशाह अहमदशाह बड़ी फ़ौज लेकर मुल्कगीरीके लिये निकला, और नागौर व मेवाड़की तरफ़ झुका. उसने पहिले डूंगरपुर वालोंसे पेशकश (नज़ानह) लिया, और बाद उसके देलवाड़े और कैलवाड़ेको लूटता हुआ मारवाड़की तरफ़ चला. यह हाल सुनकर महाराणा मोकलने अपनी फ़ौज एकट्ठी करके अहमदशाहपर धावा करनेके लिये चढ़ाई की. उस समय महाराणा खेताकी पासवान खातणके बेटे चाचा और मेरा भी मौजूद थे, जो बड़े बहादुर और एक फ़ौजी हिस्सहके मुख़्तार थे. महाराणाने हाड़ा मालदेवके कहनेसे उनको एक वृक्षकी तरफ़ इशारह करके पूछा, कि काकाजी इस वृक्षका क्या नाम है ? मालदेवने तो हंसीके तौरपर कहा था, क्योंकि चाचा और मेरा दोनों खातणके पेटसे थे, और वृक्षको खाती ही पहिचानते हैं, परन्तु महाराणा इस बातको नहीं समझे. यह सुनते ही चाचा और मेरा दोनोंके कलेजेमें आग लग उठी. ...कर

...९ हानेके कारण

विक्रमी १४९० [हि० ८३६ = .ई० १४३३] में जब फ़ौ... ...ल्लक दो राजपूतोंने दोनों

हुआ, उसवक़ चाचा व मेराने कितने ही आदमियोंको ... ... राघवदेव मारागया, और रणमल्ल कुल

मलेसी डोडिया नहीं मिला, जो शलजीक... ...वठा. राघवदेवके मरनेसे जो कुछ खटका था वह

तीनों अपने कुटुम्बके दस बीस आ... वहां मारवाड़ी ही मारवाड़ी लोग नज़र आने लगे.

लोगोंको बेधड़क आते हुए देखक...

हमलह करादिया. महाराणा... शाह महमूदकी गिरिफ़्तारीका हाल लिखते हैं. जब विक्रमी

मलेसी डोडिया, ये तीनों १... .ई० १४३९] में महाराणा कुम्भाने राव रणमल्लसे कहा,

चाचा व महपा पुंवार कुछ पुंवारको उसके अपराधका दण्ड नहीं मिला, जिसने हमारे

पिताको मारा था. तब रणमल्लने अर्ज़ किया, कि एक ख़त बादशाह महमूद मालवीको लिखिये, यदि वह महपा पुंवारको सुपुर्द करदेवे तो ठीक, वर्नह लड़ाई करके लेंगे. महाराणाने बादशाहको ख़त भेजा; लेकिन् उसने ख़तका सख़्त जवाब दिया, और कहा कि क्या कभी ऐसा हुआ है, कि अपनी पनाहमें आये हुए आदमीको कोई बहादुर गिरिफ़्तार करादेवे! अगर आपको लड़ाई करना मंजूर हो तो आइये, मैं भी तय्यार हूं. इस पत्रके देखते ही महाराणा कुम्भाने फ़ौजकशीका हुक्म देदिया; और उधरसे बादशाह महमूद भी अपनी फ़ौज लेकर चढ़ा. उसवक़्त चूंडा भी बादशाहके पास मौजूद था, उसको बादशाहने कहा, कि तुम भी हमारे साथ चलकर अपने भाई राघवदेवका वैर रणमल्लसे लो. तब चूंडाने कहा, कि हमारा हक़ महाराणापर चढ़ाई करनेका नहीं है, वह हमारे मालिक हैं, अगर राव रणमल्ल अपनी जम्इयत लेकर आया होता, तो बेशक मैं आपके शरीक रहता. यह कहकर चूंडा तो बादशाहकी दीहुई अपनी वर्तमान जागीरपर चलागया. महमूदपर चढ़ाई करनेके वक़्त महाराणा कुम्भाके साथ १००००० सवार और १४०० हाथियोंकी जम्इयत होना मश्हूर है. जब मेवाड़की सर्हदपर दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ, तो बड़ी सख़्त लड़ाई होनेके बाद बादशाह महमूदने भागकर मांडूके क़िलेमें पनाह ली. महाराणा कुम्भा भी पीछेसे वहां जा पहुंचे, और क़िला घेरलिया. महपा पुंवार तो पहिले ही क़िलेसे निकलकर भाग गया था, महमूदने क़िलेसे निकल-कर मेवाड़की फ़ौजपर फिर हमलह किया, लेकिन् राव रणमल्लने बादशाहको गिरिफ़्तार करलिया, उसकी कुल फ़ौज तितर बितर होगई, और महमूदको लेकर महाराणा चित्तौड़पर आये, जहां छः महीनेतक क़ैद रखनेके बाद कुछ दण्ड लेकर उसे छोड़-दिया. यह ज़िक्र फ़िरिश्तह वग़ैरह फ़ार्सी मुवर्रिख़ोंने नहीं लिखा, लेकिन् इस फ़त्हका चिन्ह क़िले चित्तौड़परका कीर्तिस्तम्भ अबतक मौजूद है, जो इस लड़ाई की याद-गारके वास्ते विक्रमी १५०५ [हि० ८५२ = ई० १४४८] में बनाया गया था, जिसकी प्रशस्ति भी वहांपर मौजूद है.

अब हम राव रणमल्लके मारेजाने और मंडोवरपर मेवाड़का क़बज़ह होनेका हाल लिखते हैं:-

महाराणा कुम्भकरणके समयमें भी राव रणमल्लका इख़्तियार बढ़ता ही गया, क्योंकि अव्वल तो उसने चाचा व मेरासे महाराणा मोकलका वैर लिया, और उसके बाद बादशाह महमूदकी लड़ाईमें बड़ी बहादुरी और नौकरी दिखलाई. इस बातसे महाराणा कुम्भाके दिलपर उसका एतिबार बढ़ता रहा. इसी अन्तरमें महपा पुंवार और चाचाका बेटा इक्का अपना अपराध क्षमा करानेके लिये किसी बहानेसे छुपकर महाराणा

कुम्भाके पैरोंमें आगिरे. महाराणा बड़े दयालु थे, दया देखकर उनका कुसूर मुआ़फ़ करदिया, और राव रणमल्लको बुलाकर कहा, कि हम क्षत्रिय लोग शरणागत पालक कहलाते हैं, और ये लोग हमारी शरणमें आये हैं, इसलिये हमने इनका अपराध क्षमा करदिया. इसपर रणमल्लने कहा, कि खैर हुजूरकी मर्ज़ी.

एक दिनका ज़िक्र है, कि महपा पुंवारने महाराणासे अर्ज़ किया, कि राठौड़ोंका दिल साफ़ नहीं है, मालूम होता है, कि शायद ये मेवाड़का राज्य लेनेका इरादह रखते हैं, क्योंकि चारों तरफ़ राठौड़ोंका जाल फैला हुआ है; परन्तु महाराणाको महपा पुंवारके कहनेपर पूरा विश्वास न आया. उन्होंने जाना, कि यह रणमल्लका शत्रु है, इसलिये शायद बनावटी बात घड़ली है. फिर एक दिन महाराणा तो सोते थे और इक्का पैर दाब रहा था, पैर दाबते दाबते रोने लगा, और उसकी आंखोंसे आंसू निकलकर महाराणाके पैरपर गिरे. गर्म गर्म आंसूके टपकनेसे महाराणाकी नींद उड़गई, और उन्होंने इक्कासे रोनेका कारण पूछा, तो उसने कहा, कि सीसोदियोंके हाथसे मेवाड़ गई, और राठौड़ मालिक बनेंगे, इस सबबसे मुझे रोज आगया. इस बातपर महाराणाको रणमल्लकी तरफ़से सन्देह तो हुआ, परन्तु उन्होंने उसे बिल्कुल सत्य ही नहीं मानलिया. इसी अरसेमें बाईजीराज सौभाग्यदेवीकी दासी भारमली, जिससे राव रणमल्लकी दोस्ती थी, एक दिन रणमल्लके पास कुछ देरमें पहुंची. रणमल्ल उस वक्त शराबके नशेमें चूर था, उसने भारमलीसे कहा, कि देरसे क्यों आई ! उसने कहा, कि जिनकी मैं नौकर हूं उनके पाससे छुट्टी मिली तब आई. इसपर नशेकी हालतमें रावने कहदिया, कि अब तू किसीकी नौकर नहीं रहेगी, बल्कि जो लोग चित्तौड़में रहना चाहेंगे वे तेरे नौकर होकर रहेंगे; और बातों ही बातोंमें भारमलीके पूछनेपर रणमल्लने महाराणा कुम्भाके मारने और राज्य छीनलेनेका कुल मन्सूबा कहदिया. यहांपर रणमल्लका वैसा ही हाल हुआ, जैसा कि पंचाख्यानकी चौथी कथा लब्ध प्रणाशमें लिखा है. उस खैरख्वाह दासी (भारमली) ने वह हाल अपनी मालिक बाईजीराजसे ज्यों का त्यों जा कहा. यह भयंकर समाचार सुनकर सौभाग्यदेवीको बड़ी चिन्ता हुई, और उन्होंने अपने पुत्र महाराणा कुम्भाको बुलाकर कुल हाल कहा. तब दोनों मा बेटोंने सोचा, कि जहां देखें वहां राठौड़ ही राठौड़ दिखाई देते हैं, इसलिये अब रावत् चूंडाको बुलाना मुनासिब है. यह सलाह करके महाराणाने एक सांडनीके सवारको चूंडाके पास भेजा. महाराणाका हुक्म पहुंचते ही जल्दी सवार होकर चूंडा चित्तौड़में आया. रणमल्लने बाईजीराजसे अर्ज़ करवाई, कि चूंडाका यहां आना अच्छा नहीं है, क्योंकि शायद बुढ़ापेमें राज्यके लिये इसका दिल बिगड़ा हो. तब

बाईजीराजने कहा, कि जिसने राज्यका हक़दार होकर अपने छोटे भाईको राज्य देदिया उसको क़िलेपर बिल्कुल नहीं आनेदेनेमें तो लोग निन्दा करेंगे, और वह थोड़ेसे आदमियोंके साथ यहां आकर क्या करसक्ता है, इसलिये उसके आनेमें कोई हर्ज नहीं है. यह सुनकर रणमल्ल चुप होगया, और चूंडा क़िलेपर आया. दो चार दिनके बाद एक डोमने रणमल्लसे कहा, कि मुझको सन्देह है, कि महाराणा आपपर घात करावेंगे. रणमल्लको भी कुछ कुछ सन्देह हुआ, और उसने अपने बेटे जोधा व कांधल वग़ैरह सब कुटुम्बियों को क़िलेकी तलहटीमें रखकर कहदिया, कि यदि मैं बुलाऊं तोभी तुम ऊपर मत आना. जबकि रावत् चूंडा और महाराणा कुम्भाके सलाह हुई, कि इन सबको ऊपर बुलाकर मारडालना चाहिये, तो एक दिन महाराणाने रणमल्लको फ़र्माया, कि जोधा कहां है ? तब रणमल्लने कहा कि तलहटीमें है; और जब महाराणाने उसे बुलानेको कहा, तो टालाटूली करगया. इसी रातको भारमलीने महाराणाके इशारेसे रणमल्लको खूब शराब पिलाया, और नशा आजानेकी हालतमें पलंगपर पघड़ीसे कसकर बांध दिया. फिर महपा पुंवार, इक्का और दूसरे आदमियोंको संग लेकर भीतर घुसा, और रणमल्ल पर हथियार चलाये. मश्हूर है, कि तीन आदमियोंको रणमल्लने पानीके लोटेसे मारडाला और आपभी मारागया (१). उसी समय एक डोमने क़िलेकी दीवारपर चढ़कर ऊंची आवाज़से ये पद गाये-"ज्यांका रणमल मारिया जोधा भाग सके तो भाग". इस आवाज़को सुनकर रणमल्लके पुत्र जोधाने भी भागनेकी तय्यारी की, और उसी समय रावत् चूंडा क़िलेपरसे तलहटीमें जा पहुंचा. चित्तौड़से थोड़ी ही दूरपर लड़ाई हुई, जिसमें जोधाके साथ वाले कितने ही राजपूत, याने चरड़ा चंद्रावत, शिवराज, पूना भाटी, भीमा, वैरीशाल, बरजांग भीमावत, और जोधाका चाचा भीम चूंडावत वग़ैरह मारेगये, और जोधा भागते भागते मांडलके तालाबपर आया. इस लड़ाईमें कितने ही आदमी मारेगये, और कितने ही तितर बितर होगये. मांडलके तालाबपर जोधाका भाई कांधल भी उससे आमिला, फिर दोनों भाई भागकर मारवाड़की तरफ़ गये. पीछेसे रावत् चूंडा भी फ़ौज लेकर वहां पहुंचा और उसने मंडोवरपर अपना क़बज़ह करलिया. चूंडाने अपने बेटों याने कुन्तल, मांजा, और सूवाको वहांके बन्दोबस्तके लिये रक्खा.

कर्नेल् टॉड लिखते हैं, कि महाराणा मोकलकी नाबालिग़ीके समयमें चूंडाके मांडूसे आनेपर रणमल्ल मारागया, और मंडोवर चूंडाने फ़त्ह करलिया. इससे मालूम होता है, कि यह हाल कर्नेल् टॉडने बड़वोंकी पोथियों और मश्हूर कहानियोंसे

(१) विक्रमी १५०० में रणमल्ल मारा गया, इस ज़िक्रको मुख़्तलिफ़ तरहसे क़िस्सह कहानीके तौरपर लोग बयान करते हैं. हमने मुख़्तसर लिखदिया है.

लिखा होगा; क्योंकि हमने जो बयान ऊपर लिखा है वह नेणसी महता मारवाड़ीकी लिखी हुई दोसो वर्ष पहिलेकी एक मोतबर पुस्तकसे लिखा है, जिसकी तस्दीक़ (१) कुम्भलमेरमें महाराणा कुम्भाके वक्तकी प्रशस्तिके २५० श्लोकसे होती है- (देखो शेषसंग्रह).

रणमल्लके मारेजानेपर जोधा तो भागगया, और मंडोवरमें रावत् चूंडाने अपना कबज़ह जा जमाया, लेकिन् रणमल्लका भतीजा नरवद महाराणा कुम्भाके पास चित्तौड़में हाज़िर रहकर महाराणाका दिया हुआ एक लाख रुपयेकी आमदनीका कायलाणेका पट्टा खाता रहा, क्योंकि रणमल्लने नरवद और उसके बाप सत्तासे मंडोवरका राज्य छीन लिया था. एक दिनका ज़िक्र है, कि महाराणा कुम्भा दर्बार करके बैठे थे, उसवक्त सर्दारोंमेंसे किसीने कहा, कि नरवद अच्छा राजपूत है, जो कोई उससे किसी चीज़का सवाल करता है, उसके देनेमें वह कभी इन्कार नहीं करता. महाराणाने फ़र्माया, कि ऐसा तो नहीं होगा. इसपर लोगोंने फिर अ़र्ज़ किया, कि जो चीज़ उससे मांग लीजाती है वह उसीको देदेता है, और अगर मांगने वाला नहीं लेवे, तो किसी औरको देदेता है, मगर फिर उसे अपने पास नहीं रखता. तब महाराणाने अपने एक खवासको भेजकर नरवदसे हंसीके तौरपर कहलाया, कि आपकी आंख चाहती है; और खवासको कहदिया, कि आंख मत काढ़ने देना. खवासने जाकर नरवदसे वैसा ही कहा. नरवदने जानलिया, कि यह बात हंसीके तौरपर कहलाई है, खवास मुझे आंख नहीं निकालने देगा. अगर्चि उसकी बाईं आंख तो पहिले ही मंडोवरकी लड़ाईमें तल्वारसे फूट चुकी थी, तथापि इस वक्त उसने खवासकी नज़र बचाकर दाहिनी आंख खंजरसे निकालकर उसके हवाले करदी. खवासने यह सब हाल महाराणासे जा कहा. इसपर महाराणा बहुत पछताये, और दौड़कर नरवदके मकानपर आये, और उसकी बहुतसी ख़ातिरदारी करके उसको ड्योढ़ी जागीर करदी.

अब मंडोवरपर राव रणमल्लके बेटे जोधाका पीछा क़बज़ह होनेका हाल सुनिये. एक दिन दादी राठोड़जीने, जो महाराणा मोकलकी माता और कुम्भाकी दादी और रणमल्लकी बहिन थीं, महाराणासे कहा, कि हे पुत्र मेरे चित्तौड़ ब्याहेजानेमें रणमल्लका माराजाना, और मंडोवरका राज्य नष्ट होकर जोधाका जंगलोंमें मारा मारा फिरना वग़ैरह सब तरहसे राठोड़ोंका नुक्सान हुआ है, और उन लोगोंने तुम्हारा कुछ बुरा नहीं किया था, बल्कि रणमल्लने चाचा व मेरासे तुम्हारे बापका एवज़ लिया, और तुम्हारे

---

(१) कविराज मुरारिदानकी भेजी हुई जोधपुरकी तवारीख़ हमारे पास आई, उसमें विक्रमी १५०० [हि० ८४७ = ई० १४४३] में राव रणमल्लका चित्तौड़पर माराजाना लिखा है.

दुश्मन मुसल्मानोंके साथ लड़कर लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी बहादुरी दिखलाई थी. अपनी दादीके ये वचन सुनकर महाराणाने कहा, कि आप जोधाको लिखदेवें, कि वह मंडोवरपर अपना कब्ज़ह करलेवे, मैं इसमें नाराज़ न होऊंगा, परन्तु ज़ाहिरा तौरपर चूंडाके लिहाज़से कुछ नहीं कहसक्ता, क्योंकि चूंडाके भाई राघवदेवको रणमल्लने मारा था, वह खटक अबतक उसके दिलसे नहीं निकली है. अपने पोतेका यह मन्शा देखकर उन्होंने आशिया चारण डूलाको जोधाके पास भेजा. यह चारण मारवाड़की थलियोंके गांव भाड़ंग और पड़ावेके जंगलोंमें पहुंचकर क्या देखता है, कि राव जोधा मए अपने पचास घोड़ों और कुछ पैदलोंके बाजरेके सिरोंसे अपनी भूख शान्त कररहा है. चारण आशिया डूलाने जोधाको पहिचानकर महाराणा कुम्भाका मन्शा और उनकी दादीका कहा हुआ सब वृत्तान्त उसे कहसुनाया. डूलाका यह कहना ही जोधाको मंडोवर लेनेका सहारा हुआ. वह उसी समय बहुतसी जमइयत एकट्ठी करके मंडोवरको चलदिया. वहांपर क़िलेकी हिफ़ाज़तके लिये थोड़ेसे लोग और रावत् चूंडाके तीन बेटे कुन्तल, मांजा, व सूवा थे. इन ग़ाफ़िल क़िलेवालोंपर एक दमसे जोधाका हमलह हुआ, और चूंडाके तीनों बेटे कई राजपूतों सहित मारेगये. कर्नेल् टॉड साहिबकी तह्रीरसे चूंडाके दो लड़कोंमेंसे एकका यहीं, और दूसरेका गोड़वाड़में माराजाना पायाजाता है, जिससे तो हमको कुछ बहस नहीं है; परन्तु उन्होंने लिखा है, कि बारह वर्ष बाद जोधाका कब्ज़ह मंडोवरपर हुआ, परन्तु हमारी तह्क़ीक़ातसे किसी चारणकी बनाई हुई एक मारवाड़ी (१) कविता और दूसरे चन्द बयानोंके अनुसार सात वर्ष पीछे उसका मंडोवरपर क़ाबिज़ होना साबित होता है.

विक्रमी १४९९ [हि० ८४६ = ई० १४४२] में मालवी बादशाह सुल्तान महमूद ख़ल्जी अपनी गिरिफ़्तारीकी शर्मिन्दगीसे मेवाड़पर चढ़कर आया, और पहाड़के किनारे किनारे होता हुआ सीधा कुम्भलमेरकी तरफ़ गया. महाराणा कुम्भा कुम्भलमेर और चित्तौड़ दोनों जगह मौजूद नहीं थे, चित्तौड़से पूर्वकी तरफ़के पहाड़ोंमें किसीपर चढ़ाई करके गये हुए थे. जब बादशाह कुम्भलमेरके नज्दीक पहुंचा, तो क़िलेके बाहिर कैलवाड़ा गांवमें बाणमाताके प्रसिद्ध मन्दिरमें (जिसके

---

(१) लाखावत शबल मेल दल लाखां, लोहां पांण धरा लेवाड़ ॥ कैलपुरै हेकण घर कीधो, मुरधरने बाधो मेवाड़ ॥ १ ॥ खोसेलिया अभनमें खेतल, ज्यांवाला रेवंतने जूंग ॥ रंधिया रांणा तणै रसोड़ै, मुरधररा नीपाजिया मूंग ॥ २ ॥ थांणो जाय मंडोवर थाटियो, जोर करे लखपतरै जोध ॥ कियो राज चूंडै नवकोटां, सात वरस तांई सीसोद ॥ ३ ॥ खेड़ेचां वाळी धर खोसे, दस संहसा आकाय दईव ॥ सरगांपुर रड़माल सिधायो, जोधै नींठ बचायो जीव ॥ ४ ॥

चारों तरफ़ मज़बूत कोट था), दीपसिंह नामी महाराणाका एक राजपूत, जो क़िलेपर था, बहुतसे बहादुर राजपूतोंको लेकर आघुसा. क़िलेको बेलाग समझकर महमूदशाहने इसी मन्दिरको घेरा, और सात दिनमें मन्दिरकी गढ़ीको फ़त्ह करलिया. दीपसिंह बहुतसे बादशाही नौकरोंको मारकर अपने कई एक साथी राजपूतों समेत बहादुरीके साथ लड़कर मारागया. महमूदशाहने मूर्त्तियोंको तोड़कर उनके तोले (बाट) बनवाये, जो क़साई लोगोंको मांस तोलनेके लिये दियेगये. उसने काले पत्थरकी बनी हुई बाण-माताकी बड़ी मूर्त्तिका चूना पकवाकर हिन्दुओंको पानमें खिलवाया, और मन्दिरमें लकड़ियां जलवानेके बाद ऊपरसे ठंढा पानी डलवाकर मन्दिरको बिल्कुल जीर्ण करडाला. महमूद इस फ़त्हको ग़नीमत समझकर चित्तौड़की तरफ़ चला, जहांपर ऐसी फ़त्ह कभी किसी मालवी बादशाहको नसीब नहीं हुई थी. फिर वह बहुतसी फ़ौज चित्तौड़में मुक़ाबलेके लिये छोड़कर आप महाराणाकी तलाशमें निकला, और अपने बाप आज़म हुमायूंको उसने महाराणाका मुल्क तबाह करनेके लिये मन्दसौरकी तरफ़ भेजा. यह ख़बर सुनकर महाराणा कुम्भा भी हाड़ौतीकी तरफ़से धावा मारे चले आते थे, रास्तेमें मांडलगढ़के पास बादशाहसे मुक़ाबलह हुआ. फ़िरिश्तह लिखता है, कि "महाराणा शिकस्त पाकर चित्तौड़को भाग आये, और बादशाहने चित्तौड़को आघेरा"; और राजपूतानहकी पोथि-योंमें महाराणाकी फ़त्ह लिखी है. चाहे कुछ ही हो, हमको बहससे प्रयोजन नहीं. इसी अरसेमें महमूदका बाप आज़म हुमायूं बीमार होकर मन्दसौरमें मरगया. महमूदशाहने वहां पहुंचकर अपने बापकी लाशको मांडू पहुंचाया. इन्हीं दिनोंमें महाराणा कुम्भाने भी एक बड़ी जर्रार फ़ौज तय्यार करके रातके वक्त महमूदपर धावा किया. दोनों तरफ़के बहादुर ख़ूब लड़े, और बादशाह महमूद भागकर मांडूकी तरफ़ चलागया. तारीख़ फ़िरि-श्तहमें लिखा है, कि राणा चित्तौड़की तरफ़ और बादशाह मांडूकी तरफ़ चलागया; लेकिन् सोचना चाहिये, कि बादशाही फ़त्ह होती, तो महमूदशाह पीछा क्यों लौटजाता.

४ वर्षके बाद फ़ुर्सत पाकर विक्रमी १५०३ कार्तिक कृष्ण ५ या ६ [हि० ८५० ता० २०–२१ रजब = ई० १४४६ ता० १०–११ ऑक्टोबर] को महमूद फिर एक बड़ी भारी फ़ौज लेकर मांडलगढ़की तरफ़ आया. जब वह बनास नदी उतरने लगा, तो हज़ारों राजपूतोंने क़िलेसे निकलकर उसका सामना किया. राजपूतानहकी पोथियोंसे तो इस लड़ाईमें भी महाराणाको ही फ़त्ह हासिल होना पाया जाता है, और फ़िरिश्तह लिखता है, कि बादशाह पेशकश लेकर चलागया; परन्तु यह बात हमारे क़ियासमें नहीं आती, शायद मुहम्मद क़ासिमने लिखनेमें तरफ़दारीकी हो, या जिस किताबसे उसने लिखा उसके कर्त्ताने कीहोगी, कारण यह कि तारीख फ़िरिश्तहके दूसरे हिस्से

पृष्ठ २५० में हिज्री ८५७ [वि० १५१० = .ई० १४५३] में लिखा है, कि सुल्तान महमूद ख़ल्जीने बादशाह कुतुबुद्दीन गुजरातीसे अ़हूद किया, कि महाराणाके गुजरातके पास वाले मुल्कको गुजराती लश्कर लूटे, और मेवाड़ व अजमेर वग़ैरहपर मालवी फ़ौज क़ब्ज़ह करे. अगर बादशाह महमूद ख़ल्जी पहिलेकी लड़ाइयोंमें फ़त्ह पाता, और पेशकश लेकर गया होता, तो कुतुबुद्दीन गुजरातीको अपना मददगार क्यों बनाता; और दूसरे यह, कि पहिली फ़त्हका मनार (कीर्तिस्तम्भ) जो हमेशहके लिये उसकी बदनामीकी यादगार था, उसको वह ज़रूर गिरादेता; अ़लावह इसके आगेको इसी तवारीख़के मुवर्रिख़ने फिर कुतुबुद्दीनका कुछ भी हाल नहीं लिखा (१).

हिज्री ८५८ [वि० १५११ = .ई० १४५४] में शाहज़ादह ग़यासुद्दीनको रणथम्भोरपर भेजकर महमूद चित्तौड़की तरफ़ चला, उस वक़्तके हालमें मुवर्रिख़ फ़िरिश्तह लिखता है, कि महाराणा कुम्भाने बड़ी ख़ातिरदारीके साथ पेशकश हाज़िर किया, जिससे महमूद नाराज़ हुआ. सोचना चाहिये, कि फ़िरिश्तहने पहिले तो लिखा है, कि महाराणासे पेशकश लेकर बादशाह ख़ुश होगया, और इस वक़्त नाराज़गी ज़ाहिर की, तो भला इस पेशकशमें क्या नुक्सान था, जो नाराज़गीका सबब हुआ. फिर वही मुवर्रिख़ फ़िरिश्तह इसी लड़ाईमें लिखता है, कि महमूदने मेवाड़में ख़ल्जीपुर आबाद करना चाहा था, परन्तु महाराणाने लाचारीसे पेशकश देदिया, इस सबबसे यह बात मौक़ूफ़ रखकर वह अपने वतनको चलागया. ऊपर लिखी हुई कुल लड़ाइयोंमें .इबारतका तर्ज़ देखनेसे महमूदके फ़त्हयाब होनेमें शक पायाजाता है, और इन महाराणासे लेकर महाराणा सांगातक मेवाड़के राजा मालवी बादशाहोंसे प्रबल रहे हैं, उसके लिये यहांपर ज़ियादह लिखनेकी कोई ज़रूरत नहीं है, तवारीख़के देखनेसे आपही मालूम होजावेगा.

हिज्री ८५९ [वि० १५१२ = .ई० १४५५] में मन्दसौरको लेनेके वास्ते बादशाह महमूद ख़ल्जीने चढ़ाई की, उस समय फ़ौजको मंदसौरकी तरफ़ भेजकर आप अजमेरको रवानह हुआ, और फ़ौजने वहां जाकर क़िलेको घेरलिया. वहां गजाधर क़िलेदारने बाहिर निकलकर महमूदकी फ़ौजपर हमलह किया, लेकिन् शिकस्त पाकर पीछा क़िलेमें चलागया. चार दिनतक घेरा रहनेके बाद सब राजपूतोंको साथ लेकर गजाधर बाहिर निकला, और बड़ी बहादुरीके साथ बहुतसे दुश्मनोंको मारकर काम

(१) तारीख़ फ़िरिश्तहमें कुतुबुद्दीन और महमूदकी सुलहके वक़्त महमूदके कहे हुए जो शब्द लिखे हैं उनसे साफ़ ज़ाहिर है, कि वह कमज़ोरीकी हालतमें दूसरेकी मदद चाहने वाला हुआ.

आया. बादशाहने क़िलेपर क़ब्ज़ह किया, और वहांकी हुकूमत ख़्वाजिह निअ़्मतुल्लाह को देकर आप मांडलगढ़की तरफ़ रवानह हुआ. जब बनास नदीके किनारेपर पहुंचा, तो क़िलेसे महाराणाके हज़ारों राजपूत उसकी फ़ौजपर आगिरे, और बहुतसे बहादुर दोनों तरफ़के मारेगये. तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि शामके वक़्त अपने अपने मक़ामपर ठहरे और सुबह ही अमीरों व वज़ीरोंने बादशाहसे अ़र्ज़ की, कि बर्सातका मौसम आ पहुंचा है, इसलिये हालमें तो अपनी राजधानीको चले चलना मुनासिब है, आइन्दहको किलेके लेनेकी फिर तज्वीज़ कीजावेगी. इस सलाहको मन्ज़ूर करके बादशाह अपनी राजधानीको लौटगया. इस इ़बारतसे महमूदका शिकस्त पाकर चलाजाना साफ़ ज़ाहिर है.

इन्हीं दिनोंमें मालवेके बादशाहका शाहज़ादह उमरख़ां महाराणा कुम्भाकी शरणमें आया था. यह शाहज़ादह किसी खानगी बखेड़ेके सबब बादशाहसे डरकर अहमदाबादको गया था, लेकिन् आपसकी नाइत्तिफ़ाक़ीके कारण उसको वहांपर सहारा न मिला, तब चित्तौड़मे आया. बहुत दिनोंतक यह वहीं रहा और उसके बाद चंदेरी मक़ामपर मालवी बादशाहसे मुक़ाबलह करके मारागया.

अब हम नागौरकी लड़ाइयोंका हाल लिखते हैं. विक्रमी १५१२ [हि० ८५९ = ई० १४५५] में नागौरके हाकिम फ़ीरोज़ख़ांके मरजाने बाद, जिसको एक खुदमुख़्तार बड़ा रईस समझना चाहिये, उसके छोटे भाई मुजाहिदख़ांने बड़े ज़ोरसे नागौरपर क़ब्ज़ह करलिया, और फ़ीरोज़ख़ांके बेटे शम्सख़ांको मारनेके लिये तय्यार हुआ, इसलिये शम्सख़ां वहांसे भागकर महाराणा कुम्भाकी पनाहमें चला आया. यह वही नागौरका फ़ीरोज़ख़ां है, जिसका कुछ ज़िक्र महाराणा मोकलके हालमें लिखा-जाचुका है. जब महाराणा कुम्भाने मुजाहिदख़ांको सज़ा देने और शम्सख़ांकी मददके लिये अपनी फ़ौजको तय्यार किया, और शम्सख़ां समेत चढ़ाई करके नागौरके क़रीब पहुंचे, तो मुजाहिदख़ां डरकर गुजरातकी तरफ़ भागगया. महाराणाने वहां जाकर शम्सख़ांको उसके बापकी जगह गादीपर बिठादिया, परन्तु गद्दीपर बैठनेके बाद वह उस एह्सानको भूलकर उल्टा महाराणाका शक करने लगा, कि यह हमारी रियासत छीन लेंगे. तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि महाराणाने शम्सख़ांको कहा, कि क़िले नागौरके तीन कांगरे हमको गिरानेदो, लेकिन् शम्सख़ांको उसके मुसाहिबोंने ग़ैरत दिलाई, इस सबबसे उसने मंज़ूर नहीं किया. महाराणा अपने किये हुए एह्सानको मेटना नहीं चाहते थे, इसलिये वापस कुम्भलमेरको चले आये, परन्तु शम्सख़ांने एह्-सानको भूलकर अपने बाप दादोंका ही तरीक़ह इख़्तियार करलिया. तब महाराणा

भी बड़ी भारी फ़ौज लेकर नागौरकी तरफ़ चढ़े. शम्सखां भागकर मदद्के लिये कुतुबुद्दीनके पास अहमदाबाद चलागया, और महाराणाने नागौरको घेरा. शम्सख़ां की फ़ौजके आदमी बहादुरीसे लड़कर मारेगये, और महाराणाने क़िला फ़त्ह करके उसपर अपना क़ब्ज़ह करलिया. तब शम्सख़ांने गुजरातके बादशाह क़ुतुबुद्दीनके पास पहुंचकर अपनी लड़की बादशाहको ब्याही, और आप उसके पास रहा. बादशाहने राय रामचन्द और मलिक गदाको बहुत बड़ी फ़ौज देकर महाराणाका मुक़ाबलह करनेके लिये नागौरकी तरफ़ भेजा. महाराणाकी फ़ौजने भी बाहिर निकलकर मैदानमें लड़ाई की. इस लड़ाईमें हज़ारों गुजराती और बहुतसे राजपूत मारेगये. आख़रको महाराणाकी फ़ौजने फ़त्ह पाई, और बचे हुए गुजराती भागकर बादशाह कुतुबुद्दीनके पास पहुचे. यह हाल सुनकर सुल्तान कुतुबुद्दीन बड़ा क्रोधित हुआ, और बड़ी भारी फ़ौजके साथ हिज्री ८६० [वि० १५१३ = ई० १४५६] में खुद नागौरकी तरफ़ रवानह हुआ. क़िले आबूके पास पहुंचकर आप तो वहीं ठहरा, और इमादुल्मुल्कको फ़ौज देकर आबूको भेजा, जहां कि महाराणाका क़ब्ज़ह था. इस लड़ाईमें भी गुजरातियोंके बहुतसे आदमी मारेगये, और जो बचे वे भागकर क़ुतुबुद्दीनके पास पहुंचे. महाराणा कुम्भा तो पेश्तर ही कुम्भलमेरको आगये थे, लेकिन् क़ुतुबुद्दीन उनकी फ़ौजकी फ़त्ह सुनकर खुद कुम्भलमेरकी तरफ चला, और जाते हुए सिरोहीके देवड़ोंसे बड़ी लड़ाई की. आख़रको सिरोही वाले पहाड़ोंमें भागगये. यह ख़बर सुनकर महाराणा कुम्भाने क़ुतुबुद्दीनकी फ़ौजपर हमलह किया, उसवक़्त कुतुबुद्दीन भी कुम्भलगढ़की तलहटी, याने गोड़वाड़में आगया था. इस लड़ाईमें दोनों तरफ़के राजपूत और मुसल्मानोंने बड़ी बहादुरी दिखलाई, और हज़ारों आदमी मारेगये. मुसल्मानोंने कहा, कि हमारी फ़त्हको राजपूतोंने अपनी फ़त्ह बयान की, लेकिन् फ़त्ह उसीको कहना चाहिये, कि एक दूसरेपर ग़ालिब आवे. आख़रकार बादशाह कुतुबुद्दीन लाचार होकर पीछा लौट गया. तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि कुतुबुद्दीनने कुम्भलमेर पर घेरा डाला, और महाराणाके राजपूतों और खुद महाराणाने कई बार बाहिर निकलकर हमले किये, लेकिन् शिकस्त पाई. निदान क़िलेकी मज़्बूती देखकर बादशाह पेशकश लेकर अहमदाबादको लौटगया. वहां पहुंचते ही सुल्तान महमूद ख़ल्जी मालवेवालेने अपने वज़ीर ताजख़ांको बादशाह कुतुबुद्दीनके पास इस मत्लबसे भेजा, कि पहिले तो हमारे तुम्हारे बीचमें जो कुछ हुआ सो हुआ, लेकिन् अब धर्म ईमानके साथ इक़्रार करलिया जावे, कि महाराणा कुम्भाका मालवेकी तरफ़का मुल्क हम लूटें, और गुजरातकी तरफ़का तुम लूटो, और वक़्पर एक दूसरेकी मदद करें. इस बातको

सुल्तान कुतुबुद्दीनने मन्ज़ूर किया. दोनों तरफ़के आदमियोंकी मारिफ़त चांपानेरमें ऊपर लिखेहुए मन्शाके मुवाफ़िक़ अ़ह्दनामह लिखागया.

हिज्री ८६१ [वि० १५१४ = ई० १४५७] में सुल्तान कुतुबुद्दीन गुजराती बहुतसी फ़ौज लेकर पश्चिमसे, और उसी तरह सुल्तान महमूद ख़ल्जी मालवी दक्षिणसे मेवाड़पर चढ़आया. महाराणाका इरादह था, कि पहिले महमूद ख़ल्जीसे लड़ाई करें, परन्तु सुल्तान कुतुबुद्दीन सिरोहीसे बढ़कर कुम्भलगढ़के नज़्दीक आगया. तब महाराणाने भी निकलकर फ़ौजका सामना किया, जिसमें मेवाड़की फ़ौज शिकस्त पाकर पहाड़ोंके घेरमें चली आई. सुल्तान कुतुबुद्दीन भी वहां पहुंचा. दोनों फ़ौजोंके बहादुर शामतक लड़ते रहे, परन्तु फ़त्ह किसीको नसीब न हुई. रात होजानेके सबब दोनों लश्कर अपने अपने डेरोंमें चले आये, मुर्दोंको जलाया, दफ़्नाया, और घायलोंका इलाज किया; फ़ज्र होते ही फिर लड़ाई शुरू हुई. इस दिन सुल्तान कुतुबुद्दीनकी बहुतसी फ़ौज मारीगई, क्योंकि मेवाड़की फ़ौजको पहाड़ोंका सहारा था. राजपूतानहकी पोथियोंमें तो इस लड़ाईमें महाराणाकी फ़त्ह पाईजाती (१) है, लेकिन् तारीख़ फ़िरिश्तहका मुवर्रिख़ लिखता है, कि चौदह मन सुवर्ण, दो हाथी, और बहुतसी चीज़ें तुह्फ़ेकी लेकर सुल्तानने सुलह करली; लेकिन् हमारे क़ियासमें यह नहीं आता, क्योंकि इस बादशाहकी फ़ौजने नागोर वग़ैरहपर दो तीन बार शिकस्त पाई थी. तारीख़ फ़िरिश्तहका मुवर्रिख़ इस लड़ाईके अख़ीरमें लिखता है, कि सुल्तान कुतुबुद्दीनने अपने शरीरसे बड़ी मर्दानगी दिखलाई. इससे साफ़ यही जाहिर होता है, कि दुश्मन ग़ालिब थे, जिससे वह आप अकेला लड़कर बचा. फिर पेशकशमें रुपया देनेका दस्तूर है, न यह कि ख़ाली चौदह मन सोना; इससे पायाजाता है, कि मुहम्मद क़ासिम फ़िरिश्तहने यह हाल गुजराती तवारीख़ोंसे ही लिया है. हां ऐसा होसक्ता है, कि बादशाहने आबूके मन्दिरों और सिरोही वग़ैरह बहुतसे इलाक़ोंको लूटा, वहांपर उसको इतना सोना और हाथी वग़ैरह हाथ लगे होंगे, जिसको मुवर्रिख़ोंने पेशकशमें शुमार करलिया; और मुसल्मानोंकी तरफ़दारीका लफ़्ज़ भी हम उन मुवर्रिख़ोंके वास्ते लिख सक्ते हैं, कि उन्होंने मांडूके बादशाह महमूद ख़ल्जीको महाराणा कुम्भाने मांडू फ़त्ह करके गिरिफ़्तार किया, यह हाल बिल्कुल नहीं लिखा, जिसकी यादगारका मनार वग़ैरह इमारतें मौजूद

(१) किताब मिराति सिकन्दरीमें महाराणा कुम्भाका चित्तोड़में मौजूद होना, शिकस्त पाकर नागोरपर हमलह न करनेका इक़रार, इख़्तलाफ़ी सिरोहीके देवड़ोंकी, और बादशाहने मदद करके क़िला आबू पीछा महाराणासे सिरोहीके रावको दिलाना लिखा है.

होनेके सिवा कर्नेल् टॉडने भी अपनी किताबमें उसका हाल लिखा है. चाहे कुछ ही हो हमारे विचारसे तो यदि महाराणाकी फ़त्ह न हुई हो, तोभी सुल्तान कुतुबुद्दीनकी फ़त्ह होना नहीं पायाजाता. यदि वह पेशकश लेकर गया होता, तो क्या सुल्तान महमूद चुपचाप चला जाता ! जिसकी निस्बत तारीख़ फ़िरिश्तहमें सिवाय चढ़ाई करनेके उसके बादका और कुछ भी ज़िक्र नहीं लिखा (१). इससे साबित होता है, कि दोनों बादशाह विजय न पाकर पीछे अपने अपने मुल्कको लौटगये. मिराति सिकन्दरीमें तीनही महीनेके बाद फिर नागौरपर महाराणा कुम्भाका चढ़ाई करना और कुतुबुद्दीनका मेवाड़में आकर लूटमार करके पीछा चलाजाना लिखा है. अगर मिराति सिकन्दरीका लिखना सच होता, तो क्या फिर कुतुबुद्दीन मेवाड़की लूटपर ही सब्र करलेता, और अपने पहिले इक़ारके टूटनेका एवज़ न लेता, क्योंकि ऐसा होता, तो फिर भी क़िलेका मुहासरह करता.

बूंदीके हाड़ा भांडा और सांडाने अमरगढ़ तक लूटमार मचाकर अमरगढ़के क़िलेपर अपना क़बज़ह करलिया, और मांडलगढ़के राजपूतोंको भी तक्लीफ़ दी. यह ख़बर सुनतेही महाराणा कुम्भा फ़ौज लेकर चढ़े, और अमरगढ़को फ़त्ह किया. वहां तोगजी वग़ैरह कितने ही हाड़ा राजपूत मारेगये. इसके बाद उन्होंने बूंदीको जाघेरा, लेकिन् जब सांडा और भांडाने दण्ड देकर बहुतसी आजिज़ी की और पैरोंमें आगिरे, तब उनका कुसूर मुआफ़ करके फ़ौज ख़र्च लेनेके बाद पीछे चित्तौड़को चले आये. बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करके खुलासह वंशप्रकाशमें लिखा है, कि महाराणा कुम्भा अमरगढ़ फ़त्ह करके बूंदीपर घेरा डालकर अपनी राणीसे तीजपर आनेका इक़ार करनेके सबब चित्तौड़को चले गये, और बूंदीके घेरेपर महाराणाकी फ़ौज रही, उसको हाड़ोंने शिकस्त दी; इस शर्मिन्दगीके सबबसे महाराणा पीछे ज़नानहसे बाहिर नहीं निकले, और दो महीनेके बाद उनका इन्तिक़ाल होगया. यह बात हमको नीचे लिखे हुए सुबूतोंसे बिल्कुल ग़लत मालूम होती है. अव्वल तो यह, कि महाराणा कुम्भा जैसे बड़े राजा, जिनका ख़ौफ़ गुजराती, बहमनी और मालवी बादशाहोंको रहता था, उनका अपने म[illegible] हाड़ोंसे अपनी फ़ौजके हारनेपर दोबारह सज़ा देनेकी ताक़त न रखकर शर्मिन्दगीसे मरजाना क़ियासमें नहीं आता. दूसरे कुम्भलमेरके क़िलेमें मामादेवके कुण्डपर विक्रमी १५१७ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ की खुदी हुई महाराणा कुम्भाके वक़्की प्रशस्तिके श्लोक २६५ में साफ़ लिखा है, कि हाड़ौतीको विजय करके वहांके मालिकसे दण्ड

---

(१) मिराति सिकन्दरीमें सुल्तान महमूदको मन्दसौर वग़ैरह चन्द पर्गने देकर रुख़्सत करना लिखा है.

लिया. इस प्रशस्तिके खुदनेसे आठ वर्ष पीछेतक महाराणा ज़िन्दह रहे थे, तो बूंदीको फ़त्ह न करनेके सबब दो महीनेके बाद उनका परलोकवास होजाना कैसे संभव होसक्ता है ? इसमें सन्देह नहीं, कि इस तवारीख़का बनाने वाला सूरजमल्ल बहुत सच्चा आदमी था, लेकिन् मालूम होता है कि उसको कोई सच्ची तवारीख़ नहीं मिली, जिससे इस प्रकारकी भूल रहगई.

विक्रमी १५१३ [हि० ८६० = .ई० १४५६] में मालवेके बादशाह महमूद ख़ल्जीने मांडलगढ़पर चढ़ाई की, तब जो जो मुल्क रास्तेमें आये उनको बर्बाद करता हुआ वह मांडलगढ़ पहुंचा. जब क़िलेको घेरकर पासकी पहाड़ी (१) पर महमूदने तोपें चढ़ादीं, और उससे क़िले वालोंका पानी बन्द होगया; तब उन लोगोंने १०००००० दस लाख टंके (२) पेशकश कुबूल करके क़िला बादशाहके सुपुर्द करदिया. इस लड़ाईमें बहुतसे राजपूत मारेगये, और कितनोंहीको बादशाहने क़ैद करलिया. तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि हिज्री ८६१ ता० २६ मुहर्रम [वि० १५१३ पौष कृष्ण १० = .ई० १४५६ ता० २३ डिसेम्बर] को महमूद मांडलगढ़की तरफ़ रवानह हुआ था, और हिज्री ८६२ ता० २५ ज़िल्हिज [वि० १५१५ मार्गशीर्ष कृष्ण ११ = .ई० १४५८ ता० ३ नोवेम्बर] को उसने क़िला फ़त्ह किया; लेकिन् ऐसे क़िलेपर दो वर्षतक लड़ाई होना ख़यालमें नहीं आता, क्योंकि सोचनेकी बात है, कि दो वर्षतक लड़ाई होते रहनेकी हालतमें महाराणा कुम्भा चित्तौड़गढ़में ख़ामोश किस तरह बैठे रहे. कदाचित् बादशाहके ख़ौफ़से न आये हों, तो महमूद इस क़िलेपर क्यों आता, वह चित्तौड़को ही क्यों नहीं जाता. हमको नहीं मालूम कि यह हाल सहीह है या मुवर्रिख़ अथवा लेखककी ग़लतीसे ऐसा लिखा गया है. अगर सहीह है, तो महाराणाकी तरफ़के हमले भी उनपर ज़रूर हुए होंगे, लेकिन् उस हालको मुवर्रिख़ोंने छोड़दिया.

विक्रमी १५१५ पौष कृष्ण २-३ [हि० ८६३ ता० १५ मुहर्रम = .ई० १४५८ ता० २३ नोवेम्बर] को महमूदशाह आप तो चित्तौड़की तरफ़ रवानह हुआ, और शाहज़ादह ग्यासुद्दीनको मगरा व भीलवाड़ेकी लूटके लिये रवानह किया. शाहज़ादहने फ़िदाईख़ां और ताजख़ांको केसूंदीका क़िला लेनेकी इजाज़त दी, और आप भी उनके

---

(१) जो अब नकटचाचौड़ और बीजासणका मगरा कहलाता है.

(२) तंगा (टंका) एक तोलेभर सुवर्ण या चांदीके सिक्केको कहते हैं. यहांपर चांदीके सिक्केसे ही मुराद है, और उन दिनोंमें यह ५० पैसेका होता था, और पैसा पौने दो तोलेका होता था.

साथ वहां पहुंचा. वहांके राजपूतोंने बहुतसी लड़ाई की, परन्तु शाहज़ादहने क़िला फ़त्ह करलिया, और उसके बाद मांडूकी तरफ़ अपने बापके पास चलागया. तारीख़ फ़िरिश्तहमें महमूदका चित्तौड़को रवानह होना लिखनेके पीछे उसका कुछ भी हाल नहीं लिखा कि वह चित्तौड़ होकर या और किसी रास्तेसे मांडूको किसतरहपर गया.

इन दिनों आबूके देवड़ा लोग बाग़ी होगये थे, इसलिये महाराणाने राव शलजी के बेटे नरसिंह डोडियाको फ़ौज देकर वहां भेजा. उसने देवड़ोंको सज़ा देकर ताबे बनाया, और आबूपर महाराणाके हुक्मके मुवाफ़िक़ महल (१) व तालाब बनवाया.

मांडूका बादशाह महमूद ख़ल्जी विक्रमी १५१८ [हि० ८६५ = ई० १४६१] में फिर मेवाड़की तरफ़ आया, और आहड़में डेरा किया. उसने शाहज़ादह ग़यासुद्दीन व ताजख़ांको मुल्क लूटनेका हुक्म दिया. फिर वह कुम्भलगढ़की तरफ़ गया, लेकिन् क़िलेको बेलाग देखकर डूंगरपुरके रावलसे दो लाख रुपया फ़ौज ख़र्चका लेताहुआ मांडूको पीछा चला गया.

इन महाराणाने और भी बहुतसी लड़ाइयां की थीं. विक्रमी १५२४ [हि० ८७१ = ई० १४६७] में नागौरके मुसल्मानोंने हिन्दुओंका दिल दुखानेके लिये गोबध अर्थात् गायका मारना शुरू किया. यह क़िला पहिले कई बार महाराणाके क़बज़हमें आया, और कई बार उनके क़बज़हमेंसे निकलकर फिर मुसल्मानोंके हाथमें चलागया. महाराणाने मुसल्मानोंका यह अत्याचार देखकर उसी संवत्में पचास हज़ार सवार लेकर नागौरपर चढ़ाई की, और क़िलेको फ़त्ह करलिया, जिसमें हज़ारों मुसल्मान मारेगये. इसके बाद वहांके हाकिमने भागकर सुल्तान कुतुबुद्दीनके पास फ़र्याद की. महाराणाने क़िलेको फ़त्ह करके वहांका माल अस्बाब, और घोड़े, हाथी वग़ैरह लूटलिये, और क़िलेपर जो हनुमानकी मूर्त्ति थी वह विजयकी यादगारके वास्ते लेआये, जो अभीतक क़िले कुम्भलगढ़के हनुमान पौल दर्वाज़ेपर मौजूद हैं. जब सुल्तान क़ुतुबुद्दीनके पास यह ख़बर पहुंची, तो उसी वक़्त उसका वज़ीर इमादुलमुल्क अपने बादशाहको, जो शराबके नशेमें चूर था, लेनिकला और एक मंज़िल चलकर

---

(१) उसवक़ किसी चारण कविने मारवाड़ी भाषामें एक गीत जातिका छन्द कहा था, जो यह है:-

जावरचे खेत महाभारथ जुड़, असहां हूंत वकारे आव ॥ बाही खग नरसीह महाबल, नाग तणै सिरगयो निहाव ॥ १ ॥ करवा जंग सजे गज केहर, तेग वही रणसाल तिको ॥ रमियो राव अढार गिरांचो, सेस न खमियो भार सको ॥ २ ॥ सलह सुजाव देवड़ा साझे, लोह प्रवाड़ा मयन्द लिये ॥ भड़ नरसिंह जिसा गज भारां, दो पग पाछा देव दिये ॥ ३ ॥ डोडे राव सिरोही दुजड़ा, दळ सजड़ा परहंस दिया ॥ आबू गिरवर शिखर ऊपरा, कुम्भे सरवर महल किया ॥ ४ ॥

एक महीनेतक ठहरा और फ़ौज एकट्ठी करने लगा, कि इसी अ़रसेमें महाराणाके कुम्भलमेर चलेआनेकी ख़बर मिली, जिससे बादशाह भी पीछा लौटगया, परन्तु थोड़े ही दिनोंके पीछे क़ुतुबुद्दीन एक बड़ी जर्रार फ़ौज तय्यार करके सिरोहीकी तरफ़ आया, और उस ज़िलेको लूटकर देवड़ोंको बर्बाद करता हुआ वहांसे आगे बढ़कर कुम्भलमेरकी तरफ़ आया; तब महाराणाने भी अपने बहादुरोंको साथ लेकर उसका मुक़ाबलह किया. क़ुतुबुद्दीन मेवाड़में होकर मालवेकी तरफ़ होता हुआ पीछा अपने स्थानपर चलागया.

अब हम महाराणा कुम्भाके देहान्तके समयका हाल लिखते हैं. जब यह महाराणा विक्रमी १५२५ [हि० ८७३ = .ई० १४६८] में कुम्भलमेरसे श्री एकलिङ्गजीके दर्शनोंको पधारे, और मन्दिरके बाहिर सवारी पहुंची, उसवक्त एक गायने बड़ी आवाज़से हम्माई (१) की. महाराणाने उस समय तो गायके बोलनेकी बाबत् किसीसे कुछ न कहा, लेकिन् जब एकलिङ्गजीके दर्शन करके पीछे क़िले कुम्भलमेरमें आये, और उसके दूसरे रोज़ दर्बार किया, तब एकाएक तलवार हाथमें उठाकर उन्होंने एक पद (कामधेनु तंडव करिय) अपने मुखसे उच्चारण किया. कुछ देर बाद जब किसी शख़्सने किसी कामके लिये अ़र्ज़ की तो, उसका जवाब कुछ न दिया, सिर्फ़ वही उपरोक्त पद कहा, और दो चार रोज़तक यही हाल रहा. तब तो सब लोग घबराये और कहने लगे, कि अब क्या किया जावे, महाराणाको तो उन्माद (जनून) होगया है. महाराणाके छोटे पुत्र रायमल्लने हिम्मत करके अपने पितासे अ़र्ज़ किया, कि यह पद आप बार बार किसलिये फ़र्माते हैं ! इसपर महाराणाने क्रोधित होकर लोगोंसे कहा, कि इसको हमारे देशसे बाहिर निकाल-दो. यह बात सुनकर रायमल्ल तो वहांसे अपने ससुराल (२) ईडरको चलेगये. अब जो लोग महाराणाके पास रहे उनमेंसे किसीकी हिम्मत नहीं, कि महाराणासे उस पदके बार बार फ़र्मानेका मत्लब पूछ सके, और चारण लोगोंको जो पहिलेसे ही ज्योतिषियोंके इस भविष्यत् कथनके विश्वासपर कि आपकी मृत्यु चारणके हाथसे होगी, मेवाड़ देशसे बाहिर निकाल दिया था, लेकिन् एक चारण राजपूत बनकर किसी सर्दारके पास रहगया था, उसने सर्दारसे कहा, कि महाराणाके कथनका मत्लब मैं समझा हूं, यदि मर्ज़ी हो तो उनका यह बार बार कहना छुड़ादूं. वह सर्दार

---

(१) बैलकी आवाज़के मुवाफ़िक़ ख़ुशीके साथ गायकी आवाज़को हम्माई कहते हैं.

(२) ईडरके राजा नारायणदासके भाई भाणकी बेटीके साथ इनकी शादी हुई थी.

उसको अपना रिश्तहदार भाई बनाकर महाराणाके पास लेगया. महाराणा अपनी आदतके मुवाफ़िक़ वही पद हरवक़ ज़बानपर लाते थे. उस चारणने दर्बारके सामने पहुंचकर मारवाड़ी भाषामें यह छप्पय छन्द कहाः-

छप्पय.

जद धरपर जोवती दीठ नागोर धरंत्ती ॥
गायत्री संग्रहण देख मन मांहि डरंत्ती ॥
सुर कोटी तेतीस आण नीरंता चारो ॥
नहिं चरंत पीवंत मनह करती हंकारो ॥
कुम्भेण राण हणिया कलम आजस उर डर ऊतरिय ॥
तिण दीह द्वार शंकर तणैं कामधेनु तंडव करिय ॥ १ ॥

यह छप्पय सुनकर महाराणाने फ़र्माया, कि तू राजपूत नहीं, किन्तु कोई चारण है, परन्तु हम तुझसे बहुत खुश हुए. तब उसने अर्ज़ की, कि मैं अस्लमें चारण ही हूं; परन्तु आपने मेरी जातिके सब लोगोंकी जागीरें छीन छीनकर उन्हें बेकुसूर देशसे निकालदिया है, इसलिये अब उनकी जागीरें उनको वापस मिलकर देशमें आनेका हुक्म होजाना चाहिये. उसकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ हुक्म होगया, परन्तु महाराणाका चित्त विक्षेप होगया था, इस आदतको छोड़नेपर भी वह कुछ की कुछ बातें करते थे. एक दिन कुम्भलमेरके क़िलेमें कटारगढ़के उत्तरकी तरफ़ मामादेव नाम स्थानके पास कुण्डपर महाराणा बैठे थे, कि इतनेमें पीछेसे उनका बड़ा बेटा उदयसिंह पहुंचा, और उसने तलवार मियानसे निकालकर महाराणाका काम तमाम करडाला.

इन महाराणाकी बनाई हुई बहुतसी इमारतें अभीतक मौजूद हैं. कुम्भलमेरका क़िला और वहांपर कुम्भश्यामजीका मन्दिर; चित्तौड़के क़िलेपर कीर्त्तिस्तंभ, कुम्भश्यामजीका मन्दिर, लक्ष्मीनाथका मन्दिर, और रामकुण्ड इन्होंने बनवाये, कुकड़ेश्वरके कुण्डका जीर्णोद्धार करवाया और क़िलेका रास्तह जो बड़ा बिकट और पहाड़ी था उसमें चार दर्वाज़े और पड़कोटा तय्यार कराकर उसे दुरुस्त करवाया. इसके सिवा आबूपर अचलगढ़के खंडहर, बसन्तगढ़का क़िला, और कुम्भश्यामजीका मन्दिर; आरास अम्बावके पास एक क़िला; सादड़ीके पास गोड़वाड़में राणपुरका जैन मन्दिर; बदनौरके पास विराटका क़िला; और एकलिङ्गजीके मन्दिरका जीर्णोद्धार आदि मिलाकर ३२ क़िले और बहुतसे देवल व इमारतें वग़ैरह इनकी बनवाई हुई हैं, जिनको देखकर तअज्जुब होता है, कि एक पुश्तमें इतनी इमारतें कैसे तय्यार हुई होंगी. नागदा, कठड़ावण, आमलखेड़ा, और भीमाणा (भुवाणा) ये चार गांव इन्होंने श्रीएकलिंगजीके

भेट किये थे. यह महाराणा बड़े प्रतापी और विजयशाली होनेके सिवा पंडित भी पूरे थे. व्याकरण, छन्द, और सांगीत विद्यामें बहुत ही निपुण थे. इन्होंने संगीत-राज वार्तिक, और एकलिंगमहात्म्य वगैरह कई ग्रन्थ स्वयं बनाये थे.

अब हम महाराणा कुम्भाके वह हालात लिखते हैं, जिनका ज़िक्र उस समयकी प्रशस्तियोंके सिवाय और कहीं नहीं मिलता. उन्होंने जोगिनीपुर (१) को फ़त्ह किया, हमीर नगरको फ़त्ह करके अपनी शादी की, धान्य नगरको नष्ट किया, जनकाचल पर्वतको फ़त्ह किया, वृन्दावती (२) पुरीको जलाया, मल्लारगढ़को जलाकर उसके मालिकको क़ैद किया, पच्चीस हज़ार दुश्मनोंको मारकर रणथम्भोरका क़िला लिया, आम्रदाचल पर्वतको फ़त्ह किया, हाड़ौतीको फ़त्ह किया, विशाल नगरको फ़त्ह किया, और डूंगरपुरको व सारंगपुरको लूटा.

इन महाराणाके पुत्र १-उदयसिंह, २-रायमल्ल, ३-नगराज, ४-गोपालसिंह, ५-आसकरण, ६-अमरसिंह, ७-गोविन्ददास, ८-जैतसिंह, ९-महरावण, १०-क्षेत्रसिंह, और ११-अचलदास थे.

---

(१) पृथ्वीराज रासा आदिमें यह नाम दिल्लीका लिखा है.
(२) गागरौनका नाम वृन्दावती है.

महाराणा उदयकरण.

यह महाराणा, जो उदयसिंह नामसे भी मश्हूर थे, विक्रमी १५२५ [हि० ८७३ = .ई० १४६८] में अपने बाप कुम्भाको मारकर गद्दीनशीन हुए. इन दुराचारी महाराणाने असत्य और अनित्य राज्यके लालचसे अपने धर्मशील, विवेकी, प्रजावत्सल, और प्रतापी पिताको मारकर सूर्यवंशियोंके कुलमें अपने आपको कलंकका टीका लगाया. यदि संसारके सर्व साधारण लोगोंपर नज़र डाली जावे, तोभी यह संभव नहीं, कि बापके बदचलन होनेकी हालतमें बेटा बापको दण्ड देवे अथवा मारडाले, जिसमें भी कुम्भा जैसे सदाचारी महाराजाधिराजको मारडालना तो बड़ा ही भारी अपराध था. इन महाराणाका गद्दीपर बैठना तो हक़दारीके सबबसे किसीने नहीं रोका, परन्तु महाराणा कुम्भाके पर्वरिश किये हुए लोगोंको इनकी वह दुष्टता कब सहन होसक्ती थी, सब लोगोंको इनसे नफ़रत होगई. किसीने अपने बेटेको और किसीने भाईको नौकरीके लिये इनके पास भेजदिया. उदयसिंहने बहुतेरा चाहा, कि सब लोग मुझसे प्रीति रक्खें, परन्तु इस भारी अपराधसे लोगोंके दिलोंमें ऐसा रंज पैदा होगया था, कि सब लोग विरोधी बनगये. उदयसिंहने सिरोही वाले देवड़ोंको आज़ाद किया, और अपने देशमेंसे कई पर्गने आस पासके राजाओंको देदिये. आख़रकार रावत् चूंडाके पुत्र कांधल वग़ैरह सर्दारोंने सोच विचारकर महाराणा रायमल्लको बुलाया, जो उस समय अपनी ससुराल ईडरमें थे. ख़बर मिलते ही रायमल्ल फ़ौरन् कुम्भलमेरमें आ पहुंचे, और बाहिरसे सर्दारोंको इत्तिला दी. सबोंने अपने भाई बेटोंको समझाकर महाराणा उदयसिंहको शिकारके बहानेसे बाहिर निकाला, और महाराणा रायमल्लको क़िलेके भीतर लेलिया. विक्रमी १५३० [हि० ८७८ = .ई० १४७३] में महाराणा रायमल्लको सब सर्दारोंने मिलकर गद्दीपर बिठाया. इस खुश ख़बरीको सुनकर उदयसिंहके साथ वाले लोग उसका साथ छोड़कर क़िलेमें चले आये. उदयसिंहने बाहिरसे ही उत्तरका

रास्तह लिया. पीछेसे सर्दारोंने उसके पुत्र सैंसमल्ल व सूरजमल्लको उनके कुटुम्बियों समेत निकालदिया. उस समय किसी कविने यह दोहा कहा:–

दोहा.

ऊदा बाप न मारजे लिखियो लाभै राज ॥
देस बसायो रायमल सर्यो न एको काज ॥ १ ॥

इनका बाक़ी हाल महाराणा रायमल्लके वृत्तान्तमें लिखाजावेगा. अब हम वह ज़िक्र लिखते हैं, जो महाराणा रायमल्लके समयके बने हुए "रायमल्लका रासा" नामी ग्रन्थमें लिखा है. यह ग्रन्थ दो सौ वर्षका लिखा हुआ मिला है, लेकिन् पूरा नहीं है. इसमें उदयसिंहका हाल इस तरहपर लिखा है, कि जब महाराणा कुम्भाको मारकर उदयसिंह गद्दीपर बैठे, तबसे ही यह बात महाराणा रायमल्लको, जो अपनी ससुराल ईडरमें थे, बहुत बुरी लगी, और उसी वर्षसे उन्होंने धावा करना शुरू किया, जिसमें दो तीन वर्षतक तो उदयसिंहकी फ़ौजसे कहीं कहीं मुक़ाबलह होता रहा, अन्तमें रायमल्लने जावरपर अपना क़बज़ह करलिया, जहां चांदी और सीसेकी खान और एक बड़ा क़स्बह था. फिर रायमल्लने कुछ लोगोंको एकट्ठा करनेके बाद श्रीएकलिंगजीकी पुरीमें आकर मेवाड़के कई सर्दारोंको बुलाया. यह बात उदयसिंहको मालूम हुई, इसपर वह १०००० फ़ौज लेकर रायमल्लसे मुक़ाबलह करनेको रवानह हुआ, और दाड़मी ग्राममें दोनों दलोंका मुक़ाबलह हुआ, जिसमें दोनों तरफ़के बहादुरोंने खूबही लड़ाई की. आख़िरको महाराणा रायमल्लकी फ़तह हुई, और उदयसिंह भाग निकले. उनके हाथी, घोड़े, और नक़्क़ारे, निशान रायमल्लने छीन लिये. फिर उदयसिंह जावीके क़िलेमें जाघुसे, और रायमल्लने पीछेसे पहुंचकर उस क़िलेको फ़तह करलिया, और वहांसे पानगढ़के क़िलेपर हमलह किया, जहांका चहुवान क़िलेदार उदयसिंहका तरफ़दार था. उसको फ़तह करके रायमल्लने चित्तौड़को जाघेरा, और बहुत बड़ी लड़ाई होनेके बाद प्रभातमें चित्तौड़का क़िला भी फ़तह होगया. उदयसिंह भागकर कुम्भलमेरके क़िलेमें जाघुसे. फिर तो बागड़, छप्पन, मारवाड़, खैराड़ और बूंदी वग़ैरहके सब सर्दार लोग महाराणा रायमल्लकी फ़ौजमें आ हाज़िर हुए, और कुम्भलमेरको जाघेरा. जहांपर कुछ लड़ाई होनेके बाद उदयसिंह निकल भागे, और कुल मेवाड़में महाराणा रायमल्लका राज्य होगया. उदयसिंहके निकालनेका वृत्तान्त महाराणा रायमल्लके समयकी श्री एकलिंगजीके दक्षिणद्वारकी प्रशस्तिके ६६ वें श्लोकमें भी लिखा है.

महाराणा रायमल्ल.
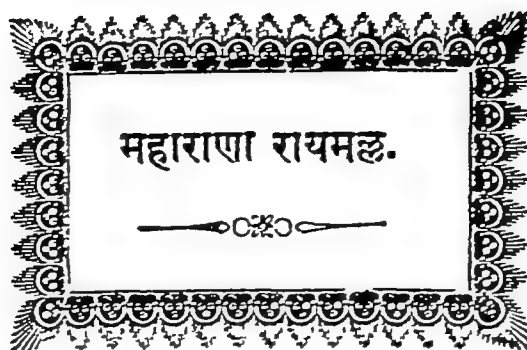
यह महाराणा विक्रमी १५३० [हि० ८७८ = ई० १४७३] में गद्दीनशीन हुए, और उदयसिंह कुम्भलमेरसे भागकर सोजतको चलेगये, जहांपर कुंवर बाघा राठौड़की बेटीके साथ उनकी शादी हुई थी. उनके बाल बच्चे भी उनसे वहीं जामिले. वहांसे उदयसिंह अपने दोनों बेटों सूरजमल्ल और सैंसमल्ल समेत मांडूके बादशाह ग़यासुद्दीन ख़ल्जीके पास गये. बादशाहने इनका कुल हाल सुनकर मदद देनेका इक़ार किया, और उदयसिंहने अपनी बेटीकी शादी बादशाहसे करना क़ुबूल करलिया. जब उदयसिंह बादशाहसे विदा होकर अपने डेरेको आने लगे, उस समय रास्तेमें उनपर एकाएक बिजली आगिरी, जिससे बापके मारनेका फल पाकर दूसरी दुन्याको कूच किया. इनके मरनेके बाद सूरजमल्ल और सैंसमल्लने बादशाह ग़यासुद्दीनसे अर्ज़ की, कि आप मदद करके मेवाड़का राज्य हमको वापस दिलादेवें. तब बादशाह अपनी जर्रार फ़ौज लेकर उनकी मददके वास्ते चित्तौड़पर चढ़ा. यह आपसकी फूट ग़यासुद्दीनके लिये फ़ायदहमन्द हुई; क्योंकि आपसके लड़ाई झगड़ोंके कारण रियासत नाताक़त होगई थी, और राज्यका जो विभव उदयसिंहके हाथमें था, उसको वह अपने साथ ही लेगये. इसके सिवा मुल्ककी आमदनी भी कम होगई थी, तो ऐसी हालतमें एक ज़बरदस्त दुश्मनका मुक़ाबलह करके उसपर फ़त्ह पाना ईश्वरके भरोसेपर ही समझना चाहिये.

ग़यासुद्दीनने अपनी ज़बरदस्त फ़ौजसे क़िले चित्तौड़को आघेरा, और शक जातिके (मुसल्मान) लोगोंने क़िलेपर बड़े बड़े हमले किये, जिसमें उन लोगोंका अफ़्सर मारागया. फिर महाराणा रायमल्ल अपनी फ़ौजको दुरुस्त करके क़िलेसे बाहिर निकले और उन्होंने बादशाह ग़यासुद्दीनकी फ़ौजपर हमलह किया. इस हमलहमें सुल्तानने भागकर मांडूका रास्तह लिया, और उसकी कुल फ़ौज तितर-

वितर होगई. इस फ़त्हके हालकी तस्दीक़ श्रीएकलिङ्गजीके दक्षिण द्वारकी प्रशस्तिके श्लोक ६८–७१ से होती है.

इस अ़र्सेमें महाराणा रायमल्ल तो बेखटके होकर आरामसे राज्य करने लगे, क्योंकि ग़यासुद्दीन जैसे बड़े शत्रुके पराजय होनेसे आसपासके सब दुश्मन उनसे दबगये थे; लेकिन् ग़यासुद्दीन इस शिकस्तको सहन न कर सका. वह धीरे धीरे लड़ाईका सामान एकट्ठा करता रहा, और कुछ अ़र्से बाद आप तो मांडूके क़िलेमें रहा, और अपने सेनापति व रिश्तेदार ज़फ़रखांको अपनी सारी ताक़तवर फ़ौज साथ देकर मेवाड़की तरफ़ रवानह किया. उसने आकर मेवाड़के पूर्वी हिस्सहमें लूट मार मचाई; तब हाड़ा चाचकदेवने, जो उस समय बेगूंका जागीरदार था, महाराणाके पास हाज़िर होकर फ़र्याद की, कि ज़फ़रखां मलिकने फ़ौज लाकर कुल मुल्कको बर्बाद करदिया है, और कोटा, भैंसरोड़ व सोपरतक अपने थानेदार भी मुक़र्रर करदिये हैं. यह सुनकर महाराणा रायमल्लने ज़फ़रखांसे मुक़ावलह करनेके वास्ते फ़ौज तय्यार की. इस लड़ाईका बयान "महाराणा रायमल्लका रासा" नामी ग्रन्थमें लिखा है, जिसमें जिन सर्दारों तथा पासवानों वग़ैरहको जो घोड़े दियेगये उनके नाम लिखे हैं, वे नीचे दर्ज कियेजाते हैं:–

सर्दारोंके नाम.	घोड़ोंके नाम.	सर्दारोंके नाम.	घोड़ोंके नाम.
कुंवर कल्याणमल्ल (१).	सोहन मुकट.	सिंह सूवावत.	सीचाणा.
कुंवर पृथ्वीराज.	परेवा.	रावत् भवानीदास सोढा.	भूंभरचो.
कुंवर जयमाल.	जैत तुरंग.	रावल उदयसिंह.	उच्चैश्रवा.
कुंवर संग्रामसिंह.	जंगहत्थ.	ब्रह्मदास.	वलोंहा.
कुंवर पत्ता.	पंखराज.	कीता.	काछी.
कुंवर रामसिंह.	रेवंत पसाव.	रामदास पुरोहित.	मनमेल.
रावत् कांधल चूंडावत.	मृग.	राय विनोद प्रधान.	अलवा.
रावत् सारंगदेव अजावत.	सिंहला.	अचला.	अमर ढाल.
रावत् सूरजमल्ल क्षेमकरणोत.	सूरज पसाव.	सांवल.	शंकर पसाव.

(१) मालूम होता है, कि यह गागरौनके खीची राजाका बेटा था.

सर्दारोंके नाम.	घोड़ोंके नाम.	सर्दारोंके नाम.	घोड़ोंके नाम.
भीमसिंह भाणावत.	नरिन्द.	भामा.	भगवती पसाव.
सावन्तसिंह जोधावत.	रिपुहण.	बणबीर हाड़ा.	विनोद.
पर्वतसिंह राठौड़.	हयथाट.	भाखर चन्द्रावत.	चित्रांगद.
सुल्तानसिंह हाड़ा.	शृंगार हार.	ऊदा झांजावत.	नैनसुख.
महेश.	मेघनाद.	राव जयब्रह्म वीरमदेवोत.	मोर.
देवीदास.	हयदीप.		
देवड़ा पूंजा.	भ्रमर.	सारंग रायमल्लोत.	सैंसरूप.
रघुनाथ गौड़.	लाडो.	नरपाल.	करडो.
सगता (शक्ता) गेपावत.	गजकेसरी.	भारमल्ल.	पंचरेण.
नाथू रायमल्लोत.	जगरूप.	रघुनाथ सोलंखी.	रींछड़ो.
रामदास.	पेखणा.	सोलंखी मेघ खेतावत.	सपंख.
सूरजसेन सोलंखी.	कोड़ीधज.	रघुनाथ सोलंखी.	हीरो.
नेतसी.	कमल.	बाला.	बोर.
जोगायत डूंगरोत.	जशकलश.	चरड़ा.	सांवकरण.
सांवल सोलंखी.	हाथीराव.	मूला.	मनवश.
हंसा बालणोत.	हंस.	लोका.	लाखीणो.
राव सुल्तान.	आरबी.	भीमसिंह.	रूपरेख.
लोला.	लाडलो.	पुंवार राघव महपावत.	लटियालो.
सांखला कांधल मेहावत.	दलभंजन.	करणा.	सहजोग.
सिंह समरावत.	सारंग.	रायसिंह.	सालहो.
चरड़ा.	हयविनोद.	सोढा चाचावत.	नीलो.
तेजसी.	तरंजड़ा.	कर्णसिंह डोडिया.	चंचलो.
नारायणदास कर्मसिंहोत.	निर्मोलक.	तम्बकदास बाघेला.	छींपड़ो.
भाखर हाड़ा.	सिंहला.	हुल्ल दूदा लोहटोत.	हीरो.
शत्रुसिंहका पोता. हटीसिंह हाड़ा.	बांदरा.	हाजा.	हरलंगल.
तेजा.	तेजंगल.	महासाणी महेश.	माणक.

सर्दारोंके नाम.	घोड़ोंके नाम.	सर्दारोंके नाम.	घोड़ोंके नाम.
जोगा राठौड़.	सायर.	मेरा.	जगमोहन.
छपन्या राठौड़ भाण.	रेणायर.	रणभमशाह सहणावत.	सालहा.
मालदेव.	मनरंजन.	राजसिंह रामसिंहोत.	सोहन.
सूवा वीसावत.	साहणदीप.	कायस्थ हंसराज कालावत.	नीलड़ो.
सगता (शक्ता).	सारंग.	कायस्थ कान्ह.	केवड़ो.
हरदेह.	हंसमन.	निशानदार.	गरुड़.
जैसा वालेचा.	विहंग.	छत्रधारी.	निकलंक.
खेमा.	चित्रंग.	तम्बोलदार.	सुचंग.
रावत् जोगा.	रणधवल.	पाणेरी.	मोतीरंग.
पर्वत.	पारावत.	हरिदास कपड़दार.	पदार्थ.
भांडा सींधल.	दल शृंगार.	राव दूल्हा.	रेवंत.
खंगार.	कटारमल्ल.	आयण महासाणी.	वाल सिरताज.
हरराज.	रूपड़ो.		

इसतरहपर सब राजपूत सर्दारोंको महाराणाने घोड़े दिये, और आप रूपमल्ल घोड़ेपर सवार होकर आसेर, रायसेन, चन्देरी, नरवर, बूंदी आमेर, सांभर, अजमेर, चाटसू, लालसोट, मारहोट, और टोडा वगैरहके राजाओं व सर्दारों समेत चित्तौड़से कूच करके मांडलगढ़की तरफ़ आये, जहां मलिक ज़फ़रख़ांसे लड़ाई शुरू हुई. इस लड़ाईमें बहुतसे राजपूत काम आये, लेकिन् मुसल्मानोंके सैकड़ों सर्दारोंके मारेजानेपर ज़फ़रख़ां भाग निकला, और महाराणाकी फ़ौजने उसका पीछा किया. लिखा है, कि इस सेनाने मांडूके पास खैराबाद नामी एक गांवको जालूटा, जहांपर ग़यासुद्दीनने महाराणाके पास अपने मोतमदोंके साथ पेशकश भेजा.

ऊपर लिखा हुआ हाल महाराणा रायमल्लके रासासे लिखा गया है, जो उसी ज़मानहका बना हुआ है, और जिसकी साक्षी उन्हीं महाराणाके ज़मानहकी श्रीएकलिंगजीके दक्षिण द्वारकी प्रशस्तिके श्लोक ७७ - ७८ देते हैं.

इसके बाद एक दिन चित्तौड़पर ग़यासुद्दीन खल्जीका मोतमद आया. महाराणा रायमल्ल उससे सुलहकी बातें कर रहे थे, कि इतनेमें महाराणाके बड़े कुंवर पृथ्वीराज आये, और महाराणाको मोतमदसे आजिज़ी (नम्रता) की बातें करते हुए सुनकर उनको गुस्सह आया, और कहा, कि हुज़ूर क्या मुसल्मानोंसे दबकर ऐसी आजिज़ी

करते हैं ? इस बातके सुनते ही वह मोतमद गुस्से होकर उठ खड़ा हुआ, और अपने डेरेपर जाकर मांडूकी तरफ़ रवानह होगया. मांडू पहुंचकर उसने कुल हाल ग्यासुद्दीनको कह सुनाया. ग्यासुद्दीन अगली बातसे तो जलता ही था, यह सुनकर और भी गुस्सेमें आया, और बड़ी जर्रार फ़ौज अपने साथ लेकर चित्तौड़की तरफ़ रवानह हुआ. इस तरफ़से राजकुमार पृथ्वीराज भी अपने राजपूतोंको लेकर चढ़े, और मेवाड़ व मारवाड़की सीमापर दोनों दलोंका मुक़ाबलह हुआ. तमाम दिन बड़ी बहादुरीके साथ दिल खोलकर दोनों ओरकी फ़ौजें लड़ती रहीं, और शामको दोनों फ़ौजें हटकर अपने अपने डेरोंमें आईं. फिर रातके वक़्त कुंवर पृथ्वीराजने सोचा, कि मैंने इस बादशाहको पकड़कर हाज़िर करनेके लिये अपने पितासे कहा था, परन्तु ऐसा करदिखाना मुश्किल मालूम होता है, इसलिये अब कोई धोखेकी लड़ाई करना चाहिये. यह विचारकर उन्होंने अपनी फ़ौजमेंसे अच्छे अच्छे पांच सौ राजपूत चुने, और उनको अपने साथ लेकर मालवी बादशाहके डेरोंकी तरफ़ रवानह हुए. दस दस पांच पांच राजपूत जुदे जुदे रास्तेसे बादशाही फ़ौजमें जा घुसे, और शाही डेरोंके पास पहुंचकर एकदम हमलह करदिया, और डेरोंमें जो बादशाही सिपाही थे उनको क़त्ल करके बादशाहको गिरिफ्तार करलिया. जब बादशाहकी फ़ौज चारों तरफ़से कुंवर पृथ्वीराजपर हमलह करनेको तय्यार हुई, तब ग्यासुद्दीन, जो राजकुमारके क़ब्ज़हमें था, अपनी फ़ौजके सर्दारोंको बुलन्द आवाज़से पुकारकर कहने लगा, कि अगर तुम लोग इन राजपूतोंपर हमलह करोगे, तो ये मुझको हर्गिज़ जीता न छोड़ेंगे, मेरे ख़ैरख़्वाह हो तो कोई भी मत बोलो. अपने मालिकके यह वचन सुनकर ग्यासुद्दीनकी फ़ौजके सर्दार ख़ामोश होगये, और राजकुमार पृथ्वीराज ग्यासुद्दीनको गिरिफ़्तार करके चित्तौड़ लेआये, अर्थात् अपने बापके सामने जो वचन कहे थे वे सच्चे करदिखाये. फिर एक महीनेके बाद ग्यासुद्दीनको कुछ दण्ड लेकर छोड़दिया. यह बात ख्यातिकी पोथियोंमें लिखी है, तारीख़ फ़िरिश्तह वग़ैरह फ़ार्सी किताबोंमें इसका कुछ भी ज़िक्र नहीं है, बल्कि फ़िरिश्तह और दूसरी कई फ़ार्सी किताबोंमें लिखा है, कि ग्यासुद्दीन गद्दीनशीन होनेके बाद बाहिर ही नहीं निकला, वह ऐश व .इश्रतमें मश्गूल होगया.

महाराणा रायमल्लके १३ कुंवर और २ राजकुमारियां थीं, जिनके नाम ये हैं:- १- पृथ्वीराज, २- जयमल्ल, ३- संग्रामसिंह, ४- पत्ता, ५- रामसिंह, ६- भवानीदास, ७- कृष्णदास, ८- नारायणदास, ९- शंकरदास, १०- देवीदास, ११- सुन्दरदास, १२- ईसरदास, और १३- बेणीदास; १- आनन्द कुंवरबाई, और २- दमाबाई, जो सिरोहीके जगमाल देवड़ाको ब्याही गई.

एक दिनका ज़िक्र है, कि राजकुमार पृथ्वीराज, जयमल्ल और संग्रामसिंह, तीनों भाइयोंने एक विद्वान ज्योतिषीको अपनी अपनी जन्मपत्रियां दिखलाईं. जन्मपत्रियोंको देखकर उस भविष्यत् वक्ताने कहा, कि ग्रह तो पृथ्वीराज और जयमल्लके भी अच्छे पड़े हैं, परन्तु मेवाड़का राज्य संग्रामसिंह करेगा. इसपर दोनों भाइयोंने नाराज़ होकर छोटे भाई संग्रामसिंहको मारनेका इरादह किया, और पृथ्वीराजने तलवारकी हूल मारी, जिससे संग्रामसिंहकी आंख फूटगई. इसी अरसेमें इनके काका सूरजमल्ल आगये. उन्होंने दोनों भाइयोंको ललकारकर कहा, कि यह क्या दुराचार करते हो ? सूरजमल्लको देखकर आपसका विरोध बन्ध होगया, और सूरजमल्लने सांगाको अपने मकानपर लाकर पट्टी वगैरहसे आंखका इलाज किया. थोड़े ही दिन पीछे भाइयोंमें आपसका विरोध बढ़ता देखकर सूरजमल्लने अपने भतीजोंको समझाया, कि तुम आपसमें क्यों कटते मरते हो, ज्योतिषियोंके कहनेपर अमल नहीं करना चाहिये. अलावह इसके अभीतक महाराणा रायमल्ल राज्य करते हैं, इसलिये ऐसा विचार करना ही बुरी बात है; इसके उपरान्त यदि तुम राज्य मिलनेकी भविष्यत् वार्ता ही सुनना चाहते हो, तो श्रीएकलिङ्गजीसे पूर्व नाहरमगराके पास भीमल गांवमे तुंगल कुलके चारणकी बेटी बीरी नामी देवीका अवतार रहती है, उससे दर्याफ़्त करो. तब यह बात सुनकर उक्त तीनों भाई अपने काका सूरजमल्ल सहित नाहरमगराकी तरफ़ रवानह हुए, और भीमल गांवमें पहुंचकर बीरीके यहां गये. बीरीने कहा, कि आज तो तुम अपने डेरेपर जाओ, कल सुब्ह ही देवीके मन्दिरमें आना. यह सुनकर उस वक़्त तो ये अपने डेरेपर चले आये, और दूसरे दिन सुब्ह होते ही देवीके मन्दिरमें गये. देवीकी मूर्तिके दर्शन करके पृथ्वीराज तो एक तरफ़ एक सिंहासन पड़ा था उसपर जा बैठा, और उसी सिंहासनके कोनेपर जयमल्ल भी बैठगया, और सिंहासनके सामने एक गादी बिछी थी उसपर सांगा और गादीके कोनेपर सूरजमल्ल बैठगये. थोड़ी देरके बाद वह शक्तिका अवतार (बीरी) आई. उसको सबने उठकर प्रणाम किया, और कहा, कि बाई हम एक कामके वास्ते आपके पास आये हैं. तब बीरीने कहा, कि बीर हमने तुम्हारे आनेका कारण पहिलेहीसे समझलिया, और उसका जवाब भी होगया, परन्तु तुमको कहना बाक़ी है इसलिये कहती हूं, कि यह गादी जो मैंने मेवाड़के मालिकके लिये बिछाई थी उसपर तो संग्रामसिंह बैठगया, जो इस मुल्कका मालिक होगा, और गादीके कोनेपर सूरजमल्ल बैठा है, इसलिये इस मुल्कके थोड़ेसे कोनेका मुख़्तार यह होगा, और पृथ्वीराज व जयमल्ल दोनों दूसरोंके हाथसे मारेजावेंगे. बीरीके मुखसे ये वचन निकलते ही पृथ्वीराज और जयमल्ल दोनोंने संग्रामसिंहपर शस्त्र चलाना शुरू किया, और इधरसे संग्रामसिंह व सूरजमल्ल भी तय्यार हुए. अन्तमें नतीजह

यह हुआ, कि पृथ्वीराज और सूरजमल्ल तो ज़ियादह घायल होकर वहीं गिरगये, और सांगा अपने घोड़ेपर सवार होकर भागा. जयमल्लने सोचा, कि पृथ्वीराज और सूरजमल्ल तो मरे ही होंगे, अब संग्रामसिंह बाक़ी रहा है, यदि इसको मारडालूं, तो राज्यका मालिक मैं ही रहूंगा, और देवीके वचन भी असत्य होजायेंगे. यह मन्सूबा करके वह अपने साथी राजपूतोंको साथ लेकर संग्रामसिंहके पीछे चढ़ दौड़ा. संग्रामसिंह एक दिन और एक रातमें सेवंत्री गांवमें पहुंचा, जहां महाराणा हमीरसिंहका बनाया हुआ रूपनारायणका प्रसिद्ध मन्दिर है. वहांपर राठौड़ बीदा जैतमल्लोत मारवाड़से दर्शन करनेको आया था, उसने सांगाको खूनसे तर बतर देखकर घोड़ेसे उतारा और उसके घावोंपर पट्टी बांधी. इसी अरसेमें जयमल्ल भी अपने साथियों सहित आपहुंचा, और बीदासे कहा, कि सांगाको हमारे सुपुर्द करदो, नहीं तो तुम भी मारेजाओगे. बीदाने सांगाको सुपुर्द करनेसे इन्कार किया. इसपर जयमल्लने लड़ाई शुरू करदी, तब बीदाने सांगाको तो मारवाड़की तरफ़ रवानह किया, और आप वहां लड़कर मारागया. बीदाकी औलादमें केलवा वाले हैं. निदान सांगाके न मिलनेसे जयमल्ल निराश होकर कुम्भलमेरके क़िलेमें चला आया, और इसी अरसेमें पृथ्वीराज और सूरजमल्लके भी घाव अच्छे होगये. पृथ्वीराजको महाराणा रायमल्लने कहलाभेजा, कि ऐ दुराचारी पुत्र तू मुझको आकर मुंह मत बतला, क्योंकि मेरे जीते जी ही राज्यके अर्थ तैंने ऐसा क्लेश बढ़ाया, और मेरा लिहाज़ कुछ भी नहीं किया, इसलिये तू चित्तौड़पर मत आ, जहां तेरी ख़ुशी हो वहां रह. इस शर्मिन्दगीसे राजकुमार पृथ्वीराज कुम्भलमेरमें जारहे.

अब राजकुमार संग्रामसिंह (सांगा) का हाल सुनिये. जैसे इंग्लिस्तानके मश्हूर बादशाह एल्फ्रेडने एक गडरियेके यहां भेड़ चराकर तक्लीफ़के दिन गुज़ारे, और रोटी जल-जानेके क़ुसूरमें उस गडरियेकी औरतके मुंहसे बहुत कुछ बुरा भला सुना, उसी तरह संग्रामसिंहने भी अपना घोड़ा छोड़कर पृथ्वीराज और जयमल्लके भयसे मारवाड़में जाकर एक गडरियेके यहां थोड़े दिनतक विश्राम किया, और वहांसे निकलकर अजमेरके नज्दीक श्रीनगरके ठाकुर कर्मचन्द पुंवारके यहां जारहे, जो एक बड़ा लुटेरा राजपूत था. इसके साथ दो दो तीन तीन हज़ार राजपूत चढ़ते थे, उन्हीं राजपूतोंमें सांगा भी अपना वेष बदले हुए विदेशी राजपूतके नामसे जारहे.

अब हम कुछ हाल कुंवर पृथ्वीराज और उनके काका सूरजमल्लका लिखते हैं, जो इस तरहपर है, कि कुम्भलमेरके पास गोड़वाड़के ज़िलेमें मादड़ेचा बालेचा वग़ैरह पालवी राजपूत हुक्म नहीं मानते थे. कुंवर पृथ्वीराजने उनपर धावा करना

शुरू किया, और आख़िरको सब राजपूत उक्त राजकुमारके फ़र्मांबर्दार बनगये, लेकिन् देवसूरीके मादड़ेचा राजपूत क़ाबूमें नहीं आये, बल्कि दंगा फ़साद व लड़ाई करते रहे. कुंवर पृथ्वीराजने भी उनपर कई हमले किये, मगर देवसूरीका क़िला मज़्बूत होनेके सबब क़बज़हमें न आ सका. उसी ज़मानहमें मादड़ेचोंके सम्बन्धी सोलंखी राजपूतों (जो सिरोहीके गांव लांछमें आरहे थे) और सिरोहीके राव लाखाके आपसमें दुश्मनी पैदा होजानेके कारण राव लाखाने सोलंखियोंपर कई हमले किये, परन्तु रावके पांच सात हमले सोलंखी भोजने मारदिये. इसपर राव लाखा शर्मिन्दह होकर ईडरके राजा भाणकी मदद लाया, और लांछके सोलंखियोंपर चढ़ा. इस लड़ाईमें सोलंखी भोज मारागया, और उसका बेटा रायमल्ल और रायमल्लके बेटे शंकरसी, सामन्तसी, सखरा, और भाण वहांसे भागकर कुंवर पृथ्वीराजके पास कुम्भलमेर पहुंचे. राजकुमार पृथ्वीराजने इन लोगोंको कहा, कि हम तुमको देवसूरीका पट्टा देते हैं, तुम मादड़ेचोंको मारकर निकाल दो, और वहां अपना अमल करलो. इसपर सोलंखी रायमल्लने अर्ज़ की, कि मादड़ेचे तो हमारे सम्बन्धी हैं, मेरे लड़के उनके भानूजे हैं. राजकुमार पृथ्वीराजने कहा, कि अगर तुमको ठिकाना लेना है, तो यही मिलेगा. तब लाचार सोलंखी रायमल्लने भी राजकुमारका कहना मन्जूर किया, और प्रथम अपने लड़के शंकरसी व सामन्तसीको उनकी ननसाल देवसूरी भेजकर पीछेसे आप भी बहुतसे लोगोंके साथ वहां पहुंचा. भीतरसे रायमल्लके लड़के शंकरसी और सामन्तसीका इशारह पाकर लोग घुस पड़े, और मादड़ेचा सांडा वग़ैरह कितनेही राजपूतोंको मारकर क़िला फ़त्ह करलिया. क़िला देवसूरी फ़त्ह करके रायमल्लने कुंवर पृथ्वीराजसे जाकर मुज्रा किया; तब राजकुमारने १४० गांव सहित देवसूरीका पट्टा उसको लिखदिया, जिसकी तफ़्सील यह हैः-- आगरया गांव १२, वांसरोट गांव १२, धामणया गांव १२, सेवंत्री गांव १२, देवसूरी गांव १२, ढोलाणा गांव १२, आना, कर्णवास, वांसड़ा, मांडपुरा, केशूली, गांथी, गोडला और चावड़या वग़ैरह. रायमल्लके बेटे शंकरसीकी औलाद जीलवाड़ा गांवमें और सामन्तसीकी औलाद रूपनगरमें मौजूद है, जो मेवाड़के बत्तीस सर्दारोंमें गिने जाते हैं.

जब कुंवर पृथ्वीराजने गोड़वाड़ व मगरा वग़ैरह ज़िलोंमें अपनी हुकूमत अच्छी तरह जमाली और उनके छोटे भाई जयमल्ल भी उन्हींके पास मौजूद थे, उस समय लल्लाख़ां पठानने सोलंखियोंसे टोडा छीनलिया, जिससे सोलंखी लोग चित्तौड़पर चले आये. महाराणाने राव श्यामसिंह सोलंखीको बदनौरका पट्टा दिया. जब राव श्यामसिंहका देहान्त होगया और राव सुल्तान बदनौरमें गद्दीनशीन हुआ, तब

कुम्भलमेरसे कुंवर जयमल्लने राव सुल्तानको कहलाया, कि तुम्हारी बहिन ख़ूबसूरत सुनी जाती है, यदि पहिले मुझे बतलादो तो मैं उसके साथ शादी करूं. राव सुल्तानने जवाब दिया, कि राजपूतकी बेटी पहिले नहीं दिखाई जाती, और आपको शादी करना मन्जूर हो, तो हमको इन्कार नहीं है. इसपर जयमल्लने कहा, कि मैंने कहा उसी तरह करना होगा. तब राव सुल्तानने अपने साले सांखला रत्नसिंहको भेजकर जयमल्लसे कहलाया, कि हम परदेशी राजपूतोंको आपके पिताने मुसीबतके वक्तमें रक्खा है, इसलिये हम नम्रताके साथ कहते हैं, कि ऐसा नहीं करना चाहिये; लेकिन् जयमल्लने उनके कहनेपर कुछ भी ख़्याल नहीं किया, और एकदम चढ़ाईकी तय्यारी करदी. यह कुल हाल सांखला रत्नसिंहने अपने बहनोई राव सुल्तानसे मुफ़स्सल तौरपर जा कहा. तब राव सुल्तानने महाराणाका नमक खानेके ख़यालसे लड़ाई करना तो उचित नहीं समझा, और कुल सामान छकड़ोंमें भरकर अपने सब आदमियों समेत बदनौर छोड़कर चलदिया. इधरसे कुंवर जयमल्ल भी अपने राजपूतों सहित बदनौर पहुंचा, परन्तु गांव ख़ाली पाया, तब वहांसे रवानह होकर राव सुल्तानके पीछे लगा, और बदनौरसे सात कोसके फ़ासिलहपर गांव आकड़सादाके पास सुल्तानके लोगोंको जालिया. मशृअलोंकी रौशनी देखकर राव सुल्तानकी ठकुरानी सांखलीने अपने भाई रत्नसिंहको कहा, कि दुश्मन आपहुंचे हैं. यह सुनते ही रत्नसिंह अपने घोड़ेका तंग संभालकर पीछा फिरा, और जयमल्लके लश्करमें आकर कुंवर जयमल्लको मशृअलकी रौशनीसे घुड़बहलमें बैठा देखकर कहा, कि कुंवर साहिब सांखला रत्नाका मुजरा पहुंचे, और यह कहते ही बर्छीसे कुंवर जयमल्लका काम तमाम करडाला. जयमल्लके साथके राजपूतोंने भी रत्नसिंहको उसी जगह मारलिया. जयमल्लकी दाह क्रिया उसी मक़ामपर कीगई जहांपर कि वह मारागया. जोकि जयमल्लने यह काम महाराणा रायमल्लके विना हुक्म किया था, इस वास्ते जयमल्लके राजपूतोंने सोलंखियोंका पीछा छोड़दिया, और कुम्भलमेरको लौट आये. फिर राव सुल्तानने बदनौर आकर सब हालकी अर्ज़ी महाराणा रायमल्लके दर्बारमें भेजदी. तब महाराणाने फ़र्माया, कि उसी कुपूतका कुसूर था, राव सुल्तानका कुछ क़ुसूर नहीं है. इसके बाद कुंवर पृथ्वीराजको सुल्तानने बड़ी नम्रताके साथ कहलाया, कि आप मेरी बहिन तारादेके साथ अपनी शादी करलें, जिसको राजकुमारने मन्जूर करके शादी करली.

शादी होनेके बाद सोलंखियोंने राजकुमारसे अर्ज़ की, कि हमारा वतन लल्लाख़ां पठानने छीनलिया है, वह आप मदद करके पीछा दिलादेवें. सोलंखियोंके अर्ज़ करनेपर ५०० सवार लेकर कुंवर पृथ्वीराजने तुरन्त ही टोडेपर चढ़ाई करदी, उस

तरफ़से लल्लाखां पठान भी अपनी जमइयत लेकर मुक़ाबलहको आया, और लड़ाई हुई, जिसमें लल्लाखां मारागया. राजकुमारने टोडा फ़त्ह करके राव सुल्तानके सुपुर्द किया. उन दिनों अजमेरमें बादशाही सूबेदार मुसलमान था. यह हाल सुनकर वह लल्लाखांकी मददके वास्ते अजमेरसे रवानह हुआ. कुंवर पृथ्वीराजने उसको आता हुआ सुनकर अजमेरके नज़्दीक ही जालिया; वहांपर भी लड़ाई हुई, जिसमें सूबेदार मारागया, और कुंवर पृथ्वीराजने फ़त्ह पाई. इस लड़ाईमें बहुतसे राजपूत मारे-गये. कुंवर पृथ्वीराज वापस लौटकर कुम्भलमेरको आये. इसी अरसहमें महाराणा मोकलका पोता और क्षेमकरणका बेटा रावत् सूरजमल्ल और महाराणा लाखाका पोता रावत् अज्जाका बेटा रावत् सारंगदेव दोनोंने महाराणा रायमल्लसे कहा, कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ हमको जागीर मिलनी चाहिये. तब महाराणा रायमल्लने भैंसरोड़का पर्गनह सूरजमल्ल और सारंगदेवको जागीरमें देदिया. यह बात सुनकर राजकुमार पृथ्वी-राजने महाराणा रायमल्लको लिखा, कि हुजूरने इन दोनोंको पांच लाखकी जागीर देदी; अगर इसी तरह छोटोंको इतनी जागीरें मिलतीं, तो अबतक हुजूरके पास मेवाड़का कुछ भी हिस्सह बाक़ी नहीं रहता. इसपर महाराणा रायमल्लने राजकुमारके नाम रुक्का लिखा, कि हमने तो भैंसरोड़गढ देदिया, अगर तुमको यह बात बुरी मालूम हुई हो, तो तुम और वे आपसमें समझलो. महाराणा रायमल्ल उस वक्त कुंवर पृथ्वीराजका लिहाज़ रखते थे, और रावत् सूरजमल्ल और सारंगदेवसे भी दबते थे, इसलिये उनको तो जागीर देदी, और इनको ऐसा जवाब लिखदिया. महाराणाका रुक्का बांचते ही कुंवर पृथ्वीराजने अपने दो हज़ार सवारोंको साथ लेकर भैंसरोड़गढ़पर चढ़ाई करदी, और गढ़के दर्वाज़े खुले पाकर भीतर घुसगये. जिन लोगोंने सामना किया उनको मारा और बाक़ी लोगोंके शस्त्र छीनलिये. रावत् सूरजमल्ल और सारंगदेव क़िलेसे भाग निकले. कुंवर पृथ्वीराजने इन दोनोंके औरत व बच्चोंको क़िलेसे निकालदिया. सूरजमल्ल और सारंगदेव दोनों मेवाड़से निकलकर मांडू पहुंचे, और वहां जाकर बादशाह नासिरुद्दीन खल्जीसे मदद चाही. बादशाहने दुश्मनके घरकी फूट देखकर इन दोनोंको अपनी जमइयतके साथ बहुत कुछ खातिर व तसल्ली करके मेवाड़पर भेजा. महाराणा रायमल्लने भी इनकी आमद सुनकर अपनी फ़ौजको दुरुस्त किया. रावत् सूरजमल्ल और सारंगदेवने अपने औरत व बच्चोंको तो सादड़ीमें रक्खा, और आप अपने राजपूतों और शाही फ़ौजको साथ लेकर चित्तौड़की तरफ़ रवानह हुए. इधरसे महाराणा रायमल्लने भी चढ़ाई की. गम्भीरी नदीपर दोनों दलोंका मुक़ाबलह हुआ, जिसमें दोनों तरफ़के बहादुरोंने दिल खोलकर खूब लड़ाई की, और महाराणा रायमल्ल

ज़ख़्मी हुए. क़रीब था, कि सूरजमल्ल और सारंगदेव फ़त्हकी नामवरी हासिल करते, लेकिन कुंवर पृथ्वीराज इन लोगोंके आनेकी ख़बर सुनकर कुम्भलमेरसे रवानह होकर ऐन लड़ाईके वक़्में आ पहुंचे. सूरजमल्ल, सारंगदेव और पृथ्वीराज आपसमें ख़ूब लड़कर ज़ख़्मी हुए, और फ़त्हका झंडा पृथ्वीराजके हाथमें रहा. सूरजमल्ल और सारंगदेव भागकर अपने डेरोंमें गये, और महाराणा रायमल्लको कुंवर पृथ्वीराज पालकीमें डालकर डेरोंमें लाये. दोनों तरफ़के लोग अपने अपने घायलोंको संभालकर डेरोंमें लेगये, और मर्हम पट्टी कीगई. राजकुमार पृथ्वीराजने महाराणाके ज़ख़्मोंका इलाज किया, और पहर रात गये घोड़ेपर सवार होकर अकेले रावत् सूरजमल्लके डेरोंमें पहुंचे. सूरजमल्लके ज़ख़्मोंपर भी पट्टियां बंधी थीं, वह पृथ्वीराजको आते हुए देखकर उठ खड़ा हुआ. पृथ्वीराजने कहा, कि काकाजी ख़ुश हो ? सूरजमल्लने जवाब दिया, कि तुम्हारे मिलनेसे ज़ियादह ख़ुशी हुई. पृथ्वीराजने कहा, कि काकाजी, मैं भी श्रीदाजीराज (१) के ज़ख़्मोंपर पट्टी बांधकर आया हूं. सूरजमल्लने कहा, कि भतीज राजपूतोंके यही काम हैं. पृथ्वीराज बोले, कि काकाजी मैं आपको भालेकी नोकसे दबे उतनी भी ज़मीन नहीं दूंगा. इसपर सूरजमल्ल बोला, कि भतीज मैं भी आपको एक पलंगके नीचे आवे जितनी ज़मीनपर आरामसे अमल नहीं करने दूंगा. तब पृथ्वीराजने कहा, कि मैं फिर आऊंगा होश्यार रहना. सूरजमल्ल बोला, कि भतीज जल्दी आना, मैं भी हाज़िर हूं. पृथ्वीराजने कहा कलही आऊंगा. सूरजमल्ल बोला, कि बहुत अच्छा. इस तरह बहस करनेके बाद राजकुमार अपने डेरोंमें लौट आये, और सुब्ह होते ही सवार हुए; सामनेसे सूरजमल्ल और सारंगदेव भी मुक़ाबलेको आये. रावत् सारंगदेवके शरीरपर ३५ ज़ख़्म और कुंवर पृथ्वीराजके ७ ज़ख़्म लगे, और सूरजमल्ल भी सख़्त ज़ख़्मी हुआ, जिसको उसके साथवाले राजपूत वहांसे ले निकले, और कुंवर पृथ्वीराज ज़ख़्मी होनेकी हालतमें महाराणाके पास गये, जिनको साथ लेकर महाराणा चित्तोड़पर आये. दोनों तरफ़ ज़ख़्मोंका इलाज हुआ. इसके बाद सूरजमल्ल सादड़ी, और सारंगदेव बाठरड़ेमें रहने लगे. थोड़े दिनोंके बाद रावत् सूरजमल्ल सारंगदेवसे मिलनेके लिये बाठरड़े गये, कि उसीवक़ एक हज़ार सवार लेकर कुंवर पृथ्वीराज वहां आपहुंचे. रातका समय होनेके सबब गांवका फलसा (२) लगा हुआ था, और भीतरको लोग आग जलाकर तप रहे थे. फलसा तोड़कर राजकुमार तुरन्त ही गांवके भीतर घुसगये. राजपूतोंने

---

(१) मेवाड़के राजकुमार अपने पिताको दाजीराज कहते हैं.

(२) कांटे और लकड़ियोंसे बनी हुई फाटकको फलसा कहते हैं.

हाथमें तलवारें पकड़ीं, और कितने ही लड़कर मारेगये. पृथ्वीराजसे चौनज़र होते ही सूरजमल्लने कहा, कि भतीज हम आपको नहीं मारना चाहते, क्योंकि आपके मारेजानेसे राज डूबता है, हमारे ऊपर तुम बेशक शस्त्र चलाओ. तब पृथ्वीराजने लड़ाई मौकूफ़ करदी, और सवारीसे उतरकर सूरजमल्लसे मिले और पूछा, कि काकाजी क्या करते थे ? उन्होंने कहा, कि भतीज बेखटके होकर बैठे हुए तपरहे थे. इसपर राजकुमारने कहा, कि काकाजी क्या मेरे जैसा दुश्मन सिरपर होनेकी हालतमें भी बेख़ौफ़ होकर बैठना चाहिये ? ऐसी बातें करके सूरजमल्ल तो सुब्ह होते ही सादड़ीकी तरफ़ चला गया, और सारंगदेवको पृथ्वीराजने कहा, कि चलो देवीके दर्शन करें. ये दोनों देवीके मन्दिरमें पहुचे और बलिदान हुआ. कुंवर पृथ्वीराज उन ज़ख़्मोंको नहीं भूला था, जो सारंगदेवके हाथसे पहिली लड़ाईमें उनके लगे थे. इसवक़ इन्होंने भी मौक़ा पाकर अपनी कमरसे कटारी निकाली और सारंगदेवके शरीरमें पार करदी. सारंगदेवने भी तलवारका वार किया, लेकिन् वह देवीके पाटपर जा लगी. सारंगदेवको मारनेके बाद कुंवर पृथ्वीराज वहांसे रवानह होकर सादड़ी आये, और सूरजमल्लसे मिलकर ज़नानेमें गये, और अपनी काकीसे मुज्रा करके कहा, कि बहूजी मुझको भूख लगी है. सूरजमल्लकी स्त्रीने भोजन तय्यार करके सामने रक्खा. यह खबर सुनकर सूरजमल्ल भीतर आये, और राजकुमारके साथ खानेमे शरीक हुए. तब सूरजमल्लकी औरतने जिस चीजमें ज़हर मिलाया था, वह कटोरी उठाली. पृथ्वीराज सूरजमल्लकी तरफ़ देखने लगे. इसपर सूरजमल्लने गुस्सेमें आकर कहा, कि ऐ नादान मैं तो तेरे पिताका भाई हूं, इसलिये अपने खूनके जोशसे अपने फ़र्ज़न्दकी मृत्युको नहीं देखसक्ता, लेकिन् इस औरतको तेरे मरनेकी क्या फ़िक्र है ? यह बात सुनकर पृथ्वीराजने कहा, कि काकाजी अब सब मेवाड़का राज्य आपके लिये हाज़िर है. सूरजमल्लने कहा, कि भतीज अब हमको आपकी ज़मीनमें पानी पीनेकी भी सौगन्ध है. इसके बाद सूरजमल्लने वहांसे चलनेकी तय्यारी की. पृथ्वीराजने बहुतेरा कहा, लेकिन् उसने एक भी न सुनी, और मेवाड़के किनारे कांठल (१) में जाकर वहांके भीलोंको ज़ेर करके अपना राज्य जमाया. सूरजमल्लकी औलादका बयान इस इतिहासके दूसरे भागमें लिखा जावेगा.

सादड़ीसे रवानह होकर कुंवर पृथ्वीराज पीछे कुम्भलमेरमें आये. इन्हीं दिनोंमें महाराणा रायमल्लकी बहिन रमाबाईके और उनके पति गिरनारके राजा मंडलीक जादवके आपसमें नाइत्तिफ़ाक़ी होगई. मंडलीकने रमाबाईको बहुत तक्लीफ़ दी. यह

(१) यह प्रतापगढ़के ज़िलेका नाम है.

ख़बर सुनकर कुंवर पृथ्वीराजसे कब रहा जाता था, वह उसी वक़्त अपने शूर वीरोंको साथ लेकर गिरनारपर चढ़ दौड़े, और राजा मंडलीकको उसके महलोंमें सोते हुए जा दबाया. मंडलीक उस वक़्त बेख़बर था, उससे कुछ भी न बन पड़ा, और राज कुमारसे प्रार्थना करने लगा. तब राज कुमारने दया करके मंडलीकके एक कानका कोना काट लिया, (१) और अपनी भूवा रमाबाईको पालकीमें बिठाकर अपने साथ ले आये, जो .उम्र भर यहीं रहीं, और उन्होंने कुम्भलमेरमें विष्णु भगवानका एक मन्दिर बनवाया. रमाबाईको जावरका पर्गनह महाराणा रायमल्लने जागीरमें दिया था, जहां उन्होंने रामस्वामीका मन्दिर और रामकुंड वग़ैरह .इमारतें बनवाईं, जिनकी प्रतिष्ठा विक्रमी १५५४ चैत्र शुक्ल ७ रविवार को हुई, उस मौक़ेपर महाराणा रायमल्ल और राजकुमार पृथ्वीराजने निमन्त्रण भेजकर राजा मंडलीकको भी गिरनारसे बुलवाया था. इन इमारतोंका कुछ वृत्तान्त महेश्वर पंडितने वहांकी प्रशस्तियोंमें लिखा है.

अब हम यहांपर राजकुमार पृथ्वीराजके इन्तिक़ालका वृत्तान्त लिखते हैं. राज-कुमार पृथ्वीराजकी बहिन आनन्दबाईकी शादी सिरोहीके राव जगमालके साथ हुई थी. वह दूसरी स्त्रियोंके बहकानेसे उनको बहुत दुख दिया करता था, यहांतक कि पलंगका पाया उनके हाथपर रखकर रातको सोता और कहता, कि तेरा बहादुर भाई कहां है, उसको सहायताके लिये बुलाओ. उस पतिव्रताने तो अपने भाईको कुछ नहीं लिखा, लेकिन् यह वृत्तान्त किसी ज़रीएसे पृथ्वीराजके कानतक पहुंच गया, जिसको सुनकर इस शूर वीरसे ख़ामोश न रहागया, और यह अपने राजपूतों सहित उसी वक़्त सिरोहीकी तरफ़ रवानह हुआ. राजकुमारने आधी रातके वक़्त सिरोहीमें पहुंचकर दूसरे साथी राजपूतोंको तो गांवके बाहिर छोड़ा और आप अकेले राव जगमालके महलोंमें घुसगये. वहां क्या देखते हैं, कि आनन्दकुंवरबाईके हाथपर पलंगका पाया रखकर राव नींदमें बे ख़बर सो रहा है. पृथ्वीराजने तलवार मियानसे निकालकर राव जग-मालको ठोकर मारी और कहा, कि ऐ राव मेरी बहिनको इस तरह तक्लीफ़ देकर ऐसा ग़ाफ़िल सोता है ? ठोकर लगते ही राव घबराकर उठा, और आनन्द कुंवर-बाईने भी पायेके नीचेसे हाथ खेंचलिये, और अपने भाईके सामने झोली बिछाकर बोली, कि हे भाई मेरा सुहाग रक्खो, और मेरे पतिको जीवदान दो. अपनी बहिन की लाचारीसे राजकुमारने राव जगमालको जीवदान देकर कहा, कि आगेको ख़याल रखना चाहिये. राव जगमालने राजकुमारसे बहुत कुछ प्रार्थना की, और अपने

---

(१) यह बात बड़वा भाटों और ख्यातकी पोथियोंसे लिखी है.

महलोंमें लेजाकर दावतकी तय्यारी की, राजकुमार तो साफ़ दिल थे, अपने राजपूतों सहित रावका विश्वास करके ज़ियाफ़तमें मश्गूल हुए, लेकिन् राव इस वारिदातसे बहुत शर्मिन्दह होगया था. जब राजकुमार कुम्भलमेरको रुख़्सत होने लगे, तब रावने तीन गोलियां, जिनमें ज़हर मिला हुआ था, राजकुमारको दीं, और कहा कि ये बंधेजकी बहुत फ़ायदेमन्द गोलियां हैं. राजकुमारने कुम्भलगढ़के नज़्दीक पहुंचकर एक गोली खाई, और थोड़ी दूर जाकर दूसरी, और इसी तरह तीसरी भी खाली. तीनों गोलियां खाते ही ज़हरने एकदम ऐसा असर किया, कि कुम्भलमेरके क़रीब पहुंचते पहुंचते उनका इन्तिकाल होगया. मामादेवके पास क़िले कुम्भलमेरमें उनकी दग्ध क्रिया कीगई. इन राजकुमारकी एक छत्री क़िलेके क़रीब, जहां कि इनका इन्तिक़ाल हुआ था, और दूसरी दग्ध स्थानपर क़िलेमें मामादेवके स्थानपर बनी है. इनके साथ १६ सतियां हुईं.

अब महाराणाके तीसरे कुंवर संग्रामसिंह (सांगा) का वृत्तान्त सुनिये. ऊपर लिखा जाचुका है, कि कुंवर संग्रामसिंह पृथ्वीराजके भयसे मेवाड़ छोड़कर मारवाड़में कुछ दिनों एक गडारियेके यहां दिन गुज़ारकर वहांसे अजमेरके ज़िले श्रीनगरके ठाकुर कर्मचन्द पुंवार मश्हूर लुटेरेके पास जारहे, और अपने पास जो कुछ पहिननेका ज़ेवर था वह बेचकर घोड़ा ख़रीदलिया. इन राजकुमारको बहुत दिनोंतक पृथ्वीराजके भयसे राजकीय प्रकृतिको बदलकर लुटेरोंके गिरोहमें उन्हींके समान होकर रहना पड़ा.

एक दिनका ज़िक्र है, कि कर्मचन्द पुंवार कहींसे धाड़ा डालकर पीछा आता था; उसने रास्तेके किसी एक जंगलमें अपने साथियों सहित ठहरकर आराम लिया. साथवालोंमेंसे हरएक शख़्स वृक्षोंकी छायामें, जहां जिसके दिलमें आया ठहरगया; एक बड़के नीचे राजकुमार संग्रामसिंहने भी अपना घोड़ा बांधदिया, और ज़ीनपोश बिछाकर सोरहे. उस वक्त कर्मचन्दके राजपूतोंमेंसे वालेचा जयसिंह और जामा सींधल दोनों अपने अपने साथियोंकी ख़बरगीरीके लिये फिरते हुए इत्तिफ़ाक़से उस बड़के पास आनिकले. बड़के पत्तोंके बीचमें होकर सूर्यकी किरणें राजकुमार संग्रामसिंहके मुंहपर गिरने लगीं, तब उस बड़की जड़ोंमेंसे एक काले सांपने निकलकर अपने फनसे छाया (१) करली. ये दोनों राजपूत इस बातको देखकर बड़े तअज्जुबमें आये, और दौड़कर कर्मचन्दसे सारा हाल बयान करके कहा, कि वह कोई राजा या राजकुमार है, क्योंकि सांप इस तरह किसीके सिरपर अपने फनसे छाया नहीं करता. कर्मचन्द भी दौड़कर

(१) यह बात हिन्दुस्तानमें मश्हूर है, कि ऐसी हालत होनेपर लोग छत्रधारी राजा होनेके लिये शुभ शकुन ख़याल करते हैं.

बड़के पास आया, तो वैसाही दिखाई दिया. इसके बाद सर्प तो बिलमें घुसगया, और इन्होंनें सांगाको जगाकर कहा, कि सच कहो आप कौन हो ? तब उन्होंने कहा, कि मैं सीसोदिया राजपूत हूं, और संग्रामसिंह मेरा नाम है; इसके सिवा मेरा ज़ियादह हाल दर्याफ़्त करनेसे आपको क्या मत्लब है ? यह सुनकर कर्मचन्दको और भी ज़ियादह शक हुआ, कि यह शायद महाराणा रायमल्लके छोटे कुंवर संग्रामसिंह हैं, जिनका बहुत दिनोंसे पता नहीं है, और इसी सबबसे यह अपना हाल छिपाते होंगे. ऐसा अनुमान करके कर्मचन्दने राजकुमारसे कहा, कि हम जानते हैं, आप महाराणा रायमल्लके छोटे पुत्र संग्रामसिंह हैं, अगर ऐसाही है तो आपको इसतरह छिपकर नहीं रहना चाहिये; हम भी राजपूत हैं, यदि राजकुमार पृथ्वीराज आपपर चढ़कर आवेंगे, तो हम सैकड़ों राजपूत आपके लिये उनसे मुक़ाबलह करनेको तय्यार हैं. यह सुनकर राजकुमारने भी अपना सारा सच्चा हाल कह सुनाया. राजकुमारको कर्मचन्द अपने घर श्रीनगर ले आया, और अपनी बेटीका विवाह उनके साथ करदिया. यह हाल सुनकर राजकुमार पृथ्वीराजको बड़ा गुस्सह आया, और उन्होंने कर्मचन्द पुंवारपर चढ़ाई करनेका पूरा इरादह करलिया; लेकिन् उसी अरसहमें उनको अपनी बहिनकी तक्लीफ़ सुनकर पहिले सिरोहीकी तरफ़ जाना पड़ा, और वहांसे पीछे आते वक्त रास्ते हीमें देहान्त हो गया, जैसा कि पहिले बयान होचुका है.

जबकि महाराणा रायमल्लको पृथ्वीराज और जयमल्लके मरजानेका बहुत शोक हुआ, और उसी रंजके सबबसे वह अधिक बीमार होगये, तब उन्होंने राजकुमार संग्रामसिंहको कर्मचन्द पुंवारके यहां सुनकर उनके पास आदमी भेजे. महाराणाका आज्ञापत्र देखते ही कर्मचन्द पुंवार राजकुमारको लेकर चित्तौड़ हाज़िर हुआ. अपने पुत्रको देखकर महाराणाने बड़ा ही स्नेह प्रगट किया, और कर्मचन्दको अपने उमरावोंमें दाख़िल करके बहुतसी जागीर निकालदी. कर्मचन्दके वंशमें अब भी बत्तीस सर्दारों में बंबोरीके ठाकुर मौजूद हैं, जिनका हाल इतिहासके दूसरे भागमें लिखाजायेगा.

विक्रमी १५६५ [हि० ९१४ = ई० १५०८] में महाराणा रायमल्लका देहान्त हुआ, और उसी सालमें महाराणा संग्रामसिंह गादी विराजे. उदयकरणके वक्तमें श्रीएकलिङ्गजीका मन्दिर गिरगया था उसको महाराणा रायमल्लने पीछा बनवाया, और कितनेएक गांव जो उदयकरणके वक्तमें ख़ालिसे होगये थे, वे पीछे भेट किये; और थूर नामी गांव गोपाल भट्टको दिया- (देखो शेष संग्रह). महाराणा रायमल्लकी महाराणी जोधपुरके राव जोधाकी बेटी शृंगारदेवीने घोसूंडी गांवमें एक बावड़ी तय्यार करवाई थी - (देखो शेष संग्रह).

गुजरात देशमें हलवद एक ठिकाना है, वहांके राज झाला राजसिंहके बेटे अज्जा और सज्जा अपने भाइयोंके बखेड़ेसे निकलकर विक्रमी १५६३ [हि० ९१२ = ई० १५०६] में मेवाड़में आये, और महाराणा रायमल्लकी सेवामें रहे थे. उन दोनों भाइयोंकी औलादके पांच ठिकाने अभीतक मेवाड़में मौजूद हैं:- अव्वल दरजहके उमरावोंमें १-सादड़ी, २-देलवाड़ा और ३-गोगूंदा; और दूसरे दरजहके [illegible]में १-ताणा, व २-झाड़ोल. इनका सविस्तर वर्णन उमराव सर्दारोंके [illegible] किया जायेगा.

महाराणा संग्रामसिंह

(सांगा).
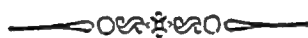
विक्रमी १५६५ ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हि० ९१४ ता० ४ मुहर्रम ता० ४ मई] को महाराणा संग्रामसिंह गद्दी विराजे. इन्होंने कर्मचन्द पुंवारको उसकी सेवाके अनुसार अजमेरका पट्टा जागीरमें अपने उमरावोंमें अव्वल दरजहका उमराव बनाया.

जब दिल्लीके बादशाह इब्राहीम लोदीने सुना, कि महाराणा मुल्कपर अपना क़बज़ह जमाना शुरू किया है, तो वह भी दिल्लीका कारण ऐसी बात सुनकर खामोश न रहसका, और बड़ा भारी लश्कर मेवाड़की तरफ़ रवानह हुआ. यह ख़बर सुनकर इधरसे महाराणा संग्रामसिंह अपने बहादुर राजपूतों सहित कूच किया. हाड़ोतीकी सीमापर खातोली गांव दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ. दो पहरतक लड़ाई होती रहनेके बाद शाही भाग निकली. बादशाह इब्राहीम लोदीने फ़ौजको ठहरानेमें बहुतसी को की, लेकिन् एकमें भी काम्याब न हुआ. तब लाचार उसको भी फ़ौजके साथ भ पड़ा; लेकिन् उसके एक शाहज़ादहने पीछे फिरकर महाराणाकी फ़ौजसे किया, और वह पकड़ा गया. इस लड़ाईमें महाराणा संग्रामसिंहका हाथ तल कटगया, और एक पैरके घुटनेपर ऐसा सख़्त तीर लगा, कि जिससे वह होगये. इसके बाद महाराणाने चित्तौड़में आकर बादशाहके शाहज़ादहको कुछ लेकर छोड़ दिया, और उन्हीं दिनोंमें चन्देरीके गौड़ राजाने सिर उठाया, इ कर्मचन्द पुंवारके बेटे जगमालको फ़ौज देकर चन्देरीपर भेजा, वह उस जीतकर पकड़ लाया; तब महाराणाने उसको तो अपना मातहत बनाया, जगमालको रावका ख़िताब दिया.

अब हम गुजराती बादशाहोंकी लड़ाइयोंका हाल लिखते हैं:-

ईडरके राव भाणके दो लड़के थे, एक सूर्यमल्ल, और दूसरा भीम. राव

देहान्त होनेके बाद राव सूर्यमल्ल गद्दी नशीन हुआ, जो १८ मासतक राज्य करके परलोक को सिधाया, और उसकी जगह उसका लड़का रायमल्ल गद्दी नशीन हुआ, लेकिन् रायमल्लके कमउम्र होनेके कारण उसके काका भीमने ईडरका राज्य छीन लिया. तब राव सूर्यमल्लका पुत्र रायमल्ल महाराणा सांगाकी शरणमें चला आया. महाराणाने अपनी बेटीकी शादी उसके साथ करदेनेका इक़ार किया. फिर कुछ अरसह बाद भीमसिंह तो मरगया, और उसका बेटा भारमल्ल ईडरके राज्यका मालिक बना. तब महाराणा सांगाकी मददसे विक्रमी १५७२ चैत्र [हि० ९२१ सफ़र = .ई० १५१५ मार्च] में रायमल्ल पीछा ईडरका मालिक बनगया. भारमल्ल ईडरसे निकलकर सुल्तान मुज़फ़्फ़र गुजरातीके पास अर्ज़ीऊ गया, जिसपर सुल्तानने अपने प्रधान निज़ामुल्मुल्कको फ़र्माया, कि ईडरका राज्य रायमल्लसे छीनकर भारमल्लको दिलादेना चाहिये, और आप भी अहमदनगरकी तरफ़ आया. निज़ामुल्मुल्कने फ़ौज साथ लेकर ईडरको आघेरा; उसवक़्त मुसल्मानी फ़ौजकी ज़ियादती देखकर रायमल्ल ईडरको छोड़ बीजानगरके पहाड़ोंमें चलागया, लेकिन् भारमल्लको ईडरका राजा बनाकर निज़ामुल्मुल्कने उसका पीछा किया. तब तो रायमल्लने भी पहाड़ोंमेंसे निकलकर निज़ामुल्मुल्ककी फ़ौजपर हमलह किया, जिसमें बहुतसे मुसल्मान मारेगये, और निज़ामुल्मुल्कने शिकस्त पाई. सुल्तान मुज़फ़्फ़रने यह ख़बर सुनकर निज़ामुल्मुल्कको लिखभेजा, कि यह लड़ाई तुमने बे फ़ायदह की, हमारा मत्लब सिर्फ़ ईडर लेनेसे था. सुल्तानका यह ख़त पहुंचनेपर निज़ामुल्मुल्क ईडरको पीछा चला आया.

विक्रमी १५७३ [हि० ९२२ = .ई० १५१६ [में सुल्तान मुज़फ़्फ़र महमूदाबाद (चांपानेर) को गया, जहांसे अपने प्रधान नुस्रतुल्मुल्कको ईडर भेजकर निज़ामुल्मुल्कको अपने पास बुलाया. नुस्रतुल्मुल्कके ईडर पहुंचनेसे पहिले ही निज़ामुल्मुल्क तो जल्दी करके महमूदाबादको चलदिया, और ज़हीरुल्मुल्कको १०० सवारोंसे ईडरमें छोड़गया. नुस्रतुल्मुल्क तो ईडर पहुंचने ही नहीं पाया, आमनगर उर्फ़ अहमदनगरके ज़िलेमें था, कि इतनेमें राव रायमल्लने पहाड़ोंमेंसे निकलकर ईडरपर हमलह करदिया. ज़हीरुल्मुल्क २७ आदमियोंके साथ मारागया. यह ख़बर सुनकर सुल्तानने नुस्रतुल्मुल्कको लिखा, कि बीजापुर बदमआशोंका ठिकाना है, इसलिये उसको लूटलो. इसी अन्तरमें मालवेका सुल्तान महमूद ख़ल्जी मेदिनीराय (१) पूर्बिया राजपूतसे ख़ौफ़ खाकर मांडूसे भागा, और सुल्तान मुज़फ़्फ़र गुजरातीके पास पहुंचा.

---

(१) यह रायसेनका राजा था.

सुल्तान मुज़फ़्फ़र भी बहुतसी फ़ौज लेकर महमूदके साथ मांडूकी तरफ़ चला. यह ख़बर पाकर मेदिनीराय अपने बेटे राय नत्थूको बहुतसे राजपूतों समेत क़िले मांडूमें छोड़कर महमूदके हाथी और १०००० सवार लेकर धार होता हुआ महाराणा सांगाके पास पहुंचा. उधरसे सुल्तान मुज़फ़्फ़रने आकर मांडूके क़िलेको घेरलिया. राय नत्थूकी फ़ौजके राजपूतोंने बाहिर निकलकर शाही फ़ौजपर हमलह किया, जिसमें बहुतसे राजपूत और क़िबाबुल्मुल्कके गिरोहके मुसल्मान मारेगये. फिर राजपूत पीछे क़िलेमें चलेगये, और सुल्तानने अपने अमीरोंको मज्बूत मोर्चोंपर नियत करके क़िलेको घेरा. मेदिनीरायने राय नत्थूको लिख भेजा, कि मैं एक महीनेके अरसहमें महाराणा संग्रामसिंहसे मदद लेकर आता हूं, उस वक़्ततक तुम सुल्तानसे बात चीत करके टालाटूली करते रहना. राय नत्थूने वैसा ही किया. उसने वकील भेजकर सुल्तान मुज़फ़्फ़रको कहलाया, कि हम एक महीनेके अरसहमें क़िलेसे निकलजावेंगे, आप अपनी फ़ौज समेत एक मंज़िल पीछे हठजावें. इसपर सुल्तानने तीन कोस पीछे हटकर अपनी फ़ौजके डेरे किये. क़िला ख़ाली करदेनेकी उम्मेदमें सुल्तान मुज़फ़्फ़रने २० दिन गुज़ारे, लेकिन् फिर यह सुना कि मेदिनीरायने महमूदके बहुतसे हाथी, ज़ेवर और रुपया महाराणा सांगाको नज़ करके उन्हें उज्जैनकी तरफ़ अपनी मददके वास्ते लानेका इरादह किया है. तब सुल्तानने बुर्हानपुरके हाकिम आदिलखां फ़ारूक़ीके साथ क़िबाबुल्मुल्कको बहुतसी फ़ौज देकर महाराणा सांगाके मुक़ाबलहको भेजा, और आप अपने अमीरों समेत क़िले मांडूपर हमलह करनेको रहा. चार दिनतक क़िलेपर बराबर हमले होते रहे, पांचवीं रातको सुल्तान धोखा देनेके वास्ते लड़ाई करनेसे रुका. क़िलेवाले चार दिनके थके हुए होनेके सबब सो गये, और सुल्तानने आधी रातके वक़्त अपने बहादुरोंको सीढ़ियां लगाकर क़िलेपर चढ़ादिया, और भीतरसे दर्वाज़ह खोल देनेके कारण फ़ौज भी क़िलेमें घुसगई. विक्रमी १५७५ चैत्र शुक्ल १५ [हि० ९२४ ता० १४ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १५१८ ता० २६ मार्च] को क़िले वाले राजपूतोंने भी अपने बाल बच्चे व औरतोंको जलाकर हाथमें तलवारें पकड़ीं. लिखा है, कि १९००० राजपूत और हज़ारों मुसल्मान इस लड़ाईमें मारेगये. इसके बाद मांडूकी बादशाहत महमूदको देकर मुज़फ़्फ़रशाह महमूदाबाद (चांपानेर) की तरफ़ चला गया, क्योंकि महाराणा सांगाका उसको ख़ौफ़ था.

तारीख़ फ़िरिश्तहका मुवर्रिख़ लिखता है, कि महाराणा सांगा सुल्तान मुज़फ़्फ़रके ख़ौफ़से पीछे चित्तौड़ चलेगये, लेकिन् यह बात क़ियासमें नहीं आती; क्योंकि महाराणा सांगा जैसे रोब दाब वाले राजा होकर सिर्फ़ मांडूकी क़त्लसे ख़ौफ़ खाकर सुल्तान

मुज़फ़्फ़रके नामसे पीछे हट जावें, जिसमें भी ऐसी ना ताक़तीकी हालतमें, कि क़िलेके १९००० राजपूत मारे गये उनके मुक़ाबलहमें पचास साठ हज़ारसे कम उसकी फ़ौजके आदमी भी न मरे होंगे. इसके सिवा इन मुसल्मान बादशाहोंकी यह स्वाभाविक प्रकृति थी, कि महाराणा खौफ़ खाकर भागते, तो ये चित्तौड़तक उनका पीछा किये बिना हर्गिज़ नहीं रहते. अलावह इसके अगले हालात पढ़नेसे पाठकोंको तारीख़ फ़िरिश्तहके मुवर्रिख़की तरफ़दारी अच्छीतरह मालूम होजावेगी.

मिराति सिकन्दरीमें महाराणा सांगाका मेदिनीराय समेत सारंगपुरतक पहुंचना, और मांडूके क़त्लकी ख़बर सुनकर पीछा चित्तौड़की तरफ़ लौट जाना लिखा है. यदि ऐसा हुआ हो, तो अलबत्तह क़ियासमें आसक्ता है, कि जिन लोगोंकी मददके लिये उनकी चढ़ाई थी, वे लोग मारेगये, तो ऐसे मौक़ेपर लौट आना ही ठीक समझा हो; क्योंकि थोड़े ही दिनोंके बाद इस लड़ाईका नतीजह ज़ुहूरमें आ गया, याने विक्रमी १५७५ [हि० ९२४ = .ई० १५१८] में जब सुल्तान महमूद गागरौनके क़िलेपर चढ़ा, उन दिनों यह क़िला मेदिनीरायके क़बज़हमें होनेके सबब वह महाराणा सांगाके पास अर्ज़ाऊ हुआ, कि महमूद हमको बर्बाद करता है. तब महाराणा सांगा बड़ी जर्रार फ़ौज लेकर गागरौनकी तरफ़ रवानह हुए. जब दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबलह हुआ, उस वक़्त आसिफ़ख़ां गुजरातीने, जो गुजरातके बादशाहकी तरफ़से बहुतसी फ़ौज सहित महमूदका मददगार था, उस दिन लड़ाई करना ना मुनासिब समझकर महमूदको रोका, लेकिन् उसने किसीका कहा न माना और लड़ाई शुरू करदी. इस लड़ाईमें महमूदके ३२ सिपहसालार (सेनापति) और आसिफ़ख़ां वग़ैरह हज़ारों आदमी फ़ौजके साथ मारेगये. फिर सुल्तान महमूद अकेला बड़ी बहादुरीके साथ राजपूतोंसे लड़ा. आख़िरकार सख़्त ज़ख़्मी होकर घोड़ेसे गिरपड़ा. राजपूतोंने उसको उठाकर महाराणाके पास पहुंचाया. महाराणा .इज़्ज़तके साथ उसको पालकीमें बिठाकर चित्तौड़में लेआये. फिर वहां उसका .इलाज करवाया, और कुछ दिनों पीछे बहुतसा फ़ौज ख़र्च, और एक जड़ाऊ ताज उससे लेकर एक हज़ार राजपूतोंके साथ .इज़्ज़तसे उसको मांडू पहुंचादिया, और उसके एक शाहज़ादहको, जो उसीके साथ क़ैद हुआ था, अपने मुलाज़िमोंमें ओलके तौरपर रक्खा. इस शाहज़ादहके रखनेमें यह हिकमत अमली थी, कि आइन्दहको महमूद फिर फ़साद न करने पावे. महमूद ख़ल्जीकी महाराणा सांगाके साथ लड़ाई होकर उसमें आसिफ़ख़ां और उसके बेटे समेत बहुतसे मालवी उमरावोंका माराजाना और बादशाह महमूदका सख़्त ज़ख़्मी होकर महाराणा सांगाकी क़ैदमें आना, फिर

महाराणाका अपनी जवांमर्दीसे उसपर मिहर्बान होकर उसको इ़ज़्ज़तके साथ पीछा मांडूको पहुंचादेना वग़ैरह हाल सुनकर सुल्तान मुज़फ़्फ़र बहुत ही उदास हुआ, और अपने कई सर्दारोंको महमूदके पास भेजकर ख़तसे उसकी तसल्ली की.

तवक़ाति अक्वरीमें अक्वरका बख़्शी निज़ामुद्दीन अहमद लिखता है, कि जो काम महाराणा सांगासे हुआ, वैसा अ़जीव काम आजतक किसीसे न हुआ. सुल्तान मुज़फ़्फ़र गुजरातीने तो महमूदको अपनी पनाहमें आनेपर सिर्फ़ मदद दी थी, लेकिन् लड़ाईमें फ़त्ह पानेके बाद दुश्मनको गिरिफ़्तार करके पीछा उसको राज्य देदेना, यह काम आजतक मालूम नहीं, कि किसी दूसरेने किया हो. जब इस फ़त्हकी खुशीका दर्बार महाराणा संग्रामसिंहने किया उस वक़ इस तवारीख़के मुसन्निफ़ (कर्ता) (कविराज श्यामल दास) के पूर्वज महपा जैतावतको उन्होंने ढोकलिया गांव उदक आघाट लिख दिया था. उस समयका मारवाड़ी भाषाका एक छप्पय मश्हूर है, जो यहांपर दर्ज करते हैं:-

छप्पय.

चढ़तै दिन चीतोड़, तपै शांगण तालावर।
रतनेसर ऊपरा, बणे दरवार बधोतर।
महपानै कर मोज, बड़ा लीधा जस वायक।
ढोकलि़या ऊपरे, शही कीधी शर नायक।
पनरासै समत पिचोतरै, शुकल़ पक्ख शरशावियो॥
वैशाख मास रवि सप्तमी, दीह तेण शांशण दियो॥ १॥

सुल्तान मुज़फ़्फ़रने ईडरपर मुबारिज़ुलमुल्कको हाकिम मुक़र्रर किया था. एक भाटने उसके सामने महाराणा सांगाकी तारीफ़ की, और कहा, कि आज तो कुल हिन्दुस्तानमें महाराणा संग्रामसिंहके बराबर दूसरा कोई राजा नहीं है. यह बात सुनकर मुबारिज़ुलमुल्क वेअदबीके लफ़्ज़ बोल उठा, और एक जानवरका नाम संग्रामसिंह रखकर उसको ईडरके दर्वाज़ेपर बांधदिया, और कहा, कि महाराणा संग्रामसिंह ऐसे मर्द हैं, तो मैं भी तय्यार हूं, यहां आकर अपना ज़ोर आज़मावें. यह सब वृत्तान्त उस भाटने चित्तौड़में आकर महाराणा संग्रामसिंहसे कहा. महाराणाको भी इस बातके सुननेसे बहुत ग़ैरत आई, और उन्होंने ईडरकी तरफ़ गुजरातीके मुल्कपर चढ़ाईका हुक्म देदिया. कहते हैं, कि ४०००० सवार और बहुतसे पैदलोंके साथ विक्रमी १५७५ [हि० ९२५ = ई० १५१८] के अख़ीरमें चित्तौड़से महाराणाने कूच किया. जब वागड़में पहुंचे तो डूंगरपुरके रावल उदयसिंह भी अपने राजपूतों समेत उनकी सेवामें आ हाज़िर हुए. फिर ये डूंगरपुर पहुंचे. यह ख़बर मुबारिज़ुलमुल्कको मिली.

उसने सुल्तान मुज़फ़्फ़रको मदद भेजनेके वास्ते लिखा, लेकिन् सुल्तानसे कुछ मदद न मिली, बल्कि उसने यह कहला भेजा, कि तुमने एक जानवरका नाम संग्रामसिंह रखकर महाराणाको गैरत दिलाई, जिससे वह चढ़कर आये हैं, तो अब अपने कियेका जवाब आप देलो. इसपर प्रथम तो मुबारिज़ुल्मुल्क महाराणा संग्रामसिंहसे लड़ाई करनेके लिये उनके सामने गया, लेकिन् डरकर पीछा ईडरको लौट आया, परन्तु वहां भी उसके पैर न ठहरसके, तब उसने अहमदनगरके क़िलेका सहारा लिया. दूसरे दिन महाराणा संग्रामसिंहने आकर ईडरपर अपना क़ब्ज़ह करलिया, और ईडरसे निकलकर अहमद-नगरको जा घेरा. मुसल्मानोंने किंवाड़ बंध करके क़िलेमेंसे लड़ाई शुरू की. महाराणाने भी अपने लोगोंको अहमदनगरपर हमलह करनेका हुक्म दिया. इस हमलहमें डूंगरसिंह (१) चहुवान बहुत ज़ख़्मी हुआ और उसके भाई बेटे सब मारेगये. डूंगरसिंहके बेटे कान्हसिंहने बड़ी बहादुरी की, याने जब क़िलेके दर्वाज़ेके किंवाड़ तुड़वानेको हाथी हूलनेका मौक़ा आया, और किंवाड़ोंके भालोंके सबबसे हाथी मुहरा न करसका, उस वक़्त कान्हसिंहने भालोंके सामने आकर महावतको ललकारा, कि हाथीको मेरे बदनपर आनेदे, और ऐसा ही हुआ. कान्हसिंहपर हाथीने मुहरा किया, जिससे वह तो मारागया, और किंवाड़ टूटगये. महाराणाकी फ़त्ह हुई, और मलिक मुबारिज़ुल्मुल्क दूसरे रास्तेसे क़िलेके बाहिर निकलकर नदीकी परली तरफ़ जाखड़ा हुआ. वहां भी मेवाड़की फ़ौजने पहुंचकर उसका मुक़ाबलह किया. मुबारिज़ुल्मुल्कके साथ १२०० सवार और १००० पैदल थे. बड़ी मर्दानगीके साथ उसने लड़ाई की, जिसमें उसका सिपहसालार असतखां (असदुल्मुल्क) और दूसरे गुजराती सर्दार मारेगये. फिर ज़ख़्मी मुबारिज़ुल्मुल्क मए ख़िज़रखांके अहमदाबादकी तरफ़ चलागया. महाराणाकी फ़ौजने एक रोज़ ठहरकर अहमदनगरको लूटा, और दूसरे रोज़ वहांसे चलकर बड़नगरको पहुंचे. वहांके ब्राह्मणोंने बाहिर निकलकर महाराणासे बड़ी नम्रताके साथ प्रार्थना की, कि हम आपके भिक्षुक हैं, हमेशहसे आपके बड़ोंने हमारी सहायता की है, इसलिये आप भी इस शहरको लूटना मुआफ़ फ़र्मावें. तब बड़नगरको लूटना मौक़ूफ़ रखकर महाराणा मए फ़ौजके बीलनगर (२) पहुंचे, वहांका हाकिम मलिक (३) लड़ाईमें

(१) डूंगरसिंह चहुवानकी औलाद बागड़में अबतक मौजूद है. डूंगरसिंहको महाराणाने बदनौर का ठिकाना जागीरमें दिया था, जहां उसके बनवाये हुए तालाब, बावड़ियां व महल मौजूद हैं.

(२) तारीख़ फ़िरिश्तह और मिरातिसिकन्दरीमें बीलनगर लिखा है, परन्तु हमारे क़ियाससे बीसलनगर मालूम होता है.

(३) मिरातिसिकन्दरीमें ऐनुल्मुल्क व फ़त्हख़ां नाम लिखा है, लेकिन् माराजाना किसीका नहीं लिखा, क़िलेमें नाज़िमका पनाहुआ. [illegible]ा है.

मारागया. वीलनगरको महाराणाकी फ़ौजने लूटा. फिर वहांसे गुजरातके मुल्कको लूटते हुए महाराणा पीछे चित्तौड़को पधारगये.

जव सुल्तान मुज़फ़्फ़रने अपने मुल्ककी बर्बादी व महाराणाकी चढ़ाईका यह हाल सुना, तो उसने भी अपनी फ़ौजकी तय्यारी की, और इमादुल्मुल्क और क़ैसरख़ांको १०० हाथी और बहुतसी फ़ौज देकर महाराणा सांगाके मुक़ाबलहको भेजा. इन लोगोंने क़स्बह सरगचमें पहुंचकर महाराणा सांगाके वापस चित्तौड़ चलेजानेका हाल सुल्तानको लिखा, और सुल्तानके लिखनेके मुवाफ़िक़ ये लोग अहमदनगरमें ठहरे. सुल्तान मुज़फ़्फ़रने अपने बापके वक्तके ख़ास ग़ुलाम अयाज़को, जो सूरत वग़ैरह दर्याई किनारेका जागीरदार था, बुलाया. उसने बड़ी हिम्मत और मर्दानगीसे बादशाहकी ख़िद्मतमें महाराणाको फ़त्ह करलेनेकी अर्ज़ की, लेकिन् बादशाहने मौक़ा मुनासिब न जानकर कुछ जवाब न दिया. निदान विक्रमी १५७७ पौष शुक्ल [हि० ९२७ मुहर्रम = ई० १५२० डिसेम्बर] में १००००० सवार और १०० हाथी मलिक अयाज़के साथ देकर उसको चित्तौड़, याने मेवाडकी तरफ़ रवानह किया. फिर बादशाहने ताजख़ां और निज़ामुल्मुल्कको २०००० सवार देकर अयाज़की मददके लिये भेजा. जब मलिक अयाज़ बागड़में पहुंचा और वहां उसने डूंगरपुर व बांसवाड़ेको बर्बाद किया, उस मक़ामपर बांसवाड़ेका रावल उदयसिंह उग्रसेन पूर्वियाके साथ छापा मारनेको पहाड़ोंमें तय्यार था. मुसल्मानोंको इनके आनेकी ख़बर होगई, इसलिये अज़ज़उल्मुल्क और सफ़दरख़ां दोनों सिपहसालारोंने इनका मुक़ाबलह किया, जिसमें उग्रसेन ज़ख़्मी हुआ, और ८० राजपूत व बहुतसे मुसल्मान मारेगये. मलिक अयाज़ भी इस लड़ाईमें मददके लिये आ पहुंचा. दूसरे दिन क़िवामुल्मुल्क तो बांसवाड़ाके पहाड़ोंकी तरफ़ चला, और अयाज़ने कुल फ़ौजके साथ कूच करके मन्दसौरके क़िलेको जाघेरा, जहांका क़िलेदार अशोकमल्ल (१) राजपूत महाराणाकी तरफ़से था. यह बात सुनकर महाराणा सांगा भी अपनी फ़ौज तय्यार करके मन्दसौरकी तरफ़ चले. इसी अरसहमें मांडूका बादशाह महमूद ख़ल्जी, जो मुज़फ़्फ़रका इहसानमन्द था, मलिक अयाज़की मददको आ पहुंचा. फिर क़िवामुल्मुल्क और मलिक अयाज़के आपसमें नाइत्तिफ़ाक़ी फैलगई. अयाज़ने चाहा, कि क़िवामुल्मुल्कके नाम फ़त्ह नहो, और इसने चाहा, कि अयाज़के नाम फ़त्ह नहो. फिर एक सुरंग, जो क़िलेकी दीवारमें लगाया था, उड़ाया गया, लेकिन् उससे कुछ कामयाबी न हुई. इसी

---

(१) मिराति सिकन्दरीमें अशोकमल्ल लिखा पहुंचे. है, लेकिन् फ़िरिश्तहमें नहीं लिखा.

अरसहमें महाराणा भी मन्दसौरसे १२ कोसके फ़ासिलहपर मौज़े नांदसेमें आ पहुंचे, दोनों तरफ़से सुलहके पैग़ाम होने लगे, और आखरकार सुलह होना क़रार पाया. महमूद ख़ल्जीको अयाज़ने पीछा लौटादिया, और आप ख़ल्जीपुरकी तरफ़ चलागया. तारीख़ फ़िरिश्तहमें लिखा है, कि जब मलिक अयाज़ चांपानेर मक़ामपर बादशाह मुज़फ़्फ़रकी ख़िद्मतमें पहुंचा, तो सुल्तान मुज़फ़्फ़र उससे बहुत नाराज़ हुआ, कि तुमने सुलह क्यों करली ? और यह भी लिखा है, कि महाराणा सांगाने मलिक अयाज़के लिखनेसे क़सबह मुंडासामें अपने बेटेको बहुतसे तुह्फ़े लेकर बादशाहकी ख़िद्मतमें भेजा.

विक्रमी १५८१ [हि० ९३० = .ई० १५२४] में सुल्तान मुज़फ़्फ़रका शाहज़ादह बहादुरखां अपने भाई सिकन्दरख़ांकी अदावत, और आमद की कमी व ख़र्चकी ज़ियादतीके सबब अपने बापसे नाराज़ होकर चित्तौड़ आया. महाराणा सांगाने उसकी बहुत ख़ातिर व तसल्ली की, और महाराणाकी माता बाईजीराज झालीजीने उसको अपना फ़र्ज़न्द (बेटा) बनाया.

हम यहांपर फ़ार्सी मुवर्रिख़ोंके बयानमें कुछ फ़र्क़ बतलाते हैं, कि उन्होंने अपनी अपनी तवारीख़ोंमें मुसल्मानोंकी तरफ़दारी की है, याने तारीख़ फ़िरिश्तहमें तो बहादुरखां और महाराणा संग्रामसिंहकी गुफ़्तगूसे ज़ाहिर होता है, कि महाराणाने उक्त शाहज़ादहके आनेपर उसकी ऐसी ख़ातिरदारी की, जैसी कि अपने मालिककी करते हैं; और इसी हालको मिरातिसिकन्दरीमें देखनेसे ऐसा प्रतीत होता है, कि किसी बड़े आदमीने किसी .इज़्ज़तदार आदमीकी तक्लीफ़ मिटानेको अपना बड़प्पन दिखाया हो, सो ख़ैर. अब हम वह हाल लिखते हैं, जो मिराति सिकन्दरीके सिवा न तो किसी दूसरी किताबमें और न हमारे यहांकी पोथियोंमें लिखा देखा गया. वह यह है, कि जब सुल्तान मुज़फ़्फ़रका शाहज़ादह बहादुरखां चित्तौड़में आकर रहा, उस समयमें एक दिन महाराणाके भतीजेने शाहज़ादहको दावत दी थी. रातके वक़्त उस जल्सेमें नाचने गाने और नशे वग़ैरहका शग़ल (कार्य) होने लगा, उसवक़्त शाहज़ादहकी निगाह एक पातरकी तरफ़ देखकर महाराणाके भतीजेने कहा, कि यह शरीफ़ज़ादी अहमदनगरकी लूटमें महाराणाके हाथ आई है. इस बातके सुनतेही शाहज़ादहसे न रहा गया, और उसने एक हाथ तलवारका ऐसा मारा, कि महाराणाके भतीजेके दो टुकड़े होगये. इसपर कुल राजपूतोंने जोशमें आकर शाहज़ादहको मारनेका इरादह किया. तब बाईजीराज झालीजी, याने महाराणा सांगाकी माताने मना किया, और कहा कि इसको कोई मारेगा तो मैं अपनी जान देदूंगी; इस सबबसे शाहज़ादह बचकर मेवातकी तरफ़ दिल्लीको रवानह हुआ.

विक्रमी १५८२ फाल्गुन शुक्ल ३ [हि० ९३२ ता० २ जमादियुल्अव्वल = ई० १५२६ ता० १५ फ़ेब्रुअरी] को सुल्तान मुज़फ़्फ़रका देहान्त हुआ, और उसका बड़ा बेटा सिकन्दर तख़्त नशीन हुआ, और सिकन्दरका छोटा भाई लतीफ़ख़ां अपने भाईसे बाग़ी होकर चित्तौड़के जंगलोंमें चला आया, जिसकी गिरिफ़्तारीके लिये सिकन्दरने मलिक लतीफ़को, जिसका ख़िताब शरज़हख़ां था, भेजा. महाराणाके लश्करने निकलने भागनेके जो नाके घाटे थे उनको बन्द करके मलिक लतीफ़को मए १७०० आदमियोंके क़त्ल करडाला. फिर सिकन्दरने कैसरख़ांको बहुतसी फ़ौज देकर चित्तौड़की तरफ़ रवानह किया, लेकिन् मौतके पंजेमें आकर तीन महीने १७ दिन सल्तनत करनेके बाद सिकन्दर अपने मुल्कमें आप ही मारागया. सिकन्दरके मरनेकी ख़बर सुनकर बहादुरख़ां चित्तौड़की तरफ़ आया, यहां उसके बहुतसे गुजराती सिपाही भी आ शामिल हुए. सुल्तान मुज़फ़्फ़रका शाहज़ादह चांदख़ां और इब्राहीम ये दोनों पहिलेसे ही महाराणा संग्रामसिंहके यहां मुलाज़िमोंमें आ रहे थे. इस मौक़ेपर दोनोंने बहादुरख़ांसे मुलाक़ात की. इब्राहीम तो बहादुरख़ांके साथ गुजरातको आया, और चांदख़ां महाराणाके पास रहा. बहादुरशाह अहमदाबादमें जाकर गुजरातके बादशाही तख़्तपर बैठा.

महाराणा सांगाके पाटवी याने सबसे बड़े पुत्र भोजराज थे, जिनको मेड़ताके मेड़तिया राजा वीरमदेवकी बेटी और जयमल्लकी बहिन ब्याही गई थी. इन राजकुमारका देहान्त महाराणाकी मौजूदगीमें हो चुका था, इसलिये राजकुमार रत्नसिंह, जो राठौड़ बाघाकी बेटी महाराणी धनबाईके पेटसे पैदाहुए थे, भोजराजके मरने बाद राज्यके वारिस ठहरे. महाराणा सांगाने एक विवाह बूंदीके हाड़ा भांडाके बेटे नर्बदकी बेटी करमेतीबाईके साथ भी किया था, जिनसे दो राजकुमार उत्पन्न हुए, १- विक्रमादित्य और २- उदयसिंह. उक्त महाराणाकी मिहर्बानी महाराणी हाड़ीपर ज़ियादह थी. एक दिन महाराणा सांगासे उन्होंने अर्ज़ की, कि आपके बड़े बेटे रत्नसिंह तो गद्दीके वारिस हैं, और मेरे पेटके विक्रमादित्य और उदयसिंह छोटे हैं, इस लिये इनको आपके हाथसे जागीर मिलजावे तो अच्छा है, वर्नह रत्नसिंह इन दोनों भाइयोंको नाराज़गीके सबबसे जागीर नहीं देंगे, और ये दोनों मारे मारे फिरेंगे. तब महाराणाने फ़र्माया, कि तुम्हारी मर्ज़ी हो उस जागीरकी अर्ज़ करो, वही इन दोनोंको मिल जावेगी इसपर महाराणीने अर्ज़ की, कि यदि रणथम्भोरका क़िला पर्गनों सहित इन दोनोंको मिलकर मेरे भाई बूंदीके मालिक सूर्यमल्लको इनका हाथ पकड़ा दियाजावे, तो इनकी बुन्याद मज़्बूत होजानेमें सन्देह नहीं रहे. महाराणाने उक्त महाराणीकी यह अर्ज़ मंज़ूर

फ़र्माई, और ज़नानहसे बाहिर पधारकर दर्बार किया, और सूर्यमल्लको हुक्म दिया, कि हम रणथम्भोरका क़िला तुम्हारे भानूजे विक्रमादित्य व उदयसिंहको देते हैं, और तुमको इनका हाथ पकड़ाते हैं, कि तुम इनके मददगार रहो. तब सूर्यमल्लने अर्ज़ की, कि हम तो गादीके नौकर हैं, जो मेवाड़की गद्दीपर बैठेगा उसीका हुक्म सिरपर रक्खेंगे. अगर आपके हुक्मसे विक्रमादित्य और उदयसिंहका हाथ पकडूं, तो संभव है, कि कभी न कभी मुझको रत्नसिंहसे मुक़ाबलह करना पड़े, क्योंकि रणथम्भोरका दियाजाना रत्नसिंहको नागुवार गुज़रेगा. यदि मुझको इस विशयमें रत्नसिंहकी भी इजाज़त होजावे, तो आपके हुक्मकी तामील करना हम लोगोंका काम ही है. तब महाराणाने रत्नसिंह को बुलाकर फ़र्माया, कि हम तुम्हारे दोनों छोटे भाइयोंको रणथम्भोरका क़िला मए पर्गनोंके देते हैं, इसमें तुम्हारी क्या राय है ? तब रत्नसिंहने अर्ज़ की, कि जिसमें हुज़ूर की खुशी हो उसीमें मैं भी खुश हूं. अगर्चि रत्नसिंहके दिलमें यह बात नागुवार गुज़री, परन्तु उसको ऐसे प्रतापी पिताके सामने अपने दिलका हाल खोलदेनेमें राजके हक़से विमुख रहनेका भय था, इसलिये हां में हां मिलानी ही पड़ी. फिर महाराणाने हुक्म दिया, कि हमारा मन्शा है कि बूंदीके हाड़ा सूर्यमल्लको तुम्हारे इन दोनों भाइयोंका हाथ पकडाकर इनकी जागीरका ज़िम्मेवार उसको बनादियाजावे, परन्तु सूर्यमल्ल तुम्हारी सम्मति चाहता है. तब रत्नसिंहने सूर्यमल्लसे कहा, कि मैं अपने भाइयोंको रणथम्भोर दियाजानेमें बहुत खुश हूं, और तुमको भी उचित है, कि श्री महाराणाके हुक्मकी तामील करो. इसपर सूर्यमल्लने महाराणाके हुक्मके मुवाफ़िक़ विक्रमादित्य व उदयसिंहका हाथ पकड़कर रणथम्भोरका पट्टा महाराणासे लेलिया.

अब हम तीमूरी ख़ानदानके मुग़ल बादशाह बाबरका अपने सिरपर हिन्दुस्तानकी सल्तनतका ताज रखकर महाराणा सांगासे बयाना मक़ामपर मुक़ाबलह करने और उसमें फ़त्हयाब होनेका हाल लिखते हैं. जबकि बाबरने इब्राहीम लोदीको शिकस्त देकर दिल्लीपर अपना क़ब्ज़ह करलिया, तो उसके बाद वह हिन्दुओंकी तरफ़ मुतवज्जिह हुआ. उन दिनों हिन्दू राजाओंमें महाराणा सांगा अव्वल दरजहके महाराजा थे, और हिन्दुस्तानके कई राजा इनको ख़िराज देते थे. उन्हीं दिनोंमें बयानेका मालिक निज़ामखां महाराणा सांगा और बाबर दोनोंकी ताबेदारीसे टालाटूली करने लगा; याने जब महाराणा संग्रामसिंहने उसको चाकरीके लिये कहा, तो बाबरकी दबागतका बहानह किया, और बाबरने दबाया, तो महाराणाका ताबेदार होना बयान करके टालदिया. इस सबबसे बाबरने निज़ामखांपर चढ़ाई करदी. निज़ामखाने बादशाहसे डरकर क़िला उसके हवाले करदिया, और महाराणा सांगाने यह हाल सुना. जबकि बाबर अफ़ग़ानिस्तानको

फ़त्ह कररहा था, उन दिनों इब्राहीम लोदीकी अदावतसे महाराणा सांगाने भी उससे दोस्तानह ख़त किताबत जारी की (१) थी; लेकिन् ख़ास इब्राहीम लोदीसे ही महाराणाकी अदावत नहीं थी, बल्कि शाही ताजसे थी. जब बाबर दिल्लीका बादशाह हुआ, तो वही अदावत उससे भी रहने लगी. उन्हीं दिनोंमें बाबरने मेवातके नव्वाब हसनख़ांके एक लड़केको, जो उसके पास ओलके तौरपर क़ैद था, इस ग़रज़से छोड़दिया, कि इसका बाप (हसनख़ां) मेरा फ़र्मांबर्दार होकर मुहब्बतसे पेश आवेगा, लेकिन् उसका नतीजह उल्टा हुआ, याने हसनख़ां १०००० सवार लेकर महाराणासे आमिला. महाराणाने भी बयानेका क़िला लेने और हसनख़ांकी मदद करनेकी तय्यारी की. उस वक़्त इब्राहीम लोदीके कितनेही अमीर महाराणाकी फ़ौजमें आमिले. दिल्लीके बादशाह सुल्तान सिकन्दरका बेटा महमूदख़ां, जिसके पास १०००० सवार थे, और मारवाड़का राव गांगा व आंबेरका राजा पृथ्वीराज भी अपनी फ़ौज समेत महाराणाके लश्करमें आ शामिल हुए; और इसी तरह राजा ब्रह्मदेव, व राजा नरसिंहदेव, चंदेरीका राजा मेदिनीराय, डूंगरपुरका रावल उदयसिंह, चन्द्रभाण, माणकचन्द चहुवान, और राय दिलीप वग़ैरह पचास साठ हज़ार राजपूतों समेत महाराणा सांगाकी फ़ौजमें शरीक होगये. इस तरहपर महाराणा सांगा दो लाख सवार और बहुतसी पै[illegible]ज लेकर बयानेकी तरफ़ चले. जब महाराणा रणथम्भोरमें पहुंचे, तो बाबरको बड़ी भारी फ़ौज साथ लेकर इनके आनेकी ख़बर हुई; तब उसने रायसेनके राजा सलहदी तंवरकी मारिफ़त सुलहकी ख़्वाहिशसे ख़त किताबत की. यह बात महाराणाको पसन्द आई, लेकिन् दुश्मनपर ज़ियादह दबाव डालनेके लिये फ़ौजका कूच करदिया. फिर वहांसे बयानेके क़रीब पहुंचे, जो आगरेसे ५० मीलके फ़ासिलहपर है, और जिसपर बाबरने क़बज़ह करलिया था. बाबर वहांसे निकलकर सीकरी फ़त्हपुरमें आपड़ा, जो वहांसे २० मीलके फ़ासिलहपर है. इधरसे महाराणा सांगाकी फ़ौजने आकर शाही फ़ौजकी हरावलपर हमलह किया. विक्रमी १५८३ चैत्र कृष्ण ६ [हि० ९३३ ता० २० जमादियुल्अव्वल = ई० १५२७ ता० २१ फ़ेब्रुअरी] को इस लड़ाईमें बाबरकी फ़ौजने शिकस्त पाई, और भागकर कुछ फ़ासिलहपर जा ठहरी. यदि महाराणाकी फ़ौजका उसी वक़्त दूसरा हमलह होता, तो ज़ुरूर बाबरके पैर न ठहर सक्ते, क्योंकि उसकी फ़ौजके सिपाहियोंका

---

(१) बाबर अपनी किताब तुज़क बाबरी क़लमीके पृष्ठ २२३ में लिखता है, कि जब मैं काबुलमें था तब मेरे पास राणा सांगाका एल्ची आया था, जिसके साथ यह क़रार पाया, कि बादशाह तो उधरसे दिल्लीकी तरफ़ चढ़े और हम इधरसे आगरेकी तरफ़ चढ़ाई करें, लेकिन् मैंने इब्राहीम लोदीको फ़त्ह करके दिल्ली व आगरेपर क़बज़ह करलिया तो भी वह न आया.

दिल टूटगया था. मुसीवतके मारे भागे हुए सिपाहियोंका ज़बानी बयान सुनकर तो बाबरकी सारी फ़ौजका दिल शिकस्तह होता ही जाता था, कि इसी मुसीवतमें एक दूसरी आफ़त और पैदा हुई, याने एक काबुली ज्योतिषीने कहा, कि मंगलका तारा सामने है, इसलिये बादशाही फ़ौजकी ज़ुरूर हार होगी. इस ज्योतिषीके वचनने बाबरके कुल अमीरों व फ़ौजी अफ्सरों वगैरहके दिलोंमें यकायक ऐसी घबराहट पैदा करदी, कि सलाह मश्वरेमें शरीक होना तो दरकिनार, अपने मातहत सिपाहियोंके सामने उनके चिह्रोंका रंग तक फीका पड़गया. इससे हिन्दुस्तानी फ़ौज तो बादशाहका साथ छोड़कर भागने लगी. इसका प्रभाव अमीरों व अफ़्सरोंपर ही नहीं हुआ, बल्कि खुद बादशाहको भी पूरा अन्देशह पैदा होगया था; लेकिन् बाबरको बहुतसी मुसीवतें उठा उठाकर आदत पड़रही थी, इससे वह नाउम्मेद नहीं हुआ, मगर उसके दिलपर ख़ौफ इतना छागया था, कि उसने अपने मज़्हबी तरीकेके ख़िलाफ़ जो जो गुनाह किये थे, उनसे तौबह की; याने शराब पीना छोड़कर सोने चांदीके पियाले वगैरह फ़क़ीरोंको लुटादिये, और खुदासे अह्द किया, कि यह लडाई में जीतूंगा, तो डाढ़ी मुंडाना और मुसल्मानोंसे महसूल याने स्टैंप लेना छोड़ दूंगा. फिर तो बाबरको फ़ुर्सत ग़नीमत मिलनेसे सन्तोष आता गया, और उसने अपनी सेनाके लोगोंको खूब तसल्ली दी और समझाया, कि भाइयो भागकर बे.इज़्ज़तीके साथ जीनेसे तो सिपाहीके लिये लड़ाईमें मरजाना ही बिह्तर है. अगर लड़ाईमें मरोगे, तो शहीद होगे, और ज़िन्दह रहोगे, तो ग़ाज़ी कहलाओगे, एक वक्त सबको मरना है, लेकिन् बे.इज़्ज़तीका जीना मरनेसे बदतर है. बाबरके ऐसे ऐसे नसीहतके वचनोंने उन्हीं २०००० विलायती सिपाहियोंके दिलपर ऐसा असर किया, कि सबने एक दिल होकर बुलन्द आवाज़से कुर्आनकी कसम खाकर कहा, कि हम मरजावेंगे, लेकिन् पीछे कभी न हटेंगे. अगर्चि बाबरने अपनी फ़ौजको हिम्मत और तसल्ली दिलाकर मज़बूत किया, लेकिन् उसको फ़त्हकी उम्मेद नहीं थी, इसलिये रायसेनके राजा सलहदी तंवरकी मारिफ़त महाराणाके पास फिर सुलहका पैग़ाम भेजा, और बहुतेरा चाहा कि, जो जो शर्तें महाराणा सांगा चाहें वे सब मन्जूर करली जावें, व कौल कर्नेल् टॉडके कि उसने ख़िराज देना भी मंजूर करलिया था, लेकिन् महाराणाने एक भी बात मंजूर नहीं की, क्योंकि उनके मुसाहिब लोग रायसेनके राजा सलहदीसे अदावत रखते थे, इसलिये इस मुआमलेमें उक्त राजाका बीचमें रहना उनको नागुवार गुज़रा, और इस सबबसे उन्होंने महाराणाको अपनी फ़ौजकी ज़ियादती और मर्दानगी, और मुसल्मानोंकी पस्त हिम्मती दिखलाकर सुलहकी बातको न जमने दिया. तब बाबरने विचारा, कि अब देर होना ठीक नहीं है, जो कुछ होना हो जल्द होजावे. फिर

उसने मोर्चोंके सामने अपनी फ़ौजको जमाया, और तोपें बराबर रखदीं. जब लश्करकी पूरी दुरुस्ती होगई, तो आप घोड़ेपर चढ़कर सारी फ़ौजमें घूमा, और सिपाहियोंको बड़े बड़े ख़िताबोंके साथ पुकारकर उनके दिली जोशको बढ़ाया, और सर्दारोंको लड़ाईका ढंग बतलाकर हिदायतें कीं. विक्रमी १५८४ चैत्र शुक्ल १५ [हि० ९३३ ता० १३ जमादियुस्सानी = ई० १५२७ ता० १६ मार्च] को दोनों तरफ़से हमलह हुआ. इस लड़ाईमें राजपूतोंने अपने क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तोपोंके सामने हमलह करदिया. तोपोंमें ग्राफ़ भरे हुए थे, एक दम बाढ़ झड़नेसे हज़ारहा राजपूत मारे गये; और रायसेनका राजा सलहदी तंवर, जिसको उसकी बात न मानी जानेसे बहुत बड़ा रंज हुआ था, महाराणाकी फ़ौजके हरावलसे निकलकर ३५००० सवारों समेत बाबरसे जा मिला. इतनेहीमें महाराणा सांगाके चिहरेपर एक ऐसा सख़्त तीर लगा, कि जिससे उनको मूर्छा आगई. उसीवक्त आंबेर और जोधपुरके राजा व कितनेही मेवाड़ी सर्दार उसी मूर्छाकी हालतमें महाराणाको पालकीमें बिठाकर मेवाड़की तरफ़ ले निकले. तब मेवाड़ी सर्दारोंने, जो फ़ौजमें लड़ाई कर रहे थे, यह सोचा कि बग़ैर मालिकके रहीसही फ़ौजके भी पैर उखड़ जावेंगे, इसलिये हलवदके झाला अज्जाको छत्र चंवर वग़ैरह महाराणाका कुल लवाज़िमह देकर महाराणाकी सवारीके हाथीपर बिठादिया. अज्जाका छोटा भाई सज्जा तो मेवाड़की तरफ़ महाराणाके साथ रवानह होचुका था, और यह नैमित्तिक (कामके लिये) महाराणा बनकर हाथीपर चंवर उड़वाने लगा. तब तमाम सर्दारोंने जो लड़ाईमें मौजूद थे, निश्चय मानलिया, कि लड़ाईमें महाराणा मौजूद हैं; यदि पीछे पैर हटेंगे, तो पुश्तोंतक हमारे वंशको कलंकका धब्बा लगेगा, इसलिये दुश्मनोंकी फ़ौजकी तरफ़ सबने घोड़े उठादिये; लेकिन् बहुतसे तो तोपोंके ग्राफ़से तमाम होगये, और कितनेही बहादुरोंने सख़्त ज़ख़्मी होनेपर भी तलवारोंसे बाबरकी फ़ौजका मुक़ाबलह किया, परन्तु अख़ीरमें सब मारे गये. माणकचन्द व चन्द्रभाण चहुवान, हसनखां मेवाती, महमूदख़ां लोदी, रावल उदयसिंह, रावत् रत्नसिंह चूंडावत कांदलोत, झाला अज्जा सजावत, सोनगरा रामदास, गोकुलदास प्रमार, रायमल्ल राठौड़, और खेतसी व रत्नसिंह वग़ैरह बड़े बड़े सर्दार इस लड़ाईमें मारे गये, और फ़तह बाबरको नसीब हुई. इस फ़तहकी ख़ुशी जो बाबरको हुई, वह तुज़क बाबरीसे अच्छी तरह ज़ाहिर है, क्योंकि बाबरको फ़तहयाब होनेकी उम्मेद नहीं थी.

जब राजपूतानहके राजा व सर्दार लोग महाराणा सांगाको पालकीमें लिये हुए, गांव बसवा (१) में पहुंचे, जो आजकल जयपुरकी उत्तरी सीमापर है, तो वहांपर

(१) अमरकाव्यमें इन्तिक़ाल कालपी गांवमें और अन्तिम क्रिया मांडलगढ़में होना लिखा है.

महाराणाकी मूर्छा खुली, उसवक़ उन्होंने लोगोंको फ़र्माया, कि फ़ौजकी क्या हालत है, और फ़तह किसकी और शिकस्त किसकी हुई ? तब लोगोंने अ़र्ज़ की, कि बाबरकी फ़त्ह हुई और आपकी कुल फ़ौज कटगई. आपको ज़ख़्मी और मूर्छित समझकर हम लोग कई सर्दारों समेत ले निकले हैं. यह सुनकर महाराणाने कहा, कि तुमने बहुत बुरा किया, कि मुझको लड़ाईकी जगहसे ले आये. यह कहकर फिर वहीं मक़ाम करदिया, और फ़र्माया कि मैं बाबरको फ़त्ह किये विना पीछा चित्तौड़ नहीं जाऊंगा. इसके बाद उसी मक़ामसे फ़ौज एकट्ठी करनेके लिये काग़ज़ लिखेगये. कहते हैं कि महाराणाके इस दोबारह लड़ाई करनेके इरादहको बहुत आदमियोंने रोका, लेकिन् उन्होंने अपने इरादहको नहीं छोड़ा. तब नमकहरामोंने उनको ज़हर देदिया. यदि यह महाराणा ज़िन्दह रहते, तो यक़ीन था, कि बाबरसे ज़रूर दोबारह मुक़ाबलह करते. बाबर अगर्चि फ़त्हयाब हुआ, लेकिन् इसमें सन्देह नहीं कि वह इस बड़े मारिकेसे नाताक़त भी होगया था, और राजपूतोंमें वतनी कुव्वत बाक़ी थी, इसलिये यदि फिर हमलह होता, तो बाबरको मुश्किल गुज़रती. इस लड़ाईके बाद बाबरने अपना लक़ब " ग़ाज़ी " रक्खा, और उन मुर्दोंकी खोपरियोंसे एक मनार तय्यार करवाया जो लड़ाईमें मारे गये थे; लेकिन् बयानाके दक्षिणकी तरफ़ मेवाड़के इलाक़ह पर दिल चलानेमें उसको तअ़म्मुलही रखना पड़ा. काणोता व बसवा मेवाड़की उत्तरी सीमा क़ाइम हुई.

ऊपर बयान कीहुई लड़ाईका हाल बाबर बादशाहने अपनी किताब तुज़क बाबरीके पत्र २४२ - २५० में बड़े तअ़स्सुबके साथ लिखा है, जिसका खुलासह हम नीचे दर्ज करते हैं:-

वह लिखता है, कि हमारी फ़तह दिल्ली, आगरा, व जौनपुर वग़ैरहपर हुई, और हिन्दू व मुसल्मान सबने हमारी ताबेदारी कुबूल की, सिर्फ़ राणा सांगाने सब मुख़ालिफ़ोंका सरगिरोह बनकर सिर फेरा. वह विलायत हिन्दमें इस तरह ग़ालिब था, कि जिन राजा और रावोंने किसीकी ताबेदारी नहीं की थी, वे भी अपने बड़प्पनको छोड़कर उसके झंडेके नीचे आये, और २०० मुसल्मानी शह्र मए मस्जिदों और बालबच्चोंके उसके क़ाबूमें थे, और मस्जिदें उसने ख़राब करडाली थीं. एक लाख सवार उसके तह्तमें होनेसे क़ाइदह विलायतके मुताबिक़ उसका मुल्क दस किरोड़ रुपये सालियानह आमदनीको पहुंचा था, और बड़े बड़े नामी दस सर्दार इस्लामकी अ़दावतसे उसके साथ थे. राजा सलहदी तंवर (रायसेनका), ३०००० सवारोंका मालिक; रावल उदयसिंह बागड़ी (डूंगरपुरका) १२००० सवारोंका

मालिक; मेदिनीराय (चन्देरीका), १२००० सवारोंका मालिक; हसनखां मेवाती, १२००० सवारोंका मालिक; भारमल्ल ईडरी (ईडरका), ४००० सवारोंका मालिक; नरवद हाड़ा (बूंदीका), ७००० सवारोंका मालिक; शत्रुदेव खीची (गागरौनका), ६००० सवारोंका मालिक; वीरमदेव (मेड़ताका), ४००० सवारोंका मालिक; नरसिंहदेव चहुवान, ४००० सवारोंका मालिक; और सुल्तान सिकन्दरका बेटा शाहज़ादह महमूदखां, १०००० सवारोंका मालिक; जिनकी कुल जमइयत दो लाख एक हज़ार सवार होती है, इस्लामके विरुद्ध चढ़कर आये. इधर मुसल्मान भी जिहाद समझकर तय्यार होगये. हिज्री ९३३ ता० १३ जमादियुस्सानी शनैश्चर [वि० १५८४ चैत्र शुक्ल १५ = .ई० १५२७ ता० १६ मार्च] के दिन ज़िले खान्वा .इलाके बयानामें मुखालिफ़के लश्करसे दो कोसपर बादशाही लश्कर जमा हुआ था. यह सुनकर मुखालिफ़ लोग इस्लामकी बर्बादीके लिये हाथियोंको तय्यार और फ़ौजको आरास्तह करके लड़ाईके वास्ते मुसल्मानोंसे मुक़ाबिल हुए. इधर मुसल्मानी लश्करने भी तय्यारी की. दस्तूर रूमके मुवाफ़िक़ बन्दूक़चियोंकी हिफ़ाज़तके लिये गाड़ियोंकी क़तारको जंजीरबन्ध करदी, और कुल बन्दोबस्त तारीफ़के लाइक़ किया. निज़ामुद्दीन अली खलीफ़ाने इस कामको बड़ी कोशिशसे किया, सब सर्दारोंने और मैंने भी उसके कामको पसन्द किया. शाही फ़ौजकी तर्तीब इस तरह कीगई, कि बीचमें मैं (बादशाह बाबर) रहा, और दाहिनी तरफ़ मेरा भाई चीन तीमूर सुल्तान, शाहज़ादह सुलैमानशाह, ख्वाजिह दोस्त खाविन्द, यूनसअली, शाह मन्सूर बर्लास, दर्वेश मुहम्मद सारवान, अब्दुल्लाह किताबदार, और दोस्त एशक आक़ा, अपनी अपनी जगह खड़े हुए, और बाईं तरफ़ बहलोल लोदीका बेटा, सुल्तान अलाउद्दीन आलमखां निज़ामुद्दीन अली खलीफ़ा, शैख़ जैन खवाफ़ी, मुहब्बेअली, निज़ामुद्दीनअली खलीफ़ाका बेटा तर्दीबेग, और उसका भतीजा शेरअफ़्गन, आराइशखां और ख्वाजिह हुसैन वग़ैरह बड़े बड़े सर्दार अपनी अपनी जगहपर जमगये. इस तरह ख़ास फ़ौजकी तर्तीब हुई. अब बरनग़ार फ़ौज (बादशाहके दाहिनी तरफ़की सेना) में शाहज़ादह हुमायूं बहादुर, जिसके दाहिनी तरफ़ क़ासिम हुसैन सुल्तान, अहमद यूसुफ़ ओग़लाक़ची, हिन्दूबेग कोचीन, खुस्रौ कोकलताश, क़िमामबेग उर्दूशाह, वलीखाज़िनकराकोरी, पीर कुली सीस्तानी, सुलैमान, ख्वाजिह पहलवान बदख़्शी, अब्दुश्शकूर, और सुलैमान-आक़ा एल्ची सीस्तानी मुक़र्रर हुए; और शाहज़ादहके बाईं तरफ़ मीर हमामुहम्मदीन कोकलताश, ख्वाजिह की असद जामदार तईनात हुए; और बरनग़ार बादशाहीमें हिन्दुस्तानी अमीरोंमेंसे खानखाना दिलावरखां, मलिकदाद किरांनी, और शैख़ घूरन

क़ाइम हुए. शाही फ़ौजके जरन्ग़ार (बादशाहके बाई तरफ़की सेना) में सय्यद महदी ख़्वाजिह, मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा, आदिल सुल्तान, अब्दुल् अज़ीज़ मीर आख़ोर मुहम्मदअली खिंगजंग, कुतुल्ककदम कराविल, शाहहुसैन बारकी, और जानीबेग अन्का वग़ैरहने क़तार जमाई, और इस गिरोहमें हिन्दके अमीर जलालख़ां व कमालख़ां, सुल्तान बहलोल लोदीके पोते, निज़ामख़ां बयानावाला थे. बरन्ग़ारकी मददको तरदीक और मलिक क़ासिम वग़ैरह कई मुग़ल सर्दार रक्खे; और जरन्ग़ारकी मददको मोमिन अन्का, रुस्तम तुर्कमान वग़ैरह मुक़र्रर हुए. सुल्तान मुहम्मद बख़्शी सर्दारोंको अपनी अपनी जगहपर जमाकर आप बादशाही हुक्म सुनने और उसकी तामील करानेको मुस्तइद रहा. जब सब लोग जमगये, तब बादशाहने हुक्म दिया, कि बिदून हुक्म हमारे कोई अपनी जगहसे न हिले, और बिना इजाज़त लड़ाई नकरे. क़रीबन् १ पहर और दो घड़ी दिन चढ़े लड़ाई शुरू होगई. बरन्ग़ार और जरन्ग़ारसे ऐसी भारी लड़ाई हुई, कि जिसका शोर आसमानतक पहुंचा, याने महाराणाकी जरन्ग़ार शाही बरन्ग़ारपर झुकी और खुस्रो कोकलताश और मलिक क़ासिमपर हमलह किया. तब शाही हुक्मसे चीन तीमूर सुल्तान उनकी मददको गया, और राजपूतोंको हटाकर उनकी फ़ौजमें पहुंचादिया. यह कार्रवाई तीमूर सुल्तानकी शुमार कीगई. मुस्तफ़ा रूमीने शाहज़ादह हुमायूंकी फ़ौजसे निकलकर गाड़ियोंको सामने लाकर बन्दूकों और तोपोंसे तरफ़ सानीकी फ़ौजी क़तारोंको तोड़ना शुरू किया. ऐन लड़ाईमें उसकी मददको क़ासिमहुसैन सुल्तान, अहमद यूसुफ़, और क़िमामबेग बादशाही हुक्मसे पहुंचे. तरफ़ सानीकी फ़ौज वाले भी दम बदम अपने आदमियोंकी मददको चले आते थे. बादशाहने हिन्दूबेग कोचीन, और उसके पीछे मुहम्मदी कोकलताश, और ख़्वाजिह की असद, और उनके पीछे यूनसअली, शाह मन्सूर बर्लास, और अब्दुल्लाह किताबदारको, और इनके पीछे दोस्त एशक आक़ा, और मुहम्मद ख़लील आख़्तहबेगीको मददके लिये भेजा. इधर बादशाही जरन्ग़ारपर तरफ़ सानीके बरन्ग़ारने लगातार हमले किये, और ग़ाज़ियोंतक पहुंचगये. शाही फ़ौजके ग़ाज़ियोंने बहुतसोंको तीरोंसे मारा और बहुतसोंको पीछा हटाया. फिर शाही फ़ौजसे मोमिन अन्का और रुस्तम तुर्कमानने निकलकर मुख़ालिफ़ोंकी फ़ौजके पीछेकी तरफ़से हमलह किया, और मुल्ला महमूद और अली अन्का बाशलिकको बादशाहने उनकी मददको भेजा. मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा, आदिल सुल्तान, अब्दुल्अज़ीज़ मीर आख़ोर, व कुतुल्ककदम कराविल, व मुहम्मद अली खिंगजंग शाहहुसैन बारबेजीने भी लड़ाईका हाथ खोलकर पांव जमाया, और ख़्वाजिह

हुसेन वज़ीरको मए उसकी जमइय्यतके बादशाहने उनकी मददको भेजा. इन सब जिहाद करने वालोंने बड़ी कोशिशसे लड़ाई की. बादशाह कुर्आनकी आयत पढ़कर कहता है, कि हमारे हक़में मरना और मारना दोनों बिह्तर हैं, हमारे लोगोंने इस बातपर मज़्बूत होकर मरने और मारनेका झंडा ऊंचा किया, और जब लड़ाई बढ़ी और बहुत देर होगई, तब बादशाहके हुक्मसे ख़ास जंगी सिपाही दोनों तरफ़ शाही गोलसे निकले, जोकि ज़ंजीर बन्द गाड़ियोंकी आड़में थे, और बीचमें बन्दूक़चियों और तोपचियोंको रखकर दोनों तरफ़से टूटपड़े, जिससे बहुतसे मुख़ालिफ़ मारेगये, उस्ताद अली कुलीने भी. जो मए अपने साथियोंके बादशाही गोलके आगे खड़ा था, बड़ी मर्दानगी दिखलाई, तोप बन्दूक़ व भारी पत्थरोंसे तरफ़ सानीको बहुत नुक्सान पहुंचाया. बन्दूक़चियोंने भी शाही हुक्मसे गाड़ियोंके आगे बढ़कर बहुतसे दुश्मनोंको तबाह किया, और पैदलोंने बड़े ख़तरेकी जगहमें घुसकर नामवरी हासिल की. बादशाह लिखता है, हम भी गाड़ियोंको बढ़ाकर आगे बढ़े, जिससे लश्करको बड़ा जोश ख़रोश पैदा होगया, और फ़ौजोंके बढ़ावसे गर्द ऐसी उड़ी, कि अंधेरा छागया, लड़ाई ऐसी हुई कि कौन हारा, कौन जीता, और किसने वार किया, और किसके लगा, इसकी पहिचान जाती रही. इस जगह बादशाह लिखता है, कि हमारे गाज़ियोंके कानमें ग़ैबसे उस कलामुल्लाहकी आयतके मुवाफ़िक़ आवाज़ आती थी, जिसका मत्लब यह है, कि "मत दबियो, मत ग़मगीन हो, तुमही ग़ालिब रहोगे". मुसलमान ग़ाज़ी ऐसे लड़े, कि फ़िरिश्ते भी आस्मानमें उनकी तारीफ़ करते थे. दोपहर ढलनेसे चार घड़ी दिन रहेतक लड़ाई ऐसी हुई, कि जिसके शोले आस्मानतक पहुंचे, बादशाही फ़ौजने मुख़ालिफ़ोंकी फ़ौजको उनके गोलमें मिलादिया. तब उन्होंने एकदम तअस्मुल करके दिल जानसे तोड़कर हमारे दाएं बाएं गोलपर हमलह किया, और बाईं तरफ़ हमारे गोलके क़रीब जापहुंचे, लेकिन् हमारे गाज़ियोंने आख़रतका सवाब समझकर बहादुरीसे उनको पीछा हटादिया, और इसके साथ ही हमको फ़त्हकी खुशख़बरी मिली. तरफ़ सानी मुश्किल जानकर तितर बितर होगये, और बहुतसे लड़ाईमें मारेजाकर बाक़ियोंने जंगलका रास्तह लिया. लाशोंके टीले और सिरोंके मनारे बनगये, हसनख़ां मेवाती बन्दूक़के लगनेसे मारागया, और इसी तरह मुख़ालिफ़ोंके बड़े बड़े सर्दार तीर और बन्दूक़ोंसे तमाम हुए, जिनमें डूंगरपुरका रावल उदयसिंह, जिसके साथ १२००० सवार थे; राय चन्द्रभाण चहुवान, जिसके साथ ४००० सवार; और राव दलपत, जिसके साथ ४००० सवार; और गंगू व कर्मसी व डूंगरसी, जिनके साथ तीन तीन हज़ार सवार थे वग़ैरह और भी कई नामी गिरामी सर्दार मारे

गये. जिधर इस्लामका लश्कर जाता, कोई क़दम मुर्दोंसे खाली नहीं पाता था. इस फ़त्हके बाद मैंने अपना नाम "ग़ाज़ी" रक्खा. बाबर लिखता है, कि मैं इस्लामके लिये इस लड़ाईके जंगलमें आवारह हुआ, और मैंने अपना शहीद होना ठानलिया था, लेकिन् खुदाका शुक्र है, कि ग़ाज़ी बनकर जीता रहा.

ऊपर लिखा हुआ खुलासह जो तुज़क बाबरीसे लियागया है, सिर्फ़ लड़ाईके हालका है; यदि किसी पाठकको ज़ियादह हाल दर्याफ़्त करना हो, तो तुज़कबाबरीको देखें.

महाराणा सांगाका मंझला क़द, मोटा चिहरा, बड़ी आंख, लंबे हाथ, और गेहुआं रंग था. यह दिलके बड़े मज़्बूत थे. इनकी ज़िन्दगीमें इनके बदनपर ८४ ज़ख़्म शस्त्रोंके लगे थे. एक आंख बेकाम, एक हाथ कटा हुआ, और एक पैर लंगड़ा, ये भी लड़ाईकी निशानियां उनके अंगपर मौजूद थीं. इन महाराणाने महियारिया गोत्रके चारण हरिदासको बादशाह महमूद मालवीको गिरिफ़्तार करनेकी खुशीमें अपना कुल चित्तौड़का राज्य देदिया था. फिर हरिदासने राज्य लेनेसे इन्कार किया, और बारह ग्राम अपनी खुशीसे लिये, जिनमेंसे पांचली नामका एक गांव अभीतक उसकी औलादके क़बज़हमें है. इन महाराणाने जोधपुरके राव जोधाके पोते राव सूजाके बेटे कुंवर बाघाकी तीन बेटियोंसे शादी की थी. ये तीनों राव बाघाकी राणी चहुवान पुहपावतीसे पैदा हुई थीं. इनमेंसे धनबाईके पेटसे बड़े कुंवर रत्नसिंह पैदा हुए, और बूंदीके राव भांडाकी पोती और नरबदकी बेटी महाराणी कर्मवती बाईसे महाराणा विक्रमादित्य और उदयसिंह पैदा हुए. इन महाराणाके सबसे बड़े राजकुमार भोजराज थे, जिनकी शादी मेड़ताके राजा वीरमदेवके छोटे भाई रत्नसिंहकी बेटी व जयमल्लके काकाकी बेटी मीरांबाईके साथ हुई थी, लेकिन् उक्त राजकुमारका देहान्त महाराणा सांगाके सामने ही होगया था. कर्नेल् टॉड वग़ैरह कितने ही मुवर्रिख़ोंने मीरांबाईको महाराणा कुम्भाकी राणी लिखा है, लेकिन् यह बात ग़लत है, क्योंकि मीरांबाईका भाई जयमल्ल तो विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] में अक्बरकी लड़ाईमें चित्तौड़पर मारागया, और महाराणा कुम्भाका देहान्त विक्रमी १५२५ [हि० ८७३ = ई० १४६८] में होगया था, फिर न मालूम कर्नेल् टॉडने यह बात अपनी किताबमें कहांसे दर्ज की.

इन महाराणाके ७ राजकुमार थे - भोजराज, कर्ण, रत्नसिंह, पर्वतसिंह, कृष्णदास, विक्रमादित्य, और उदयसिंह; जिनमेंसे भोजराज, कर्ण, पर्वतसिंह और कृष्णदास तो कुंवरपदेहीमें परलोकवास करगये, और रत्नसिंह, विक्रमादित्य, व उदयसिंह, ये तीनों मेवाड़की गादीपर बैठे, जिनका हाल दूसरे भागमें लिखा जायेगा. महाराणा सांगाका जन्म विक्रमी १५३८ वैशाख कृष्ण ९ [हि० ८८६ ता० २३ मुहर्रम =

शेष संग्रह.

१– वल्लभीका ताम्रपत्र.

(कॉर्पस इन्स्क्रिप्शनम् इंडिकेरम्की जिल्द ३ री के पृष्ठ १७३—१८० में छपा है.)

ओं स्वस्ति श्रीमदानन्दपुरसमावासितजयस्कन्धावारात् प्रसभप्रणतामित्राणां मैत्रकाणामतुलबलसंपन्नमण्डलाभोगसंसक्तसंप्रहारशतलब्धप्रतापात्प्रतापोपनत-दानमानार्ज्जवोपार्ज्जितानुरागादनुरक्तमौलभृतश्रेणीबलावाप्तराज्यश्रियः परममाहेश्वर श्रीभट्टार्क्कादव्यवच्छिन्नवंशान्मातापितृचरणारविन्दप्रणतिप्रविविक्ताशेषकल्मषः शै-शवात्प्रभृतिखड्गद्वितीयबाहुरेव समदपरगजघटास्फोटनप्रकाशितसत्वनिकषः तत्प्र-भावप्रणताराातिचूडारत्नप्रभासंसक्तपादनखरश्मिसंहतिः सकलस्मृतिप्रणीतमार्ग्ग-सम्यक्परिपालनप्रजाहृदयरंजनादन्वर्थराजशब्दो रूपकान्तिस्थैर्य्यगाम्भीर्य्यबुद्धिसं-पद्भिः स्मरशशांकाद्रिराजोदधित्रिदशगुरुधनेशानतिशयानः शरणागताभयप्रदान-परतया तृणवदपास्ताशेषस्ववीर्य्यफलः प्रार्थनाधिकार्थप्रदानानन्दितविद्वत्सुहृ-त्प्रणयिहृदयः पादचारीव सकलभुवनमण्डलाभोगप्रमोदः परममाहेश्वरः श्री-गुहसेनः तस्य सुतः तत्पादनखमयूखसंतानविसृतजान्हवीजलौघप्रक्षालिताशेषक-ल्मषः प्रणयिशतसहस्रोपजीव्यमानसंपद्रूपलोभादिवाश्रितः सरभसमाभिगा-मिकैः गुणैः सहजशक्तिः शिक्षाविशेषविस्मापितसर्वधनुर्द्धरः प्रथमनरपति-समतिसृष्टानामनुपालयिता धर्म्मदायानामपाकर्त्ता प्रजोपघातकारिणां उपप्लवानां शमयिता श्रीसरस्वत्योरेकाधिवासस्य संहताराातिपक्षलक्ष्मीपरिभोगदक्षविक्रमः विक्रमोपसंप्राप्तविमलपार्थिवश्रीः परममाहेश्वरः श्रीधरसेनः तस्य सुतः तत्पादा-नुध्यातः सकलजगदानन्दनात्यद्भुतगुणसमुदयस्थगितसमग्रदिग्मण्डलः समरश-तविजयशोभासनाथमण्डलाग्रद्युतिभासुरान्सपीठो व्यूढगुरुमनोरथमहाभारः सर्व्व-विद्यापारपरमभागाधिगमविमलमतिरपि सर्व्वतः सुभाषितलवेनापि स्वोपपादनी-यपरितोषः समग्रलोकागाधगांभीर्य्यहृदयोपि सच्चरितातिशयसुव्यक्तपरमकल्याण-स्वभावः खिलीभूतकृतयुगनृपतिपथविशोधनाधिगतोदग्रकीर्तिः धर्म्मानुरोधोज्ज्वल-तरीकृतार्त्थसुखसंपदुपसेवानिरूढधर्म्मादित्यद्वितीयनामा परममाहेश्वरः श्रीशीला-दित्यः तस्य सुतः तत्पादानुध्यातः स्वयमुपेन्द्रगुरुणेव (गुरुः) गुरुणात्यादरवता सम-भिलषणीयामपि राजलक्ष्मीं स्कन्धासक्तां परमभद्राणां धुर्य्यस्तदाज्ञासंपादनैकरस-तयोद्वहनखेदसुखरतिभ्यां अनायासितसत्त्वसंपत्तिः प्रभावसपद्वशीकृतनृपतिशतशि-

रोरत्नच्छायोपगूढपादपीठोपि परमावज्ञाभिमानरसानालिंगितमनोवृत्तिः प्रणतिमेकां परित्यज्य प्रख्यातपौरुषाभिमानैरप्यरातिभिरनासादितप्रतिक्रियोपायः कृतनिखिलभुवनामोदविमलगुणसंहतिः प्रसभविघटितसकलकलिविलसितगतिर्नीचजनाधिरोहिभिरशेषैः दोषैरनामृष्टात्युन्नतहृदयः प्रख्यातपौरुषः शास्त्रकौशलातिशयो (गुण) गणतिथविपक्षक्षितिपतिलक्ष्मीस्वयं (स्वयं) ग्राहप्रकाशितप्रवीरपुरुषप्रथमसंख्याधिगमः परममाहेश्वरः श्रीखरग्रहः तस्य सुतः तत्पादानुध्यातः सर्व्वविद्याधिगमविहितनिखिलविद्वज्जनमनः परितोषितातिशय : सत्त्वसंपत्त्यागे : शौर्य्येण च विगतानुसंधानसमाहितारातिपक्षमनोरथरथाक्षभंग : सम्यगुपलक्षितानेकशास्त्रकलालोकचरितगह्वरविभागोपि परमभद्रप्रकृतिरकृत्रिमप्रश्रयोपि विनयशोभाविभूषण : समरशतजयपताकाहरणप्रत्ययोदग्रबाहुदण्डविध्वंसितप्रतिपक्षदर्प्पोदय : स्वधनु : प्रभावपरिभूतास्त्रकौशलाभिमानसकलनृपतिमण्डलाभिनन्दितशासनः परममाहेश्वरः श्रीधरसेनः तस्यानुजः तत्पादानुध्यातः सच्चरितातिशयितसकलपूर्व्वनरपतिः दुस्साधनानामपि प्रसाधयिता विषयाणां मूर्तिमानिव पुरुषकारः परिवृद्धगुणानुरागानिर्भराचित्तवृत्तिभिः मनुरिव स्वयमभ्युपपन्नः प्रकृतिभिरधिगतकलाकलापः कान्तितिरस्कृतसलांछनकुमुदनाथः प्राज्यप्रतापस्थगितदिगन्तरालः प्रध्वंसितध्वान्तराशिः सततोदितसविता प्रकृतिभ्यः परं प्रत्ययमर्थवन्तमतिबहुतिथप्रयोजनानुबंधमागमपरिपूर्णं विदधानः सन्धिविग्रहसमासनिश्चयनिपुणः स्थानानुरूपमादेशं ददतां गुणवृद्धिराजविधानजनितसंस्कारसाधूनां राज्यशालातुरीयतन्त्रयोरुभयोरपि निष्णातः प्रकृतिविक्रमोपि करुणामृदुहृदयः श्रुतवानप्यगर्व्वितः कान्तोपि प्रशमी स्थिरसौहार्द्दोपि निरसिता दोषवतामुदयसमुपजनितजनानुरागपरिबृंहितभुवनसमर्थितप्रथितबालादित्यद्वितीयनामा परममाहेश्वरः श्रीधरसेनः तस्य सुतः तत्पादकमलप्रणामधरणिकषणजनितकिणलांछनललाटचन्द्रशकलः शिशुभाव एव श्रवणनिहितमौक्तिकालंकारविभ्रमामलश्रुतविशेषः प्रदानसलिलक्षालिताग्रहस्तारविन्दन्यास इव मृदुकरग्रहणादमन्दीकृतानन्दविधिः वसुंधरायाः कार्मुकधनुर्वेद इव संभावितशेषलक्ष्यकलापः प्रणतसमस्तसामन्तमण्डलोपमानिभृतचूडामणिनीयमानशासनः परममाहेश्वरः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरः चक्रवर्त्तिश्रीधरसेन तत्पितामहभ्रातश्रीशिलादित्यस्य शार्ङ्गपाणेरिवाग्रजन्मनो (१) भक्तिबन्धुरावयवकल्पितप्रणतेः

---

(१) कॉर्पस इन्स्क्रिप्शनम् इंडिकेरम्‌की तीसरी जिल्दके पृष्ठ १७६ के नोट नम्बर ५ में 'ग्रजन्मनो' को 'अङ्गजन्मनो' पढ़ो, ऐसा लिखा है.

रतिधवलयातत्पादारविन्दप्रवृत्तया चरणनखमणिरुचा मन्दाकिन्येवनित्यममलितोत्त-मांगदेशस्यागस्त्यस्येव राजर्षेः दाक्षिण्यमातन्वानस्य प्रबलधवलिम्ना यशसां वलयेन मण्डितककुभा नभसि यामिनीपतेर्व्विरचिताखण्डपरिवेशमण्डलस्य पयोदश्यामशि-खरचूचुकरुचिरसह्यविन्ध्यस्तनयुगायाः क्षितेः पत्युः श्री देरभटस्याग्रजः(१)क्षितिपसं हतेः चारुविभागस्य सुचिरयशोंशुकभृतः स्वयंवराभिलाषिणीमिव राज्यश्रियमर्प्पय न्त्याःकृतपरिग्रहःशौर्यमप्रतिहतव्यापारमानमितप्रचण्डारिपुमण्डलाग्रमिवालंबमानः शरदि प्रसभमाकृष्टशिलीमुखबाणासनापादितप्रसाधनानां परभुवां विधिवदाचरित-करग्रहणः पूर्व्वमेव विविधवर्णोज्ज्वलेन श्रुतातिशयनोद्भासितश्रवणयुगलः पुनः पुन-रुक्तेनेव रत्नालंकारेणालंकृतश्रोत्रः परिस्फुरत्कटकविकटकीटपक्षरत्नकिरणमाविच्छि-न्नप्रदानसलिलनिवहावसेकविलसन्नवशैवलांकुरमिवाग्रपाणिमुद्वहन् धृतविशाल-रत्नवलयजलधिवेलातटायमानभुजपरिष्वक्तविश्वंभरः परममाहेश्वरः श्रीध्रुवसेनः तस्याग्रजोपरमहीपतिस्पर्शदोषनाशनधियेव लक्ष्म्यास्वयमतिस्पष्टचेष्टमाश्लिष्टाङ्गय-ष्टिरतिरुचिरतरचरितगरिमपरिकलितसकलनरपतिरतिप्रकृष्टानुरागसरभसवशीकृत प्रणतसमस्तसामन्तचक्रचूडामणिमयूखखचितचरणकमलयुगलः प्रोद्दामोदारदोर्द्द-ण्डदलितद्विपद्वर्ग्गदर्प्पः प्रसर्प्पत्पटीयः प्रतापप्लोषिताशेषशत्रुवंशः प्रणयिपक्ष-निक्षिप्तलक्ष्मीकः प्रेरितगदोत्क्षिप्तसुदर्शनचक्रः परिहृतबालक्रीडोनध : कृतद्वि-जातिरेकविक्रमप्रसाधितधरित्रीतलोनङ्गीकृतजलशय्योपूर्व्वपुरुषोत्तमः साक्षाद्धर्म-इव सम्यग्व्यवस्थापितवर्णाश्रमाचारः पूर्व्वैरप्युर्व्वीपतिभिः तृष्णालवलुब्धैः यान्यपहृतानि देवब्रह्मदेयानि तेषामप्यतिसरलमनाः प्रसरमुत्संकलनानुमोदनाभ्यां परिमुदितात्रिभुवनाभिनन्दितोच्छ्रितोत्कृष्टधवलधर्म्मध्वजः प्रकाशितनिजवंशो देव-द्विजगुरुन् प्रतिपूज्य यथार्हमनवरतप्रवर्त्तितमहोद्रङ्गादिदानव्यवस्थानोपजातसंतोषो-पात्तोदारकीर्तिपरंपरादन्तुरितनिखिलदिक्चक्रवालः स्पष्टमेव यथार्थं धर्म्मादित्य-द्वितीयनामा परममाहेश्वरः श्रीखरग्रहः तस्याग्रजन्मनः कुमुदषण्डश्रीविका-सिन्या कलावतश्चन्द्रिकयेव कीर्त्या धवलितसकलदिङ्मण्डलस्य खण्डितागुरुविलेप-नपिण्डश्यामलविंध्यशैलविपुलपयोधरायाः क्षितेः पत्युः श्रीशिलादित्यस्य सूनुर-नवप्रालेयकिरणइव प्रतिदिनसंवर्द्धमान (हृदय) कलाचक्रवालः केसरीन्द्रशिशुरिव राजलक्ष्मीं सकलवनस्थलीमिवालंकुर्व्वाणः शिखण्डिकेतनइव रुचिमच्चूडाम-

---

(१) कॉर्पस इन्स्क्रिपशनम् इंडिकेरम्की तीसरी जिल्दके पृष्ठ १७६ के नोट नम्बर ९ में 'अग्रजः' को 'अङ्गजः' पढ़ो, ऐसा लिखा है.

ण्डनः प्रचण्डशक्तिप्रभावश्च शरदागम इव (१) द्विषतां परममाहेश्वरः परमभट्टारक महाराजाधिराजपरमेश्वरः श्रीबप्पपादानुध्यातः परमभट्टारकमहाराजाधिराज-परमेश्वरः श्रीशीलादित्यदेवस्तस्य सुतः परमैश्वर्य्यः कोपाकृष्टनिस्त्रिंशपातविदलितारातिकरिकुम्भस्थलोल्लसत्प्रसृतमहाप्रतापानलः प्राकारपरिगतजगन्मण्डललब्ध-स्थितिः विकटनिजदोर्द्दण्डावलंबिना सकलभुवनाभोगभाजा मन्थारफालनविधुत-दुग्धसिन्धुफेनपिण्डपाण्डुरयशोवितानेन विहितातपत्रः परममाहेश्वरः परमभट्टा-रकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीबप्पपादानुध्यातः परमभट्टारकमहाराजाधिराज-परमेश्वरः श्री शीलादित्यदेवः तत्पुत्रः प्रतापानुरागप्रणतसमस्तसामन्तचूडामणिनख-मयूखनिचितरञ्जितपादारविन्दः परममाहेश्वरः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमे-श्वरः श्रीबप्पपादानुध्यातः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीशीलादित्यदेवः तस्यात्मजः प्रशमितरिपुबलदर्प्पः विपुलजयमंगलाश्रयः श्रीसमालिंगनलालितवक्षाः समुपोढनारसिंहविग्रहोर्जितोद्धुरशक्तिः समुद्धतविपक्षभूभृत्कृतनिखिलगोमण्डलरक्षः पुरुषोत्तमः प्रणतप्रभूतपार्थिवाकिरीटमाणिक्यमसृणितचरणनखमयूखरंजिताशेषदि-ग्वधूमुखः परममाहेश्वरः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीबप्पपादानुध्यातः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरः श्रीशीलादित्यदेवः परममाहेश्वरः तस्या-त्मजः प्रथितदुस्सहवीर्य्यचक्रो लक्ष्म्यालयोनरकनाशकृतप्रयत्नः पृथ्वीसमुद्धरण-कार्य्यकृतैकनिष्ठः संपूर्णचन्द्रकरनिर्मलजातकीर्त्तिः ॥ ज्ञातत्रयीगुणमयो जितवैरि-पक्षः संपन्न — — मसुखः सुखदः सदैव ज्ञानालयः सकलवन्दितलोकपालो विद्या-धरैरनुगतः प्रथितः पृथिव्यां ॥ रत्नोज्ज्वलोवरतनुर्गुणरत्नराशिः ऐश्वर्यविक्र-मगुणैः परमैरुपेतः सत्वोपकारकरणे सततं प्रवृत्तः साक्षाज्जनार्द्दनइवार्द्दितदुष्टदर्प्पः ॥ युद्धे सकृद्गजघटाघटनैकदक्षः पुण्यालयो जगति गीतमहाप्रतापः राजा-धिराजपरमेश्वरवंशजन्मा श्रीध्रूभटो जयति जातमहाप्रमोदः ॥ स च परममाहेश्वरः परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीबप्पपादानुध्यातः परमभट्टारकमहाराजा-धिराजपरमेश्वरः श्रीशीलादित्यदेवः सर्वानेव समाज्ञापयत्यस्तु वः संविदितं यथा मया मातापित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये ऐहिकामुष्मिकफलावाप्त्यर्थं श्री-मदानन्दपुरवास्तव्यतच्चातुर्विद्यसामान्यशार्कराक्षिसगोत्रबह्वृचसब्रह्मचारिभट्टाख - ण्डलमित्राय भट्टविष्णुपुत्राय बलिचरुवैश्वदेवाग्निहोत्रक्रतुक्रियाद्युत्सर्पणार्त्थं श्री-

(१) कार्पस इन्स्क्रिप्शनम् इंडिकेरम्‌की तीसरी जिल्दके पृष्ठ १७७ के नोट नम्बर ८ में लिखा है, कि 'शरदागम इव' के आगे और 'द्विषतां' के पहिले निम्नोक्त शब्द छूट गये हैं:- प्रतापवानुल्लसत्पद्मः संयुगे विदलयन्नम्भोधरानिव परगजानुदयतपनबालातपइव संग्रामेषु मुष्णन्नभिमुखानामायूंषि-

खेटकाहारे उप्पलहेटपथके महिलावलीनामग्रामः सोद्रङ्गः सोपरिकरः सोत्पद्यमान-विष्टिकः सभूतवातप्रत्यायः सदशापराधः सभोगभागः सधान्याहिरण्या-देयः सर्व्वराजकीयानाम् अहस्तप्रक्षेपणीयः पूर्व्वप्रदत्तदेवदायब्रह्मदायवर्जं भूमिच्छि-द्रन्यायेनाचन्द्रार्क्कार्णवक्षितिपर्व्वतसमकालीनः पुत्रपौत्रान्वयभोग्य उदकातिसर्ग्गेण ब्रह्मदायत्वेन प्रतिपादितः यतोस्योचितया ब्रह्मदायस्थित्या भुंजतः कृषतः कर्षापयतः प्रतिदिशतो वा नकैश्चिद्व्यासेधे वर्त्तितव्यं ॥ आगामिभद्रनृपतिभिः अस्मद्वंशजैरन्यै-र्व्वानित्यान्यैश्वर्य्याण्यस्थिरं मानुष्यकं सामान्यं च भूमिदानफलं अवगच्छद्भिः अयम-स्मद्दायोनुमन्तव्यः पालयितव्यश्च उक्तं च वेदव्यासेन व्यासेन बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ यानीह दत्तानि पुरा नरेन्द्रैः धनानि धर्म्मायतनीकृतानि ॥ निर्माल्यवान्तप्रतिमानि तानि को नाम साधुः पुनराददीत ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि स्वर्ग्गे तिष्ठति भूमिदः आच्छेत्ताचानुमंता च तान्येव नरके वसेत् ॥ विंध्याटवीष्वतोयासु शुष्ककोटरवासिनः कृष्णाहयो हि जायन्ते भूमिदायं हरन्ति ये ॥ दूतकोत्र महाप्रतिहारश्रीदेटहाक्षपटलिकराजकुल-श्रीसिद्धसेनः श्रीशर्व्वटसुतः तथा तन्नियुक्तप्रातिनर्त्तककुलपुत्रामात्यगुहेन हेम्वटपुत्रेण लिखितमिति ॥ संवत्सरशतचतुष्टये सप्तचत्वारिंशदधिके ज्येष्ठ शुद्ध पंचम्यां अंकतः संव ४४७ ज्येष्ठ शु ५ स्वहस्तो मम.

२–कूंडा ग्रामकी प्रशस्ति.

ॐ नमः स्पृष्टा वक्षसि लीलया कररुहैः काचित्कचाकर्षणादन्या कामपरेण पादपतनैः कण्ठग्रहेणापरा धन्यास्ता भुवने सुरेन्द्रतनवो याः प्रापिता निर्वृतिं स्मृत्वेत्थं स्पृहयन्ति गोपवनिता यस्मै सपायाद्धरिः ॥ लक्ष्मीलीलोपधानं प्रलयज-लनिधिस्थायिनोगण्डशैला दर्पोद्वृत्तासुरेन्द्रद्रुमगहनवनच्छेददक्षाः कुठाराः संसारा-पारवारिप्रसररयसमुत्तारणे बद्धकुक्ष्याः दोर्दण्डाः पान्तु शौरेस्त्रिभुवनभवनोत्तम्भ-नस्तम्भभूताः ॥ राजा श्रीगुहिलान्वयामलपयोराशौ स्फुरद्दीधिति ध्वस्तध्वान्तसमू-हदुष्टसकलव्यालावलेपान्तकृत् श्रीमानित्यपराजितः क्षितिभृतामभ्यर्चितो मूर्धभिः वृत्तस्वच्छतयेव कौस्तुभमणिर्ज्जातो जगद्भूषणं ॥ शिवात्मजोखण्डितशक्तिसंपद्धुर्यः समाक्रान्तभुजंगशत्रू तेनेन्द्रवत्स्कन्द इव प्रणेता वृतो महाराजवराहसिंहः ॥ जन-गृहीतमपि क्षयवर्जितं धवलमप्यनुरञ्जितभूतलं स्थिरमपि प्रविकासि दिशोदश भ्रमति यस्य यशो गुणवेष्टितं ॥ तस्य नाम दधती यशोमती गेहिनी प्रणयिनी यशोमती चित्तमुत्पथगतं निरुन्धती सा बभूव विनयादरुन्धती ॥ श्रीर्व्वन्धकी

स्थाणुरता च गौरी वैधव्यदुःखोपहता रतिश्च बाला त्रिलोक्यामतुलोपमाना सीमन्तिनीनां धुरि सैव जाता ॥ विलोक्यासौ लक्ष्मीं स्वनयननिमेषप्रतिसमां वयो वित्तं रंगत्तनुतरतरङ्गाङ्गतरलं तरन्संसाराब्धिं विषमविषयग्राहकलितं स्थिरं पोताकारं भवनमकरोत्कैटभरिपो: ॥ सूचिर्विस्फोटयन्तः स्फुटितपुटरजोधूसराः केतकीनामाधुन्वन्तः कलापान्मदकलवचसान्नृत्यताम्बर्हिणानां मेघालीर्व्विक्षिपन्तः सलिलकणभृतोवायवः प्रावृषेण्यावान्त्युच्चैर्यत्र तस्मिन्पुलनरकीरपोर्मंदिरं सन्निविष्टं ॥ यावद्वानोखुराग्रव्रणितजलमुचस्तुङ्गरङ्गास्तुरङ्गा यावत्कामर्तिंपृथ्वीतलमतुलजलानोसमुद्रा समुद्रा ॥ यावन्मेरोर्नमेरुप्रसवसुरभयो वान्ति भागा शुभाशा शौरेर्ध्धामास्तु तावत्कृतनियमनमद्विप्रसिद्धं प्रासिद्धं ॥ दामोदरस्य पौत्रेण सूनुना ब्रह्मचारिणः नाम्ना दामोदरेणैव कृता काव्यविडम्बना ॥ बालेनाजितपौत्रेण स्फुटा वत्सस्य सूनुना यशोभटेन पूर्वेयमुत्कीर्ण्णा विकटाक्षरा ॥ संवत्सरशतेषु सप्तसु अष्टादशाधिकेषु मार्गशीर्षशुद्धपंचमी प्रतिष्ठा वासुदेवस्य नमः पुरुषोत्तमाय ॥

३–चित्तौड़के मौरी राजाओंके लेख का भाषान्तर.

(यह लेख चित्तौड़के पास मानसरोवर तालावके किनारे एक स्तम्भपर खुदाहुआ मिला था, जिसका अंग्रेज़ी तर्जमा कर्नेल् टॉडने अपने बनायेहुए टाडनामह राजस्थानकी जिल्द पहिली के पृष्ठ ७९९ में दिया है.)

समुद्र तेरी रक्षा करे. वह क्या है, जो समुद्रके सदृश है ? जिसके तीर पर मधु देने वाले वृक्षोंकी लाल कलियां मधु मक्खियोंके समूहसे ढकी हैं, और जिसकी शोभा अनेक जलधाराओंके संयोगसे अधिक होती है. समुद्रके समान क्या है, जिसमेंसे पारिजातकी सुगंधि निकलती है, और जिसको मदिरा, लक्ष्मी और अमृत रूपी कर (ख़िराज) देना पड़ा ? ऐसा जो समुद्र है, वह तेरी रक्षा करे.

यह तालाव एक बड़े दानका स्मारक चिन्ह है, जो देखने वालोंके चित्तोंको मोहित करता है, जिसमें अनेक प्रकारके पक्षीगण आनन्द पूर्वक तैरते हैं, जिसके किनारों पर प्रत्येक प्रकारके वृक्ष लगे हुए हैं, और उच्च शिखर वाले पर्वतसे गिरकर स्थानकी शोभा बढ़ाती हुई जलधारा जिसकी ओर वेगसे बहती है. समुद्रके मथन समय वहां का नाग श्रमसे थककर विश्राम लेनेको इस तालाव में आया.

इस पृथ्वीपर महेश्वर नामका एक बड़ा राजा था, जिसके राज्य शासनमें शत्रुका नाम कभी नहीं सुना गया; जिसकी लक्ष्मी आठों दिशाओंमें प्रसिद्ध थी,

जिसकी भुजापर जयश्री सहायताके लिये झुकी हुई थी. वह उस भूमिका प्रकाश था. त्वस्थ (तक्षक) वंशकी प्रशंसा ब्रह्माने अपने मुखारविंदसे स्वयं की है.

अभिमान युक्त सुन्दर हंस, जो कमलसमूहके मध्यमें क्रीडा करता है, और वह उस व्यक्तिके हाथसे पला हुआ है, जिसके मुखारविन्दसे प्रतापकी किरणें फैलती हैं, ऐसा अवन्तीपुरीका राजा भीम था, वह युद्धरूपी समुद्रके तैरनेमें चतुर था, और वह वहांतक भी गया था, जहां गंगाकी धारा समुद्रमें गिरती है. राजा भीम, क़ैद कीहुई अपने शत्रुओंकी उन चन्द्रवदनी स्त्रियों के हृदयमें भी बसता है, जिनके ओष्ठोंपर उनके पतियोंके दंतक्षत अभीतक बने हैं. उसने अपने भुजबलसे शत्रुओंकी तरफ़ का भय मिटा दिया; और वह उनको दोषोंके समान नष्ट करने योग्य मानता था. वह ऐसा प्रतीत होता था मानो अग्निसे उत्पन्न हुआ है; और वह समुद्रके नाविकोंको भी शिक्षा देसक्ता था.

उसके राजा भोज उत्पन्न हुआ, उसका वर्णन किस रीतिसे कियाजाये; जिसने युद्धक्षेत्रमें हस्तीके मस्तकको विदीर्ण किया, जिसमें से निकले हुए मुक्ता अब उसके वक्षस्थलको सुशोभित करते हैं; जो अपने शत्रुको इस प्रकारसे ग्रस लेता है, जैसे सूर्य अथवा चन्द्रको राहु ग्रसता है; और जिसने पृथ्वीके छोर तक जय-स्तम्भ बनाये.

उसके मान नामका एक पुत्र हुआ, जो सद्गुणों से परिपूर्ण था, और जिसके साथ लक्ष्मी निवास करती थी. वह एक दिन एक वृद्ध पुरुषसे मिला, उसकी आकृति देखकर उसको विचार हुआ, कि उसका शरीर छायाके तुल्य थोड़े ही कालमें नाश होने वाला है; उसमें जो आत्मा रहता है वह सुगन्धित कदम्ब के बीजके तुल्य है; और राज्यलक्ष्मी तृणसमान क्षणभंगुर है; और मनुष्य उस दीपकके समान है, जो दिनके उजेलेमें रक्खाजावे. इस प्रकार विचार करते हुए उसने अपने पूर्वजोंके लिये और अच्छे कार्योंके लिये यह तालाब बनाया, जिसके जलका विस्तार अधिक और गहराई अथाह है. जब मैं इस समुद्रतुल्य तालाबको देखता हूं, तो अपने मनमें तर्क होता है, कि कदाचित् यही (तालाब) महाप्रलय करने वाला न हो.

राजा मानके योद्धे और सर्दार चतुर और वीर हैं, उनका जीवन शुद्ध, और वे ईमान्दार हैं. राजा मान सद्गुणोंका भंडार है, जिस सर्दारपर उसकी कृपा हो, वह सर्व प्रकारकी संपत्ति प्राप्त करसक्ता है; और उसके चरण कमल पर मस्तक नमानेके समय जो रजका कण उसमें लगजाता है, वह उसका

आभूषण होता है. यह ऐसा तालाब है, जिसपर वृक्षोंकी छाया है, जहां पक्षी-गण बहुधा आया करते हैं; और जिसको भाग्यशाली श्रीमान् राजा मानने बड़े परिश्रमसे बनाया है. अपने स्वामी (मान) के नामसे यह तालाब संसारमें प्रसिद्ध है. अलंकारमें निपुण, नागभटके पुत्र पुष्यने ये श्लोक बनाये.

संवत् ७७० में मालवाके राजाने इस तालाबको बनाया. खेत्री करुगके पौत्र शिवादित्यने इन पंक्तियोंको खोदा.

१- उदयपुरसे ईशानकोण, आधमीलके फ़ासिलेपर सारणेश्वर महादेवके मन्दिरमें लगी हुई प्रशस्ति.

ॐ पांतु पद्मांगसंसंगचंचन्द्रोमांचवीचयः श्यामाः कलिन्दतनया पूरा इव हरेर्भुजाः॥ राज्ञी महालक्ष्म्यभिधानविश्रुता तदंगजोप्यल्लटमेदिनीपतिः तदीय पुत्रो नरवाहनाभिधः सगुन्दलः सोढकसिद्धसीलुकाः॥ सान्धिविग्रहिकदुर्ल्लभराजो मातृदेवसहितः सदुदेवः अल्लटाच्छपटलाभिनियुक्तौ विश्रुतावपि मयूर समुद्रौ॥ वसन्तराजद्विजनागरुद्रौ सभूवणौ मावषनारकौ च रिषिः प्रमाता गुहिषोथ गर्ग स्त्रिविक्रमो वन्दिपतिश्च नागः॥ भिषगधिराजो रुद्रादित्यो वज्रटलिम्बादित्यच्छन्नाः अम्मुलसंगमवीरसजोज्जाः वैश्रवणाविकभक्तिम्मोह्याः संगमवेल्लकनागा जज्जेलकवासुदेवदुम्वटकाः यच्चक्याद्या देशी तथा वणिग्देवराजश्च॥ प्रतिहारयशः पुष्पो रुद्रहासोथ राहटः धर्म्मः काष्ठिकसाहारः श्रीधरोवन्नटिस्तथा॥ हूणश्च कृपुराजोन्यः सर्वदेवोपि गोष्ठिकः कृतमायतनं चेदममात्ये मम्मटे सति॥ पुण्यप्रबन्धपरिपाकिम कीर्तयो मी संसारसागरमसारमिमं गभीरं बुध्वा द्रिराजशिखरोत्थमचीकरंत पोतायमानमिदमायतनं मुरारेः॥ कर्णाटमध्यविपयोद्भवलाटटक्का अन्येपि केचिदिह ये वणिजो विशन्ति तैः कल्पितं मधुरिपोः प्रतिपूजनाय दानं न केनचिदपि व्यभिचारणीयम्॥ द्रम्ममेकं करी दद्यात्तुरगो रूपकद्वयं द्रम्मार्धविंशकं शृंगी लाटहट्टे तुलाढकौ॥ एकादशी शुक्लदिनेऽखिलायः कन्दूहृतांस्याद् घटिका पणस्य घृतंधराणामपिपे (टकं) स्यादेकैकशस्तैलपलं च घाणे॥ रन्धनीनां गते मासे रूपकोथ चतुःसरं॥ प्रत्यहं मालिकानां च दानमेतदिह स्फुटं॥ कार्तिकसितपंचम्यामग्रटनाम्ना सुसूत्रधारेण प्रारब्धं देवगृहं काले वसुशून्यदिक्संख्ये॥ दशदिग्विक्रमकाले वैशाखे शुद्धसप्तमीदिवसे। हरिरिह निवेशितोयं घटितप्रतिमो वराहेण॥ तथा निरूपिता शेष श्रीमदल्लट (भूपतिः) लेखितारौ च कायस्थौ पालवेल्लकसंज्ञकौ॥ गोपप्रभासमहिधरनारायणभट्टसर्वदेवाद्याः। अम्मकसहिताः सर्वे निश्चितमिह गोष्ठिका ह्येते॥

५–उदयपुरसे पूर्वकी तरफ़ एक मीलके फ़ासिलेपर हरिसिद्धि माताके मन्दिरकी सीढ़ियोंपरके लेखका अक्षरान्तर.

मुररिपोरिव शम्बरसूदनः पुररिपोरिव बर्हिणवाहनः। जलनिधेरिव शीतरुचिः क्रमादजनि शक्तिकुमारनृपस्ततः॥ अब्धिरिव स्थितिलंघनभीरुः कर्ण्ण इवार्थिवितीर्ण्णहिरण्यः शंभुरिवारिपुसंकृतदाघः श्रीशुचिवर्म्मनृपो .... (म) नोहराकृतिरयं साक्षान्मनोभूरिव। को वानेन शरैर्विभिन्नहृदयो वीरोप्यवस्थांतरं नो नीतो न वशीकृतो न निहतः स्वाज्ञां च न ग्राहितः॥ सत्पद्मानि विकासयन्नरितमास्यन्दिशो भासयन्दोपास्यां क्षपयन्गुणान्प्रकटयन्नु ....
न्नमौक्तिकगणैर्व्वीवधूर्भूषिता। पद्मांगीकृतमप्यहोमहिमतः स्फीतान्यगोत्राकरोद्भूतानंतनरत्नमगडनमिव भारं गुरु मन्यते॥ कुले स तेषामभवत् परस्मादप्रार्थितार्थः स्फुटमिद्धराजः। स्वबंधुवर्गैरुपभुक्तशेषं दत्तं धनं ....
स्मरजायतायतभुजः पुण्यात्मनामग्रणीः। अद्याप्यात्मनियद्गुणौघमसकृच्छुद्धावदातं जनो योगीवैकमनाः परं पदमिव ध्यायन्नयं तिष्ठति॥ धीरत्वं सुसहायतां सरलतां सहननतां मन्यतां ज्ञात्वा यस्य कुलीनतां च शु....... ....
र्यांम। नाम्नांकित. स्वजनकस्य विवेकभाजा श्रीराहिलेश्वरविभुर्गमितः प्रतिष्ठाम्॥ प्रख्यातः सोहट्कोऽस्ति स्म चौलुक्यकुलसंभवः। तत्सुतासीत्प्रिया यस्य महिमा महिमास्पदम॥ फुल्लेन्दीवरपत्रचारुनयनः संपूर्ण चन्द्राननः श्री..... ....
नृपो येनादावनुरागिणा प्रतिदिन ससेवितो मित्रवत्। वीकासं गमितः प्रसाद किरणस्पर्शोज्वलास्सम्मुखो दूरादप्यनुमोदितेन विहितो यः सम्पदश्चास्पदम् राजकार्येषु सामर्थ्यं चातुर्यं वीक्ष्य चाद्भुतं। अव्याहतं च

६–उदयपुरसे उत्तर १४ मीलके फ़ासिलेपर एकलिंगजीके स्थानमें नाथोंके मठपरका लेख.

(१) ॐ नमोलकुलीशाय॥ प्रथम तीर्थ........................ ....
....श्वरम्। किंतात – स्वहस्ते विसक
(२) लितमिदं पुत्रपाथः पित्राथोदेवी.......................... सरल कर – ल – लीलया– – – वालम। भृया..
(३) त्त्वभव्यांजलिर्वः। समं...दितनिह
(४)......... इति॥ मंदं ....कलिकां कंपयन्यक्षमालामालीनोन्तर्न्नयनमुकुलं ....रता॥

(५) ··· ·········म — तः॥ अस्मिनभूद्गुहिलगोत्रनरेंद्रचन्द्रः श्रीवप्पकः क्षितिपतिः क्षितिपीठरत्नम्। ज्याघातघोषजनित ···················· एडकोदण्ड ················

(६) लोमणिः सुविदिता दिव्या च सैकावलिः सा शस्त्री शुचिरत्नसंचय ········ ········रसापाल्हिका। इ ················ मुल्लघातिसटासंनद्धदेहं च तद्यस्याद्यापिमहा ·········व्यवसित ····················

(७) सबलकरिघटाघनकण्ठपीठलौठन्निशातकुलिशोपममण्डलाग्रः। दृप्तद्विषामसहनो मृगलोचनानामिष्टो जनिष्टनरवाहननामधेयः॥ यस्य प्रयाणसमये प्रव

(८) रतुरङ्गमालाखुरोल्लिखित ·········· रापराये : अग्रेसरक्षितिभुजा मलिनी भवंति च्छत्रध्वजांशुकशिरोमणि मण्डलानि॥ शप्तः पुरा मुरभिदा भृगुकच्छ ········ ··························

(९) ·································· भृगुः सहग ······· ता।धिकेन तोषोन्मुखं गिरिसुतामपि मप्रपेयम॥ मज्जल्लाटवधूघनस्तनतटोत्तुङ्गत्तरङ्गोत्तरा यस्मिन्मेखलकन्यकाभुवि ···························

(१०) तद्देशस्य विशुद्धये किमपरं — — गृहीतं मुनेः प्रत्यक्षं लकुलोपलक्षितिकरः कायावतारं शिवः॥ कायावरोहणमतः पुटभेदनं तदुद्बुद्धवालवकुलावलिपुष्प — — म्। ····················

(११) ········ ···················नः कैलासवासमपि न स्मरति स्मरारिः॥ अलिकमलिकपृष्ठे पत्रभंगं कपोले कुचभुविरचयन्तो दाममुक्तामणीनाम्। अपि महति नितंबे मेखलां संदधाना ········ ···················

(१२) ········ ·······पाशु पतयोगसृथो यथार्थज्ञानावदातवपुषः कुशि — दयोन्ये। भस्माङ्गरागतरुवल्कजटाकिरीटलक्ष्माणआविरभवन्मुनयः पुराणः॥ तेभ्यो ··· · ······· ····· ······ ·····

(१३) ·························· ' ' शसमुद्गतात्ममहसः ष — चरा योगिनः। शापानुग्रहभूमयो हिमशिला रत्नोज्वलादागिरेरासेतो रघुवंशकीर्तिपिशुनाः तीव्रं तपस्त- · · ···· ··· ···················

(१४) श्रीमदेकलिंगसुरप्रभाः। पादाम्बुजमहापूजाकर्म्म कुर्वन्ति संयताः॥ अश्वग्रामगिरिन्द्रमौलिविलसन्माणिक्यमुक्तेतनक्षुण्णाम्भोदतडित्कडारशिखरश्रेणीसमुद्भासित ··· ·········· ···· ··· ········

(१५) — रजनी चन्द्रायमाणं मुहुस्तैरेतल्लकुलीशवेश्म हिमवच्छृङ्गोपमं कारितम्॥ स्याद्वादग्रहनिग्रहागदविधिर्व्विध्वस्तवैताण्डिकच्छन्नासौगतगर्व्वपर्व्वतभिदा वज्रप्रपातोपमः॥ श्रीम ··· ········ ··········

(१६) ....कार्यभंगक्षम: श्रीवेदाङ्गमुनि: प्रसिद्धमाहिमा यस्य प्रसादं व्यधात्॥ तेनेयमाम्रकविना गुणनिधिनादित्यनागतनयेन । सुवृत्ता कृताप्रशस्ति: पदववाक्य प्र.................................

(१७) ....भिधर्विक्रमादित्यभूभृत:। अष्टाविंशतिसंयुक्ते शते दशगुणे सति ॥ नवविचकिलमाला:पाटला कुड्मलिन्य:शिरसि शशिमुखीनां यत्र शोभां लभन्ते । अपि खलु त...................

(१८) ....प्राप भाले प्रसिद्धिम् ॥ श्रीसुपुजितरासिकारापकप्रणमति ॥ श्रीमार्कण्डश्रीभातृपुरसद्योरासिश्रीविनिश्चितरासि । लैलुक नोहल । एव कार पक.................................

७– ऐतपुरकी प्रशस्तिमें लिखाहुआ वंशक्रम (१).

(टॉड राजस्थान, जिल्द अव्वलके पृष्ठ ८०२–३ में छपे हुए अंग्रेज़ी तर्जमेसे लियागया.)

१– गुहिल.
२– भोज.
३– महीन्द्र.
४– नाग.
५– शील.
६– अपराजित.
७– महीन्द्र.
८– काल भोज.
९– खुम्माण.
१०– भर्तृपद.
११– सिंहजी.
१२– श्री अल्लट.
१३– नरवाहन.
१४– शालिवाहन.
१५– शक्तिकुमार.

८– बीझोलियामें श्री पार्श्वनाथजीके कुंडसे उत्तरकी तरफ़ कोटके पासके चट्टान पर खुदा हुआ लेख.

ॐ॥ ॐ नमो वीतरागाय। चिद्रूपं सहजोदितं निरवधिं ज्ञानैकनिष्ठार्पितं नित्योन्मीलितमुल्लसत्परकलं स्यात्कारविस्फारितं सुव्यक्तं परमाद्भुतं शिवसुखानंदास्पदं

(१) यह वंशक्रम ऐतपुरके नानक स्वामीके मन्दिरकी प्रशस्तिसे लियागया है, जो विक्रमी १०३४ वैशाख शुक्ला १ की है.

शाश्वतं नौमि स्तौमि जपामि यामि शरणं तज्ज्योतिरात्मोत्थितम् ॥ १ ॥ नास्तं गतः कुग्रहसंग्रहो वा नो तीव्रतेजा .... व: .... नैव सुदुष्टदेहो ऽपूर्व्वो रविस्तात्समुदे नृपो व: ॥ २ ॥ — भूयाच्छ्री शान्तिः शुभविभवभंगीभवभृतां विभोर्यस्याभाति स्फुरितनखरोचिः करयुगं विनम्राणामेषामखिलकृतिनां मंगलमयीं स्थिरीकर्त्तुं लक्ष्मीमुपरचितरज्जुव्रजमिव ॥ ३ ॥ नासाश्वासेन येन प्रबलबलभृता पूरितः पांचजन्यः .... रदलमालिना .... पद्माग्रदेशेः ॥ हस्तांगुष्टेन शार्ङ्गं धनुरतुलबलं कृष्टमारोप्य विष्णोरंगुल्यां दोलितोयं हलभृदवनतिं तस्य नेमे स्तनौमि ॥ ४ ॥ प्रांशुप्राकारकांतां त्रिदशपारिषद्व्यूहबद्धावकाशां वाचालां केतुकोटिकणदनघमणी किंकिणिभिः समंतात् ॥ यस्य व्याख्यानभूमीमहहकिमिदमित्याकुलाः कौतुकेन प्रेक्षंते प्राणभाजः स खलु विजयतां तीर्थकृत्पार्श्वनाथः ॥ ५ ॥ वर्द्धतां वर्द्धमानस्य वर्द्धमान महोदयः ॥ वर्द्धतां वर्द्धमानस्य वर्द्धमान महोदयः ॥ ६ ॥ सारदां सारदां स्तौमि सारदानविसारदां ॥ भारतीं भारतीं भक्तभुक्तिमुक्तिविशारदां ॥७॥ निःप्रत्यूहमुपास्महे नितपतो नन्यानपि स्वामिनः श्रीनाभेयपुरःसरान् परकृपापीयूषपाथोनिधीन् ॥ येज्योतिः परभागभाजनतया मुक्तात्मनामाश्रिताः श्रीमन्मुक्तिनितंबिनी स्तनतटे हारश्रियं बिभ्रति ॥ ८ ॥ भव्यानां हृदयाभिरामवसतिःसद्धर्महे — स्थितिःकर्म्मोन्मूलनसंगतिः शुभततिर्निर्बाधबोधोद्धृतिः ॥ जीवानामुपकारकारणरतिः श्रेयः श्रियां संसृतिर्देयान्मे भवसंभृतिः शिवमार्ति जैनं चतुर्विंशतिः ॥ ९ ॥ श्रीचाहमानाक्षितिराजवंशः पौर्वोप्यपूर्वोपि जडावतद्व: भिन्नोनचा — नचरंध्रयुक्तो नोनिःफलः सारयुतोनतोनो ॥ १० ॥ लावण्यनिर्मलमहोज्वलितांगयष्टि रच्छोच्छलच्छुचिपयः परिधानधात्री ॥ — — गपर्वतपयोधरभारभुग्ना सार्कभराजनिजनीवततोपि विष्णोः ॥ ११ ॥ विप्रश्रीवत्सगोत्रेभू दहिच्छत्रपुरे पुरा ॥ सामंतोनंतसामंत पूर्ण्णतल्ले नृपस्ततः ॥ १२ ॥ तस्माच्छ्रीजयराजविग्रहनृपौ श्रीचन्द्रगोपेन्द्रकौ तस्माद् दुल्लभगूवकौ शशिनृपो गूवाकसच्चंदनौ ॥ श्रीमद्वप्पयराजविंध्यनृपती श्रीसिंहराड्विग्रहौ श्रीमद्दुल्लभगुंदुवाक्पतिनृपाः श्रीवीर्यरामोऽनुजः ॥ १३ ॥ चामुंडोवनिपेतिराणकवरः श्रीसिंहटो दूसलस्तद्भ्राताथ ततोपि वीसलनृपः श्रीराजदेवीप्रियः ॥ पृथ्वीराजनृपोथ तत्तनुभवो रामल्लदेवीविभुस्तत्पुत्रो जयदेव इत्यवनिपः सोमल्लदेवीपतिः ॥ १४ ॥ हत्वा चाचगसिन्धुलाभिधयशोराजादिवीरत्रयं क्षिप्तं क्रूरकृतांतवक्त्रकुहरे श्रीनागदुर्गान्वितं ॥ श्रीमत्सोल्लणदण्डनायकवरः संग्रामरंगांगणे जीवन्नेव नियंत्रितः करभके येनटानि — — सात् ॥ १५ ॥ अर्णोराजोस्य सूनुर्धृतहृदयहारिः सत्त्वधारिष्टमीमो गांभिर्यौदार्यवीर्यः समभवदपराख्यमव्योनदत्मीः ॥ नचित्रं

जंतजाद्यस्थितिरधृतमहापंकहेतुर्न्नमध्यो न श्रीमुक्तो न दोपाकररचितरतिर्न्न द्विजि-व्हाधिसेव्यः॥ १६॥ यद्राजांकुशवारणं प्रतिकृतं राजांकुशेन स्वयं येनात्रैव न चित्रमे-त - पुनर्मन्यामहे तं प्रति॥ तच्चित्रं प्रतिभासते सुकृतिना निर्व्वाणनारायणन्यक्काराचर-णेन भंगकरणं श्रीदेवराजं प्रति॥ १७॥ कुवलयविकासकर्त्ता विग्रहराजोजनिस्ततोचित्रं॥ तत्तनयस्तच्चित्रं यन्न जडक्षीणसकलंकः॥ १८॥ भादानत्वंचक्रे भादानपतेः परस्य भादानः॥ यस्य दधत्करवालः करालतां करतलाकलितः॥ १९॥ कृतांतपथसज्जोभूत् सज्जनो सज्जनो भुवः॥ वैकुंतं कुंतपालोगाद्यतो वैकुंतपालकः॥ २०॥ जावालिपुरं ज्वालापुरं कृतापल्लिकापिपल्लीव॥ नड्वलतुल्यं रोपान्नड्वूलं येन सौर्येण॥ २१॥ प्रतोल्यां च वलभ्यां च येन विश्रामितं यशः॥ ढिल्लिकाग्रहणश्रांतमाशिकालाभलंभितं॥ २२॥ तज्ज्येष्ठभ्रातृपुत्रोभूत् पृथ्वीराजः पृथूपमः॥ तस्मादर्जितहेमांगो हेमपर्वतदानतः ॥ २३॥ अतिधर्मरतेनापि पार्श्वनाथस्वयंभुवे॥ दत्तं मोराकरीग्रामं भुक्तिमुक्तिश्चहेतुना ॥ २४॥ स्वर्णादिदाननिवहैर्दशभिर्महद्भिस्तोलानरैर्नगरदानचयैश्च विप्राः॥ येनार्चि-ताश्चतुरभूपतिवस्तपालमाक्रम्य चारुमनसिद्धिकरीगृहीतः॥ २५॥ सोमेश्वराल्लब्ध-राज्यस्ततः सोमेश्वरो नृपः॥ सोमेश्वरनतो यस्माज्जनसोमेश्वरोभवत्॥ २६॥ प्रता-पलंकेश्वर इत्यभिख्यां यः प्राप्तवान् प्रौढप्रथुप्रतापः॥ यस्याभिमुख्ये वरवैरिमुख्याः केचिन्मृताः केचिदभिद्रुताश्च॥ २७॥ येन श्रीपार्श्वनाथाय रेवातीरे स्वयंभुवे॥ शासने रेवणाग्रामं दत्तं स्वर्गायकांक्षया॥ २८॥ अथ कारापकवंशानुक्रमः॥ तीर्थे श्रीनेमिनाथस्य राज्ये नारायणस्य च॥ अभोधिमथनाद्देववलिभिर्बलशालिभिः ॥ २९॥ निर्गतः प्रवरोवंशो देववृंदैः समाश्रितः॥ श्रीमालपत्तने स्थाने स्थापितः शतमन्युना॥ ३०॥ श्रीमालशैलप्रवरावचूलः पूर्वोत्तरः सत्वगुरुः सुवृत्त.॥ प्राग्वाटवंशोस्ति बभूव तस्मिन् मुक्तोपमो वैश्रवणाभिधानः॥ ३१॥ तडागपत्तने येन कारित जिनमदिरं॥ - - भ्रांत्या यमस्तत्वमेकत्र स्थिरतां गता॥ ३२॥ योचीक-रच्चंद्रसुरिप्रभाणि व्याघ्रेरकादौ जिनमंदिराणि॥ कीर्त्तिद्रुमारामसमृद्धिहेतोर्विभाति कंदा इव यान्यमंदाः॥ ३३॥ कल्लोलमांसलितकीर्त्तिसुधासमुद्रः सद्बुद्धिबंधुरवधूधर-णीधरेशः॥ वीरोपकारकरणप्रगुणांतरात्मा श्रीचच्चुलस्तुतनयः - - - पदेऽभूत् ॥ ३४॥ शुभंकरस्तस्य सुतोजनिष्ट शिष्टैर्महिष्टैः परिकीर्त्यकीर्तिः॥ श्रीजासटोसूत तदं-गजन्मा यदंगजन्मा खलुपुण्यराशिः॥ ३५॥ मंदिरं वर्द्धमानस्य श्रीनाराणकसंस्थितं॥ भाति यत्कारितं स्वीयपुण्यस्कंधमिवोज्वलम्॥ ३६॥ चत्वारश्चतुराचाराः पुत्राः पात्रं शुभश्रियः॥ अमुष्यामुष्यधर्माणो बभूवुर्भार्ययोर्द्वयोः॥ ३७॥ एकस्यां द्वावजा-येतां श्रीमदाम्वटपद्मटौ अपरस्या (मजायेतां सुतौ) लक्ष्मटदेसलौ॥ ३८॥ पाकाणां

नरवरे वीरदेवमकारणपाटवं ॥ प्रकटितं स्वीयवित्तेन धातुर्नव महीतलं ॥ ३९ ॥ पुत्रौ पवित्रौ गुणरत्नपात्रौ विशुद्धगात्रौ समशीलसत्वौ ॥ बभूवतुर्लक्ष्मटकस्य जैत्रौ मुनिदुर्गसिंहाभिधौ यशस्त्रौ ॥ ४० ॥ षट्खण्डागमबद्धसौहृदभरा : षड्जीवरक्षाकरा : षड्भेदेंद्रियवश्यतापरिकरा : षट्कर्मकृत्तादरा : षट्खंडावनिकीर्तिपालनपरा : षाड्गुण्यचिंताकरा : ॥ षड्दर्शांबुजभास्करा : समभवन् षड्देशलस्यांगजा : ॥ ४१ ॥ श्रेष्ठीतुङ्कनायकः प्रथमकः श्रीगोसलोवागजिद्वेवस्पर्श इतोऽपि सीयकवर : श्रीराहको नामत : ॥ एते तु क्रमतो जिनक्रमयुगा भोजैकभृङ्गोपमा मान्या राजगणैर्वदान्यमतयो राजंति जंतुस्तवा : ॥ ४२ ॥ हर्म्यं श्रीवर्द्धमानस्याजयमेरोर्विभूषणं ॥ कारितं यैर्महाभागैर्विमानमिव नाकिनां ॥ ४३ ॥ तेषामंतः श्रिय : पात्रं सीयकश्रेष्ठिभूषणं ॥ मंडलकरं महादुर्गं भूषयामास भूतिना ॥ ४४ ॥ योन्यायांकुरसेचनैकजलद : कीर्तेर्निधानं परं सौजन्यांबुजिनीविकासनरविः पापाद्रिभेदे पविः ॥ कारुण्यामृतवारिधेर्विलसने राकाशशांकोपमो नित्यंसाधुजनोपकारकरणव्यापारबद्धादर : ॥ ४५ ॥ येनाकारि जितारिनेमिभवनं देवाद्रिशृंगोहुरं चंचत्कांचनचारुदंडकलसश्रेणिप्रभाभास्वरं ॥ खेलत्खेचरसुन्दरीश्रमभरं भंजद्वजोद्वीजनैर्धनेष्ठापदशैलशृंगजिनभृत् प्रोद्दामसद्मश्रियं ॥ ४६ ॥ श्रीसीयकस्य भार्ये स्तो नागश्रीमामटाभिधे ॥ आद्यायास्युत्रय : पुत्रा द्वितीयाया : सुतद्वयम् ॥ ४७ ॥ पंचाचारपरायणात्ममतय : पंचांगमंत्रोज्वला : पंचज्ञानविचारणा : सुचतुरा : पंचेन्द्रियार्थोज्जया : ॥ श्रीमत्पंचगुरुप्रणामसमनस : पंचाणुशुद्धव्रता : पंचैते तनया गृहस्थविनया : श्रीसीयकश्रेष्ठिन : ॥ ४८ ॥ आद्यः श्रीनागदेवो भूल्लोलाकश्रोज्वलस्तया ॥ महीधरो देवधरो द्वावेतावन्यमातृजौ ॥ ४९ ॥ उज्वलस्यांगजन्मानौ श्रीमद्दुर्लभलक्ष्मणौ ॥ अमूनां भुवनोद्भासियशोदुर्लभलक्ष्मणौ ॥ ५० ॥ गांभीर्यं जलधेः स्थिरत्वमचलात्तेजस्विता भास्वत. सौम्यं चन्द्रमसः शुचित्वममरस्त्रोतस्विनीतः परम् ॥ एकैकं परिगृह्य विश्वविदितो यो वेधसा सादरम् मन्ये बीजकतेकृतः सुकृतिना मल्लोलकश्रेष्ठिन : ॥ ५१ ॥ अथागमन्मन्दिरमेकदास्य श्रीविन्ध्यवल्ली धनधान्यवल्ली ॥ तत्रालुभाद्वादभितल्पसुप्त : कंचिन्नरेशं पुरतः स्थितं मः ॥ ५२ ॥ उवाच कस्त्वं किमिहाभ्युपेत : कुत : सतं प्राह फणीश्वरेऽहं ॥ पातालमूलात्तव देशनाय श्रीपार्श्वनाथः स्वयमेप्यतीह ॥ ५३ ॥ प्रातस्तेनतमुत्थाय न कंचन विवेचितं ॥ स्वतस्यांतर्मनोभावा यतोवातादिदूषिता : ॥ ५४ ॥ लोलाकस्य प्रियास्तिस्रो बभूवुर्मनसः प्रियाः ॥ ललिता कमलश्रीश्च लक्ष्मीलक्ष्मी स्तनाभय : ॥ ५५ ॥ तत : समस्तां ललितां बभापे गत्वा प्रियां तस्य निशि प्रसुप्तां ॥ शृणुष्व भद्रे धरणोहमेहि श्री .... दर्शयामि ॥ ५६ ॥

तया स चोक्तो .... सत्यमेवतत्तु श्रीपार्श्वनाथस्य समुद्धृतिं सः प्रासादमर्चां च करिष्यतीह ॥ ५७ ॥ गत्वा पुनर्लौलिकमेवमूचे भोभक्त सक्तानुगतातिरक्ता : ॥ देवे धने धर्मविधौ जिनेष्टौ श्रीरेवतीतीरमिहाप पार्श्वे : ॥५८॥ समुद्धरेनं कुरु धर्मकार्यं त्वं कारय श्रीजिनचैत्यगेहं येनाप्स्यसि श्रीकुलकीर्तिपुत्रपौत्रोरुसंतानसुखादिवृद्धिं ॥ ५९ ॥ तदे – – मास्यं वनमिह निवासो जिनपते स्तएते ग्रावाणाः शठकमठमुक्तागगनतः ॥ सधारामे .... दुपरचयतः कुण्डसरितस्तदत्रेतत्स्नान .... निगमं प्राप परमं ॥ ६० ॥ अत्रास्त्युत्तममुत्तमादिशि पुरं सार्द्धुष्टमंचोच्छ्रितं तीर्थं श्रीवरलाइकात्र परमं देवोऽतिमुक्ताभिधः ॥ सत्यश्चात्र घटेश्वर : सुरनतो देवः कुमारेश्वर : सौभाग्येश्वरदक्षिणेश्वरसुरौ मार्कंडरिंचेश्वरो ॥ ६१ ॥ सत्योंबरेश्वरो देवो ब्रह्ममह्लेश्वरावपि॥ कुटिलेशः कर्करेशो यत्रास्ति कपिलेश्वर : ॥ ६२ ॥ महानालमहाकालपरश्वेश्वरसंज्ञका : ॥ श्रीत्रिपुष्करतां प्राप्ता धरित्रिभुवनार्चिताः ॥ ६३ ॥ कर्त्तिनाथं च के .... मिस्वामिनः ॥ संगमीस : पुटीसश्च मुखेश्वरघटेश्वरा : ॥ ६४ ॥ नित्यप्रमोदितो देवो सिद्धेश्वरगयायुस : ॥ गंगाभेदनसोमेश गुरुनाथपुरांतका : ॥ ६५ ॥ संस्नात्री कोटिलिंगानां यत्रास्ति कुटिला नदी ॥ स्वर्णजालेश्वरो देवः समं कपिलधारया ॥ ६६ ॥ नाल्पमृत्युर्न वा रोगा न दुर्भिक्षमवर्षणम्॥ यत्रदेवप्रभावेण कलिपंकप्रधर्षणम् ॥६७॥ षण्मासे जायते यत्र शिवलिंगं स्वयंभुवं ॥ तत्र कोटीश्वरेतीर्थे का श्लाघा क्रियते मया ॥ ६८॥ इत्येवंज .... कृत्वावतारक्रिया ॥ कर्त्ता पार्श्वजिनेश्वरोऽत्र कृपया सोत्पाद्य वास : पते : शक्तेर्वैक्रियकश्रियस्त्रिभुवनप्राणिप्रबोधं प्रभु : ॥ ६९ ॥ इत्याकर्ण्य वचोविभाव्य मनसा तस्योरग : स्वामिन : सः प्रात : प्रतिबुध्य पार्श्वमभितः क्षोणीं विदार्य क्षणात्तावत्तत्र विभुं ददर्श सहसा निःप्राकृताकारिणं कुंडाभ्यर्णतपोवधानदधतं स्वायंभुव : श्रीश्रितं ॥ ७० ॥ नासीयत्र जिनेंद्रपादनमनं नो धर्मकर्मार्जनं न स्नानं न विलेपन न च तपोध्यानं न दानार्चनं॥ नो वा सन्मुनिदर्शनं .... ॥ ७१ ॥ तत्कुंड मध्यादथ निर्ज्जगाम श्रीसीयकस्यागमनेन पद्मा ॥ श्रीक्षेत्रपालस्तदथांबिका च श्रीज्वालिनी श्रीधरणोरगेश : ॥ ७२ ॥ यदावतारमाकार्षीदत्र पार्श्वजिनेश्वर : ॥ तदानागह्रदे यक्षागिरिस्तत्र पपात स : ॥ ७३ ॥ यक्षोपि दत्तवान् स्वप्नं लक्ष्मणब्रह्मचारिणः ॥ तत्राहमपि यास्यामि यत्र पार्श्वविभुर्मम ॥ ७४ ॥ रेवतीकुण्डनीरेण या नारी स्नानमाचरेत् ॥ सा पुत्रभर्तृसौभाग्यं लक्ष्मीं च लभते स्थिरां ॥ ७५॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यो वा शूद्र एव च ॥ अंत्यजो वापि स्वर्गं च संप्राप्नोत्युत्तमां गतिं

॥ ७६ ॥ धनं धान्यं धरां धर्मं धैर्यं धौरेयतां धियं ॥ धराधिपतिसन्मानं लक्ष्मीं चाप्नोति पुष्कलाम् ॥ ७७ ॥ तीर्थाश्चर्यमिदं जनेन विदितं यद्दीयते सांप्रतं कुष्टप्रेतपिशाच-कुज्वररुजा हीनांगगंडापहं ॥ सन्न्यासं च चकार निर्गतभयं घूकश्शृगालीद्वयं काकीना-कमवाप देवकलया किं किं न संपद्यते ॥ ७८ ॥ श्लाघ्यं जन्मकृतं धनं च सफलं नीता प्रसिद्धिं मतिः सद्धर्मोपि च दर्शितस्तनुरुहस्वप्नोर्पितः सत्यतां ॥ .... परदृष्टिदूषि-तमनाः सद्दृष्टिमार्गे कृतो जैन .... तमाश्रीलोलकः श्रेष्टिनः ॥ ७९ ॥ किंमेरोः शृंगमेतत् किमुत हिमगिरेः कूटकोटिप्रकाण्डं । किं वा कैलासकूटं किमथ सुरपतेः स्वर्विमानं विमानं ॥ इत्थं यत्तर्क्यतेस्म प्रतिदिनममरैर्मर्त्यराजोत्करैर्वा मन्ये श्रीलोलकस्य त्रिभुवनभरणादुच्छ्रितं कीर्तिपुंजम् ॥ ८० ॥ पवनसुतपताका पाणितो भव्यमुख्यान् पटुपटहनिनादादाव्हयत्येषजैनः ॥ कलिकलुषमथोच्चैर्दूरमुत्सारयेद्वा त्रिभुवनविभु – भान्नृत्यतीवालयोयं ॥ ८१ ॥ – – स्थानकमाधरंति दधते काश्चिच्च गीतोत्सवं काश्चिद्विप्रातितालवंशललितं कुर्वंति नृत्यं च काः ॥ काश्चिद्वाद्यमुपानयन्ति निभृतं वीणास्वरं काश्चन यः प्रोच्चैर्ध्वजकिंकिणीयुवतयः केषां मुदेनाभवन् ॥ ८२ ॥ यः सद्वृत्तयुतः सुदीप्तिकलितस्त्रासादिदोषोज्झितश्चितारव्यातपदार्थदानचतु-रश्चितामणेः सोदरः ॥ सोभूच्छ्रीजिनचंद्रसूरिसुगुरुस्तत्पादपंकेरुहे योभृंगायतप-त्रलोलकवरस्तीर्थं चकारैष सः ॥ ८३ ॥ रेवत्याः सरितस्तटे तरुवरायत्राव्हयंते भृशं शाखा बाहुलतोत्करैर्नरसुरान् पुंस्कोकिलानां रुतैः ॥ मत्पुष्पोच्चयपत्रसत्फलचयै रानिर्मलैर्वारिभिर्भोभोभ्यर्चयताभिषेकयत वा श्रीपार्श्वनाथं प्रभुं ॥ ८४ ॥ यावत्पुष्क-रतीर्थसैकतकुलं यावच्च गंगाजलं यावत्तारक चंद्रभास्करकरा यावच्च दिक् कुंजराः ॥ यावच्छ्रीजिनचंद्रशासनमिदं यावन्महेंद्रं पदं तावत्तिष्ठतु सत् प्रशस्तिसहितं जैनं स्थिरं मंदिरं ॥ ८५ ॥ पूर्वतो रेवतीसिन्धुर्देवस्यापि पुरं तथा ॥ दक्षिणस्यां मठस्थानमुदीच्यां कुण्डमुत्तमं ॥ ८६ ॥ दक्षिणोत्तरतोवाटी नानावृक्षैरलंकृता ॥ कारितं लोलिकेनैतत् सप्तायतनसंयुतं ॥ ८७ ॥ श्रीमन्म – रसिंहोभूद्गुणभद्रो महामुनिः ॥ कृता प्रशस्ति रेषा च कविकंठविभूषणा ॥ ८८ ॥ नैगमान्वयकायस्थ छीतिगस्य च सूनुना ॥ लिखिता केशवेनेयं मुक्ताफलमिवोज्वला ॥ ८९ ॥ हरसिगसूत्रधारोथ तत्पुत्रो पाल्हणो भुवि ॥ तदंगजेमाहडेनापि निर्मितं जिनमंदिरं ॥ ९० ॥ नानिगपुत्रगोविन्द पाल्ह-णसुतदेल्हणौ उत्कीर्णा प्रशस्तिरेषा च कीर्तिस्तंभं प्रतिष्ठितं ॥ ९१ ॥ प्रासिद्धिमग-मदेव काले विक्रमभास्वतः शड्विंशद्वादशशते फाल्गुने कृष्णपक्षके ॥ ९२ ॥ तृती-यायां तिथौ वारे गुरौ तारे च हस्तके ॥ धृतिनामनि योगे च करणे तैतले तथा ॥ ९३ ॥ संवत् १२२६ फाल्गुनवदि ३

कांवरिवणाग्रामयोरंतराले गुहिलपुत्ररा० दाम्वरमहंघणसिंहाभ्यां दत्त क्षेत्र डोहली १ खडुंवराग्रामवास्तव्यगोडसोनिगवासुदेवाभ्यां दत्तडोहलिका १ आंतरीप्र तिगणकेरायताग्रामीयमहंतमलींवडियोपालिभ्यां दत्त क्षेत्र डोहलिका १ वडोवाग्राम-वास्तव्यपारिग्रहीआल्हणेन दत्तक्षेत्रडोहलिका १ लघुविक्रोलीग्रामसंगुहिलपुत्ररा० शाहरूमहत्तममाहवाभ्यां दत्तक्षेत्रडोहलिका १ वहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिर्भरतादि-भि:॥ यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलम्॥१॥

९-मेनालगढ़के महलकी उत्तरी फाटकके स्तंभकी प्रशस्ति.

ॐ नमः शिवाय॥ मालवेशगतवत्सरैः शतैर्द्वादशैश्च षडविंशपूर्वकैः। कारितं मठमनुत्तमं कलौ भावब्रह्ममुनिनामुनाह्वयं॥ तस्मात्सत्यमयः सुभाषितमयः कंदर्प्प-शोभामयः शश्वद्धर्म्ममयः कुलाकुलमयः कल्याणमालामयः। धर्मज्ञं च मकलमपं कृतधियं श्रीचाहमानान्वयं सांप्रत्क्ष्माधिपसुन्दरोवनिपतिः श्री पृथ्विराजोभवत्॥ तस्मै धर्म्मवरिष्टस्य पृथ्वीराजस्य धीमतः। पुण्ये कुर्व्वति वै राज्यं निष्पन्नं मठमुत्तमं॥

१०-उदयपुरसे उत्तर ओर १४ मीलके फ़ासिलेपर श्री एकलिंगजीके मन्दिरमें श्याम पत्थरके नन्दिकेश्वरकी दाहिनी तरफ़ गणपतिकी मूर्त्तिके आगेकी पश्चिम तरफ़की तुरेपर खुदा हुआ लेख.

संवत् १२७० वर्षे महाराजाधिराज श्री जैत्रसिंहदेवेषु राज..........

११-उदयपुरसे उत्तरकी तरफ़ चार कोसके फ़ासिलेपर गांव चीरवाके मन्दिरमें दाहिनी तरफ़की प्रशस्ति.

ॐ नमः श्रीमहादेवाय॥ श्रीयोगराजेश्वरनामधेयो देवो वृषांकः सशिवा य वोस्तु॥ स्तुतः सदा यः प्रमदात् प्रसन्नः किं किं प्रभुत्वं न ददाति सद्यः॥१॥ योगेश्वरी वो भवतु प्रसन्ना देवी स्वभावा नवमप्रभावा॥ षट्कर्मसंसाधन-लीनवित्तैर्योगीन्द्रवृन्दैरभिवंदितांघ्रिः॥२॥ गुहिलांगजवंशजः पुरा क्षितिपालोत्र वभूव वप्पकः॥ प्रथमः परिपंथिपार्थिवध्वजिनीध्वंसनलालसाशयः॥३॥ वहुष्वतीतेषु महीश्वरेषु श्रीपद्मसिंहः पुरुषोत्तमोभूत्॥ सर्वांगहृद्यं यमवाप्य लक्ष्मीस्तस्थौ

विहायाऽस्थिरतां सहोत्थाम् ॥ ४ ॥ श्रीजैत्रसिंहस्तनुजोस्य जातो भिजातिभूभृत्प्रलयानिलाभः ॥ सर्वत्र येन स्फुरता न केषां चित्तानि कंपं गमितानि सद्यः ॥ ५ ॥ न मालवीयेन नगोर्ज्जरेण न मारवेशेन न जांगलेन ॥ म्लेच्छाधिनाथेन कदापि मानो ग्लानिं न निन्ये ऽवनिपस्य यस्य ॥ ६ ॥ तेजःसिंह इलापतिः समभवद्यस्यात्मजन्मा नयी चातुर्योदयचंचिताच्युतवधूचंचत्प्रपञ्चोच्चयः ॥ चंचच्चन्द्रमरीचिवच्च रुचिराचारो विचारांचितं वित्तंन्यंचितचापलं च रचयन् श्रीचन्द्रचूडार्च्चने ॥ ७ ॥ तदनु च तनुजन्मा तस्य कल्याणजन्मा जयति समरसिंहः शत्रुसंहारसिंहः ॥ क्षितिपतिरतिशूरश्चन्द्ररुक्कीर्त्तिपूरः स्वहितविहितकर्म्मावुद्धसद्धर्म्ममर्म्मा ॥ ८ ॥ इतश्च ॥ जातघांटरडज्ञातौ पूर्वमुद्धरणाभिधः ॥ पुमानुमाप्रियोपास्तिसपन्नशुभवैभवः ॥ ९ ॥ यं दुष्टशिष्टशिक्षणरक्षणदक्षत्वतस्तलारक्षं ॥ श्रीमथनसिंहनृपतिश्चकार नागद्रहद्रंगे ॥ १० ॥ अष्टावस्य विशिष्ठाः पुत्रा अभवन् विवेकसुपवित्राः तेपु वभूव प्रथमः प्रथितयशा योगराज इति ॥ ११ ॥ श्रीपद्मसिंहभूपालाद्योगराजस्तलारतां नागद्रहपुरे प्राप पौरप्रीतिप्रदायकः ॥ १२ ॥ वभूवावरजस्तस्य रत्तभूरिति विश्रुतः ॥ केल्हणस्तनयोमुष्य मुख्यपौरुपशालिनां ॥ १३ ॥ उदयीत्यास्ययाख्यातस्तत्सुतो विततोदयी ॥ अभूज्जातस्तुतत्पुत्र कर्मणः सद्मशर्मणः ॥ १४ ॥ योगराजस्य चत्वारश्चतुरा जज्ञिरेंगजाः ॥ पमराजो महेन्द्रोथ चंपकः क्षेम इत्यमी ॥ १५ ॥ नागद्रहपुरभंगे समं पुरत्राणसैनिकैर्युध्वा ॥ भूतालाहटकूटे पमराजः पंचतां प्राप ॥ १६ ॥ वालाल्हादनचयजा महेन्द्रतनूजास्त्वयस्त्वजायंत ॥ नयविनयपरपराजयजातलया विहितदीनदयाः ॥ १७ ॥ वालाकस्यांगजो जातः पेथाकोविलभइलः ॥ सुतोभूत्तस्य सामंतो नन्तोपस्तौ कृतोद्यमः ॥ १८ ॥ वालाकः कोदडकग्रहणे श्रीजैत्रसिंहनृपपुरतः ॥ त्रिभुवनराणकयुद्धे जगाम युद्ध्वा परलोकं ॥ १९ ॥ तद्विरहमसहमाना भोल्यपिनाम्नादिमा विदग्धानां ॥ दग्ध्वा दहने देहं तद्भार्य्या यातमन्वगमत् ॥ २० ॥ चंपकस्य सुरभेः स्वभावतो राजसिंह इति नन्दनोभवत् ॥ रामसिंहमथ सः प्रसूतवान् सो जनिष्ट च भचुडमंगजं ॥ २१ ॥ क्षेमस्तु निर्मितक्षेमश्चित्रकूटेतलारतां ॥ राज्ञः श्रीजैत्रसिंहस्य प्रसादादापदुत्तमाम् ॥२२॥ हीरूरितिप्रसिद्धा प्रतिपिद्धार्त्तार्तिदुर्म्मरभूत्र ॥ जाया तस्या मायाजायत तनुजस्तयो रत्नः ॥ २३ ॥ रत्नानि संति सगुणानि वहून्यपीह स्यातानि यस्तदधिकोविदधेतुमत्र ॥ पुंस्त्वाधिरोपणगुणेन गरीयसो ऋरत्नः स केन समतां समुपैति शुद्धः ॥ २४ ॥ रत्नस्य सूनुरन्यून प्राप्तमानोस्ति मानिपु ॥ लालानामा घनश्याम प्रवराचारशौचवान् ॥ २५ ॥ विक्रांतरत्नं समरेथ

रत्नः सपत्नसंहारकृतप्रयत्नः ॥ श्रीचित्रकूटस्य तलाटिकायां श्रीभीमसिंहेन समं ममार ॥ २६ ॥ रत्नानुजोस्ति रुचिराचारप्रख्यातधीरसुविचारः ॥ मदनः प्रसन्नवदनः सततं कृतदुष्टजनकदनः ॥ २७ ॥ यः श्रीजेसलकार्ये भवदुल्वणकरणांगणे प्रहरन् ॥ पंचलगुडिकेन समं प्रकटबलो जैत्रमल्लेन ॥ २८ ॥ श्री भीमसिंहपुत्रः प्राधान्यं प्राप्य राजसिंहोयं ॥ वहु मेने नेकध्यं प्राक् प्रतिपन्नं दधद्हृदयो - ॥ २९ ॥ श्रीचित्रकूटदुर्गे तलारतां यः पितृक्रमायातां ॥ श्रीसमरसिंहराज प्रसादतः प्राप निःपाप ॥ ३० ॥ श्रीभोजराजरचितत्रिभुवननारायणाख्यदेवगृहे ॥ यो विरचयतिस्म सदाशिव परिचर्य्यां स्वशिवालिप्सुः ॥ ३१ ॥ मोहनो नाम यस्यास्ति नंदनो विनयी नयी ॥ वालोपि पापकर्म्मभ्यः साशंकः शूकमत्तया ॥ ३२ ॥ सविकारः शिववैरी यदस्ति विदितः पुरातनो मदनः ॥ निर्विकृते शिवभक्तेरमुष्य तेनोपमानातः ॥ ३३ ॥ इतश्च नागद्रहसंनिधाने पदे पदे प्राज्यलसंनिधाने ॥ ग्रामः सुभूमिभृतिचीरकूपनामाख्यदोपोमलनीरकूपः ॥ ३४ ॥ तस्याधिपत्येन धनाप्ति शालिना प्राप प्रसादं गुहिलात्मजन्मनः ॥ श्रीपद्मसिंहक्षितिपादुपासितात्प्राग्योगराजः किलविप्रवेषभृत् ॥ ३५ ॥ सयोगराजः प्रथमं पृथुः श्रीरकारयत्तत्र पवित्रचित्तः ॥ श्रीयोगराजेश्वरदेवगेहं योगेश्वरीदेवगृहेण युक्तम् ॥ ३६ ॥ पूर्वमुद्धरणेनेहोद्धरणस्वामिशार्गिणः ॥ हर्म्यं विधायितं रम्यं पूर्वजोद्धरणार्थिना ॥ ३७ ॥ ज्ञात्वा सत्वरगत्वरं जगदिदं सर्वं गणेभ्यः सतां पर्य्यालोच्य विशेपतश्च विपमं पापं तलारत्वजं ॥ धर्मे धूर्जटिपूजन प्रभृतिके नित्य मनोन्यस्तकं नात्मानं मदन श्चिकीर्पुरमलं जन्मन्यमुष्मिन्नपि ॥ ३८ ॥ अस्माद् गात्रमहत्तमेन शिथिलो यस्मादमूकारितो प्रामादो ननु योगराज इति विख्यातेन पुण्यात्मना ॥ मातुर्बन्धुरथात्मनश्च मदनो व्रंहीयसे श्रेयसे लक्ष्म्यालंकृत उद्दधार तदिमावाजन्मशुद्धाशयः ॥ ३९ ॥ कालेलायसरोवरस्य रुचिरे पश्चाद्भवे गोचरे केदारौ मदनो ददौ प्रमुदितो द्वौ द्वौ विभज्य स्वयं ॥ दुर्गानुत्तरचित्रकूटनगरस्थः क्षेमहीरूयुतो नैवेद्यार्थमवद्यमोचनमना देवाय देव्यायपि ॥ ४० ॥ वयराकः पाताको मुंडो भुवणोथ तेजसामंतो ॥ अरियापुत्रो मदनस्त्विदमभिधेः पालनीयमखिलं ॥ ४१ ॥ भाविभिरेतद्वंश्यैरन्यैरपि रक्ष्यमात्मपुण्याय ॥ विश्वं विनश्य देतद्धर्मस्थानादिकंवस्तु ॥ ४२ ॥ यावच्चन्द्रविरोचनौ विलसतो लोकप्रकाशोद्यतौ तावद्देवगृहद्वयं विजयतामेतन्मुदामास्पदं ॥ उद्धर्तास्य च नंदनु प्रमुदवान्न्यायादनुयायिणी रन्येप्यस्य सनाभयो गतभया भूयासुरुत्यान्ततः ॥ ४३ ॥ पाशुपततपस्वी पतिः श्रीशिवराशिः शशिगुणराशिः ॥ आराधितेकालिंगोधिष्ठातात्रास्ति निष्ठावान् ॥ ४४ ॥ श्रीचैत्रगच्छगगने तारकवुधकविकलावतां

निलये ॥ श्रीभद्रेश्वरसूरिर्गुरुरुदगान्निष्कवर्णांग : ॥ ४५ ॥ श्रीदेवभद्रसूरिस्तदनु श्रीसिद्धसेनसूरिरथ अजनि जिनेश्वरसूरिस्तच्छिष्यो विजयसिंहसूरिश्च ॥ ४६ ॥ श्रीभुवनचन्द्रसूरि स्ततपट्टेभूदभूतदंभमल: श्रीरत्नप्रभसूरिस्तस्य विनेयोस्ति मुनिरत्नं ॥ ४७ ॥ श्रीमद्विश्वलदेव श्रीतेजः सिंहराजकृतपुज : ॥ स इमां प्रशस्ति मकरोदिह रुचिरां चित्रकूटस्थ : ॥ ४८ ॥ शिष्योमुष्यालिखन्मुख्यो वैदुष्येणविभूपित:॥ पार्श्वचन्द्रइमां विद्वद्वर्ण्यवर्णालिशालिनीं ॥ ४९ ॥ पद्मसिंहसुत : केलिसिंहोमूमुत्रकार च ॥ स्थानेत्र देल्हण शिल्पी कर्मांतरमकारयत् ॥ ५० ॥ यावद्विश्वसरस्यस्मिन्नास्ति रामस्त्रिपुष्करं ॥ राजहंसयुतं तावत्प्रशस्तिर्नंदतादियं ॥ संवत् १३३० वर्षे कार्तिक शुदि प्रतिपदि शुभम् ॥

———

१२– चित्तौड़गढ़पर महासती स्थानके दर्वाजे (रसियाकी छत्री) की प्रशस्ति.

ॐ नमः शिवाय ॥ जधदधिकविलासं चारुगौरं नखेंदुद्युतिसहितमपि स्वं सर्वलोकेष्वपूर्वं ॥ चरणकमलयुग्मं देवदेवस्य पायाद्भुवनमिदमपायाच्छ्रीसमाधीश्वरस्य ॥ १ ॥ बिभ्राणोविलसत्तृतीयनयनप्रोद्दामवैश्वानरज्वालातापनिवर्तिनीमिव शुभा मंदाकिनीं मूर्द्धनि॥कंठालंवितकालकूटविकृतिप्रध्वंसिनीं चादरात् पीयूपांशुकलामिव त्रिनयन : श्रेयो विधत्तां सतां ॥ २ ॥ विपमविशिखशस्त्रं शक्तिराद्याविलग्ना वपुपि विशदगोचिश्चंद्रमामूर्ध्निभग्न : ॥ स्मरसमरविसर्प्पद्दर्प्पलोलस्य यस्य क्षिति धरकटकांते सोवताच्चंद्रचूड : ॥ ३ ॥ सिंदूरधूलिपटलं दधानं प्रत्यूहदाहाय हुताशनाभं ॥ कुंभस्थलं चारु गणाधिपस्य श्रेयांसि भूयांसि तवातनोतु ॥ ४ ॥ प्रत्यर्थिवामनयनानयनांबुधारा संवर्धित : क्षितिभृतां शिरसि प्ररूढ : ॥ यः कुंठितारिकरवालकुठारधारस्त ब्रूमहे गुहिलवंशमपारशाखं ॥ ५ ॥ तीर्थैर्मंदिरकंदरैरिव मनोहृद्यैः पुरै: स्वश्रियो लावण्यैरिव विस्तृतैः सितमणिस्वच्छैः सरोभिश्च यः ॥ व्योमश्री मुकुरैरिव प्रतिपदं स्फीतोजयत्यंगना सौंदर्यैकनिकेतनं जनपदः श्रीमेदपाटाभिधः ॥ ६ ॥ वाहा यत्र विलोद्भवा इव नरा गंधर्वपुत्रा इव स्वर्ज्जाता इव धेनवश्च सुदृशो गीर्वाणकन्या इव ॥ पंचास्या इव शस्त्रिणो मणिरिव स्वच्छं मनो धीमतां देश : सोयमनर्गलामरपुर श्रीगर्वसर्वंकप : ॥ ७ ॥ अस्मिन्नागह्रदाह्वयं पुरमिलाखंडावनीभूपणं प्रासादावलिविभ्रमैरुपहसच्छुभ्रांशुकोटिश्रियं॥मुक्ताप्रोढमिव क्षितेश्रियइव प्रासादपंकेरुहं क्रीडाभूमिरिव स्मरस्य शशिन : सद्येव पीयूपजा ॥ ८ ॥ जीयादानंदपूर्वं तदिह पुरमिलाखंडसौंदर्यशोभि क्षोणीपृष्टस्थमेव त्रिदशपुरमधः कुर्वदुच्चैः समृद्ध्या ॥

यस्मादागत्य विप्र: स्वपुरदधिमहीवेदिनिक्षिप्तयूपो वप्पाख्यो वीतरागश्चरणयुगमुपासीत हारीतराशेः ॥ ९ ॥ संप्राप्याद्भुतमेकलिंगचरणांभोजप्रसादात्फलं यस्मै दिव्य सुवर्णपादकटकं हारीतराशिर्ददौ॥ वप्पाख्यः सपुरा पुराणपुरुषप्रारंभनिर्वाहना तुल्योत्साहगुणो वभूव जगति श्रीमेदपाटाधिपः ॥ १० ॥ सदैकलिंगार्चनशुद्धबोधः संप्राप्तसायुज्यमहोदयस्य ॥ हारीतराशेरसमप्रसादादवाप वप्पो नवराज्यलक्ष्मीम् ॥ ११ ॥ निर्भिन्नप्रतिपक्षसिंधुरशिरः संपातिमुक्ताफलश्रेणीपूर्णचतुष्कभूषणभृतो निर्म्माय युद्धस्थलीः ॥ यस्यासिर्वरयांचकार पुरतः प्रोद्धूतभेरीरवोविद्वेषिश्रिय मंजसा परिजनैः संस्तूयमानोन्वहं ॥ १२ ॥ तस्यात्मजः सन्नृपतिर्गुहिलाभिधानो धर्म्माच्छशास वसुधां मधुजित्प्रभावः ॥ यस्माद्दधौ गुहिलवर्णनया प्रसिद्धां गौहिल्यवंशभवराजगणोऽत्र जातिं ॥ १३ ॥ अहितनृपतिसेनाशोणितक्षीवनारीदृढतरपरिरंभानंदभाजः पिशाचाः॥ गुहिलनृपतिसंख्ये न स्मरंतिस्म भूयः कुरुनिधननिदानं भीमसेनस्य युद्धं ॥ १४ ॥ दुर्वारमारविशिखातुरनाकनारीरत्युत्सवप्रणयिता गुहिले दधाने ॥ भोजस्ततोनरपतिः प्रशशास भूमिमुच्चैःप्रतापकवलीकृत दुर्जयारिः॥ १५ ॥ प्रजवितुरगहेषारावमाकर्ण्य यस्यासहनियुवतिलोके काननांतं प्रयाति ॥ रुचिरवसनहारैः कंटकाम्रावसक्तैर्द्धवखदिरपलाशाः कल्पवृक्षत्वमापुः॥ १६ ॥ केकी कस्मादकस्मादनुसरति मुदं किं मरालः करालो वाचालश्चातकः किं किमिति तरुशिखासंगतोयं वकोटः ॥ नैषा वर्षाघनाली विलसति भुवने किं तु भोजप्रयाणे लक्ष्यं नैवांतरिक्षं चलितहयखुरोद्धूतधूलीपटेन ॥ १७ ॥ आसीत्तस्मादरातिद्विरदघनघटाघस्मरः शीलनामा भूमीशो वीरलक्ष्मीरतिरसरभसालिंगितस्मेरमूर्तिः॥ यस्मिन्नद्यापि याति श्रुतिपथमसकृद्विस्मृतिं यांति पूर्वे पृथ्वाद्याश्चक्रवर्तित्वमपि दधति ये भारते भूमिपालाः ॥ १८ ॥ संपूर्याखिलरोदसीमतितरां यस्याहिलोकांतरं यः शेषोगमदुद्धृतस्य यशसः शेषः सभोगीश्वरः॥ संजज्ञे विशदद्युतिस्त्रिजगतामाधारकंदाय च त्राणायामृतकंदरस्य कमलाकांतस्य संविष्टये॥ १९ ॥ एषविद्वेषिमातंगसंगादघवतीमिव॥ असिधाराजलैः सिक्ता जग्राह विजयश्रियं ॥ २० ॥ विस्फूर्जदत्युग्रतरप्रतापस्तनुश्रिया निर्जितपुष्पचापः॥ यस्यारिवर्गैरनिवार्यमोज स्ततः क्षितीशोऽजनि कालभोजः॥ २१ ॥ यस्यावंध्यरुषः सयुद्धविषयः किं वर्ण्यते मादृशैः खड्गाग्रेण कवंधयंति सुभटान् यस्मिन् कबधा अपि ॥ गर्ज्जद्वीरकरं करांकवदृतो वेतालवैतालिकास्तालीस्फालमुदाहरंति च यशः खड्गप्रतिष्ठं निशि ॥ २२ ॥ क्वाशोकः क्व च चंपकः क्व तिलकः क्वांबः क्व वा केसरः क्व द्राक्षा

वलयंन्यवस्थितिरिति प्रत्यर्थिनां वेश्मसु ॥ अत्यंतोद्वसितेषु यस्य भयतो दुर्ग्गांतराद्‌गतो वैलक्ष्येण परस्परं विधुरितो दासीजनः पृच्छति ॥ २३ ॥ विपदंतकरस्ततः क्षितेरुदियाद्यः परिपंथिदुर्जयः ॥ द्युतिमानिव रक्तमंडलो नृपतिर्मत्तटनामधेयकः ॥ २४ ॥ दर्प्पाविष्टविपक्षमालववधूवक्षोजपीठस्थले पार्थोयं विजयप्रशस्तिमलिखन्नेत्रोदविंदुच्छलात् ॥ प्राक्दुर्योधनवाहिनीमतिरुषा संहत्य दुःशासनप्रत्यर्थिप्रातिपालितामुरुयशः कर्णे दधानश्चिरं ॥ २५ ॥ वारं वारमपारवारिभिरयं संप्लावयत्युद्धतः प्रांत्येमामिति सर्वदैव दधती तं मत्सरं शाश्वतं ॥ यत्सैन्याश्वखुरोद्धतस्य रजसः साहाय्यमासेदुषीक्षोणीयं परिपूरणाय जलधेरौत्सुक्यमालंबत ॥२६॥ त्रिपुरांतकपादपंकजाश्रमसेवादरणे दृढव्रतः ॥ भुवि भर्तृभटस्तदात्मज समभूदत्र विशाखविक्रमः ॥ २७॥ एतन्निस्वाननादोगिरिगहनगुहागाधरंध्रप्रवेशादापन्नोनागसद्म स्फुटमिति कथयामास भोगीश्वराय ॥ माभैर्भूभारतोद्य प्रभृति कतिभिरप्यस्य राज्ञः प्रयाणैर्द्धात्री यात्री खमेपा तुरगखुरपुटोत्खातधूलिच्छलेन ॥ २८ ॥ कृत्वा धारानिपातं निविडपरिलसत् कृष्णलक्ष्मीः समंतात् संग्रामस्थानभूमौ विषममसुहृदां मूर्द्धनि यस्यासिमेघः ॥ आश्चर्यं तद्यदेषां मदनसहचरीश्रीभृतां प्रेयसीनां सीमंतेभ्योजहाराविरलरुचिभरं सांद्रसिंदूररेणुं ॥ २९ ॥ वभूव तस्मादथ सिंहनामा निदाघमार्तंडसमानधामा ॥ दिवातनेंदुप्रतिमानमास्यैरुवाहयस्यारिपुरंध्रिवर्गः ॥ ३० ॥ किं वर्ण्या किल सिंहविक्रमकथा यस्योर्ज्जितैर्गर्ज्जितैः संत्रासादपसृत्य भूधरगजाः सपेदिरे दिग्गजान्॥ हंसीवांडमचंडधामरुचिरा कीर्त्तिः श्रियं यस्य च क्रोडीकृत्य निपेवतेऽखिलमिदं ब्रह्मांडभांडं शुचिः ॥ ३१ ॥ निस्त्रिंशत्रुट्यदस्थिप्रभवपटुकटत्कारतालैरुदारैर्नृत्यंतः स्कंदभेदच्युतरुधिरघनास्निग्धकालेयभाजः ॥ यत्संग्रामे कबंधा मुदितसहचरीसंगभंग्याभिरामैरानंदस्पंदिरंगक्षितिसुहृदि समालोकिताः स्वर्गिवर्गैः ॥ ३२ ॥ श्रितवतस्त्रिदशाधिपवारणं पितुरवाप्य सितातपवारणं भुवमथ प्रशशास महायकः समर मुर्द्धनि भुजैकसहायकः ॥ ३३ ॥ तुरंगलालागजदाननीरप्रवाहयोः संगममुद्वहंति ॥ यस्य प्रयाणे निखिलापि भूमिः प्रयागलक्ष्मीं बिभरां वभूव ॥ ३४ ॥ यः पराक्रमसन्नादद्दीपिते क्रोधपावके ॥ निस्त्रिंशसामिधेनीभिर्जुहाव समिधः परान् ॥ ३५ ॥ यस्यासिः प्रतिपक्षसैन्यविपिनप्रस्तारसंप्लावनप्राप्तप्रौढिरपारशौर्यजलधेः कल्लोललीलां दधौ ॥ वंशेऽस्मिन् गुहिलस्य मेघविदिते भूपालचूडामणिश्रेणिप्रग्रहभासिताङ्घ्रिरभवत् खुम्माणनामा नृपः ॥ ३६ ॥ आकर्ण्य पन्नगीगीतं यस्य वाहुपराक्रमं ॥ शिरश्चालनया शेषश्चक्रे कंपं परं भुवः ॥ ३७ ॥ शस्त्राणामशनिप्रहारमभितः स्वीकुर्वतां संगरे घातोस्माभिरवापि नाकमपरे संभेजिरे मौलयः ॥ प्राणांत-

श्वसितप्रसारितमुखव्यक्तद्विजश्रेणिभिः शीर्षाणि द्विपतामतीव जहसुश्छिन्नानि येनामुना ॥ ३८ ॥ यः पृष्टं युधि सर्वदोपि न ददौ प्रत्यर्थिनां नानृतं लोकानां वचनं मनो न हि परस्त्रीणां कदाचित्प्रभुः ॥ सत्त्रैलोक्यजनाश्रयाद्यतिकृतः सत्कीर्तिवल्या महाकंदः सर्वगुणोल्लटोनरपतिः क्षोणीं ततोऽपालयत् ॥ ३९ ॥ यन्निस्त्रिंशहतारिशोणितजलस्रोतस्विनीप्लाविता मध्ये तिष्ठति पश्चिमांबुधिरसावद्यापि शोणद्युतिः ॥ एतत्पुष्करंजितद्युतिभरः सायं त्विषामीश्वरः प्रातः प्रातरुदेति कुंकुमरुचिः प्राचीमुखं मंडयन् ॥ ४० ॥ अल्लटस्य नृपतेरपकर्तुं निःसहारणमहीपु सपत्नाः ॥ तर्जयाति शबरीरनुशैलं हर्पवर्णिततदीयचरित्राः ॥ ४१ ॥ गौरीनायकमैत्रहष्टहृदयस्त्रैलोक्यसन्मानसक्रोडक्रीडितविद्धकीर्त्तिवरटो लोकाभिरक्षापरः ॥ सर्वाक्षीणनिधीश्वरोतिवलवान् पुण्यैर्जनैः सेवितो जातोस्मान्नरवाहनो भुवि पतिर्गोहल्यवंशश्रियः ॥ ४२ ॥ सर्प्पत्सैन्यखुरोद्धतेन रजसा जंबालशेषीकृतः पाथोधिः पुनरेव यस्य तुरगैर्लीलाभिराप्लावितः ॥ हत्याशेपविरोधिवर्गवनितावैधव्यदीक्षागुरुर्यश्चासीदनिवार्यविक्रमभरप्रोद्भूतवैरिव्रजः ॥ ४३ ॥ समस्तविद्वेपिजनैः प्रकीर्तितः स्वस्त्यानशौर्यादिपरोक्षविक्रमैः ॥ दृष्टेपि चास्मिन् खलु मुक्तधैर्यैरप्रेक्षितस्वीयजनैः पलायितम् ॥ ४४ ॥ ....दोस्थंभप्रतिवद्धमंगलयशः प्रस्तावनोयोजना..................कुर्वतः॥ ४५॥ दैतेयानिव शत्रून् हंतुं धर्मस्य बाधकानुग्रान् ॥ सर्वज्ञादिव तस्माच्छक्तिकुमारो नृपो जातः ॥ ४६ ॥ भूमीभर्तुरमुष्य भूमघवतः कौक्षेयदंभोलिना ये विद्वेपिमहीभृतः समभवन्नाछिन्नपक्षाः पुरा ॥ तेकेचिद्विवुधाश्रयैरपि तथा केचित्समुद्राश्रयैः केचिन्मत्तगजाश्रयैरपि पुनः संजातपक्षानहि ॥ ४७ ॥ त्यागेनार्थिमनोहरेण कृतिनः कर्णं यमाचक्षते यं पार्थं प्रथयंति वैरिसुभटाः शौर्येण सत्वाधिकं ॥ यं रत्नाकरमामनंति गुणिनो धैर्येण मर्यादया यं मेरु महिमाश्रयेण विवुधाः शंसांति सर्वोन्नतं ॥ ४८ ॥ मुक्तादामावदातद्युतिभिरतितरां लोकमुद्भासयंत्या यः कंदः कीर्त्तिवल्या सुरभिगुणभृतोविश्वविस्तारभाजः ॥ प्रौढप्रत्यर्थिसेनाविषमजलनिधेः शोषणेगस्त्यतुल्यस्तस्मादाम्रप्रसादः समजनि विदितो मेदपाटावनीशः ॥ ४९ ॥ भृगुपतिरिव दृप्तक्षत्रसंहारकारी सुरगुरुरिव शश्वन्नीतिमार्गानुसारी ॥ स्मरइव रतिलोलप्रेयसीचित्तचारी शिविरिव सवभूव त्रस्तसत्वोपकारी ॥ ५० ॥ जटाधरसखंडेदुः करालःक्रूरकृत्सितिः ॥ भाति यस्य रणे पाणौ खड्गः कल्पांतभैरवः ॥५१॥ तस्मिन्नुपरतैश्वर्ये गोत्रभित्तुल्यधर्मिणि॥ उदियाय महीपृष्ठे शुचिवर्मा महीश्वरः॥ ५२ ॥ उद्योगप्रसरत्तुरंगमखुरक्षुण्णैः क्ष्मारेणुभिर्येनाधायि तरंगिणी दिविशदामुद्वेलपूराकुला ॥

स्वर्वामानवसंगसंभृतमुदामानंदजैरश्रुभिः शत्रूणां पुनरेव संभृतपयः पुरा च चक्रे-क्षणात् ॥ ५३ ॥ पत्रैः पत्रावलीनां समजनि रचनाधातुभिः पादरागो धूलीभिः कंदराणां विपदमलयजालेपलक्ष्मीरुदारा ॥ गुंजाभिर्हारवल्लीयदरिमृगदृशाइत्यरण्ये-पि भूषा सौंदर्यं नैव नष्टं शबरसहचरीनिर्विशेष गतानां ॥ ५४ ॥ यद्यात्रासु रजस्तनुः क्षितिरियं मंदाकिनीवारिषु स्नात्वा दिव्यमिवाकरोदितिरवेर्बिंबं स्पृशंती मुहुः ॥ एतेनेव यदि क्षितीशरुधिरैरन्यैरहं तर्पिता संग्रामेषु तदा दुनोतु भगवान् मामेपभासांपतिः ॥ ५५ ॥ ततः प्रत्यर्थिनासार्थवक्षपातोपमः पुनः ॥ नरवर्मा महीपालो बभूवामितविक्रमः ॥ ५६ ॥ ब्रह्मांडभांडोदरसंचरेण श्रमोदबिंदुच्छुरितामलश्रीः ॥ अपारविस्फारसमुद्रवेलाखेलाकरी कीर्त्तिरमुष्य राज्ञः ॥ ५७ ॥ उद्योगे नरवर्मणः स्थगयति क्षोणीरजोमंडले सामस्त्येन पलायिताः शिशुकुलस्योच्चैर्वियोगाग्निना ॥ प्रासादेषु समर्जितस्य भयतो दंदह्यमानाश्चिरं कांतारेषु न वैरिकैतवदृशः स्वास्थ्यं समासेदिरे ॥ ५८ ॥ त्रस्यद्दिक्पालभालस्थलविपुलगलत्स्वेदपूराद्यसेक-स्फीतज्वालावलीढक्षितिवलयगतारातिदुर्वारचक्रः ॥ यस्य क्रोधानलोयं गगनपरिसरं गाहते भानुभंग्या संग्रामापास्तदेहानाशितुमिव पुनर्द्वेपिणः स्वर्गभाजः ॥ ५९ ॥ यावद्विश्वप्रबोधोद्यतकरनिकरौ तिष्ठतश्चंद्रसूर्यौ यावत्पुण्यापुनीते विमलजलवहा जान्हवी सर्व्वलोकान् ॥ यावद्धर्तुं नियुक्ता भुवि गिरिपतयस्तावदीशप्रतोल्यां नंद्यात्कीर्त्तिर्विशाला गुहिलकुलभुवां सत्प्रशस्तिच्छलेन ॥ ६० ॥ अनंतरवंशवर्णनं द्वितीयप्रशस्तौ वेदितव्यं ॥ वेदशर्मा कविश्चक्रे प्रशस्तिद्वितयीमिमां ॥ आत्मनः कीर्तिविस्फूर्तिसमा गतिमिवापरा ॥ ६१ ॥ सज्जनेन समुत्कीर्णा प्रशस्तिः शिल्पि-नामुना ॥ संवत् १३३१ वर्षे आपाढ शुदी ३ भृगुवासरे.

—०—
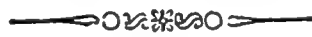
१२- चित्तौड़के पुलके नीचे तलहटीके दर्वाज़हसे आठवें कोठेकी प्रशस्ति, जो पश्चिम तरफ़ की फटमें दो सतरें हैं.

ॐ॥ संवत् १३२४ वर्षे इह श्रीचित्रकूटमहादुर्गतलहट्टिकायां पवित्रश्री चैत्र-गणव्योमांगणतरणिस्वप्रपितामहप्रभुश्रीहेमप्रभुसूरिनिवेशितस्य सुविहितशिरोम-णिसिद्धान्तसिन्धुभट्टारकश्रीपद्मचसूरिप्रतिष्ठितस्यास्य देवश्रीमहावीरचैतस्य प्रति-भासमुद्रकविकुंजरपितृतुल्यातुल्यवात्सल्यपूज्यश्रीरत्नप्रभसूरिणामादेशात् राजभग-वन्नारायणमहाराज श्री तेजः सिंहदेवकल्याणविजयि राजा विजयमानप्रधानराज-राजपुत्रकांगापुत्रपरनारी साहो–

१४-चित्तौड़में नौकोठाके पीछे महलके चौकमें गड़ाहुआ जो स्तम्भ निकला, उसमें खुदीहुई प्रशस्ति.

संवत १३३५ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ श्रीएकलिंगहराराधनपाशुपताचार्य हारीतराशि क्षत्रिय गुहिलपुत्र — हलस्व सहोदर्य च श्री चूडामणीय भर्तृपुरस्थानोद्भवद्विजातविभागात्तुच्छेश्रीभर्तृपुरीयगच्छे श्री चूडामणि भर्तृपुरे श्रीगुहिलपुत्र विहार आदीशप्रतिपत्तौ श्रीचित्रकूट — — मेदपाटाधिपति श्रीतेजःसिंहराज्ञ्या श्रीजयतल्लदेव्या श्रीश्यामपार्श्वनाथ वसही स्वश्रेयसे कारिता ॥ तद्राज्ञी वसही पाश्चात्यभागे — — — गच्छीय श्रीप्रद्युम्नसूरिभ्यो महाराजकुल गुहिलपुत्रवंशतिलक श्रीसमरसिंहेन चतुराघाटोपेतायदानयुता च मठभूमि — — घाटाः पूर्वोत्तरस्यो- ज्योतिः माडलस्यावासः दक्षिणस्यां श्रीसोमनाथः ॥ पश्चिमायां श्रीभर्तृपुरगच्छीयचतुर्विंशतिजिनदेवालयो राज्ञी वसहिका च ॥ अन्यत्रायदानानि ॥ श्रीचित्रकूटतलहट्टिकामंडपिकायां च उ० द्रम्मा २४ तथा उत्तरायनेघृतकर्ष १४ तथा तैलकर्ष ८ आघाट मंडपिकायां द्रम्मा ३६ पोहरमंडपिकायाः द्रम्मा ३२ सज्जनपुरमंडपिकायां द्र० ३४ अमून्यायदानानि दत्तानि ॥ ॐ श्रीएकलिंगशिवसेवनतत्परश्रीहारीतराशिवंशसंभूतमहेश्वरराशिस्तच्छिष्य श्री शिवराशि गौडजातीयद्विजदिवाकरवंशोद्भवव्यासरत्नसुतज्योतिः माडलतथाच विप्रदेल्हणसुतमहमाडा तत्पुत्रवागभट्ट श्रीमदल्लदृष्टाश्रुभीमासहितेन एभिर्निर्लिखिता श्रीभर्तृपुरीयगच्छे — — कारि ॥ ७ ॥

—:०:—

१५-आबूपर अचलेश्वरके मन्दिरके पासके मठमें लगी हुई प्रशस्ति.

ॐ नमः शिवाय ॥ ध्यानानन्दपराः सुराः कति कति ब्रह्मादयोपि स्वसंवेद्यं यस्य महः स्वभाव विशदं किंचिद्विदांकुर्वते ॥ मायामुक्तवपुः सुसंगतभवाभावप्रदः प्रीणितो लोकानामचलेश्वरः सदिशतु श्रेयः प्रभुः प्रत्यहं ॥ १ ॥ स्वर्गार्थं स्वतनुं हुताशनतिरां पद्मासने जुह्वतः प्राणैः प्राजनि नीललोहितवपुर्यो विश्वमूर्तेः पुरा ॥ दुष्टांगुष्ठनखांकुरेण हठतस्तेनोल्लसं पञ्चमं छिन्नं धातृशिरः करात्पुनरतो विच्युत न वक्रायता ॥ २ ॥ अव्यक्ताक्षरनिर्भरध्वानिजपन्यकान्यकर्मश्रमः स्वंदेहात्स्तिमितानमुज्झितमना दानाम्बुसंवर्द्धितः ॥ यत्कुंभाचलगाग्रगांसि विततोन्यद्यपि सूंगव्रज. यत्प्रापगमोन्नतिर्गजमुखो देवः सवोन्तु श्रिये ॥ ३ ॥ कुम्भहारिविदीर्यनाशुशिखरिश्रेणिव्रमद्भूतलं कुर्वन्दृक्ये नदीगिरिसंहति स्तद्ब्रह्मांडभांडस्थिति ॥ कल्पान्तस्य विपर्ययेपि जगतामुद्वेगतुर्वेर्दिशान्निर्वाद्भूयनमद्भुतं हनुमतः पायादपायात्स नः ॥ ४ ॥

क्षोणीरजोदुर्दिने निस्त्रिंशांबुधरः सिषेच सुभटान् धाराजलैरुज्वलैः॥ तन्नारीकुचकुंकुमानि जगलुश्चित्राणि नेत्राञ्जनैरित्याश्चर्यमहो मनः सुसुधियामद्यापि विस्फूर्जति ॥ १९ ॥ अल्लटोजनि ततः क्षितिपालः संगरेनुकृतदुर्जयकालः ॥ यस्य वैरिपृतनां करवालः क्रीडयैव जयतिस्म करालः ॥२०॥ उदयतिस्म ततो नरवाहनः समिति संहृतभूपतिवाहनः॥ विनयसंचयसेवितशंकरः सकलवैरिजनस्य भयंकरः॥ २१ ॥ विक्रमविधृतविश्वप्रतिभटनीतेस्ततोगुणस्फीतेः ॥ कीर्त्तिस्तारकजैत्री शक्तिकुमारस्य सजज्ञे ॥ २२ ॥ आसीत्ततो नरपतिः शुचिवर्मनामा युद्धप्रदेशरिपुदर्शितचंडधामा ॥ उच्चैर्महीधरशिरःसु निवेशितांङ्घ्रेः शंभोर्विशाख इव विक्रमसंभृतश्रीः॥ २३ ॥ स्वर्लोके शुचिवर्मणः स्वसुकृतैः पौरंदरं विभ्रमं बिभ्राणे कलकण्ठकिंनरवधूसंगीतदोर्विक्रमे॥मायन्मारविकारवैरितरुणीगंडस्थलीपांडुरैर्ब्रह्मांडं नरवर्मणा धवलितं शुभ्रैर्यशोभिस्ततः॥ २४ ॥ जाते सुरस्त्रीपरिरंभसौख्यसमुत्सुके श्रीनरवर्मदेवे ॥ ररक्ष भूमीमथ कीर्त्तिवर्मा नरेश्वरः शक्रसमानधर्मा ॥ २५ ॥ कामक्षामनिकामतापिनि तपेऽमुष्मिन्नृपे रागिणि स्वःसिंधोर्जलसंप्लुते रमयति स्वर्लोकवामभ्रुवः॥ दोर्दण्डद्वयभग्नवैरिवसतिःक्षोणीश्वरो वैरटश्चक्रे विक्रमतः स्वपीठविलुठन्मूर्धश्चिरं द्वेषिणः॥ २६॥ तस्मिन्नुपरते राज्ञि निहताशेषविद्विषि॥ वैरिसिंहस्ततश्चक्रे निजनामार्थवद्भुवि॥२७॥ व्यूढोरस्कस्तनुर्मध्ये क्ष्वेडाकंपितभूधरः ॥ विजयोपपद.सिंहस्ततोरिकरिणोऽवधीत् ॥ २८ ॥ यन्मुक्तं हृदयाद्गरागसहितं गौरत्वमेतद्विपन्नारीभिर्विरहात्ततोपि समभूत्किं कर्णिकारक्रमः॥ धत्ते यत्कुसुमं तदीयमुचितं रक्तत्वमाभ्यंतरे बाह्ये पिंजरतां च कारणगुणग्रामोपसंवर्ग्गणं ॥ २९ ॥ ततः प्रतापानलदग्धवैरिक्षितीशधूमोत्थमषीरसेन॥ नृपोरिसिंहः सकलासु दिक्षु लिलेख वीरः स्वयश.प्रशस्तिम् ॥ ३० ॥ लोचनेषु सुमनस्तरुणीनामञ्जनानि दिशता यदनेन ॥ वारिकल्पितमहो बत चित्रं कज्जलं हृतमरातिवधूनां ॥ ३१ ॥ नृपोत्तमाङ्गोपलकांतिकूटप्रकाशिताष्टापदपादपीठः॥ अभूदमुष्मादथ चोडनामा नरेश्वरः सूर्यसमानधामा॥ ३२॥ कुम्भिकुम्भविलुठत्करवालः सङ्गरे विमुखनिर्मितकालः॥ तस्य सूनुरथ विक्रमसिंहो वैरिविक्रमकथां निरमायीत् ॥ ३३ ॥ भुजवीर्यविलासेन समस्तोद्धृतकण्टकः॥ चक्रे भुवि ततःक्षेम क्षेमसिंहो नरेश्वरः॥३४॥ रक्तं किंचिन्निपीय प्रमदपरिलसत्पादविन्यासमुग्धाः कान्तेभ्य.प्रेतवध्वो ददति रसभरोद्गारमुद्राकपालैः॥ पायं पायं तदुच्चैर्मुदितसहचरीहस्तविन्यस्तपात्रं प्रीतास्ते ते पिशाचाः समरभुवि यशो यस्य संव्याहरन्ति ॥ ३५ ॥ सामन्तसिंहनामा कामाधिकसर्वसुन्दरशरीरः॥ भूपालोजनि तस्मादपहृतसामंतसर्वस्वः॥ ३६ ॥ खुम्माणसंततिवियोगविलक्षलक्ष्मीं सेनामदृष्टविरहां गुहिलान्व-

यस्य ॥ राजन्वतीं वसुमतीमकरोत्कुमारसिंहस्ततो रिपुगणानपहृत्य भूयः ॥ ३७ ॥ नामापि यस्य जिष्णो: परबलमथनेन सान्वयं जज्ञे ॥ विक्रमविनीतशत्रुर्नृपतिरभून्मथनसिंहोथ ॥ ३८ ॥ कोशस्थितिः प्रतिभटक्षतजं न भुङ्क्ते कोशं न वैरिरुधिराणि निपीयमानः ॥ संग्रामसीमनि पुनः परिरभ्य यस्य पाणिं द्विसंश्रयमवाप फलं कृपाणः ॥ ३९ ॥ शेषानिःशेषसारेण पद्मसिंहेन भूभुजा ॥ मेदपाटमही पश्चात्पालिता लालितापि च ॥ ४० ॥ व्यादीर्णवैरिमदसिन्धुरकुम्भकूटनिष्ठ्यूतमौक्तिकमणिस्फुटवर्णभाजः ॥ युद्धप्रदेशफलिकासु समुल्लिलेख विद्वानयं स्वभुजवीर्यरसप्रबन्धान् ॥ ४१ ॥ नडूलमूलंकपबाहुलक्ष्मीस्तुरुष्कसैन्यार्णवकुम्भयोनिः ॥ अस्मिन्सुराधीशसहासनस्थे ररक्ष भूमीमथ जैत्रसिंहः ॥ ४२ ॥ अद्यापि संधकचमूरुधिरावमत्तसंघूर्णमानरमणीपरिरम्भणेन ॥ आनन्दनंदमनसः समरे पिशाचाः श्रीजैत्रसिंहभुजविक्रममुद्गृणन्ति ॥ ४३ ॥ धवलयतिस्म यशोभिः पुण्यैर्भूमण्डलं तदनु ॥ विहताहितनृपशङ्कस्तेजःसिंहो निरातंकः ॥ ४४ ॥ उप्तं मौक्तिकबीजमुत्तमभुवि त्यागस्य दानाम्बुभिः सिक्त्वा सद्गुरुसाधनेन नितरामादाय पुण्यं फलं ॥ राज्ञानेन कृपाणकोटिमटता स्वैरं विगाह्य श्रियः पश्चात्केपि विवर्द्धिता दिशि दिशि स्फारायशोराशयः ॥ ४५ ॥ आद्यक्रोडवपुः कृपाणविलसद्दंष्ट्राङ्कुरो यः क्षणान्मग्नामुद्धरतिस्म गुर्जरमहीमुच्चैस्तुरुष्कार्णवात् ॥ तेजःसिंहसुतः सएव समरे क्षोणीश्वरग्रामणीराधत्ते बलिकर्णयोर्धुरमिलागोले वदान्योधुना ॥ ४६ ॥ तालीभिः स्फुटतूर्यतालरचनासंजीवनीभिः करद्वंद्वोपात्तकबंधमुग्धशिरसः संनर्त्तयंतः प्रियाः ॥ अद्याप्युन्मदराक्षसास्तव यशःखड्गप्रतिष्ठं रणे गायंति प्रतिपक्षशोणितमदास्तेजस्विसिंहात्मज ॥ ४७ ॥ अप्रमेयगुणगुंफकोटिभिर्गाढबद्धनृपविग्रहाकृतेः ॥ कीर्त्यते न सकला तव स्तुतिर्ग्रन्थगौरवभयान्नरेश्वर ॥ ४८ ॥ अर्बुदो विजयते गिरिरुच्चैर्देवसेवितकुलाचलरत्नम् ॥ यत्र षोडशविकारविपाकैरुज्झितोकृत तपांसि वसिष्ठः ॥ ४९ ॥ क्लेशावेशविमुग्धदान्तजनयोः सद्भुक्तिमुक्तिप्रदे लक्ष्मीवेश्मनि पुण्यजन्हुतनयासंसर्गपूतात्मनि ॥ प्राप प्रागचलेश्वरत्वमचले यस्मिन्भवानीपतिर्विश्वव्यापिविभाव्यसर्वगतया देवश्चलोपि प्रभुः ॥ ५० ॥ सर्वसौंदर्यसारस्य कोपि पुंजइवाद्भुतः ॥ अयं यत्र मठस्तिष्ठत्यनादिस्तापसोचितः ॥ ५१ ॥ यत्र क्वापि तपस्विनः सुचरिताः कुत्रापि मर्त्याः क्वचिद्गीर्वाणाःपरमात्मनिर्वृतिमिव प्राप्ताः क्षणेषु त्रिषु ॥ यस्याद्योद्गतिमर्बुदेन सहितां गायंति पौराणिकाः संधत्ते सखलु क्षणत्रयमिपात्त्रैलोक्यलक्ष्मीमिह ॥ ५२ ॥ जीर्णोद्धारमकारयन्मठमिमं भूमीश्वरग्रामणीर्देवः श्रीसमरः स्वभाग्यविभवादिष्टोनिजःश्रेयसे ॥ किंचास्मिन्परमास्तिकोनरपतिश्चक्रे चतुर्भ्यः कृपासंश्लिष्टः

शुभभोजनस्थितिमपि प्रीत्या मुनिभ्यस्ततः ॥ ५३ ॥ अचलेशदण्डमुच्चैः सौवर्णं समरभूपालः ॥ आयुर्वायुचलाचलमिह दृष्ट्वा कारयामास ॥ ५४ ॥ आसीद्भावाग्निनामेह स्थानाधीशः पुरा मठे ॥ हेलोन्मूलितसंसारबीजः पाशुपतैर्व्रतैः ॥ ५५ ॥ अन्योन्यवैरविरहेण विशुद्धदेहाः स्नेहानुबंधहृदयाः सदया जनेषु ॥ अस्मिंस्तपस्यति मृगेंद्रगजादयोपि सत्वाः समीक्षतविमोक्षविधायितत्वाः ॥ ५६ ॥ शिष्यस्तस्यायमधुना नैष्ठिको भावशंकरः ॥ शिवसायुज्यलाभाय कुरुते दुष्करं तपः ॥ ५७ ॥ फलकुसुमसमृद्धिं सर्वकालं वहंतः परमनियमनिष्ठां यस्य भूमीरुहोऽमी ॥ अपरमुनिजनेषु प्रायशः सूचयंति स्खलितविषयवृत्तेरर्बुदाद्रिप्रसूताः ॥ ५८ ॥ राज्ञा समरसिंहेन भावशंकरशासनात् ॥ मठः सौवर्णदंडेन सहितः कारितोर्बुदे ॥५९॥ योकार्षीदेकलिंगत्रिभुवनविदितश्रीसमाधीशचक्रस्वामिप्रासादवृन्दे प्रियपटुतनयो वेदशर्मा प्रशस्तीः ॥ तेनैषापि व्यधायि स्फुटगुणविशदा नागरज्ञातिभाजा विप्रेणाशेषविद्वज्जनहृदयहरा चित्रकूटस्थितेन ॥ ६० ॥ यावदर्बुदमहीधरसंगं संबिभर्ति भगवानचलेशः ॥ तावदेव पठतामुपजीव्या सत्प्रशस्तिरियमस्तु कवीनाम् ॥ ६१ ॥ लिखिता शुभचन्द्रेण प्रशस्तिरियमुज्वला ॥ उत्कीर्णा कर्मसिंहेन सूत्रधारेण धीमता ॥ ६२ ॥ संवत् १३४२ वर्षे मार्ग शुदि १ प्रशस्तिः कृता.

१६-चित्तौड़गढपरसे मिले हुए एक स्तंभपर खुदी हुई रावल समरसिंहके समयकी प्रशस्ति.

संवत् १३४४ वैशाख शुदि ३ अद्य श्रीचित्रकूटे समस्तमहारा – कुलश्रीसमरसिंहदेवकल्याणविजयराज्ये एवं काले चित्रांगतडागमध्ये श्रीवैद्यनाथकृते नक ....राम्बटेन – कडी दत्त – – म १ कायस्थज्ञातीयं पचसीगसुत वीजडेन कारापितं ॥ १ ॥

१७-ग्राम जावरमें पार्श्वनाथके मन्दिरमें एक स्तम्भपर खुदी हुई प्रशस्ति.

संवत् १४७८ वर्षे पोष शुद ५ राजाधिराजश्रीमोकलदेवविजयराज्ये प्राग्वाट सा० नाना भा० फनीसुत सा० रतन भा० लापूपुत्रेण श्री शत्रुंजय गिरितारार्बुदजीरापल्लीचित्रकूटादितीर्थयात्रा कृता श्री संघमुख्य सा० धणपालेन भा० हांसूपुत्र सा० हाजाभोजाधानावधू देऊनाऊ धाईऐत्र देवा नरसिंगपुत्रिका पूनी पूरी

दमलगुणौघः पुण्यगण्योरुनामा नयविनयविवेकोद्यानपुंस्कोकिलः सन् ॥ ८ ॥ विभ्यत्सिंहपदादमुष्य सकरी नूनं मघोनोयतो वाजीसत्रहविस्ततोध्वरभुवं नोच्चैः श्रवागच्छति ॥ आहूतः कथमेतु वाहनमृते देवाग्रणीर्वृत्रहा मेघं वाहन मातनोदयमतः सद्धोमधूमोद्भवम् ॥ ९ ॥ कीर्त्तिः कौतुकिनी दिगंतमगमत्कर्पूरपूरोज्वला खेलन्ती निजवासिताभ्रमुवशादालिङ्गिता दिग्गजैः ॥ क्षीराम्भोनिधिगाहनं तु विधिना कृतादराद्दुत्थिता ब्रह्मादीननयोक्तमुत्तमगुणस्यारय प्रगल्भा दिवं ॥ १० ॥ विशिष्टजनसंगतो व्यतरदेकलक्षं यतस्ततोधिकतरं यशोलभत भोजभूमीपतिः ॥ अयं कथमतः समः कविभिरुच्यते वा ददद्विशेषविधिनान्वहं विविधलक्षभोजानपि ॥ ११ ॥ निर्व्रीडो न महेश्वरो न कठिनो नाचेतनश्चिन्तितं दातानेकगवीश्वरः परिवृढो नो भारती दुर्भगा ॥ सेनानीर्न विपक्षसंगतिरतो नोच्चैश्श्रवावा हयो नागमः कतिचित्तरुः कथमदः पुर्यासधुर्यादिवः ॥ १२ ॥ शूरः सूनृतवागनूनविभवो वशावतनः सुतन्तरयन्यकृतरत्नसानुगरिमो हम्मीरवीरोजयी ॥ विख्यातः स्मररूपजित्वरवपुर्लक्ष्मीनिवासाच्युतो वाग्देवीचतुराननो रिपुकुलप्लोषोग्ररूपो महान ॥ १३ ॥ हम्मीरः किल वैभवोचितविधिर्दित्सुः सहस्रं गवामित्याकर्ण्य सहस्रगुरविशचीनाथौ भयं जग्मतुः ॥ शश्वत्तद्रहसि स्थितान्मुररिपोः श्रुत्वा सहस्रं पतद्धेनतां समपागतावतिमुदा तद्दानमेवेक्षितुम ॥ १४ ॥ कर्णादीनतिशय्य दिग् ... वरिम्मण्डलीदण्ड दूरमपास्य कालमसकृद्दाता स्वयंदक्षिणाम ॥ इत्याकर्ण्य जनश्रुतीः परिभवं स्वं शङ्कमानोन्तकृत द्रष्टुं न क्षमते प्रजामनुनये यस्मिन महीं शासति ॥ १५ ॥ प्रासादमास्यादितशातकुम्भकुम्भं वसद्देवमचीकरद्यः ॥ अर्चाखनत्सागरकल्पमल्पेतरत्सरश्रूतवनीभिरिद्धम ॥ १६ ॥ संग्रामग्रामभूमौ मदिदमागिलतासंगतापंचशाखे सच्छाये श्यामलांगी क्षतजजलवलत्पुष्टिरिष्टप्रचांग ॥ चित्र सूते विकोशा कुसुममतिमहत्कीर्तनीयं दिगंते धाम्नाम्नाता निनान्त दलयति नियतं वारणांगे पतन्ती ॥ १७ ॥ हम्मीरवीरो रणरङ्गधीरो वाक्सुमाधुरीनर्जितकोकिकीरः धराधवालङ्करणैकहीरस्तत्तद्वनीभूपितामिंधुनीरः ॥ १८ ॥ पतत्पाणौ कृपाणी द्विपदसुपवनाहारतोषं दधाना कालाकारोरगीव स्फुरति सचकितं वीक्षिता भीतिहेतुः ॥ नाधः काये कथंचिद्दशति बहुमना नो विभीते विपक्षात्स्वर्गे वामं अनानां वितरति रमते न द्विजिह्वेन चित्रम् ॥ १९ ॥ पाय पाय सुपीनः परभटरुधिरं तन्महीगर्भजातः खड्गः कालः कुतोयं कथमियमपरा कीर्त्तिरप्युज्वलाग्य ॥ पंकनाम्नापि नूनं रुददरिवनिता नेत्रतोयैंजनाढ्ये तामासुद्वर्तितेय मृदुभुजवलयग्रच्छचूर्णरजस्रम ॥ २० ॥ उद्यत्प्रौढप्रतापानलमुषितमहाविवरोपोविवरवान्पश्या-

द्दामकीर्त्तिच्छुरिततरतनुः शीतरश्मिर्लमेति ॥ शंके रूपान्तरं स्वं कलयति सवपुर्भे-द्भीतोरणक्ष्माधीरे हम्मीरवीरे घ्नति परसुभटान् संगरे सन्मुखस्थान् ॥ २१ ॥ कुर्वन् पद्मेजनुः स्वं विधिरिति विविदग्दृष्टस्टष्टाग्रदिष्टो नो पङ्के जन्मदोषं व्यजगणदतुलं तस्य रक्तेतरस्य ॥ भूत्वा हम्मीरदेवक्षितिपतियशसः स्वच्छवर्णोपमेयो गन्ता-पुण्योपमानं दिशि दिशि सुचिरं सत्कवीनां मुखेषु ॥ २२ ॥ गौरी गौरीशहासादपि रुचिररुचिश्चंदनाच्चन्द्रतोवा कान्त्या कर्णाटकान्ता सितदशनचतुष्कानुमेया सुगेया ॥ शेषस्याशेषवेषस्फुरदमृतरुचश्चारुसौंदर्य्यधुर्य्या कीर्त्तिर्यस्येंदुमूर्त्तेः किल चरति दशाशांतविश्रांतयात्रा ॥ २३ ॥ तस्मात्क्षेत्रमहीपतिः समभवत् ख्यातो गुणांभो-निधिः शौर्य्यौदार्य्यमहत्वसत्वमहितो धर्म्मो वपुष्मानिव ॥ शक्रार्द्धासनभाजि येन जनके रत्नाकरालंकृतिर्भूर्भुक्ताजितपूर्वराजगरिमप्राप्तप्रभाशालिना ॥ २४ ॥ हृदि विनिहितरामोयोस्त्रविद्याभिरामो मदनसदृशमूर्त्तिर्विश्वविख्यातकीर्त्तिः ॥ समरहत-विपक्षोलीलयादत्तलक्षो नयनजितसरोजः प्रक्रियाक्रांतभोजः ॥ २५ ॥ संग्रामे दन्तिदन्तज्वलनकणमुचि प्रोल्लसद्वीरयोधस्फारोन्मुक्ताशुगालीनिविडकवलिताशेप-काष्ठांतराले ॥ जित्वा दुर्गं समग्रं नरपतिमहितं साधुत्रादस्य सम्यक् स्तंभं योद्धाधारि-त्र्यामरिकुलपतगश्रेणिचण्डप्रदीपः ॥ २६ ॥ आक्रान्ता वृषपुंगवेन विलसद्भासां चतुर्भिः पदैः सम्यग्वीक्षणपालिता नवनवप्राप्तप्रकर्षोदया ॥ प्रासोष्टामरनैचिकीव बहुशोरत्नान्यनर्घ्याणि गौः शूरे कीर्त्तिपयोधरा शतमखे [illegible]चरित्रतो न चांप्रति ॥ २७ ॥ कीर्त्तिः क्षीरोदपूरे बहुविधविरुदप्रोल्लसद्वीचिमाले कृष्णः शेतेस्य खड्गः सुखमुरुसमरे शेषमासाद्य शत्रोः ॥ दृश्यंते राजहंसा दिशि दिशि न ततो मानसे लीयमानाः सीदत्पक्षाविपक्षाः स्फुरति न कमलोन्मेषितापेक्षितैषाम् ॥ २८ ॥ अस्यासिः कालरात्रिः स्फुरति किलभवन्मण्डले वैरिणां यः स्वच्छः प्रोद्भासिवेश्मप्रभ-वदहिभयं भूतराजोरुतापम् ॥ पद्मोद्बोधो न चैषां भवति विघटते चक्रयोगो नियो-गाद्भूरिर्जागर्ति भीतिः पतति निजपथोनोज्झितः पङ्कपातः ॥ २९ ॥ भ्रातः कल्प-तरो किमात्थ भगवन् हेमाचल श्रूयतां कर्तुं क्षेत्रमहीपतिः प्रयतते दानानि पुण्याशयः ॥ वर्तेहं तु करे गृहांगणभुवि त्वं वर्तसे नित्यशः क्रीडार्थं यदि वा ददाति हि तदा वक्तुं क ईष्टे जनः॥ ३० ॥ इत्थं दानकथा मिथो विजयते चिन्ता-मणिस्वर्गवीमुख्यानामपि दानशास्त्रविलसन्नाम्नाममुष्य प्रभोः ॥ उन्मीलच्छरदम्बु-जामलदलस्वच्छायताक्षिस्फुरत्कोणस्थायुकमित्रवैरिपरिषत्संपद्विपद्वर्त्मनः ॥ ३१ ॥ माद्यद्वेतण्डचण्डध्वनिभरविगलद्वीरवर्गोरुधैर्य्ये स्फुर्जत्कोदंडदंडप्रपतदिषुचयच्छन्न-सैन्येप्यनन्ये ॥ जाने प्राणैकपण्ये गणयतिनगणं विद्विषां पुण्यराशिर्धन्यः क्षेत्रःक्षितीशः

वितनुते यत्तत्कुमारः पुरः सर्वज्ञोस्ति यतस्ततो चलभुवो नाथस्तु पित्रा कृतः ॥ ४४ ॥ प्रासादा बहुशः समुन्नतियुजः क्षोणीभुजा कारिताः शुद्ध्यन्मूर्द्धसु राजमानकनकप्रस्फारकुम्भश्रियः ॥ नागेन्द्रानुशिरस्सु हाटकघटानाधाय लोलत्सुधाः पातु नाकमिवोत्थिता मखभुजां पीयूषपानोत्सुकाः ॥ ४५ ॥ अंगाः संप्राप्तभंगाः स्मृतघनविटपाः कामरूपा विरूपा वंगा गंगैकसंगा गतविरुदमदा जातसादा निषादाः ॥ चीनाः संग्रामदीनाः स्खलदधिधनुषोभीतिशुष्कास्तुरुष्का भूमीपृष्ठे गरिष्ठे स्फुरति महिमनि क्ष्मापतेर्मोकलस्य ॥ ४६ ॥ मूर्द्धनः सिंदूररेखा शतमखधनुषा राजमाना गभीरं कूर्वतः शब्दमुच्चै रदरुचिचपलाः स्निग्धतन्वीकचाभाः ॥ संग्रामग्रामयाता रिपुकरिजलदाप्राप्तकालोपयोगा यस्येपुत्रातभिन्नाः खलु रुधिरजलं भूरि वर्षंति सद्यः ॥ ४७ ॥ अस्य प्रौढप्रयाणक्षणरणरसिकहेषमानोरुमानस्फूर्ज्जद्दर्व्वार्वबर्य्यंक्रमणभरभवद्धूलिधारांधकारम् ॥ नाशं नेता विवस्वानिति तु विरमतु ध्वस्तनेत्रप्रकाशः स्वानश्वानस्ववर्णान्यदि परिचिनुते तत्सभाग्यं महीयः ॥ ४८ ॥ वासोनाशासु भास्वत्कररुचिररुचा भासितास्वस्य वैरात् पारावारांतरायादपि नहि गमनं दूरमस्मादकस्मात् ॥ सेवा हेवाकमेवाचरत बहुमतं दत्तवित्तं नितांतं मंत्रोमात्यैरकारि प्रतिविमतसदो भूपतेर्मोकलस्य ॥ ४९ ॥ प्लुष्टप्रौढारिवर्गप्रथितपुरवलद्धूमधूमप्रचारैर्धूम्रं ब्रह्माण्डभाण्डोदरमतिविपुलं वीक्ष्य दक्षेषु मुख्यः ॥ कीर्त्यालेपं सुधोत्थं कलयति बलवान् दिग्वधूकिंकरीभिस्तारातद्विन्दुवृंदच्छुरणबहुरुचा योवरेणावृताभिः ॥ ५० ॥ नेता पातोत्तराशा यवननरपतिं लुंठिताशेषसेनं पीरोजंकीर्तिवल्लीकुसुममुरुमतिर्योकरोत्संगरस्थः ॥ पल्लीशाक्रान्तिवार्त्तां कलयति कलया कीर्तितां यस्य हेलां पंचास्यस्येव माद्यद्गजदलनरुचेर्लीलया रंकुभगम् ॥ ५१ ॥ आरूढ. सविता तुलां कलयति द्राङ्नीचतां कन्यया दूरं मुक्तपरिग्रहो बहुरुचा चित्रोल्लसद्धस्तया ॥ धीरोयं पदमुत्तमं तु विधिना प्राप्तोतुलां गाहते कन्याभिर्व्रियतेतमां क्षितिभुजां श्रीमोकलक्ष्मापतिः ॥ ५२ ॥ यानत्राणमना मनागपि मनोरन्यूननीतिव्रतो नो जानाति निजप्रतापमतुलं सिंहो यथा विक्रमम् ॥ मन्ये भास्वरहेमराशिमिषतो धाता तुलायामधादेतस्मादपि सोगमच्च गुरुतामद्यापि जानाति किम् ॥ ५३ ॥ दृष्ट्वा हाटककोटिकूट मतुलं दानाय मानाधिकं सद्यः शोधितमुद्धतैकमतयः संशेरते शाब्दिकाः ॥ शक्रप्रार्थित हेमदे सुरतरौ किं किं नु चिंतामणौ हेमाद्रौ शकलीकृते किमु तुलाशब्दः स्तु संकेतितः ॥ ५४ ॥ दीव्यत्तद्वीरतुगत्तरतुरगवरव्रांतजातोरुवातक्षुभ्यत्तत्क्ष्मोत्थरेणुप्रतनयनरुजा व्यग्रसूताः खरांशोः ॥ मंदायते गतेऽश्वास्तत इव वनिता वैरिणां तद्दिनानां यामाञ्जानन्ति दीर्घानवितथ-

विरुदे मोकलेन्द्रे रणास्ये ॥ ५५ ॥ को वा नो वेद विद्वांश्चरमयुगकलावेकपादेव धर्म्मः खंजन्भ्रष्टावलंबः किल चरतु कथं पीनपंके जनेऽस्मिन् ॥ सोयं सद्वंशयष्टिं वहिरवहिरथो शुद्धसारोपपन्नं प्राप्य श्रीमोकलेन्द्रं प्रविशति विपुलां मडलीं पण्डितानाम् ॥ ५६ ॥ नूनंद्भुतविधावधान्मखभुजामीशः सुमेरुं पणं गणयस्तत्र मनस्विनां व्यजयत श्रीमोकलक्ष्मापतिः ॥ तादृक्षाः कथमन्यथावानितले हेम्नाममी राशयो नैषां दानविधावमुष्य च मनः पीडाकलापि क्वचित् ॥ ५७ ॥ वन्हावन्हाय सर्पिः पतननतरुचौ भूमधूमायमाने दूनां धामाक्षिपक्तौ कथमुपकुरुते यागभागो मघोनः ॥ पुण्येनान्येव जाने दिनमणिरयते सत्कराणांसहस्रं विभ्रत्सद्योऽस्ततन्द्रः स्थगयति विधिना योयमक्ष्णां सहस्रं ॥ ५८ ॥ आरुह्यामलमंडलंकृततुलो यः पुष्करद्योतनः पुण्यश्रीसकथ तथा प्रथमतो गण्यो न तेजस्विनाम् ॥ निः पंका करलालिता वसुमती सद्राजहंसायते वधूनानुदयस्ततस्तदुदये स्यात्संपदामोचितिः ॥ ५९ ॥ पारावारस्यवेलातटनिकटनतुप्रान्तशैलाधिवासा शत्रुश्रेणीसमग्रा निवसति सततं भीतभीता नितान्तम् ॥ जेतुं यात्रा तदीया यदि भवति तदा वाजिराजीखुराग्रत्रुट्यत्क्ष्माधूलिधारा स्थलयति जलधिं पारयानाय तस्याः ॥ ६० ॥ आसाद्यातिथिमाश्रयं त्रिजगतां श्री द्वारकानायकं प्रासादं रचितोपचारमकरोद्भूमीपतिर्मोकलः ॥ देवेनांवुजबांधवेन चकितं यो वीक्षितः शंकया विन्ध्याद्रेर्गिरिसत्तमस्य नियतं मुक्तस्य वाग्बंधनात् ॥ ६१ ॥ यस्य प्रत्युतिकर्म्मद्रवदखिलमहाधातुसंभारधारापातक्ष्मातापशुष्यद्गलविलविलसल्लोलल्लालाः फणीन्द्रः ॥ व्याचष्टे स्पष्टमिष्टं ध्रुवमयमधुना भाष्यमभाष्य शिष्यं सश्रीभर्त्तुः पुरस्ताज्जयति खगपतिर्मोकलेन्द्रस्य कीर्तिः ॥ ६२ ॥ सोढुं नेशः पयोधिः क्षणमपि विरहं द्वारकानायकस्य प्रेम्णा पादोपमूलं स्वयमुपगतवान्यस्तडागच्छलेन ॥ नोदन्याकुम्भयोनेरतिपततितरामंतरेणैनमेष्यन् शापान्तं मे विदध्यादयमिति विनयाद्विन्ध्य एवानवद्यम् ॥ ६३ ॥ विन्ध्यस्कंधेकबंधुर्निजविततिभरादंधुतानीतसिंधुर्नीरक्रीडत्पुरंध्रीप्रसभकुचतटाघातसीदत्तरंगः ॥ संतुष्यत्तोयजंतुर्विविधनगनदीवेगसंरोधितंतुः सत्सेतुर्नंतरस्य स्फुरति वसुमती सिद्धिहेतुः सुकेतुः ॥ ६४ ॥ अमुष्य धरणीभृतो विषयमध्यवर्ती महादरीवृतवपुष्टया विवृतदूरगंभीरतः ॥ महोदरइवापरः परमनोनगम्यांतरः पवित्रतरकीर्त्तनो जयति चित्रकूटाचलः ॥ ६५ ॥ जायंतां नामकामं कुलधरणिभृतः सप्तशृंगोघतुंगा वैचित्र्याच्चित्रकूटं तुलयितुमनलं तीर्थभूतप्रदेशम् ॥ माभूवन्निर्झरिण्यो मदुदितजनुषो नीचगामानशौंडः शृंगे यः क्षीरवारां निधिमधिततरा मुद्यदंभोजवासं ॥ ६६ ॥ उद्दामग्रावनिर्य्यद्भरभरकणिकाजातसेकातिरेकास्निग्धच्छालप्रवालप्रभवदुरुतरा भोगसूनप्रसूनात् ॥ मध्वासारादपारादुपहतजनुषो दाववन्हे-

निदाघे विश्वग्ध्रीचो वनानि प्रसभपरिभव नेह शैले विदन्ति ॥ ६७ ॥ एतस्मिन्सारिदस्ति निर्मलजला यस्यां निवापांजलावुन्मीलत्तिलजातपातकवलव्यग्राः शफर्य्यश्चलाः ॥ क्रीडासंभ्रमविस्मृतान्सुबहुशो मज्जद्वधूनामहो वक्त्रकांतिविलोपिकज्जलकणांश्चेतुं स्फुरन्ति स्फुटम् ॥ ६८ ॥ लंक' किं नाम दुर्गं जलनिधिरविता यत्र साकालकाका प्रावृट्काले विवर्गैरपि गलितमदैर्या त्रियेताविमानी ॥ यो धत्ते क्षीरवारांनिधिमुपरिपरै राजहंसैरगम्यस्तद्दुर्ग्गं चित्रकूटो जयति वसुमतीमंडनं भूरिभूमिः ॥ ६९ ॥ सौभाग्यैकमहौषधिर्भगवती यस्मिन् भवानी स्वयं जागर्ति प्रियसंनिधानवसतिः साध्वी जनानां गुरुः ॥ देवः सोपि समस्तनाकरमणीसंतानदामव्रजप्रश्च्योतन्मकरंदविंदुसुरभिप्रस्फारनृत्यांगणः ॥ ७० ॥ सेवा हेवाकदेवस्तुतहरचरितप्रोल्लसद्भावसंपत् सद्यः स्विद्यद्भवानीकृतसुखसवनस्फारसौरभ्यहारि ॥ यद्वारिप्रातिभाव्यं वहति मृगदृशां मज्जतीनामजस्रं पातिव्रत्ये समंतात्समधिकसुभगं भावुकत्वेपि शश्वत् ॥ ७१ ॥ गिरिः कैलासो यद्दशमुख ुोच्छ्वासनदिनाद्दलन्मूलस्थानात् प्रभवति न नाव्यं विपहितुम् ॥ प्रदेशप्राग्भार प्रकृतिरमणीये तदधुना समिद्धेशः श्रीमानिह वसति गौरीसहचरः॥ ७२ ॥ एकैकयावतावत्कृतिमुपितमहा सर्वकर्म्माणमेनं कृत्वा प्रासादमाशा मुखमुकुरमतिव्योमसमानमस्य ॥ यस्याशेषोपचारक्षमधनमददान्मोदमानो वदान्यो ॥ धीरः श्रीमोकलेन्द्रो धनपुरमुचितं ग्राममायाम सीम ॥ ७३ ॥ अब्दे वाणाष्टवेदक्षितिपरिकलिते विक्रमांभोजवंधोः पुण्ये मासे तपस्ये सवितारि मकरं याति जीवे घटस्थे ॥ पक्षे शुक्लेतरास्मिन् सुरगुरुदिवसे चार्यमर्क्षे तृतीयातिथ्यां देवप्रतिष्ठामयमकृततरां मोकलो भूमिपालः ॥ ७४ ॥ उन्मीलद्यागयात्रोद्यतसुरतरुणीगीतसंग्रामधामा सुत्रामा यावदिष्टे त्रिदशपुरपरीपालनरुपष्टनीतिः ॥ पर्यायोपात्तभूनां स्फुरति दशशतिः शेषमूर्द्ध्नां च यावत् प्रस्फारस्फार लक्ष्मीरवतु वसुमती मोकलेन्द्रस्य बाहुः ॥ ७५ ॥ श्रीमद्दशपुरज्ञातिर्भट्टविष्णोस्तनूद्भवः ॥ नाम्नैकनाथनामायमलिखत्कृतिमुज्वलाम् ॥ १ ॥ अनेकप्रासादैः परिवृतमतिप्रांशुकलशं गिरीशप्रासादं व्यरचयदनूनैरनुचरैः ॥ मनाख्यो विख्यातः सकल गुणवान् वीजलसुतस्ततः शिल्पी जातो गुणगणयुतो वीसल इति ॥ २ ॥ अतिप्रशस्तैरालिखत्प्रशस्तिंवर्णैरवर्णेन वहिः कृतैर्यः ॥ श्रीमत्समाधीशमहेश्वरस्यप्रासादतोसौ चिरजीविनोस्तु ॥ ३ ॥ विद्याधरसुतः शिल्पी मनाख्यः सूत्रधारकः ॥ तदात्मजेन वीसेन प्रशस्तिरियमुत्कृता ॥ ४ ॥ रुचिराक्षरमुक्ताणां प्रशस्तिरियमुज्वला ॥ लिलेख वीसलः शिल्पी समाधीशप्रसादतः ॥ ५ ॥ संवत् १४८५ वर्षे माघवदि ३ श्रीरस्तु ॥

हरोस्तु रोहनामोना हव्य कव्य हसेलसे ॥
हसस्य सहतो प्रीतो हरते रहसीरसी ॥ १ ॥ (१)
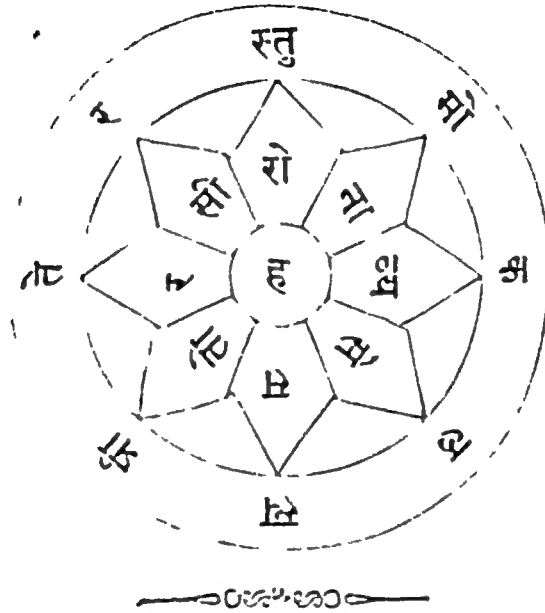
१९– गोढ़वाड़ इलाक़ेमें राणपुरके जैन मन्दिरकी प्रशस्ति.

॥ श्री चतुर्मुखजिनयुगादीश्वराय नमः॥ श्रीमद्विक्रमतः संवत् १४९६ संख्य-वर्षे श्रीमेदपाटराजाधिराज श्रीबप्प १ श्रीगुहिल २ भोज ३ शील ४ कालभोज ५ भर्तृभट ६ सिंह ७ महायक ८ राज्ञीसुतयुतस्वसुवर्णतुलातोलकश्रीखुम्माण ९ श्री-मदल्लट १० नरवाहन ११ शक्तिकुमार १२ शुचिवर्म १३ कीर्त्तिवर्म १४ योगराज १५ वैरट १६ वंशपाल १७ वैरिसिंह १८ वीरसिंह १९ श्रीअरिसिंह २० चोडसिंह २१ विक्रमसिंह २२ रणसिंह २३ खेमसिंह २४ सामन्तसिंह २५ कुमारसिंह २६ मथनसिंह २७ पद्मसिंह २८ जैत्रसिंह २९ तेजस्विसिंह ३० समरसिंह ३१ चाहुमान श्रीकीतुक-नृपश्रीअल्लावदीनसुरत्राणजैत्रबप्पवंश्यश्रीभुवनसिंह ३२ सुत श्री जयसिंह ३३ मालवेशगोगादेवजैत्रलक्ष्मसिंह ३४ पुत्र श्रीअजयसिंह ३५ भ्रातृ श्रीअरिसिंह ३६ श्रीहम्मीर ३७ श्रीखेतसिंह ३८ श्रीलक्षाक्ह्यनरेन्द्र ३९ नंदनसुवर्णतुलादिदानपुण्य-परोपकारादिसारगुणसुरद्रुमविश्रामनंदनश्रीमोकलमहीपति ४० कुलकाननपंचान-नस्यविषमतमाभंगसारंगपुरनागपुरगागरणनराणकाजयमेरुमंडोरमंडलकरबून्दीखाटू-चाटसूजानादिनानामहादुर्गलीलामात्रग्रहणप्रमाणितजितकाशित्वाभिमानस्य नि-

(१) यह श्लोक चित्रकाव्य है, जो इस लेखके ठीक मध्यमें लिखा है, परन्तु इस श्लोकका लेखके श्लोक क्रममें शुमार नहीं किया, इसवास्ते हमने इसको अन्तमें रक्खा है.

जभुजोर्जितसमुपार्जितानेकभद्रगजेन्द्रस्य म्लेच्छमहीपालव्यालचक्रवालविदलन विहंगमेंद्रस्य प्रचंडदोर्दंडखंडिताभिनिवेशनानादेशनरेशभालमालालालितपादारविंदस्य अस्खलितललितलक्ष्मीविलासगोविंदस्य कुनयगहनदहनदवानलायमानप्रतापतापपलायमानसकलवलूलप्रतिकूलक्ष्मापश्वापदवृंदस्य प्रवलपराक्रमाक्रांतढिल्लीमंडलगुर्जरत्रा सुरत्राणदत्तातपत्रप्रथितहिंदुसुरत्राणविरुदस्य सुवर्णसत्रागारस्य षड्दर्शनधर्माधारस्य चतुरंगवाहिनीवाहिनीपारावारस्य कीर्त्तिधर्मप्रजापालन सत्यादिगुणक्रियमाण श्रीरामयुधिष्ठिरादिनरेश्वरानुकारस्य राणाश्री कुम्भकर्ण सर्वोर्वीपतिसार्वभौमस्य ४१ विजयमानराज्ये तस्य प्रसादपात्रेण विनयविवेकधैर्यौदार्यशुभकर्मनिर्मलशीलाद्यद्भुतगुणमणिमयाभरणभासुरगात्रेण श्रीमदहम्मदसुरत्राणदत्तफुरमाणसाधुश्रीगुणराजसंघपतिसाहचर्यकृताश्चर्यकारिदेवालयाद्याडंवरपुरः सरः श्रीशत्रुंजयादितीर्थयात्रेण अजाहरिपिंडरवाटकसालेरादिवहुस्थाननवीनजैनविहारजीर्णोद्धारपदस्थापनाविषमसमयसत्रागारनानाप्रकारपरोपकारश्रीसंघसत्काराद्यगण्यपुण्यमहार्थक्रयाणकपूर्यमाणभवार्णवतारणक्षममनुष्यजन्मयानपात्रेण प्राग्वाटवंशावतंस सं० सागरसुत सं० कुरपाल भा० कामलदेपुत्रपरमार्हत्व सं० धरणाकेन ज्येष्ठभ्रातृ सं० रत्ना भा० रत्नादेपुत्र सं० लाषासंजासोनासालिगस्वभा० सं० धारलदेपुत्रजाज्ञाजावडादिप्रवर्द्धमानसंतानयुतेनराणपुरनगरे राणाश्री कुम्भकर्णनरेन्द्रेण स्वनाम्ना निवेशिततदीयसुप्रसादादेशतस्त्रैलोक्यदीपकाभिधानः श्रीचतुर्मुखयुगादीश्वरविहारकारितः प्रतिष्ठितः श्रीबृहत्तपागछे श्रीजगच्चंद्रसूरि श्रीदेवेन्द्रसूरिसंताने श्रीमत् श्रीदेवसुंदरसूरिपट्टप्रभाकरपरमगुरुसुविहितपुरन्दरगच्छाधिराजश्रीसोमसुंदरसूरिभिः॥ कृतमिदं च सूत्रधारदेपाकस्य अयं च श्रीचतुर्मखविहार आचंद्रार्कं नंदतात् ॥ शुभं भवतु ॥

२०–चित्तौड़के किलेपर शणगारचंवरीके पश्चिम द्वारमें घुसते हुए दाहिनी वाजूके एक स्तम्भमें खुदी हुई प्रशस्ति.

संवत् १५०५ वर्षे राणाश्रीलाखापुत्रराणाश्रीमोकलनंदनराणाश्रीकुम्भकर्णकोशव्यापारिणा साहकोलापुत्ररत्न भंडारीश्रीवेलाकेनभार्यावील्हणदेवी जयमानभार्यारतनादेपुत्र भं० मूधराज भं० धनराज भं० कुरपालादिपुत्रयुतेन श्रीअष्टापदाह्वः श्रीश्रीश्री शांतिनाथमूलनायकः प्रासादः कारितः श्रीजिनसागरसूरिप्रतिष्ठितः श्री खरतरगच्छे चिरं राजतु श्रीजिनराजसूरिश्रीजिनचन्द्रसूरि श्रीजिनसागरसूरिपट्टांभोजार्कनंदत् श्रीजिनसुन्दरसूरिप्रसादतः शुभं भवतु पं० उदयशीलगणिनंनामिति.

२१-कुम्भलमेरपरके मामादेवके मन्दिरकी प्रशस्तिके चौथे पाषाणका अक्षरान्तर.
चतुर्थी पट्टिका.

आर्चिर्भिः किमु सप्तभिः परिवृतः सप्तार्चिरत्रागतः किं वा सप्तभिरेव सप्तिभि-रिहायात्सप्तसप्तिर्दिवं ॥ इत्थं सप्तभिरन्वितः सुतवरैस्तैः शस्त्रपूतैः सह प्राप्ते बुद्धिर-भूत्सुपर्वनृपतेः श्रीलक्ष्मसिंहे नृपे ॥ १८० असिर्यस्यारातिभ्रमरतितरां शीर्षकमले सराड्गोगादेवोपि हि समधिभूर्मालवभुवः ॥ विजिग्ये येनाजौ निजभुजभुजंगो-र्जगरल प्रसारात् सिंहांतः समभवदसौ लक्ष्मनृपतिः ॥ १८१ इति महाराणाश्री-लपमसीवर्णनम् ॥ अथ अरिसिंहवर्णनम् ॥ अभून्नृसिंहप्रतिमोरिसिंहस्तद-न्वये भव्यपरंपराढ्ये॥ विभेद यो वैरिगजेन्द्रकुम्भस्थलीमनूनां नखखड्गघातैः ॥ १८२ पीतवैरिरुधिराद्विपुलांगादुद्गताद्यदसिकृष्णभुजंगात् ॥ अद्भुतं समभवत् सकलाशा-मंडनं नवयशस्तुहिनाभं ॥ १८३ शशिधवलया कीर्त्यैतीवप्रतापदिवाकरद्युति-मिलितया मन्ये प्रत्याययन्निवभासते ॥ रजतनिचयं दास्येचंचन्महारजतं तया त्य-जतु विपुलां चित्ते चिन्तावनीपकमण्डली ॥ १८४ इति अरिसिंहवर्णनम् ॥ अथ महाराणाश्रीहम्मीरवर्णनम् ॥ हम्मीरवीरो रणरंगधीरो वाङ्माधुरी-तर्जितकेकिकीरः ॥ धराधवालंकरणैकहीरस्तत्तद्वनीभूपितसिन्धुतीरः ॥ १८५ मन्येभूत्सुरगौरगोः समभवत् कल्पद्रुमः कल्पनातीतोरोहणपर्वतोपि सुधियां नोमा-नसं रोहति ॥ चिन्ताश्मापि जनैर्जडाच्च जडतां धत्तेधिकां भूधवे दानप्रोन्नतचारुपाणि-कमले कर्णादयः के पुनः ॥ १८६ यदर्पितैरर्थिजनस्तुरंगमैरनर्घ्यहेमांगदहार-कुंडलैः ॥ अलंकृतः कल्पतरो कृताश्रयं सुराधिराजं हसतीव वैभवात् ॥ १८७ कटकतुरगहेषाविश्रुतेस्त्यक्तधैर्ये व्रजति च रघुभूपे कांदिशीके पलाय्य ॥ अहह विषमधाटीप्रौढपंचाननोसावरिपुरमतिदुर्गं चेलवाटं विजिग्ये ॥ १८८ ईश्वरा-राधने दाने वीरश्रीवरणे रणे ॥ कदाचिन्नैव विश्रांतः करो हम्मीरभूपतेः ॥ १८९ स क्षेत्रसिंहे तनये निधाय तेजः स्वकीयं त्रिदिवं जगाम ॥ वन्हौ यथार्कोस्तमयं हि भावो महात्मनामत्रनिसर्गसिद्धः ॥ १९० इति महाराणाश्रीहम्मीरवर्णनम् ॥ अथ महाराणाश्रीक्षेत्रसिंहवर्णनम् ॥ ततोरिभूमीशमहेभसिंहः स्वनादवित्रासि-तमत्तसिंहः ॥ संभावनामोदितभृत्यसिंहः शशास भूमिं किल क्षेत्रसिंहः ॥ १९१ येनानर्गलभल्लदीर्णहृदया श्रीचित्रकूटांतिके तत्तत्सैनिकघोरवीरनिनदप्रध्वस्तधैर्यो-दया ॥ मन्ये यावनवाहिनी निजपरित्राणस्य हेतोरलं भूनिक्षेपमिषेण भीपरवशा पातालमूलं ययौ ॥ १९२ संग्रामाजिरसीम्नि शौर्यविलसद्दोर्दंडहेलोल्लसच्चापप्रो-द्गतबाणवृष्टिशमितारातिप्रतापानलः ॥ वीरश्रीरणमल्लमूर्जितशकक्ष्मापालगर्वांतकं

स्फूर्जद्गुर्जरमण्डलेश्वरमसौ कारागृहेवीवसत् ॥ १९३ व्यर्थो नु नूनं महदुद्यमो यदि चेत्थं वचस्तत्सफलं करिष्णुः ॥ शोध्यां पुरीमातलमूलधारं स्वदेलवाटं पुरमानिनाय ॥ १९४ वीरस्य यस्य समरेधिकरं कृपाणीमुत्कंचुकामरिभटानिलबद्धतृष्णां ॥ दृष्ट्वा भुजंगयुवतीमिव वैरिवर्गास्त्रासात्समुद्रमपि गोः पदतामनैषुः ॥ १९५ माद्यन्माद्यन्महेभप्रखरकरहतिक्षिप्तराजन्ययूथो यं खानः पत्तनेशोदफर इति समासाद्य कुण्ठी बभूव ॥ सोयं मल्लोरणादिः शककुलवनितादत्तवैधव्यदीक्षः कारागारे यदिये नृपतिशतयुते संस्तरं नापि लेभे ॥ १९६ शश्वच्चचलवाजिवीचितरलं सच्छस्त्रतिम्याकुलं माद्यत्कुंभिसपक्षखेलदचलं सत्पत्तिमीलज्जलं ॥ रथ्याग्राहचलाचलं स्फुरदमीसाहांबुनाथोज्वलं यो रोपादपिबच्छकार्णवमगस्त्यंतं समूहेखिलं ॥ १९७ हाडावटीदेशपतीन्स जित्वा तन्मण्डलं चात्मवशीचकार ॥ तदत्र चित्रं खलु यत्कान्तं तदेव तेपामिह यो बभंज ॥ १९८ यात्रोत्तुगतुरंगचंचलखुराघातोत्थितै रेणुभिः सेहे यस्य न लुप्तरश्मिपटलव्याजात्प्रतापं रविः ॥ तच्चित्रं किमुसादलादिकनृपा यत्राकृतास्तत्रसुस्त्यक्त्वा स्वानि पुराणि कस्तु बलिनां सूक्ष्मो गुरुर्वा पुरः ॥ १९९ शस्त्राशस्त्रिहताजिलंपटभटव्रातोच्छलच्छोणितछन्नप्रोद्गतपांशुपुंजविसरत्प्रादुर्भवत्कर्दमं ॥ त्रस्तः सामिहतो रणेशकपतिर्यस्मात्तथा मालवक्ष्मापोद्यापियथा भयेन चकितः स्वप्नेपि तं पश्यति ॥ २०० वारंवारमनेकवारणघटासंघट्टवित्रासितानेकक्ष्मापतिवीरमालवशकाधीशैकगर्वांतकः ॥ संग्रामाजिरसंगतारिनगरीलुंटाकबाहुर्नृपः कारागारनिवासिनो व्यरचयद्योगुर्जरान् भूमिपान् ॥ २०१ अमीसाहिरग्राहि येनाहिनेव स्फुरद्भेक एकांगवीरव्रतेन ॥ जगत्त्राणकृद्यस्य पाणौ कृपाणः प्रसिद्धोभवद्भूपतिः खेतराणः ॥ २०२ गुरोः प्रसादादधिगम्य विद्यामष्टांगयोगस्थिरचित्तवृत्तिः ॥ ब्रह्मैकतानः परमात्मभूयं जगाम संसारनिवृत्तबुद्धिः ॥ २०३ इति महाराणाश्रीक्षेत्रसिंहवर्णनम् ॥ अथ महाराणाश्रीलक्षसेनवर्णनम् ॥ सहस्रनेत्रादिव वैजयंतो महासमुद्रादिव शीतरश्मिः ॥ मुनेः पुलस्त्यादिव वित्तनाथो बभूव तस्मादिव लक्षसेनः ॥ २०४ यक्षेशः किमयं नसोन्यवशगः किं धर्मसूनोनुजः स्फीतः सोयमयं बलित्रिपदिकामात्रप्रदः किं नसः ॥ इत्थं तुल्यसुवर्णदानसमये यः पारिशेष्यान्मितो विद्वद्भिः स्वभुजार्जिताधिकधनः श्रीलक्षसिंहो नृपः ॥ २०५ जंबूद्रवः किं परिलोड्य राज्ञा नीतः सुमेरुर्नुसमाहतो वा ॥ इत्यूहिरे तुल्यसुवर्णराशिमुच्चैरवेक्ष्यास्य वनीपकौघाः ॥ २०६ कीनाशपाशान् सकलानपास्थत यस्त्रिस्थलीमोचनतः शकेभ्यः ॥ तुलादिदानातिभरव्यतारील्लक्ष्याख्यभूपो निहतः प्रतीपः ॥ २०७ रविरिव नलिनीं निपातुपारान् विधुरिव यामवती महांधकारान् ॥ पवनइव

घनान्नवार्कभासं यवनकराच्च गयां मुमोचयद्यः ॥ २०८ संलोपादिव विप्रवृत्ति-मचलां दास्यादिव ब्राह्मणीं गां पंकादिव मोचयन् खलु गयां वंधान्महीवल्लभः ॥ आगोपालकभूमिपालमसकृच्चक्रेखिलान् याचकान् दत्वा मुक्तिमहामृतं पितृगणा-नानंदयच्चापरं ॥ २०९ न कांचनतुलामसौ बहुविधाय मंदादरो न कांचनतुलां परैः सममवाप्तुमैच्छत् क्वचित् ॥ गयामपि विमोच्य तां तुरगयानहेमादिभि श्चकार पृथिवीश्वरः किमु गयां स्वकीर्तिं पुनः ॥ २१० अमोचयद्यवनकराद्गयामयं तुलां व्यधा दमितपराक्रमोमिताः ॥ अपूजयत्कनकभरैर्महीसुरानकारयत् सुरनिलयान्महोन्नतान् ॥ २११ मेदानाराद्वल्लसादुल्लसत्तद्वेरीधीरध्यानविध्वस्तधैर्यान् ॥ कारं कारं यो ग्रहीदु-ग्रतेजा दग्धारातिर्वर्द्धनाख्यं गिरीन्द्र ॥ २१२ हर्य्यक्ष्यवल्लक्ष्यनरेश्वरस्य वृत्तिप्र-वृत्तिस्वभुजार्ज्जितेव ॥ ये भुंजते चान्यवलोपपन्न ग्रासं शृगाला इव भूमिपालाः ॥ २१३ यदर्प्पितैरर्थिगणोमहद्भिर्ग्रामैरनन्तैरभजन्नृपत्वं ॥ तदंकितैः शासनपत्रपूगै-रनागत पुस्तकवानिवासीत् ॥ २१४ विमोचितान् बहुविधघोरसंसृतेर्विलोकितुं जननिचयानिवागमत॥शिवांतिकं शिवचरितः शिवाधवक्रमांबुजार्चनपरिहीणकल्मषः ॥ २१५ इति श्रीमहाराणा श्रीलक्षसेन वर्णनम् ॥ अथ महाराजाधिराजमहाराणा श्रीमृगांकमोकलेन्द्रवर्णनम ॥ अर्णोधेरिवपारिजातकतरुश्चंडद्युतेर्दण्डभृद्यद्वत्स-र्वसुपर्वणामधिपतेरासीज्जयंतो यथा ॥ ईशस्येव षडाननो रघुपतेर्यद्वत्कुशो भूपते रस्यासीदतुलप्रतापतपनः श्रीमोकलेन्द्रोंगजः ॥ २१६ यो विप्रानमितान् हलिक-लयतः काठ्येन वृत्तरलं वेदं सांगमपाठयत् कलिगलग्रस्ते धरित्रीतले ॥ दैत्यान् मीन-द्वापरः श्रुतवतामानदकंदः कलाकौशल्यव्रततीनवीनजलदो भूमण्डलाखण्डलः ॥ २१७ दृष्टेनं रचयन्तमद्भुततुलाहेम्नः सदा सपतद्यागाज्याहुतितर्पितो व्यचर-यन्मन्येतुलोपायनम् ॥ तत्पूर्त्यै कनकाचलकरमहारज्जूच चेलोपमौ सूर्याचंद्रमसौ हिमाद्रिमकरोद्दडं सुरग्रामणीः ॥ २१८ एतन्मुक्तगयाविमुक्तपितृभिः प्रोल्लंघ्यमानां हठाद्दृष्ट्वा सयमिनीं लिखत्यनुशयादित्थं तु भूमिं यमः ॥ किं सामर्थ्यमपोहितं खलु कलेर्याताः क्व कामादयो युक्तं याति न कोधिकारविरतौ वक्राधिकां कालतां ॥ २१९ नलः किंमलः किमु मन्मथोवा किमाश्विनेयद्वितयादिहैकः ॥ कलंकमुक्तः किम यामिनीशस्त्वित्थं जनो यत्र वितर्कमेति ॥ २२० आलोड्याशुसपादलक्षमखिलं जालंधरान् कंपयन् ढिल्लीं शंकितनायकां व्यचरयन्नादाय शाकंभरीं ॥ पीरोजं समहंमदशरशतैरापात्य यः प्रोल्लसन् कुंतव्रातनिपातदीर्णहृदयास्तस्यावधीद्दंतिनः ॥ २२१ नृपः समाधीश्वरसिद्धतेजाः समाधिभाजां परमं रहस्यं ॥ आराध्य तस्यालयमुदधार श्रीचित्रकूटे मणितोरणांकं ॥ २२२ तीर्थमत्र ऋणमोचनं

महत्पापमोचनमपि क्षितीश्वरः ॥ चारुकुंडमपि सेतुमण्डनं मण्डनं त्रिजगतामपि व्यधात् ॥ २२३ यः सुधांशुमुकुटप्रियांगणे वाहनं मृगपतिं मनोरमं ॥ निर्मितं सकलधातुभक्तिभिः पीठरक्षणविधाविव व्यधात् ॥ २२४ पक्षिराजमपि चक्रपाणये हेमनिर्मितमसौ दधौ नृपः ॥ येन नीलजलदच्छाविर्विभुश्चंचलायुतइवाधिकं बभौ ॥ २२५ जगति विश्रुतिमाप समोकलः प्रतिभटक्षितिपैरसमोकलः ॥ रविसुराधिपशेपसमोकलप्रतिनिधिर्भुवनेपि समोकलः ॥ २२६ स नृवरो नृवरोचितवेषभृत् पवनभृत्पवनोदितवैभवः ॥ अवनतो वनतोपि महत्तरे सकलमोकलमोकलमोकलः ॥ २२७ दण्डश्छत्त्रेषु भीतिर्विहित विहतितो बंधनं सारणीषु प्रायः सारीषु हिंसारतितातिपु कटाक्षांगुलीतर्ज्जनाद्यं ॥ भेदः कोशेंबुजानां हृतिरपि मनसश्चारुगेहेषु नित्य यस्मिन् शासत्यनर्घ्यैभवदिह वसुधाराजि राजन्वतीत्थं ॥ २२८ व्यस्तैराजननंदिनं दिनमधि प्रत्तैर्दधीच्यादिभिः दानैरेभिरलंकृतानुकृतिकव्यापारपारंगमैः ॥ मत्वेतीव निराकृतोद्य वसुधानाथोरुदानक्रमः श्रीमानत्र समस्तदाननिलय ब्रह्माण्डदानं व्यधात् ॥ २२९ अमुष्मादुद्भूतः सततमनुभूतार्थनिगमः क्षमः प्रौढक्षोणीपरिवृढदढोन्मादहातिपु ॥ चरित्रेण स्वीयान् वयमति पवित्रेण कलयन् कलौ धर्माधारो गुरुगारिमभूर्मोकलविभुः ॥ २३० अंगाः संप्राप्तभंगाः स्मृतवनविटपाः कामरूपा विरूपा वंगागंगैकसंगा गतविरुदमदा जातसादा निषादाः ॥ चीना संग्रामदीनाः स्खलदसिधनुपो भीतिशुष्कास्तुरुष्का भूमीपृष्ठे गरिष्ठे स्फुरति महिमनि क्ष्मापतेर्मोकलस्य ॥ २३१ ताप तापं बाहुशौर्याग्निनासौ क्षेपं क्षेपं वैरिरक्तोदकौघे ॥ नायं नाय दार्ढ्यमेव कृपाणी भेदं भेदं भानुबिंबं विवेश ॥ २३२ इति महाराजाधिराज महाराणा श्रीमृगांकमोकलेन्द्रवर्णनम् ॥ अथ महाराजाधिराज रायराया राणेराय महाराणा श्री कुम्भकर्णवर्णनम् ॥ मूलं धर्मतरोः फलं श्रुतवतां पुण्यस्य गेहं श्रियामाधारः सुगुणोत्करस्य जनिभूः सत्यस्य धामौजसः ॥ धैर्यस्यापि परावधिः प्रतिनिधिः कल्पद्रुमस्याखिलां वीरस्तत्तनयः प्रशास्ति जगतीं श्रीकुम्भकर्णो नृपः ॥ २३३ समस्तदिग्मण्डललब्धवर्णः स्फुरत्प्रतापाधरितार्कवर्णः ॥ स्वदानभूम्ना जितभोजकर्णस्ततोमहीं रक्षति कुम्भकर्णः ॥ २३४ उपास्य जन्मत्रितये गजास्यकनीयसोमातरमेकशक्तेः ॥ श्रीकुम्भकर्णोयमलंभि साध्व्या सौभाग्यदेव्या तनयास्त्रिशक्तिः ॥ २३५ अतः क्षितिभुजां मणेर्निजकुलस्य चूडामणिः प्रसिद्धगुणसभ्रमो जगति कुम्भनामा नृपः ॥ प्रवीरमदभंजनः प्रमुदितः प्रजारंजनादजायत निजायतेक्षणजितेन्दिरामान्दिरः ॥ २३६ वेदानुद्धृत्य पश्चाद्धुवमपि भुजयोस्तां बिभर्त्ति क्षिणोति क्षुद्रान् बध्वा वलिद्विड्वलमहिततरक्षत्रमुच्छाद्य हत्वा ॥ रक्षोरूपारिमुर्वीभरन्नृपशमनः

मुहम्मदं म्लेच्छघाती जीयात् श्रीकुम्भकर्णो दशविधकृतिकृत् श्रीपतिः कोपि नव्यः॥ २३७ लक्ष्मीशानंदकत्वात् त्रिभुवनरमणीचित्तसंमोहकत्वाल्लावण्यावाप्तमूर्त्ताविपुरमलतया कुम्भकर्णो महीन्द्रः॥ कामं कामोस्तु सोक्ती कुरुत इह परं स्त्रीजनं जेतुकामः संग्रामेनेन साक्षात्क्रियत इति नवं स्त्रीजनो स्त्रीजनोपि॥ २३८ विभ्राजते सकलभूवलयैकवीरः श्रीमेदपाटवसुधोद्धरणैकधीरः॥ यस्यैकलिंगनिजसेवकइत्युदारा कीर्तिप्रशस्तिरचलां सुरभीकरोति॥२२९ एकलिंगनिलयं च खंडितं प्रोन्नतोरणलसन्मणिचक्रं॥ भानुबिंबमिलितोच्चपताकं सुन्दरं पुनरकारयन्नृपः॥ २४० मामूत् क्षुभ्यदतच्छदुग्धजलधिस्वच्छोच्छलद्वीचिरुचिरत्नकृतपूर्वपूरुषयशस्तत्संकुचद्भूतिमत्॥ इत्थं चारुविचार्य कुम्भनृपतिस्तत्रैक-लिंगे व्यधात् रम्यान् मंडपहेमदंडकलशान् त्रैलोक्यशोभातिगान्॥ २४१ निःशंकः काव्यसदर्भे रणारंभे च निर्भयः॥ विख्यातः कुंभकर्णोयमिति निःशंकनिर्भयः॥ २४२ व्रजति विजययात्रां यत्र वित्रस्तशत्रौ हयखुरखरघातोत्खातधूलीनिलीनं गगनतलमशेषं वीक्ष्य संजातमोहो नयति रविरयाश्वान् सारथिः साहसिक्यात्॥२४३ श्रीचित्रकूटविभुरयमुन्नततरवारिशातितारातिः॥ गिरिजाचरणसरोरुहरोलंबः कुंभभूपतिर्जयति॥ २४४ विख्यातकीर्त्तिगुहदत्तखुमाणशालिवाहाजयप्रभृतिभूपतिवंशरत्नं॥ श्रीक्षेत्रलक्ष्मनृपमोकलभूमिपालसिंहासनं सफलयत्यथ कुम्भकर्णः॥ ४४५ या नारदीयनगरावनिनायकस्य नार्यो निरन्तरमचीकरदत्रदास्यं॥ तां कुम्भकर्णनृपतेरिह कः सहेत बाणावलीमसमसंगरसञ्चरिष्णोः॥ २४६ योगिनीपुरमजेयमप्यसौ योगिनीचरणकिंकरो नृपः॥ कुंतलाकलितवैरिसुंदरीविभ्रमोरामितविक्रमोग्रहीत्॥ २४७ अरिंदमः स्वाङ्घ्रिसरोजलग्नं विशोध्य शोध्याधिपतिप्रतीपं॥ अरुंतुदं कंटकमिद्धतेजा भंक्त्वाक्षिपद्भूमितलेसिसूच्या॥ २४८ येन वैरिकुलं हत्वा मंडोवरपुरग्रहे॥ अनायि शान्तिरोषाग्निर्नागरीनयनाम्बुभिः २४९ विगृह्य हम्मीरपुरं शरोत्करैर्निगृह्य तस्मिन् रणवीरविक्रमं॥ पर्यग्रहीदंबुजमंजुलोचना महीमहेन्द्रो नरपालकन्यकाः॥ २५० नानादिग्भ्यो राजकन्याः समेत्य क्षोणीपालं कुम्भकर्णं श्रयते॥ सत्यं रत्नं जायते सागरादौ युक्तं विष्णोर्वक्षएवास्य धाम॥ २५१ आर्ताः काश्चिद्धटेन प्रतिनृपतिभटान् दण्डयित्वा च काश्चित् काश्चिद्राजन्यवर्यैर्धनगजतुरगैः सार्द्धमानीय दत्ताः॥ अन्याः प्रोद्दा विधाटीबलकृतहरणाः प्रत्यहं राजकन्या नव्या नव्या महीभृत्सुविधिपरिणयत्येष कामो नवीनः॥ २५२ स धन्यो धान्यनगरमामूलादुदमूलयत्॥ पुरारिविक्रमो यागपुरं पुरमिवाजयत्॥ २५३ ज्वालावलिर्वलयितां व्यतनोघवालीं मन्नीरवीरमुदवीवहद्देष नीरं॥ यो वर्द्धमानगिरिमा तु विजित्य तस्मिन्मेदानमद-

वविधीनयासीत् ॥ २५४ जवालीदवालीशिखावच्छिखाली समालीढमालीकराली-प्रताली ॥ मनोरांधकारं क्षणाद्यस्य संस्ये क्षिपक्षेप्यमन्यैर्नयद्रूपदीपैः ॥ २५५ जनकाचलमुच्चशेखरं वलवन्मालवनाथमस्तके ॥ प्रवरं गिरिदुर्गमुद्धतश्चरणं वाममिव न्यधादयं ॥ २५६ महोच्चजनकाचले निखिलमालवक्ष्मापतेर्गले पदमिव न्यधादमितविक्रमो भूपतिः ॥ सरांसि जयवर्द्धते कृतपुरेपि यो वर्द्धने महामहिमशेखरे विपुलवप्रमुग्रद्युतिः ॥ २५७ जनकाचलमग्रहीदलं महती चंपवतीमतीतपत् ॥ गिरिसुन्दरखोलखण्डनाद्यानिवज्रायुधएष भूपतिः ॥ २५८ प्रत्यर्थिपार्थिवपराजयजन्महेतुर्वृन्दावतीपुरमदीदहदेष वीरः ॥ तद्वर्गराटगिरिदुर्गमपि क्षणेन संक्षोभमाप यदपारपराक्रमेण ॥ २५९ मल्लारण्यपुरं वरेण्यमनलज्वालावलीढं व्यधाद्वीरः सिंहपुरीमवीभरदसिप्रध्वस्तवैरिव्रजैः यत्नं रत्नपुरप्रभंजनविधावाधाय धीमानतो नाथं नायमनेकराजनिकरान् कारागृहेवीवसत् ॥ २६० पदातीनां पादलक्षं सपादलक्षनीवृतं ॥ कृत्वा मल्लारणवीरो रणस्तंभं तथाजयत् ॥ २६१ आम्रदाद्रिदलनेन दारुणः कोटडाकलहकेलिकेसरी ॥ कुम्भकर्णनृपतिर्ववावदो धूलनोद्धतभुजो विराजते ॥ २६२ नम्रानेकनृपालमौलिनिकरप्रत्युप्तहीरांकुरश्रेणीरश्मिमिलन्नखद्युतिभरः शत्रून् रणप्रांगणे ॥ दीर्घांदोलितबाहुदण्डविलसत्कोदण्डदण्डोल्लसद्बाणास्तान्विरचय्य मण्डलकरं दुर्गं क्षणेनाजयत् ॥ २६३ जित्वा देशमनेकदुर्गविषमं हाडावटीं हेलया तन्नाथान् करदान्विधाय च जयस्तम्भानुदस्तंभयत् ॥ दुर्गं गोपुरमत्र पट्पुरमपि प्रौढां च वृन्दावनीं श्रीमन्मंडलदुर्गमुच्चविलसच्छालां विशालांपुरीं ॥ २६४ उत्खातमूलं सलिलैः प्रभंजन इव द्रुमं ॥ विशालनगरं राजा समूलमुदमूलयत् ॥ २६५ तन्नागरीनयननीरतरंगिणीनामंगीकृतं किमु समुत्तरणं तुरंगैः ॥ श्रीकुम्भकर्णनृपतिः प्रवितीर्णभंगैरालोडयाद्वैरिपुरं यदमीभिरुग्रः ॥ २६६ यदीयगजेन्द्रणतूर्यघोषसिंहस्वनाकर्णननष्टशौर्यः ॥ विहाय दुर्गं सहसा पलायांचकार गोपालशृगालवालः ॥ २६७ त्यक्ता दीना दीनदीनाधिनाथा दीना वद्धा येन सारंगपुर्यां ॥ योषाः प्रौढाः पारसीकाधिपानां ताः संख्यातुं नैव शक्नोति कोपि ॥ २६८ महोमदो युक्ततरो न वेषः स्वस्वामिघातेन धनार्जनात्ते ॥ इतीव सारंगपुरं विलोड्य महंमदं त्याजितवान् महंमदं ॥ २६९ गर्जन् म्लेच्छतिमिंगिलाकुलतरं रंगत्तरंगोर्मिमन् मातंगोद्धतनक्रचक्रममितं प्राकारवेलाचलं ॥ एतद्दग्धपुराग्निवाडवमसौ यन्मालवांभोनिधिं क्षोणीशः पिवानिस्मखड्गचुलकैस्तस्मादगस्त्यः स्फुटं ॥ २७० संवत् १५१७ वर्षे शाके १३८२ प्रवर्त्तमाने मार्ग वदि ५ सोमे प्रशस्तिः ॥

२२-श्रीएकलिंगजीके निजमन्दिरमें दक्षिणद्वारके सामनेकी दीवारमें लगी हुई प्रशस्ति.

॥ श्रीगणेशाय नमः॥ ॐ नमः शिवाय ॥ आनन्दोद्दाममूर्त्तिस्त्रिभुवनजननस्थित्यपायोप्तकीर्त्तिर्विध्यानुध्यातधामा निखिलसुरनरैरेकलिंगोरुनामा ॥ रुद्रो रौद्रारिवीरप्रकरतरुवरव्यासहव्यासमुद्रो माद्यन्मायोद्धकायः स्पृहयतु जगदुत्साहसंवर्द्धनाय ॥ १ ॥ यदागमविदो विदां पदममंदमाचक्षते यमिंदुकृतशेखरं हरमतीतविश्वापदं ॥ यथामतिमहोदयं तमिह काव्यमातन्वतां शिवं कविकलावतां प्रमथनाथमभ्यर्चये ॥ २ ॥ उत्साहं सुन्दरी वो दिशतु पशुपतेर्यत्कृपापार्वणेंदोरुद्योतः संचितांतस्तिमिरभरमधिश्रद्दधान धुनोति ॥ दिव्यं नव्यप्रमोदं कविकुमुदवनं निः प्रदोषं च तन्वन् काव्यांभोधीनधीतिक्षितिषु नवरस श्रीयुजश्चर्करीति ॥ ३ ॥ स्फुटं यस्याः पारिप्लवनयनकोणैकशरणः कृपालिक्रोधाग्निज्वलितवपुरोद्धत्यमधृत ॥ मनोभूरप्यस्या हिमगिरिसुतायास्सकरुणः कटाक्षव्याक्षेपो दिशतु कवितां नः परिणताम् ॥ ४ ॥ क्वासौ मत्कवितोपितं क्व महिमा खुम्माणभूमीभुजामेवं सत्यपि राजमल्लनृपतेर्जागर्त्ति काचित्कृपा ॥ यामासाद्य महेश्वरः कविगिरां मार्गे चराम्यर्भकोप्युग्रे व्यग्रमुखस्य कंटककुलस्याधाय मौलौ पदं ॥ ५ ॥ अस्ति स्वस्तिमती सुपर्वजगती सौंदर्यनिर्यन्त्रभूर्भूरि श्रीर्महतीमहो विदधती श्रीमेदपाटावनिः ॥ भूवृन्दारकवृन्दमन्दिरशिरः स्फुर्जत्पताकोच्छलच्चेलांदोलनवीज्यमानतरणिर्विभ्राजिराजन्वती ॥ ६ ॥ श्रीमेदपाटवसुधा वसुधाधिपत्यचिन्ह वभार मुकुट किल चित्रकूटं ॥ नोचेदियं महिमपास्य महीमहीपैः रन्याभय कथमनाथत नायमस्याः ॥ ७ ॥ वाप्पान्ववायधरणीरमणप्रभावादुर्वीमिमां नहि परः परिवोभवीति ॥ एवं गणः परिगणय्य शिवस्य कोपि श्रीचित्रकूटशिखरे नगरं व्यधत्त ॥ ८ ॥ यत्र निर्झरविहारिशंवराडंवरोच्छलदमंदविंदवः ॥ अंवरं सुरसरिन्निरतरं चक्रुरक्रमचलाश्चतुर्दिशः ॥ ९ ॥ नेह मन्दिरमधीरमीक्षते धीरमंदिरमनिंदिरं न च ॥ नेंदिरा वसति दानवर्जिता नासति स्फुरति दानकल्पना ॥ १० ॥ एकलिंगशिवदत्तवैभवैस्तत्र भूमिरमणैरभूयत ॥ यद्गुणानणुमणीगणः कविक्ष्माभुजां भवति कठभूपण ॥ ११ ॥ श्रीमेदपाटभुवि नागहृदे पुरेभूद्वाप्पोद्विजः शिवपदार्पितचित्तवृत्तिः ॥ यत्कीर्त्तिकेतककिरन्मकरन्दविन्दुरिन्दुः प्रचंडरुचिरेपचयत्प्रतापः ॥ १२ ॥ आनंदसुन्दरमनिंदिरमप्युदारमिंदीवरद्युतिवगुंठितकंठपीठं ॥ श्रीमत्त्रिकूटगिरिमंदिरमारराध हारीतराशिरिह शंकरमेकलिंगं ॥ १३ ॥ भक्त्या तपः प्रगुणया प्रससाद शंभुरेतस्य वाधितमदाददतुच्छमच्छं ॥ संवर्द्धमानपरमर्द्धिरदः प्रभावादन्वग्रहीत् स च मुनिस्तमिह

द्विजेन्द्रम् ॥ १४ ॥ हारीतराशिरभवद्गुरुरस्य साक्षादाराध्य शंभुमभजत्परमं मुदं यः ॥ आशास्यतेशकृपया मुनिना च तेन वंशेस्य निर्जितविरुद्धमधीश्वरत्व ॥ १५ ॥ हारीतराशिवचनाद्वरमिंदुमौलेरासाद्य स द्विजवरो नृपतिर्बभूव ॥ पर्य्यग्रहीन्नृपसुताः शतशः स्वशक्त्याजैषीच्चराजकमिलां सकलां बुभोज ॥ १६ ॥ दत्वा महीमच्छगुणाय सूनवे नवेंदुमौलिं हृदि भावयन्नृपः ॥ जगाम वाप्पः परमेश्वरं महो महोदयं योगयुजामसंशयं ॥ १७ ॥ कति कति न बभूवुर्भोजखुम्माणमुख्या रणभरनिरपाये बाप्पभूपान्ववाये ॥ तदपि सदुपनिता मंदसंपत्समूहः समभवदरिसिंहः केवलं वीतमोहः ॥ १८ ॥ चित्रकूटगिरिदुर्गरक्षणे सः क्षणेन विचरन् महारणे ॥ जीवितं परिजहार नोर्ज्जितं वीरवर्त्मनि समर्ज्जितं यशः ॥ १९ ॥ नरपतिररिसिंहः पारसीकैः समीकं यदुचमभयचित्तश्चित्रकूटे चकार ॥ असुकुसुमसमूहैरेनमानर्च्च चासाविति हितरतिरेतद्वंशजान्नो जहाति ॥ २० ॥ तदनु तदनुभावः शालवारस्यदावः कुसुमविशिखमूर्त्तिर्विश्वविस्फारकीर्त्तिः ॥ अमितिमितिगुरुस्तोषितातिज्ञपूरस्समजनि जयशाली श्रीहमीरांशुमाली ॥ २१ ॥ केलिवाटपुटभेदनाद्दटत् कोटिवाटकटकैरवीवटत् ॥ वेलवाटमटवीघटोत्कटं श्रीहमीरधरणीपुरंदरः ॥ २२ ॥ स्फुरद्धाटीधावत्तुरगखुरविक्षुण्णधरणीसमुन्मीलत्सांशुप्रतिहतपथे भास्कररथे ॥ हमीरक्षोणींद्रो विधृतरणतुन्द्रो रयुत्तरं [illegible] व्यरचयत् ॥ २३ ॥ बलिं कर्णं पार्थं सुरतरुवरं रोहणगिरिं [illegible] जानिमनुविनिमपि जगतां ॥ हमीरं [illegible] नन्ये [illegible] ॥ २४ ॥ [illegible] ॥ २५ ॥ [illegible] ॥ २६ ॥ [illegible] ॥ २७ ॥ [illegible]

रप्राचीनमाचूर्णयत् तन्मध्योद्यतधीरयोधनिधनं निम्मार्य निम्मार्यधीः॥ हाडामण्डलमुंडखंडनधृतस्फूर्जत्कबन्धोद्धुर कृत्वा संगरमात्मसाद्वसुमतीं श्रीक्षेत्रसिंहोव्यधात् ॥ ३१ ॥ ग्राम — — — — — पनवाडपुरं च खेतनरनाथः ॥ सततसपर्यासंभृति हेतोर्गिरिजागिरीशयोरदिशत् ॥ ३२ ॥ इष्टापूर्तैरिष्टदेवानयाक्षीन्नानाद्रव्यैर्विज्ञदैन्यान्यधाक्षीत् ॥ भारं भूमेश्चागजे योजयित्वा शैवं तेजः क्षेत्रवर्मा विवेश ॥ ३३ ॥ श्रीक्षेत्रक्षितिपे पुरंदरपुरीसाम्राज्यमासेदुषि क्षोणीं लक्ष्यनृपोभिनव्ययुवतीं प्रीत्या बुभाज क्रमात् ॥ मंदं मंदमुदाजहार मधुरं विश्रंभमभ्यानयन्नक्रूरं करमादधे न परुषं चक्रे हृदा पीडनं ॥ ३४ ॥ जोगादुर्गाधिराजं समरभुवि पराभूय लक्षक्षितीन्द्रः कन्यारत्नान्यहार्षित्सहगजतुरगैर्यौवराज्यं प्रपन्नः ॥ प्रत्यूहव्यूहमोहं प्रणिधिभिरवधूयाखिलं राजवृत्ते निर्व्याजं जागरूको हरचरणरतः पित्र्यराज्यं बुभोज ॥३५॥ भूवृन्दारकवृन्दसादकृत यल्लक्षो महीमंडलं मन्ये तन्महिमानमीरितुमना ब्रह्मापि जिह्मायते ॥ दंतिव्रातततियत्कचित्कचिदजह्वाजिव्रजत्यंजसा कापि स्वर्णतति ग्लानि क्वाचिदिलां दोलद्दुकूलत्यपि ॥ ३६ ॥ लक्षोवलक्षकीर्तिश्चीरुवनगरं व्यनीतगद्रुचिरं ॥ चिरवरिवस्यासंभृतिसंपत्तावेकलिंगस्य ॥ ३७ ॥ गयातीर्थव्यर्थीकृतकथपुराणस्मृतिपथं शकैः क्रूरालोकैः करकटकनियंत्रणमधात् ॥ मुमोचेदं भित्वा घनकनकटंकैर्भववभुजां सह प्रत्यावृत्यानिगडमिह लक्षक्षितिपतिः ॥ ३८ ॥ लक्षक्षोणिपनिर्द्विजाय विदुषे झोटिंगनाम्ने ददौ ग्रामं पिप्पलिकानुदारविधिना राहूपरूढे गवौ ॥ नव्रन् भट्टधनेश्वराय रुचिरं तं पंचदेवालयं प्रादाद्धर्मनतिर्जलेश्वरदिशि श्रीचित्रकूटाचलात् ॥३९॥लक्षं सुवर्णानि ददौ द्विजेभ्यो लक्षस्तुलादानविधानदक्षः ॥ प्रमाणमन्ताद्विविरिन्च्यतोसा जवेन सायुज्यमुखं सिषेवे ॥ ४० ॥ नालं कलिः प्रभवितुं भवितुं न चैनो यस्मिन्प्रशासति महीं महितप्रभावे ॥ श्रीमोकलः समुदितो भुवि लक्षभूपात् पाथोनिधेरिव सुधानिधिरिद्धतेजाः ॥ ४१ ॥ शैशवे मनुपदेशमाददे यौवने च विदधे रिपुजयं ॥ संततावनिललापनानितीः पुष्पसायकनिधा न मोकलः ॥ ४२ ॥ [illegible] प्रतिपक्षलक्षबलभिज्जिष्णुर्महासंगरे [illegible] श्रीमोकलो भूपतिः ॥ [illegible] जाजपुरे [illegible] ॥ ४३ ॥ [illegible] श्रीमोकलो नृपः [illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible]

मनिशं संशयानैर्बभूवे ॥ ४५ ॥ ग्रामं वाघणवाडं रामाग्रामं च मोकलो नृपतिः ॥ शिवभूतागमशुल्कं शिवभोगार्थं समर्पयामास ॥ ४६ ॥ आमन्त्र्य संगरसरस्तरवारिवारिण्यासज्ज्य राजशिखरं च करे कृपाणं ॥ निर्भिद्य चण्ड-रुचिमंडलमाविवेश शैवं महः किमपि मोकलभूमिपालः ॥ ४७ ॥ उदियाय धरा-धरादमुष्मादवनीमंडलचंडरोचिरुच्चैः ॥ अरिसिंधुरबंधुरांधकारप्रतिवर्णः पृथिवीश-कुंभकर्णः ॥ ४८ ॥ निनीपुरतनुव्ययं जनकवैरमुर्वीतले विलेशयरिपुव्रजं प्रचुरसंग-रस्थंडिले ॥ जुहाव भुजतेजसि ज्वलति कुंभकर्णो विभुर्नवीनजनमेजयः प्रबल-मत्र नुन्नासिना ॥ ४९ ॥ कुंभः कुंभलमेरुमंबरमणिः सूतांतरालेचलनाम्नानिर्भरवारि-हारिणि गिरौ विंध्ये व्यधादुन्नतं ॥ दुर्गे दुर्गमधित्यकामधिचतुर्द्वारं विकायोन्नकैः प्राचीनं परिणद्धमारविवरं तत्रोरुविद्याधरं ॥ ५० ॥ अचीखनत्सत सरांसि भूभृद्वि-शोककोकानि निजांशुजालैः ॥ यत्राश्रितः श्रीपतिरेपशश्वतृशय्यासुखान्यंबुनिधौ न दध्यौ ॥ ५१ ॥ रथरयमधिरूढमुन्नकूटे नातिखेदं विदधेत्र चित्रकूटे ॥ अगणितगुरु-गोपुरावरुद्धप्रतिगर्वं किल कुंभभूमिपालः ॥ ५२ ॥ अचीकरन्मंदिरमिंदिरापतेरमुत्र दुर्गे किल कुंभभूपतिः ॥ यच्छृंगरिंगद्रथभंगशंकया रविश्चरत्युत्तरदक्षिणाश्रितः ॥ ५३ ॥ माधन्मालवनाथमूर्द्धनि चरणं दत्वा रणे दीदहत् श्रीसारंगपुरं सपौरनि-करं कुंभो धराधीश्वरः ॥ धूमस्तज्जनिरुज्जगाम गगने मन्ये तदुल्लासितश्चोलीकुंत-लकालिमा निरुपमे तस्मिन्समुन्नीयते ॥ ५४ ॥ प्रत्यर्थिक्षोणिपालान्समरभुवि परा-भूय काश्चिद्गृहीताः काश्चित्सौंदर्यरागादपहतमनसश्चात्मनेव प्रपन्नाः ॥ काश्चित्तद्वंश-मुख्यैरुपरतिपदवीमापिता भूमिभर्त्रा भूभृत्कन्यानवीनाः परिणयति पुरा शंकरः कुंभकर्णः ॥ ५५ ॥ रामकुंडमनु मंडनीभवत् पद्मखंडचलदंडजव्रजं ॥ कुंभभूपतिर-चीखनज्जनानंदमंदिरमपारशंकरं ॥ ५६ ॥ स्वर्धेनुर्नधिनोति नामरतरुस्तोषं विधत्ते न वा चित्ते रोहति रोहणोपि न मनश्चिंतामणौ माद्यति ॥ वृत्तिर्यत्र न चेतसोपि वितरत्येतावदुर्वीपतौ श्रीकुंभे कतमस्तु कर्णमहिमा भोजे च कीदृग्जयः ॥ ५७ ॥ नागहृदं च कठडावणनामधेयं ग्रामंतयामलकखेटकसंज्ञमन्यं ॥ भीमाणनामकमयच्छ-दुमामहेशपूजोपहारविधये नृपकुम्भकर्णः ॥ ५८ ॥ दधौ गीतगोविन्दसंज्ञप्रबंधे स्फुरचित्तवृत्तिर्नृपः कुम्भकर्णः ॥ विनिर्माय विश्वोपकाराय शास्त्रं रसोल्लासिसंगीतराजा-भिधानं ॥ ५९ ॥ संख्यावद्भिर्न संख्यानिरवधिरुदिता नो वियल्लेख्यलक्ष्मी यद्दत्ते-भोभिरंभोनिधिरधिमलिनैर्यावदापूरि तोयं ॥ व्यक्तं नक्तं दिवं नो लिखति दशशत-स्फीतहस्तः समस्तं श्रीकुंभक्षोणिभर्तुर्गुणगणमवनौ को विनिर्णेतुमिष्टे ॥ ६० ॥ सार्द्धं सर्वधरावतंसविभवैर्भोगेन लक्ष्मीवतामुल्लासेन मनोभवस्य सुकवेर्भास्वद्रस-

व्यापृतैः ॥ त्रासेन प्रति भूभृतामनुगतः क्षोणीभुजामुत्सवैः काले क्वापि जगाम कुंभनृपतिः श्रीचन्द्रचूडास्पदं ॥ ६१ ॥ श्रीकुंभकर्णादर्णोधेर्जातोरितिमिरापहृत् ॥ धत्ते कुवलयामोदं राजमल्लः सुधाकरः ॥ ६२ ॥ योगिनीपुरगिरींद्रकंदरं हीरहेममणिपूर्णमंदिरं ॥ अध्यरोहदहितेषु केसरी राजमल्लजगतीपुरंदरः॥ ६३ ॥ अवर्षत्संग्रामे सरभसमसौ दाडिमपुरे धराधीशस्तस्मादभवदनणुः शोणितसरित् ॥ स्खलन्मूलस्तूलोपमितगरिमाक्षेमकुपतिः पतन्तीरे यस्यास्तटविटपिवाटे विघटितः ॥ ६४ ॥ श्रीराजमल्लनृपतिर्नृपतीव्रतापतिग्मद्युतिः करनिरस्तखलांधकारः ॥ स चित्रकूटनगमिंद्रहरिद्गिरींद्रमाक्रामतिस्म जवनाधिकवाजिवर्गैः ॥ ६५ ॥ श्रीकर्णादित्यवंशं प्रमथपतिपरीतोषसंप्राप्तदेशं पापिष्ठो नाधितिष्ठेदिति मुदितमना राजमल्लो महीन्द्रः ॥ तादृक्षोभूत्सपक्षं समरभुवि पराभूय मूढोदयाव्हं निर्वास्यैनं यमाशाभिमुखमभिमतैरग्रहीत्कुंभमेरुं ॥ ६६ ॥ आसज्येज्यं हरमनुमनः पावनं राजमल्लो मल्लीमालामृदुलकवये श्रीमहेशाय तुष्टः ॥ ग्रामं रत्नप्रभवमभवावृत्तये रत्नखेटं क्षोणीभर्त्ता व्यतरदरुणे सैंहिकेयाभियुक्ते ॥ ६७ ॥ यन्त्रायंत्रिहलाहलिप्रविचलद्दंतावलव्याकुलं वल्गद्वाजिवलक्कमेलककुलं विस्फारवीरारव ॥ तन्वान तुमुलं महासिहतिभिः श्रीचित्रकूटे गलद्दर्वं ग्यासशकेश्वरं व्यरचयत् श्रीराजमल्लो नृपः ॥ ६८ ॥ कश्चिद्गौरो वीरवर्यः शकौघं युद्धेमुष्मिन्प्रत्यहं संजहार ॥ तस्मादेतन्नामकामं बभार प्राकारांशश्चित्रकूटैकशृंगे ॥ ६९ ॥ योधानमुत्र चतुरश्चतुरोमहोच्चान् गौराभिधान्समधिशृंगमसावचैपीत् ॥ श्रीराजमल्लनृपतिः प्रतिमल्लगर्वसर्वस्वसंहरणचंडभुजानिवाद्रौ ॥ ७० ॥ मन्ये श्रीचित्रकूटाचलशिखरशिरोध्यासमासाद्य सद्यो यद्योधो गौरसंज्ञोसुविदितमहिमाप्राप्तदुच्चैर्नभस्तत ॥ प्रध्वस्तानेकजाग्रच्छकविगलदसृक्पूरसंपर्कदोपं निःशेपीकर्त्तुमिच्छुर्व्रजति सुरसरिद्वारिणि स्नातुकामः ॥ ७१ ॥ जहीरलमहीधरं धरणिवृत्रजिद्विक्रमादटत्कटककंटकिद्रुमसमावृतेरुन्नतं॥ विभिद्य भिदुरासिभिर्विपुलपक्षमक्षीणवीरुदक्षिपादिवोपलं सामिति राजमल्लो विभुः ॥ ७२॥ वंशहाटकहविर्यदहौषीत् क्रोधहव्यभुजि तत्परितुष्टः॥ शौर्यदैवतमयच्छदतुच्छं कीर्तिमस्य नृपतेः शशिगौरां ॥ ७३ ॥ वृद्धत्वं वा सुधायाः सदनमनुसरत्यंवुराशिः शिशुत्वं विस्तारं वा हिमांशुर्गिरिधरणिमिमां मानसं वाध्यवात्सीत् ॥ श्रीरामाव्हं सरोयन्नरपतिरतनोद्राजमल्लस्तदासौ प्रोत्फुल्लांभोजमित्थं त्रिदशदशमिनोहंत संशेरतेस्म ॥ ७४ ॥ अचीखनच्छंकरनामधेयं महासरो भूपतिराजमल्लः ॥ तन्मानसं यज्जलकेलिलोभान्नाशिश्रियाते गिरिजागिरीशौ ॥ ७५ ॥ श्रीराजमल्लविभुना समया संकटमसंकटसलिले ॥ अंबरचुंबितरंगं सेतौ तुंगं महासरो व्यरचि ॥ ७६ ॥ मौलौ मंडलदुर्ग-

मध्यधिपतिः श्रीमेदपाटावनेर्ग्राहं ग्राहमुदारजाफरपरीवारोरुवीरव्रजं॥ कंठच्छेदमचि-
क्षिपत्क्षितितले श्रीराजमल्लोद्भुतं ग्यासक्षोणिपतेः क्षणान्निपातिता मानोन्नतामौ-
लयः॥७७॥ खेरावादतरून् विदार्य यवनस्कधान्विभिद्यासिभिर्देडान्मालवजान्बला-
दुपहरन् भिंदंश्च वशान्द्विपां॥ स्फुर्जत्संगरसूत्रभृद्गिरिधरा संचारिसेनांतरैः कीर्ति-
मंडलमुच्चकैर्व्यरचयत् श्रीराजमल्लो नृपः॥ ७८॥ यत्पाणिस्फीतकुंताहतरिपुरुधिर-
प्रोल्लसत्सिंधुरोधो रंगप्रोन्मत्तयातूद्धतयुवतिजने तन्वति प्रौढनृत्यं॥ उद्गच्छद्वाजिराज-
खुरदलितधरोद्धूतधूलीनितांतं नीलांतश्चेलंलीलां भजति सजयति क्षोणिभृद्राज-
मल्लः॥ ७९॥ मांद्यन्मण्डपचण्डभूधरहारिर्ढिल्लीदृढोन्मूलनप्रौढाहंकृतिरिद्धसिंधुधर-
णीपाथोधिमंथाचलः॥ स्फुर्ज्जद्गुर्जरचंद्रमंडलरविः काश्मीरकंसाच्युतः कर्णाटांधकधू-
र्जटिर्विजयते श्रीराजमल्लो नृपः॥ ८०॥ वाग्मी निर्मलयामले कृतमतिस्तंत्रे विचि-
त्रे विधौ काम्ये राजति राजमल्लनृपतेर्गोपालभट्टो गुरुः॥ यस्य स्वत्ययनैरमुष्य
विषये संवर्द्धितासंपदो राज्यप्राज्यमभूदपायमभजन्नुच्चैररातिश्रियः॥ ८१॥
प्रगीता सुतार्थानुपादानमेकं परं ब्रह्मणग्रामतस्तुप्रहाणं॥ अदो दक्षिणामर्थिने राज-
मल्लो ददातिस्म गोपालभट्टाय तुष्टः॥ ८२॥ धानिनि निधनमाप्तेपत्यहीने तदीयं धन-
मवनिपभोग्यं प्राहुरर्थागमज्ञाः॥ विदितनिखिलशास्त्रो रा[illegible]स्तदुज्झन् विशदयाति
यशोभिर्बाप्पभूपान्ववायं॥ ८३॥ या भूर्ब्राह्मणस[illegible]भिः खुम्माणवंशो-
द्भवैर्माभूत्तज्जनिवस्तुमत्कुलभुवामादेयमा[illegible]८४॥ प्रत्यर्थिक्षे[illegible]डिमध्वनिभरैरुत्सा-
हयन्वाडवान् धर्मज्ञो भुवि राजमल्लजगतितमनसश्चात्मनेव [illegible]८४॥ कुंभकर्णनृपवं-
शभूमिपैरग्रहारजगतीजनि वित्तं॥ नैवभोग्य[illegible]मल्लगीर्मान्यतामगमदग्रभू-
भुजां॥ ८५॥ पूर्वक्षोणिपतिप्रदत्तनिखिलग्रामोपहारार्पणा काले लोपमवाप यावन-
जनैः प्रासादभगोप्यभूत्॥ उद्धृत्योन्नतमेकलिंगनिलयं ग्रामांश्चतान्पूर्ववद्दत्वा संप्रति
राजमल्लनृपतिर्नौवापुरं चार्पयत्॥ ८६॥ आपो यस्मिन्नमलकमलाः शाखिनः
सद्रसालाः शालेयाल्यः सुलभसलिला मंजु मौद्गीनमालाः॥ इक्षुक्षेत्रं सधुरमददा-
द्भट्टगोपालनाम्ने थूरग्रामं तमिह गुरवे राजमल्लोनरेन्द्रः॥ ८७॥ यदि त्रिभुवनो-
दरे स्फुरति दुग्धवारान्निधिः शशी सुरभिरुल्लसेन्मृगमदावदातद्युतिः॥ विभ· क्व
च न केतकं यदि तदोपमान यशो लभेत विशदप्रभं सुरभिराजमल्लप्रभोः॥ ८८॥
धराभारं यस्मिन्निजभुजयुगेनोद्धृतवति स्फुटं श्रीहम्मीरक्षितिपतिकुलांभोजतरणौ॥
फणीशो यत्कीर्त्तिप्रचुरघनसारैरुपरतक्रियस्सर्प्पद्वदे विलसति जयत्येष नृपतिः॥८९॥
यन्नित्यं नहि तन्निमित्तरचनामंचत्यपारं च यन्नोतत्पारदमात्मने पदमदो न स्यात्परस्मै
पदं॥ दानं कांचनचारु तद्धितनुते श्रीराजमल्लो विभुर्द्धर्म्मस्तत्र वितन्वते विहरिण-

स्तिष्ठति सर्वे सुखं ॥ ९० ॥ वंशे भृगोर्भगवतो भुवनप्रकाशे [illegible]तंसचरणांबुजचं-चरीकः ॥ आसीत्पवित्रचरितोनुवसंतयाजी श्रीसोमनाथधर[illegible]णीविबुधो धरण्यां ॥ ९१ ॥ तस्यात्मजो नरहरिर्हरिरेव साक्षादान्विक्षिकीकमलकाननतिग्मरश्मिः ॥ आसीदिलातलविरंचिरिति स्फुटार्थं यो वेद वेदवसतिर्विशदं बभार ॥ ९२ ॥ तस्मादं-बुजिनीपतेरिव मनुश्चण्डद्युतिः कश्यपादंभोजासनजो भृगुर्जलनिधेर्यद्वत्सुधादीधितिः॥ संजातो नृहरेरहीनमहिमा श्रीकेशवः कीर्तिमान्यो झोटिंग इति प्रथामुदवहद्दुर्वा-दिपंचाननः॥ ९३॥ अत्रिस्तत्तनयो नयेकनिलयो ज्ञानी विदांतस्थितिर्मीमांसारसमां-सलातुलमतिः साहित्यसौहित्यवान् ॥ मान्यः श्रीगुहिलान्वयांबुजवनीविद्योतनस्या-भवत् श्रीमत्कुंभमहीपतेर्दशपुरज्ञातिद्विजाग्रेसरः ॥ ९४ ॥ अत्रेः सुनूर्महेशोस्ति-राजमल्लस्य संसदि ॥ यो विवादिकुले रुक्षे धत्ते मत्तेभविक्रमं ॥ ९५ ॥ अत्रेः सूनुरनूनपद्यपदवीभंगीभिरंगीकृतः प्रौढी भट्टमहेश्वरः कविवरः श्रीराजमल्लप्रभोः ॥ स्वोपज्ञप्रगुणःप्रशस्तिनिवहे शस्तां प्रशस्तिं व्यधादुद्यद्वीररसां नवीनरचनां रम्यैकलिं-गालये ॥ ९६ ॥ उर्वी यावदहीन्द्रशेखररुचं धत्ते तुषारत्विषं श्रीकंठः शिरसि स्ववक्षसि हरिः श्रीवत्समंभोंबुधिः ॥ तावद्राज्यमखंडितं कलयतः श्रीराजमल्ल-प्रभोरेषा कीर्तिलता परेव विजयं धत्तां प्रशस्तिश्चिरं ॥ ९७ ॥ यत्रोच्चोच्चतरप्रपंच-रचनाचातुर्यचेतोहरेर्लब्ध्वानंदभरं न राजतगिरिं सस्मार सर्वेश्वरः ॥ देवः सूत्रभृद-र्जुनोव्यरचयत् श्रीशांभवं मंदिरं रम्यं रम्यतमामिमामुदकिरत्तस्मिन्प्रशस्तिं सुधीः ॥ ९८ ॥ वत्सरे नृपतिविक्रमात्ययात् बाणवेदशरभूमि संमिते ॥ चैत्रशुक्लदशमी-गुरुवारे पूर्णतामलभत स्तुतिपद्धतिः॥ ९९ ॥ एकलिंगमतिरंगभिंगितै रंगसंगिभिरनंग-जीवनैः ॥ कुर्वती जयति पार्वतीवशे विंध्यबन्धुवसतिर्महारसैः ॥ १०० ॥ गीर्वाण-वाण्यामविचक्षणैर्नरैः सुखावसेयानि वचांसि कानिचित् ॥ स्वदेशभाषामनुसृत्य भूपतेरनुज्ञया लेख्यपथं नयामहे ॥ १०१ ॥

श्रीएकलिंगप्रसादि प्राप्त परमानन्द श्रीहारितराशि मुनिवचन प्राप्त मेदपाट-प्रमुखसमस्तवसुमती साम्राज्य श्रीबापा, खुम्माण, शालिवाहन, नरवाहन, भोज, कर्णादिक अनेक महाराजा इणीवंश हुआ, इणीहीज वंशी अरिशीह चित्रोड़ गढ दृढ प्राकार प्रकार प्रचण्ड भुजदण्ड मण्डलित कोदंड हुआ, तीयिरोपुत्र विषमधाड पचा-यण कलिकाल कलंकिया राय केदार हम्मीर हुओ, तिणा श्रीएकलिंग चतुर्मुख मूर्ति धरावी, शिहेलो ग्राम देवभोगार्थ चढाव्युं, तीणरो पुत्र अरिराजमत्तमातंग पंचानन-षेत्रः हुओ, तिणीपि पनवाड़ ग्राम देवपूजार्थ चढाव्युं, तिणरो पुत्र अमोक्षराय मोक्षदाता रायगुरु दानगुरु कुलगुरु वागा गलाराइपरमगुरु लखणसेन हुआ, तिणि

चीरवो ग्राम एकलिंगभोगार्थ चढ़ाव्युं, तिणरा पुत्र द्वापरधर्मावतार विद्वज्जन दैन्यदवदहनदावानल पिरोजखानमानमर्दन राजवृत्तपरमाचार्य श्रीमोकलेन्द्र हुआ, तिणी वांधनवाडो अनि रामुवी ग्राम अनि शिवरात्रि नवशातिजीकाईदाण देलवाड़ारा ऊपरशु श्रीएकलिंगपूजारे अर्थ चढ़ाव्या, तिणरो पुत्र अभिनव नन्दकेश्वरावतार रिपुरायमीनजलजाल दर्प्पांधराय भूतभैरव अरिदृढगिरिराटपक्ष विक्षोभवज्राभिघात अभिनवसरताचार्य श्रीकुंभकर्ण माहिमहेन्द्र हुआ, तिण देव श्रीएकलिंगपूजोपहारिअर्थे नागद्रह, कठड़ावण, आमलहेडो, भीमाणो, ए च्यार ग्राम चढाव्या, तिण श्रीकुम्भकर्णरा पुत्र गौडराजन्यवंशाभरण राणी श्री पुवाडरे गर्भरत्न अश्व, गज, नर, दुर्गपति, चतुर्विधरायमुकुटमणि अष्टगुण चतुर्जाति कामिनीमनमोहनमीनकेतन असथा संग्रामजित् संगीतार्णव वीरवर्ण प्रलयकालानल अर्थिजनकल्पनीकल्पद्रुम महाराय श्रीरायमल्ल राज्य भोगवेइछे. तिणि पूर्वजरीपरिदेवी अन्न सर्व प्रवर्त्ताव्यो, कालिकारे ग्राम पूर्व दत्तलोपाणा हुआ ते वले चढाव्या, देव, ब्राह्मण, भाट, नाजका वर्षासन गाम पूर्वजेने आपणी दीधी तिण समस्त राजकर मुकर्र कीधा, निधान गुण भूमी घणी भोगवी जिणको अपुत्रिक परलोक पाई तिथि रुंधन राजमन्दिर न आवि, इति आज्ञा वर्तमान प्रासाद शुद्ध कराव्युं, प्रशस्ति नवी करावे मंडावी, ते श्रीराजमल्ल महाराज जहां लगी, शेष नागरी मस्तककी पृथ्वी रही ता लगी पुत्र, पौत्रपरिवार विक्रम समयातित सं० १५४५ प्रवर्तमाने चैत्रमासे शुक्लपक्षे दशमी १० तिथौ गुरुवासरे लिखितं शुभं भवतु ॥ (१)

नारलाई गांवकी पश्चिम तरफ़ आदिनाथके जैनमन्दिरके
एक स्तम्भपरका शिलालेख.

॥ ५० ॥ श्रीयशोभद्रसूरि गुरुपादुकाभ्यां नमः संवत् १५५७ (२) वर्षे वैशाखमासे शुक्लपक्षे षष्ठ्यां तिथौ शुक्रवासरे पुनर्वसुऋक्षप्राप्तचंद्रयोगे श्रीसंडेरगच्छे

---

(१) इस प्रशस्तिके ठीक मध्यमें एक शिवलिंगाकार चित्रकाव्य बनाहुआ है, जिसमें पांच श्लोक हैं, परन्तु उस स्थानका पत्थर घिसजाने व टूटजानेके कारण कितने एक अक्षर बिल्कुल जातेरहे हैं, जिससे उसके पूरे श्लोक पढ़नेमें न आसके, इसलिये उस काव्यको यहांपर छोड़ दिया है.

(२) भावनगर प्राचीन शोध संग्रह पृ० ९४ से ९६ तक और भावनगरमें छपीहुई प्राकृत ऐंड संस्कृत इन्स्क्रिप्शन्स नामक पुस्तकके पृ० ११०-१२ में यह लेख छपा है, जिसमें इस लेखका संवत् १५९७ लिखा है, लेकिन् उस समय महाराणा उदयसिंह राज्य करते थे, न कि रायमल्ल, इसवास्ते इतिहास कार्यालयके सेक्रेटरी पंडित गौरीशंकर हीराचन्द ओझाको नारलाई भेज दर्याफ़्त कराया तो इसका सही संवत् १५५७ पायागया, जो यहांपर दर्ज है.

कलिकालगौतमावतारः समस्तभाविकजनमनोऽबुजविबोधनैकदिनकरः सकललब्धि-विश्रामः युगप्रधानः । जितानेकवादीश्वरवृंदः । प्रणतानेकनरनायकमुकुटकोटिघृष्ट-पादारविंदः श्रीसूर्य इव महाप्रसादः चतुःषष्टिसुरेंद्रसंगीयमानसाधुवादः । श्रीखंडेर-कीयगणवुधावतंसः । सुभद्राकुक्षिसरोवरराजहंसः यशोवीरसाधुकुलांबरनभोमणिः सकलचारित्रिचक्रवर्तिवक्रचूडामणिः भ० प्रमुश्रीयशोभद्रसूरयः । तत्पट्टे श्री-चाहुमानवंशशृंगारः । लब्धसमस्तनिरवद्यविद्याजलधिपारः श्रीबदरादेवीदत्तगु-रुपदप्रसादः।स्वविमलकुलप्रबोधनैकप्राप्तपरमयशोवादः।भ० श्रीशालिसूरिः त० श्री-सुमतिसूरिः त० श्रीशान्तिसूरिः त० श्रीईश्वरसूरिः । एवं यथा क्रममनेकगुणमणि-गणरोहणगिरीणां महासूरीणां वंशे पुनः श्रीशालिसूरिः त० श्रीसुमतिसूरिः तत्पट्टालंकारहार भ० श्रीशांतिसूरिवराणां सपरिकराणां विजयराज्ये ॥ अथेह श्रीमेदपाटदेशे । श्रीसूर्यवंशीयमहाराजाधिराजश्रीशिलादित्यवंशे श्रीगुहिदत्त-राउलश्रीवप्पाकश्रीखुमाणादिमहाराजान्वये । राणाहमीरश्रीखेतसिंहश्रीलखमसिंह-पुत्रश्रीमोकलमृगांकवंशोद्योतकारकप्रतापमार्त्तंडावतारः । आसमुद्रमहीमंडलाखंडल-अतुलमहावलराणाश्रीकुंभकर्णपुत्रराणाश्रीरायमल्लविजयमानप्राज्यराज्ये । तत्पुत्र-महाकुमारश्रीपृथ्वीराजानुशासनात् । श्रीऊकेशवंशे रायजडारीगोत्रे राउलश्रीलाषण-पुत्रमं० दूदवंशे मं० मयूरसुत मं० सादूलः । तत्पुत्राभ्यां मं० सीहासमदाभ्यां सद्बांधव मं० कर्मसीधारालाखादिसुकुटंवयुताभ्यां श्रीनंदकुलवत्यां पुर्यां सं ९६४ श्रीयशोभद्रसूरि मंत्रशक्तिसमानीतायां त० सायर कारित देवकुलिकाद्युद्धारतः । सायरनामश्रीजिनवसत्यां । श्रीआदीश्वरस्य स्थापना कारिता श्रीशांतिसूरिपट्टे देवसुंदर इत्यपरशिष्यनामभिः आ० श्रीईश्वरसूरिभिः इति लघुप्रशस्तिरियं लि० आचार्यश्रीईश्वरसूरिणा उत्कीर्णा सूत्रधारसोमाकेन ॥ शुभं०
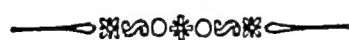
चित्तौड़पर मुहम्मद शाह तुग़लक़के समयकी बनी हुई मस्जिदकी फ़ारसी प्रशस्ति (१).

* خدای ملک سلیمان وتاج وتخت ونگین * ....

* چو آفتاب جهانگیر و بلکه ظل اله * یگانه ختم سلاطین مصر تغلق شاه *

(१) इस प्रशस्तिके पाषाणका प्रारंभका भाग टूटजानेसे प्रशस्तिलेखके ६ मिश्रोंमेंसे शुरूके तीन मिस्रे (पद) जाते रहे हैं, जिनसे कि साल संवत् मालूम होता, बाक़ी ९ मिस्रे जो पाषाणपर मौजूद हैं, वे यहां पर दर्ज किये गये हैं.

. ... * مرین مملکت از رای اومزین باد *

مدار ملک اسد الدین(۱) ارسلان خواه * که گشت محکم از وعدل وداد را بنیاد *

.... * ... از جمادی الاولی گذشته بد ایام *

حدا نفضل مرین خیر را قبول کناد * جزاء حسن عمل را یکے هزار دهاد *
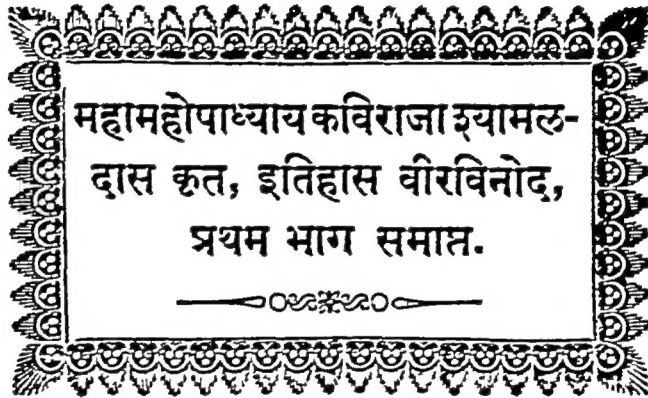
(१) मलिक असदुद्दीन गयासुद्दीन तुग़लक़का भतीजा और मुहम्मद तुग़लक़का चचेरा भाई था, जिसकी तज्वीज़से यह मकान या मस्जिद बनी मालूम होती है.